



१८१२ ॥ श्रीः ॥

मीजान तिव्व ।

अर्थात्

सर्वांग चिकित्सा ।

( हिक्मत का अपूर्व ग्रंथ )

लाला बशीधरजीने उर्दूसे हिन्दी भाषा में

अनुवाद कराया और मथुरा निवासी

श्रीकृष्णलाल ने शुद्ध किया

जिसको

लाला श्यामलाल हीरालाल

मालिक 'श्यामकाजी पत्रालय'

मथुरा ने

छपवाकर प्रकाशित किया ।

सं० १९८१

इसके सर्व हक स्वामिन है ।

# भूमिका ।

## मियवर वाचकवृन्द !

आज तिव्व अफसर को छपे हुए पत्र पढ़ें, हमें उपरान्त हमको ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ कि हम काष्ठिकमते का और ग्रन्थ लेकर पाठकोठी में बैठके छिय उपस्थित होत, यद्यपि कितनी ही बार प्रयत्न किया गया पर और कामाफी अधिकता से यह मार्ग अवरोध रहा ।

अब यह भी जानतिव्व नामका ग्रन्थ आप लोगोंकी भेट है यह हिकमत का अपूर्व ग्रन्थ है इसमें सिरसे पाँच तक के सब रोगों के लक्षण निदान पूर्वरूप और चिकित्सा विद्ये गये हैं चिकित्सा प्रकरण में अनेक प्रकार के छोटे बड़े नुसखे विद्ये गये हैं जो तीरकी समान काम करने वाले हैं ।

यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है इसकी प्रथमावृत्ति छिटाई हुई है । अचकींचार यह छापमें सुवाक्य अक्षरों में मोटे कागज पर छपा है ।

आशा है आप सब लोग इसकी एक प्रति अवश्य खरीद कर अन्य ग्रन्थों के पूजाश करने में हमारा उत्साह बढ़ावेंग ।

तृतीय सम्स्करण ।

यदाही शुभ समय है कि पण्डिली और दूसरी बारका छपा हुआ यह ग्रन्थ हाथों हाथ विक गया अब तीसरी बार पाठकोठी समीप छपकर उपस्थित है ।

पुस्तकें मिलने का पता:—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्यामकाशी प्रेस मथुरा ।

लाला श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा ।

# अनुक्रमणिका

— ३: —

पत्र आशय पत्र

## पहिला खण्ड

गर्मी की पहचान १  
सर्दी की पहचान २  
तरी की पहचान २  
छुश्की की पहचान २

## दूसरा खण्ड ।

दवा और खाने का वर्णन

## पहिला अध्याय

बिगाड़ पित्त का पाँच प्रकारका ४  
पित्त को ज़ायदा करने वाली  
दवाइयाँ ५  
कफ का पाँच प्रकारका बिगाड़ ५  
कफ को अच्छा करने वाली  
दवाइयाँ ६  
कफ नाशक दवा ७  
बिगाड़ सौदा का भी ५ प्रकारका ७  
सौदा नाशक दवा ७  
सौदा के लिये दनी हुई दवायें ७  
सू घने मलने आदि की औषधें ७

## दूसरा अध्याय ।

फस्द का वर्णन १२  
तीसरा अध्याय ।  
सोंगी और ओक का वर्णन १५  
चौथा अध्याय ।  
मुँजिस का वर्णन १६

## पाँचवाँ अध्याय ।

जुल्लाव और मुल्लय्यम का व १८  
पित्त के जुल्लाव की दवायें २०  
जुल्लावपित्त निकालने के लिये २१  
कफ के जुल्लाव की दवायें २२  
जुल्लाव की दवायें २२  
दूसरा जुल्लाव बल्लगम का २२  
फंकी बल्लगम के जुल्लाव की २२  
बाकी के निकालने की दवा २३  
जुल्लाव बाकी का २३  
दूसरा जुल्लाव २३

## छठा अध्याय ।

धमन जाने वाली औषधियाँ  
का वर्णन २५



धमन द्वारा पिच्छों को  
निकालने वाली दवा २६

धमन में धूलगम को निकालने  
वाली औषध यह है "

धमन द्वारा वादों को निकालने  
वाली दवा "

धमन द्वारा पित्त और यक्ष्म  
और सौदा को निकालने वाली  
दवा २७

सातवां अध्याय ।

मूत्र द्वारा मवाद निकालने  
वाली दवा २७

पेशाब जाने वाली ठंडी दवा २८

गरम औषधें  
मौतदिल अर्थात् यह औषधें "

जिनमें सरदी गरमों परापर हैं "

पेशाब जाने वाली मौतदिल  
औषधें "

यन्त्र हिज को जारी करने वाली  
औषधें "

जोरादा जो हिज को जारी  
करें और पुरुष का धीर्य  
जो ठंड से रुफरहा हो उसे  
निकाल दें । २८

आठवां अध्याय ।

उन औषधों के वर्णन में जो

दिल और सिर और जिगर  
और मेदे को पुष्ट करती हैं २८

तीसरा खण्ड ।

रोगों और उनके उपाय का व०

सिर के रोगों का वर्णन

सिर के वर्द का वर्णन ३१

सरसाम का वर्णन ३२

जुमूद का वर्णन ३३

सक्ते का वर्णन ३४

सवात का वर्णन ३५

सहर का वर्णन ३६

सवातसुहरी और सहरसवाती

का वर्णन ३६

कायूस का वर्णन ३७

मुगी का वर्णन ३७

मालीशोजियो का वर्णन ३८

अनून का वर्णन ३८

सहर और द्वार का व०

निसयान अर्थात् भूत जाने के

रोग का वर्णन ४०

फालिज का वर्णन ४०

खदर का वर्णन ४०

लकये का वर्णन ४०

सगन्नुज का वर्णन ४०

समयबुद का वर्णन ४०

## भाष्य

पत्र

## भाष्य

पत्र

कमाजा का धर्मान	४३
राये का धर्मान	४४
इफ्तलाजका धर्मान	"
जघोका धर्मान	"
हिस्का धर्मान	४५
असापाका धर्मान	"
हुकाम और नजखेका धर्मान	४६

## दुसरा अध्याय ।

आँख के रोगों का धर्मान	४६
रमव अर्थात् आँख आने का धर्मान	४७
मुरफा का धर्मान	४८
हुफरा अर्थात् नाखूनेका धर्मान	४९
आँखमेंआला पड़जानेका धर्मान	"
सबल का धर्मान	"
मुलतहिमा के फूलजाने का धर्मान	५०
मुलतहिमाकी खजलीका धर्मान	५०
सोसलुखमुलतहिमाका धर्मान	५१
दोक्तुखमुलतहिमा का धर्मान	"
दमआ अर्थात् आँख बहने का धर्मान	"
दिरकतुलयेन अर्थात् आँख में ललान होने का धर्मान	"
कुजा अर्थात् आँख में किसी	

वस्तु के पड़जाने का धर्मान	५२
आँखपर छोट लगने का धर्मान	"
आँख के घाय का धर्मान	५३
कमामा का धर्मान	५४
रतौंदी का धर्मान	"
दिनौंदी का धर्मान	५५
सुबाहिदकहा औरणकोकचम का धर्मान	"
हज्जुलयेनका धर्मान	"
करनियाके समरआनेका धर्मान	"
करनियापर फुसो हो जाने का धर्मान	५६
मोरसिरख का धर्मान	"
मेंगाहोने का धर्मान	५७
इततिताऔरइन्तयारकाधर्मान	५८
अनायिया के छेरेके भकड़ा हो जाने का ध०	"
खपासात का ध०	५९
मोलियाबिन्द का ध०	"
असवेमें सुद्धा पड़जानेका ध०	६१
आँखके काँजा होजाने का ध०	"
जोफरसर अर्थात् कमहरी का ध०	"
यतलानबसारतका ध०	६२
सुग्माहोने का ध०	"

आशय

पत्र

आशय

पत्र

कुमूर अर्थात् दृष्टि चकजाने  
का वर्णन ६२  
आंख के दुबला होने का घ० ६३  
धुगुल्लुल्लेन का वर्णन ६३  
आंख के मित्राज पहचानने की  
रीति ॥  
तीसरा अध्याय ।

पपोटे और फलक के रोगों का  
वर्णन ॥  
कमना का वर्णन ॥  
पपोटे के ढोला होजानेका घ० ६४  
पलकों के आपन्न में चिमड़जाने  
का वर्णन ६४  
पलक के छोटे होजाने का घ० ॥  
शिरमाक का वर्णन ॥  
पपोटे के ऊपर गांठ पड़जाने  
का वर्णन ६५  
शेरमुनकल्लिध और शेर जायद  
पलकों के झड़जाने का घ० ६६  
पलकों के सफेद होजाने का  
वर्णन ६६  
पलक में छुजली और फुगियां  
होने का वर्णन ॥  
परदा का वर्णन ॥

पलक के मोटे और कड़े हो  
जाने का वर्णन ॥  
पलक के मोटे और लाल हो  
जान का वर्णन ६७  
पलकों में जूर्य पड़न का घ० ॥  
गुहांजनो का वर्णन ॥  
नोस्तुल्ल भ्रजफान का वर्णन ६८  
तटज्जुरजफन का वर्णन ॥  
पलक में घाघ पड़ने का वर्णन ॥  
पपोटों के फूल जाने का वर्णन ॥  
पपाटों में मस्से पड़जानेका वर्णन ॥  
पपोटों पर पिछी बल्लहनेका घ० ६८  
नमस्तय पलक का वर्णन ॥  
पलक पर से भूम्बोड्डनेका घ ॥  
सुला का वर्णन ॥  
छोट से पपोटे का नीला या  
हरा होजाने का वर्णन ॥  
कोथे के पास नाक की ओर  
नासूर हो जाने का वर्णन ॥  
कोथे और पलक में बिना जलन  
और दानों के खुजली होनेका घ  
कोथे में नाक की ओर अधिक  
मांस होजाने का वर्णन ॥

चौथा अध्याय

कान के रोगों का वर्णन

आशय	पत्र	आशय	पत्र
कान के दर्द का घर्षण	७१	नाक कुचलजाने का घर्षण	७७
कान की सूजन का घर्षण	"	बहुत सी छींके आना	७८
कान के घाव का घर्षण	७२	मथनों का सूखा रहना	"
तरब पकर और सममका घर्षण	७३	नाक के भीतर खुजली होने का घर्षण	"
किसी वस्तु के कान में पड़ जाने का घर्षण	"	छटा अभ्यास	
तिनीन और दूध का घर्षण	"	मुँह और जीम के रोगों का घ०	७९
कान से बधिर निकलने का घ०	७४	जीम की सूजन का घर्षण	"
कान के टूट जाने का घर्षण	"	जीम का बोकल होना	"
जड़ से कान के बधिर होने का घर्षण	"	जीम का बढजाना और निकल आना	८०
कमकट्टी का घर्षण	"	जीम के ढोला होजाने का घ०	"
कान में खुजली होने का घर्षण	"	जीम के फटजाने का घर्षण	"
कान में चीख की सी आवाज		जीम को छुस्की का घर्षण	"
माफूम होनी	७५	जीम की जलन का घर्षण	८१
पाँचवाँ अभ्यास		जीम में खुजली होने का घर्षण	"
नाक के रोगों का घर्षण		जिफदबललिसाग का घर्षण	"
खश्म का घर्षण	"	फिसाव जोक का घर्षण	"
घोयाशक्ति के बिगड़ जाने का घर्षण	७६	पतलान जोक का घर्षण	८२
नाक में घुरा मसि बरपल होना	७६	तकथशुरजधान घर्षण	"
नाक की फुत्तियों का घर्षण	"	मुख के भीतर फुत्तियाँ होने का घर्षण	"
नाक के घाव का घर्षण	"	मुँह आने का घर्षण	"
नकसोर का घर्षण	"	आकिलतुलफम का घर्षण	८३
नाक में घुरी मध आना	७७	जागते और सोते में मुँह से बहुतसोरास बहना	८३

आशय

पत्र

आशय

पत्र

मुखस दुर्गंध आने का वर्णन ८२

तालू की सूजन का वर्णन ८४

सातवां अध्याय

होठों के रोगों का वर्णन

होठों पर सफेदी हो जाने का

वर्णन

होठ की खुश्की और फटने और

खिलकें उतरने का वर्णन

होठ के फटने का वर्णन ८४

होठ के छोटा होजाने और

सुकड़ जाने का वर्णन ८५

नीचे के होठ पर अधिक मांस

उत्पन्न होजाने का वर्णन

होठ की सूजन का वर्णन

होठ पर फुं सियां होजाने का वर्णन ८५

होठ में घाव पड़कर पीपबहना

होठ में घाव पड़के फलते जाना ८६

आठवां अध्याय ।

दाँतों और मसूढ़ों के रोगों

का वर्णन

दाँतों की पीड़ा का वर्णन

दाँतों के कुन्य होजाने का वर्णन ८७

दाँतों की श्वास आते रहने का

वर्णन ८८

दाँतों के टूटने और खीखलने हो

जाने का वर्णन

हफर का वर्णन

दाँत के रंग बदलजाने का वर्णन

दाँतों के हिलने का वर्णन ८९

दाँत का लम्बा और मोटा

हो जाना ९०

दाँतों में खुजली होने का वर्णन

सोते में दाँत रगड़ने का वर्णन ९०

मसूढ़ों की सूजन का वर्णन

मसूढ़ा से खिंच बहने का वर्णन

मसूढ़ों में घाव और नासूर हो

जाने का वर्णन

दाँतों की जड़ में कमजोरी

होनेसे दाँत हिलने का वर्णन

मसूढ़ों पर घुरा मांस उत्पन्न

होने का वर्णन

नवां अध्याय

कण्ठश्वास मन्त्री के रोगों का वर्णन ९१

कन्धे की सूजन का वर्णन

कन्धे के लटक आने का वर्णन

खुश्क का वर्णन ९२

गले और मरी और कुसघैरेपा में

फुं सियां होजाने का वर्णन ९३

गले में जोंक धिमट रहने का वर्णन

सुरे निगल जाने का वर्णन ९४

मरी के मिच जाने का वर्णन

मरखरे के ढोखा होजाने का वर्णन ९५

आशय

पत्र आशय

पत्र

मरी में सुतली होने का वर्णन ११  
 कुपरेटैया के फड़कने और काँपने  
 का वर्णन ॥  
 दूधे हुए का उपाय ॥  
 गला घोंटे हुए और फोसी दिये  
 हुए का उपाय ॥  
 बसरउल्लवला का वर्णन १७  
 मरी की सूजन का वर्णन ॥  
 मरी में घाव पड़ जाने का वर्णन ॥  
 आघाज बन्द होजाने और पड़  
 जाने का वर्णन ॥  
 दसवाँ अध्याय  
 छाती और फेफड़े के रोगों का वर्णन  
 दम का वर्णन १८  
 खाँसी का वर्णन १००  
 मुखसे रुधिर निकलने का वर्णन १०२  
 मुखसे पोंधन निकलने का वर्णन १०४  
 फेफड़े की सूजन का वर्णन ॥  
 सिलका वर्णन १०७  
 छाती के परदों मिलिखायों यधनों  
 खजलों और आसपास के जोड़ों  
 की सूजन का वर्णन १०८  
 छाती के आसपास पीय रुक  
 रहने का वर्णन ११०  
 छाती को उँह पा जाना और  
 झकड़ जाना १११

ग्यारहवाँ अध्याय  
 दिल के रोगों का वर्णन ॥  
 दिल की मिजाज के बिगाड़ में १११  
 बफकान अर्थात् दिल धराने  
 का वर्णन ११२  
 सूँझों का वर्णन ॥  
 दिल के दोनों कानों के सूजन  
 का वर्णन ११५  
 दिल में घूँसा उठने का वर्णन ११६  
 जगतलक्ष का वर्णन ॥  
 तकशूर कश्य का वर्णन ॥  
 कजाकुल कश्य का वर्णन ॥  
 दिल के बैठने का वर्णन ११७  
 दिल पर तरी छाजाने का  
 वर्णन ॥  
 बारहवाँ अध्याय  
 हृत् को छाती के रोगों का  
 वर्णन ११८  
 दूध कम होने का वर्णन ॥  
 दूध बढ़ जाने का वर्णन ११९  
 छातियों के सूजने और तन्ने  
 का वर्णन ॥  
 छाती में दूध जमजाने का वर्णन ॥  
 स्तनों का कुचल जाना १२०  
 तेरहवाँ अध्याय  
 मेदे के रोगों का वर्णन

आशय

पत्र

आशय

पत्र

मेदे के मिजाज बिगड़ जाने का	
घर्षान	१२१
पेटकी पोड़ा का घर्षान	१२२
लोफ हश्म और सूर्य हश्म	
और तुलसी का घर्षान	१२४
हृजे का घर्षान	"
भूख के घट जाने का	
रहने का घर्षान	१२६
भूख के बिगड़ जाने का घर्षान	१२८
भोजन का होका होजाने का घ०	"
जुड़लवकर का घर्षान	१२९
भूख की असह्यता का घर्षान	"
अधिक व्यास होने का घर्षान	"
मेदे की सूजन का घर्षान	१३१
दुबैलतुल मेदे का घर्षान	"
मेदे के घाव और फु सियों	
का घर्षान	१३२
पेट फूलने का घर्षान	"
डकार जमाई और अ गड़ाई	
अधिक आने का घर्षान	१३३
वमन रखाकी और मसली का	
घर्षान	"
पित्त की वमन को दूर करने	
वाली दवाइयाँ	१३३
उल्टरीमें रुधिर आने का घ०	१३४

मेदे में रुधिर या दूध के जमजाने	
का घर्षान	१३५
अधिक हिचकी आने का घ०	१३६
इकित्ताब मेदे का घर्षान	"
कलफुल मेदे का घर्षान	१३७
मेदे के फड़कने का घर्षान	"
वजयदलफवाद का घर्षान	"
पेटमें जलन होने का घर्षान	"
मेदे के ढीला होने का घर्षान	१३८
मेदे की घुनाघट के ढीला	
होजाने का घर्षान	"
मेदे के खिचजाने का घर्षान	"
मेदे के फड़ा होजाने का घर्षान	"
मेदे के ऊपर के पट्टों के कटा हो	
जाने का घर्षान	१३९
पेट चलने का घर्षान	१४०
मेदे के छाटा होजाने का घर्षान	१४०
चौदहवाँ अध्याय	
जिगर के रोगों का घर्षान	
जिगर के बिगाड़ का घर्षान	१४०
जिगर के कमजोर होजाने का	
घर्षान	१४२
जिगर के सुदृढ़ का घर्षान	१४३
मासारीका के सुदृढ़ का घर्षान	"
जिगर के फूलने का घर्षान	१४४

## विषय

## पृष्ठ विषय

## पृष्ठ

जिगर को पीड़ा का धर्मान	१४४	आँतोंसे दस्तोंमें रुधिर आने का धर्मान	१३२
पिरे का धर्मान	"	आँतों से पीप आनेका धर्मान	१६४
जिगर की सूजन का धर्मान	१४५	कूयकर दस्तआने का धर्मान	१६५
पेटमें पट्टोंकी सूजनका धर्मान	१४६	मरोह का धर्मान	१६६
जिगर के फाड़े का धर्मान	१४७	आँतोंके फूलने और बोलने का धर्मान	"
जिगर की फड़कने का धर्मान	"	कुलंज का धर्मान	"
जिगर की पथरी का धर्मान	१४८	पिना पीड़ा के कबज होने का धर्मान	१६८
जिगरके छोटा होनेका धर्मान	१४९	पेट में कैचये पड़ने का धर्मान	"
जिगर से दस्त आने का धर्मान	"	सतरहवाँ अध्याय	
सूडलकमियाँ का धर्मान	"	गुदा के रोगों का धर्मान	
जलघर का धर्मान	१५०	पवासीर का धर्मान	१७०
पन्द्रहवाँ अध्याय		याद्री बवासीर का धर्मान	१७१
यकान, तिल्ली और पिछों के रोगों का धर्मान		गुदा पर मासूर होजानेका व	१७१
पोलिया का धर्मान	१५४	गुदा पर सूजन होजाने का धर्मान	१७१
तिल्ली के रोगों का धर्मान	१५७	गुदा फटजाने का धर्मान	१७१
तिल्ली की सूजन का धर्मान	१५६	गिरजके छोलाहो जानेका व	१७१
तिल्ली की सूजन के पक जाने का धर्मान	१६०	काँच निकलने का धर्मान	१७१
तिल्ली की निर्बलता का धर्मान	"	गुदा में घाव होजाने का व	१७३
तिल्ली के सुदे का धर्मान	१६१	गुदा में खुजली होने का व	१७३
तिल्ली की बातजसूजनकाधर्मान	"	अठारहवाँ अध्याय	
तिल्लीमें पथरीपड़जानेका धर्मान	"	गुखे के रोगों का धर्मान	
सोख्तवाँ अध्याय		गुखे के बिगाह का धर्मान	१७३
आँतों के रोगों का धर्मान		गुखे के पुवसा होने का व	"
जलकुल भमभा का धर्मान	१६१		



विषय

पृष्ठ

विषय

पृष्ठ

गुरदे की कमजोरी का वर्णन १७३

गुरदे में घायु की पोड़ा का वर्णन १७३

गुरदे की पीड़ा का वर्णन १७४

गुरदे की सूजन का वर्णन १७४

गुरदे के घाय का वर्णन १७४

गुरदे में छुजली होने का वर्णन १७४

जियाधितुसका का वर्णन १७४

गुरदेमें पयरी पड़ने, बीर मूत्रमें

रेत आने का वर्णन १७४

उत्तीसवां अध्याय ॥

मसाने के रोगों का वर्णन १

मसाने की सूजन का वर्णन १७७

मसाने के घाय का वर्णन १७८

मसाने की छुजली का वर्णन १७८

मसाने में रुधिर जम जाने का

वर्णन १७८

मसाने की पीड़ा का वर्णन १७८

मसाने के टूटने का वर्णन १८०

मसाने के फूटने का वर्णन १८०

मसाने में पयरी पड़ने का वर्णन १८१

सूत्र में जलने होने का वर्णन १८१

मूत्र बहने का वर्णन १८२

मूत्र फूटने का वर्णन १८४

अखानक मूत्र निकल जाने का

वर्णन १८४

नींदमें मूत्रनिकल जाने का वर्णन १८४

मूत्र में रुधिर निकलने का वर्णन १८४

बीसवां अध्याय ॥

उम रोगों का वर्णन जो केवल

पुरुषों को होते हैं ॥

मैथुनेच्छाघट जाने का वर्णन १८६

धीरे जल्दी निकल आने का

वर्णन १८८

स्त्री संग की चाहना अधिक

होने का वर्णन १८८

धीरे निकल करने का वर्णन १८८

धीरे के बहने रुधिर निकलने

का वर्णन १८८

सोते में धीरे निकल जाने का वर्णन १८८

तिग हर समय जोर करने का

वर्णन १८८

धीरे निकलने के समय दस्त हो

जाने का वर्णन १८९

पुरुषको विषय कराने की चाहना

घटने का वर्णन १८९

अण्ड कोष की सूजन का वर्णन १८९

अण्ड कोष के बह जाने का

वर्णन १८९

लिगमें रुधिर के मुह के फूटने

का वर्णन १८९

अण्डकीपकी पोड़ा का वर्णन १८९

अण्डकोष के छोटा हो जाने

का वर्णन १८९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मण्डकोप के घट जानेकावर्णन	१८३	जन्मेमें कठिमेता होनेका वर्णन	२००
रंगें उमर जाने का वर्णन	"	मरीमा के रुकने और पेट में	
ऊपर की खाल ढोली हो जाने का वर्णन	१८४	बघा मर जाने का वर्णन	२०१
लिंग आदि के घाय का वर्णन	"	ओरघिर जन्मेकेपोछे निकलता	
लिंग के सूज जाने का वर्णन	"	है बसके बंद होने का वर्णन	२०२
लिंग आदि की खुजली का वर्णन	"	दिमा का वर्णन	२०३
लिंग के फट जाने का वर्णन	"	हैज की अधिकता का वर्णन	"
लिंग पर कड़ी फु सियाँ और		रहम के खाव का वर्णन	२०४
मस्से हो जाने का वर्णन	"	रहम के फट जाने का वर्णन	२०५
दूधके छिद्र बंद होजानेकावर्णन	"	रहम की खुजली का वर्णन	"
लिंग के टेढ़ा हो जाने का वर्णन	१८५	रहम की बघासीर का वर्णन	२०६
इकीसवाँ अध्याय		रहम की फु सियों का वर्णन	"
मिराक सिफाक और सर्व का वर्णन	१८६	रहम के मस्सों का वर्णन	"
कील का वर्णन	"	रहम के नासूर का वर्णन	"
पेट और बटों की फिठक का वर्णन	१८७	रहम से पानी बहने का वर्णन	"
टूँटो के उमरने का वर्णन	१८८	रहम से धीर्य बहने का वर्णन	२०७
पारसवाँ अध्याय		हैज बंद होजाने का वर्णन	"
उन रोगों का वर्णन जो केवल स्त्रियों को होते हैं		रक्त का वर्णन	"
पाँसु होने का वर्णन	१८९	रहम के उमरने का वर्णन	२०८
पहुँचा गर्म गिरने का वर्णन	२००	रहम के मुकयबने का वर्णन	"
		रहम की सूजन का वर्णन	२०९
		रहम के दुबले होने का वर्णन	२१०
		सरतान रहम का वर्णन	"
		खतिनाक रहम का वर्णन	"
		रहममें पानी भरजानेकावर्णन	२११
		रहम में वायु भर जाने का वर्णन	"

विषय

पृष्ठ - विषय

पृष्ठ

तेरहवाँ अध्याय

पोठ, हाथ और पाँव के रोगों

का वर्णन

कुम निकल आने का वर्णन २१२

पोठ की पोड़ा का वर्णन २१४

कोख की पोड़ा का वर्णन २१४

गठिया का वर्णन २१४

पिंडलोकी रोग और मोटी

होकर उमर आये २१७

पाँव सूजकर हाथों के से हो

जाने का वर्णन २१७

पट्टी की पोड़ा का वर्णन २१८

सलुये की पोड़ा का वर्णन २१८

चौबीसवाँ अध्याय

तप का वर्णन

हुम्मायौमो का वर्णन २१८

हुम्माबिस्ती का वर्णन २१८

दिक का वर्णन २२८

सीतला का वर्णन २२८

हुम्मायवाई का वर्णन २२८

पच्चीसवाँ अध्याय

सूजन फूसियों और उन रोगों का

वर्णन जो शरीर के ऊपर होते हैं

सूजनों आदि का वर्णन २३०

प्यास के रोगों का वर्णन २४२

प्यासों के रोगों का वर्णन २४४

नाथूनों के रोगों का वर्णन २४६

अलग २ रोगों का वर्णन २४७

घाव वर्णन २५०

कुरहका वर्णन २५१

मारने और गिरपड़ने से छोट

लगने का वर्णन २५२

कोड़े की छोट का वर्णन २५२

हड्डी के टूटने उखड़ जाने और

खिसलने का वर्णन २५२

घिस के उपाय में २५२

घिपैले जानघरों के काटने या

डंक मारने का उपाय २५३

नाड़ी परीक्षा २५६

नकशा सनाई २५७

नकशा सलासी का व० २५८

नाड़ी की मिली हुई प्रकारें २६१

मूत्र परीक्षा

मूत्र के रंग का वर्णन २६४

मूत्र के पाँच प्रकार २६४

मूत्रका गाढ़ा और पतला होने

का वर्णन २६७

मूत्रका साफ और गदगदा होना २६७

मूत्र की गंध २६८

मूत्र का कफ २६८

मूत्र की तलकट २६८

मूत्र का थोड़ा और घना होना २७

सुहरान का वर्णन २७

मिली हुई औषधों के घनाने

की विधि २७

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
हरीफल धनिये का	२७६	केसर का तेल	२८२
हरीफल गुद्दी	"	पिच्छू का तेल	"
अपारिज कीफरा	२७७	सुहाय का तेल	२८३
असामासिया	"	नारदीन का तेल	"
यामलोफून	"	रोगनमोत्चा	"
यकदयनफसजी	"	आम का तेल	"
यनादिकुलधुजूर	२७८	रोगन आगला	"
तिरियाक	"	सोपे का तेल	"
मौठ की माजून	"	गोखरू का तेल	२८४
फिलाघे की माजून	"	गैहू का तेल	"
जवारिसजालोनूम	२७९	सुमारीणनाई	"
ऊद कीमाजून, जवारिणयोमी	"	माजून जरमौनी	"
हवफोकाया	"	मिरके की सिकजधीन	"
हव्युलमिस्क	"	सिकजधीन बुज्जी गर्म	"
हव्वेरायम्द	२८०	सिकजधीन अमसिली	२८५
हव्वसिकधीनज	"	सिकजधीन हफतीमून	"
हव्वजीजरान	"	सिकजधीन सफरजली	"
हव्वयासली	"	सफूफ चारतुष्म	"
हव्वसिम	"	सफूफ हव्वुलकम्मा	२८६
हव्वहफतीमून	"	सफूफ मिकलियासा	"
दियालमिशक	२८१	सफूफ तीम	"
तयायतुबुद	"	सफूफ सेरातेजक	"
दवाठल करकम	"	मंजन दातो का पुष्ट करने	
दवाठलतुरजधीन	"	याला	२८७
मकर असफर	"	कूट के तेल की दूसरी रीति	"
मस्तगीफातेल	२८२	सुतीजान	"
कूटका तेल	"	यबत वर्ष मुकदर	"

## विषय

## पृष्ठ विषय

## पृष्ठ

शर्वत इफसंतीन	२८८	कुर्स माजरीयून	२८२
शर्वत झूफा	"	कुर्स अनोसूम	"
शर्वत खराकाश	"	कुर्स किघ	"
शर्वत पोदीना	"	कुर्स कौकध	२६३
शर्वत दोमार	"	कुर्स झुम्पुल	"
शर्वत हन्नुलभास	"	कुर्स पलाऊस	"
शर्वत अंजहार	२८९	कुर्स कुहल	"
शर्वत गावझुघा	"	कुर्स गुल	२८४
शर्वत घालंगू	"	कुर्स कदक्या	"
शर्वत नीलोफर	"	कुर्स फाकनज	"
शर्वत सन्दल	"	कुर्स गियाबितुस	"
शर्वत सभाष	"	कुर्स धौलुहम	२८५
शर्वत किजनीय	२९०	कुर्स नफझुहम	"
शियाफ कुन्दुर	"	कुर्स तवासीर मुलज्यन	"
शियाफ अघियल कुन्दुरी	"	कुर्स तवासीर काविज	"
शियाफ अहमरखीन	"	कुर्स काफूर	"
शियाफ अंगार	"	कम् नो	२८६
शियाफ गर्ध	"	कोहलुखजवाहिर	"
शियाफ अहमर	"	कुहल अजीली	"
शियाफ दीनार	२९१	कलकलानज गरम	"
शियाफ रुधिर रोकने घाला	"	कलकलानज ठंडी	२८७
जिमाद घोसा	"	साजवर्द के धाने की रोति	"
फरजनाहाविस्त	"	साजून फिलासफा	"
फलविफियून	"	लोहे के मैले की साजून	"
माजून फलाफली	"	लोहे के मैले के धोने की रोति	"
फिलोमिया	२९२	माजून लबूष	"
कुर्सअम्बर बारीस	"	माजून धूजूर	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बिच्छू की माजून	२९८	चौथे दर्जे की ठंडी औषध	३०३
बिच्छू के ललाने की रीति	"	पहले दर्जे की खुश्क औषध	"
माजून हज्जतयद्द	"	दूसरे दर्जे की खुश्क औषध	"
माजून कमीला	"	तीसरे दर्जे की खुश्क औषध	३०४
मतघुष मुखम्यन	"	चौथे दर्जे की खुश्क औषध	"
मुफर्रह सगोर	"	पहले दर्जे की तर औषध	"
मुफर्रह बिलकुया	३००	दूसरे दर्जे की तर औषध	"
मुखम्यन मुवारिक	"	दवा देने का वर्णन	"
मरहम वासलीकून	"	बह औषधें जो रुधिरके बिगाड़	"
मरहम रसूल	"	को ठीक करें	३१६
चूने का मरहम	"	रुधिर के आने को रोकने	"
मरहम काफूर	३०१	वाली औषधें	३१०
सिरके का मरहम	"	गाढ़े रुधिर को पतला करने	"
मरहम सफेदा	"	वाली औषधें	"
मधूर का मरहम	"	पतले रुधिर को गाढ़ा करने	"
मुर्दासंग का मरहम	"	वाली औषधें	"
फाला मरहम	"	पिछों को ठीक करने वाली औ	"
मरहम जगार	३०२	कफ को ठीक करने वाली औ	"
नोसादर	"	सौदा को ठीक करने वाली औ	"
नफूहामिम	"	गाढ़े मवाद को पतला करने	"
औषधियों की कैफियत	३०३	वाली औषधें	३१८
पहले दर्जे की गरम औषध	३०४	पिछों की सु जियें	"
दूसरे दर्जे की गरम औषध	"	कफ की सु जियें	"
तीसरे दर्जे की गरम औषध	"	जुलसाधों की औषध	"
चौथे दर्जे की गरम औषध	"	पिछों के जुलसाध	३१८
पहले दर्जे की ठंडी औषध	"	कफ के जुलसाध	"
दूसरे दर्जे की ठंडी औषध	३०५	सौदा के जुलसाध	"
तीसरे दर्जे की ठंडी औषध	"	मूत्र लाने वाली औषधें	"
चौथे दर्जे की ठंडी औषध	"	दौष यद्दाने वाली औषध	३१०
	"	दोष्य निकासने वाली औषध	"

## विषय

## पृष्ठ

## विषय

## पृष्ठ

छल्टी लाने वाली औषध	३२०
छल्टी लाने वाली, पुष्ट औषध	"
भेजे की पुष्ट करने वाली औ०	"
विल की पुष्ट और प्रसन्न करने वाली औषध	३२१
जिगर की पुष्ट करने वाली औ०	"
मेदे की पुष्ट करने वाली औ०	"
जिगर को हानिकारक औषध	"
मेदे को हानिकारक औषध	"
मेदे को ढोला करने वाली औ०	३२२
भेजे को हानिकारक और पौड़ा उत्पन्न करने वाली औषध	"
पेट को नरम करने वाली औ०	"
पेट बन्द करने वाली औषध	"
सुड़ा और धाव दूर करने वाली औषध	"
कब्ज करने वाली औषध	३२४
नींद लाने वाली औषध	"
नींद खोने वाली औषध	"
सोते में घुरे स्वप्न दिखाने वाली औषध	३२५
घुरे स्वप्न बन्द करने वाली औ०	"
पचाव करने वाली और मूख लगाने वाली औषध	"
दाँतों और मसूड़ों की पुष्ट करने वाली औषध	"
दाँतों और मसूड़ों को हानिकारक औषध	"

दृष्टि की पुष्ट करने वाली औ०	३२६
घव औषध जो मघाव को खाँख पर न गिरने दें	"
दृष्टि की हानिकारक औषध	"
विषय की चाहना को पुष्ट करने वाली औषध	"
विषय की चाहना को खोने वाली औषध	३२७
घोयें उत्पन्न करने वाली औ०	"
विषय करने में अधिक ठहराने वाली औषध	"
विषय करने में मजा देने वाली औ०	३२८
जिग के बढ़ाने वाली औषध	"
मग को संग करने वाली औषध	"
पक्षा जल्दी जनाने वाली औषध	"
मरे पक्षों को निकालने वाली औ०	"
मशीमा की निकालने वाली औ०	३२९
मसाने और गुरदे की पथरी को तोड़ने वाली औषध	"
सूजन के पटकाने वाली औषध	"
सूजन के नरम करने वाली औ०	"
सूजन के पकाने वाली औषध	"
सूजन को फोड़ने वाली औषध	"
घुरे मांस को गलाने वाली औ०	"
साफ करने वाली औषध	"
कीड़े मारने वाली औषध	"
घाव को भरने वाली औषध	"
घाव को सुखाने वाली औषध	"
नाक मुँह और वस्तुओं के रुधिर को रोकने वाली औषध	"

श्रीगणेशायनमः ।

# अथ मीजानुतिब्ब हिन्दी

## पहिला खण्ड

गरमी, सरदी, तरी, और खुशकी की पहचान  
और रूह के विषय में ।

### गरमी की पहचान

अधिक प्यास, जलन, देह पर जर्दी, या सुर्खी, उदक का प्रच्छा मालूम होना, सिर में भारीपन, अंगठार, जंभाई, और रीढ़ की अधिकता सुस्ती मुह में पीठापन देह और जीभ पर ठाली होगी, फुन्सियाँ और फोड़े बहुत निकलेंगे, पसड़े से इन का बहना, नकसीर बहना, हाथ पाँव गिरना, और देह का दुखना ये सबिरी की गरमी के लक्षण हैं । जो गरमी पित्त से होगी उसकी पहचान यह है, देह जिह्वा और आँसु में पीलापन, मुख में कड़वापन, जीभ में सूखापन और कांटे पड़े, नाक में खुशकी, प्यास का होना, भूल की कमी, जी भिचलाना, रोमांच का खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है ।

### सरदी की पहचान ।

प्यास और जलन का न होना, बदन का रंग सफेद या लाला होना, जो सरदी कफ से हो उसकी पहचान यह है देह की सफेदी और गरमी सुस्ती होना बदन ठंडा होना, चाब न होना, खट्टी टफार आनी, नींद बहुत आनी, इन्द्रियों का शिथिल होना, थूक का पतला और बेनखन होना, नाक से पसछा पाती बहना, जो सरदी सौदा से हो उसकी पहचान



यह है घदन का काला होना, फस्द से काला और गाढ़ा रुधिर निकलना, घदन का दुबला होना, सोच में क्या बैठ रहना, कौड़ी की जगह छुंटा होना और झूठी भूख होनी ।

सरी की पहचान ।

शरीर का नरम और ढीला होना, अधिक भूख होना, नींद अधिक होना, जो तरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है ।

खुरकी की पहचान

घदन की सख्ती और दुबला और कुरूप होना जो गर्मी पित्त और सौदा के साथ हो पहचान उसकी ऊपर हो चुकी है ।

॥ इति पहचान ॥

—:॥॥:—

अब जानना चाहिये रुधिर, कफ, सौदा और पित्त से आदमी का शरीर स्थिर है, जो कोई इनमें से घट बढ़ जाता है तो रोग उत्पन्न हो जाता है, रुधिर गर्म और तर है, पित्त गर्म और खुरक है, कफ सर्द और तर है, सौदा सर्द और खुरक है इन ही चारों १ खिन्त से एक ठहा धूँआं मकट होता है, इस में गर्मी नहीं रहती, और न मनुष्य के घदन की स्थिरता होती है उसे वायु कहते हैं, और यह बहुधा कफ और सौदा से उत्पन्न होती है और इनही चारों से जो धूँआं उत्पन्न होता है और घदन की स्थिरता और जान जिससे होती है उसको रुह कहते हैं ।

॥ इति प्रथम खण्ड ॥

१ खिन्त अर्थात् रुधिर, कफ, सौदा, और पित्त ॥

## दूसरा खण्ड ।

दवा और खाने के विषय में ।

### अध्याय पहिला ।

जो दवाओं के विषय में जो इन चारों के विगाह को खोजें जानना चाहिये कि रुधिर चार प्रकार से विगाहता है—एक—यह कि अधिक होनाय, दूसरे पतला पड़नाय, तीसरे गाढ़ा हो जाय, चौथे सड़ जाय । वह दवा जो रुधिर के जोश को यामें यह है—कासनी काहूकेबीज, धनियाँ, गुलाब के फूल, नीबू का रस, सिकण्णबीन, शर्वतचन्नाच, शर्वत सन्दल, शर्वत केवडा, और जो इनके बराबर ठही हों । जो दवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करें वे दवा यह हैं, आलूमुखारे का पानी, सोंफ का पानी, शाहदरे का पानी, सिकण्णबीन, और शाहद, अपने से देने पानी में औटाया हुआ । और जो दवाइयाँ सौदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिर को भी अच्छा करेंगी—क्योंकि सौदा के मिलने से रुधिर गाढ़ा हो जाता है, और गाढ़े बल्लगम अर्थात् कफ के मिलने से भी रुधिर गाढ़ा हो जाता है ऐसे समय में कफ का जुलाब और खट्टी दवाइयाँ दें, कि गाढ़े कफ काढ़े और कफ और सौदा के पतले होने के पीछे मूत्र खाने वाली दवाइयाँ दें जब रुधिर में बल्लगम मिश्री होगा तो फस्द में रुधिर सफेद निकलेगा और जो सौदा मिला होगा तो रुधिर कासा होगा ।

वे उपाय और दवाइयाँ कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें जब रुधिर बल्लगम के मिलने से पतला हो तो बादरगयोय, रेहां के बीज, हसराम, और जो दवाइयाँ खुरक गर्म हों और कफ को निकाले, कामलीइह कफ के निकालने को बहुत अच्छी है और पहिचान इस बल्लगम के रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिर का रंग सफेदी मिला हुआ होगा बदन का मलना और

मिहनत का करना, कसरत करना, कफ को फायदा देता है-जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला हो जाय पहचान उसकी यह है-कि फस्द से पीला कफ रुधिर पर दिखाई देगा, उपाय इसका पित्त का निकालना है और पीली हड्डि इसके लिये बहुत अच्छी है पसूर का पानी, शर्बत रन्नाब और कासनी का पानी फाड़ा हुआ और जो दवा रुधिर के जोश को फायदा करेगी वे ही दवा इसको भी फायदा करेगी-अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुँचने से खिस्त सहजाता है और झुस्वार जरूर हो जाता है और बिना गर्मी के कोई खिस्त नहीं सहता, इलाज उसका सर्द और खुरक दवा से-उचित है जो दवा रुधिर के जोश में लिझी गई है। रुधिर के गरम होने को रुधिर का जोश कहते हैं।

### विगाड़ पित्त का पाँच प्रकार से है

एक यह कि पतला कफ उसमें मिले, दूसरे गाढ़ा कफ मिले, तीसरे थोड़ा सा सौदा उसमें मिला जाय, चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिल जाय, पाँचवे पहिला और तीसरा प्रकार बहुत जलके उसमें मिले। चौथे और पाँचवे प्रकार में यह भेद है कि-चौथे में गरमी कम होती है और पाँचवे में अधिक नहीं तो दोनों एक हैं।

वे दवा जो पित्त को अच्छा करती हैं जहाँ गरमी अधिक हो वहाँ ठही दवा दें या एक दिन में दो तीन बार दें और जहाँ गरमी कम हो वहाँ कम ठही दें वे यह हैं ईसबगोल, बीदाना, कुलफा, कासनी, खोरे फफटी के बीज, सूखा धनियाँ, चंदन, काहू के बीज, कपूर, ईसबगोल का जुआष, निकाल कर दें या फफा दें इसको छूटना नहीं क्योंकि छूटने में जहर हो जाता है, और बीदाने का भी जुआष निकालें, खाँसी में खट्टी विही का बीदाना दें

कुलफे और कामनी के धीजों का शीरा निकाले और इनके पत्तों का रस निकालें कासनी के पत्तों को धोना न चाहिये क्योंकि उसका असर जाता रहता है, जो कासनी के पत्तों का पानी फाड़ले और थकेला या कुछ पिटाई या खटाई मिलाकर पीवें तो रुधिर के साफ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, कुलफे के धीज को पीसकर बहुत छानना कालक दूर करने के लिये कुछ अच्छा नहीं है, खीरा ककड़ी के धीज और बनिये का शीरा निकाल लें या पानी में भिगोकर कुटकर पीवें और यही भिगोया हुआ बहुत जल्दी असर करता है ।

चन्दन पानी में घिसकर देना बड़ी भारी गरमी का बुझाता है, और सफ़ेद चन्दन लाल से अच्छा होता है, कपूर देह की गरमी को दूर करता है, और जो कि यह बहुत ठंडा है, इसलिये सिवाय जधान आदमी और गरम प्रकृति वाले के और को न दे और ठंडे फल जैसे तरबूज आदि और सब खटाइयाँ पित्त को अच्छी हैं, और स्त्री और लड़कों और खोंजों को बहुत ठंडी दवाइयाँ न देनी चाहियें ।

पित्त को फायदा करने वाली दवाइयाँ  
कुर्स तवासीर मुलव्यन १, कुर्स तवासीर काषित २, कुसे कपूर ३, शर्षप चदन, शर्षप आलूधुसारा, शर्षत बनफसा, शर्षत नीलोफर, और ठंडी दवाओं का सू घना और लगाना भी पित्त के लिये अच्छा है और गर्मी को बुझाता है ॥

कफ का बिगाड़ भी पाँच प्रकार का है ।

एक यह कि थोड़ा सा रुधिर कफ में मिला जाय और उसके असर को बदल दे, उसको पीठा चर्चंगम कहते हैं । दूसरे नैला हुआ पित्त थोड़ा सा चर्चंगम में मिलजाय उसको खारी कफ कहते हैं और स्वभाव पित्त के बराबर होता है । तीसरे

बलगम गरम हो जाय तो उसको खट्टा कफ कहते हैं। चौथा थोड़ा सा सौदा बलगम में मिलजाय तो बसीला कफ कहलायगा। पाचवें कफ पतला पड़ जाय उसको फीका कफ कहते हैं और ये सब कफों से अधिक ठंडा होता है।

कफ को अच्छा करने वाली दवा।

सोंफ, अनीमून, मुन्हेटी, जीरा, दालचीनी, इलायची, बालछह, मुनका, विरञ्जास्फ. इनके देने की रीति हकीम की राय पर है, कफ में दवा को ओटाकर देना अच्छा है। और जब बलगम सड़ जाय तो बहुत गरम दवा न देने चाहिये खास कर खारी बलगम में क्योंकि उसमें तप बहुत होती है। औ कसूम के बीज जहाँ कहीं रगों के भीतर बलगम सड़ जाय तो बहुत अच्छे हैं। और कफ के सड़ने में जो देखें तो कुछ दवा जो पित्त में बयान हुई हैं मिलाकर दें।

कफ नाशक घनी हुई दवा।

मअजून फिलासफा, सोंठ की मअजून, माजूनसार, जवा रिश जाब्दीनूस इन दवाओं को उस समय में दें जब कि कफ सड़ा न हो और घुस्तर न हो और तप में कुर्सगुल, गुलाफिस, सिकंजवीन बज्जरी मौतदिल, बज्जरी गर्म, शर्बत बज्जरी मौतदिल और गर्म, और गुलकद देना चाहिये।

बिगाड़ सौदा का भी पांच प्रकार का है।

एक यह कि सौदा अधिक बढ़ जाय दूसरे यह कि जल कर बिगाड़ जाय-तीसरा यह कि रुधिर जल कर बन जाय चौथा यह कि कफ जल कर सौदा हो जाय। यह कि पित्त जल कर सौदा हो।

जान लो कि कोई लिप्त जब जल जाता है तो वह सौदा हो जाता है और मरतलब जलने से यह है।

सिक्की गर्मी से चढ़कर गाढ़ा रह जाता है और उसकी घिसल नहीं रहती और जलने से यह पतलब नहीं है कि जल फिर राख हो जाय और अगर कोई खिन्त सरदी से गाढ़ा हो कर जम जाय तो वह सौदा न कहलावेगा ।

सौदा ( चारदी ) नाशक दवा ।

इसोड़े, गावजर्वा, खरघूने के बीज, मुल्हादी, फनीचे के बीज, इन्जीर, मुनका, आदि जो गर्म और तर हों जो सौदा गर्म खिन्त से पैदा हों तो दवा ठही और तर देने चाहिये जैसे कुलफा, बीदाना, खीरे ककढी के बीज, आदि और नहीं तो गर्म और तर या बह दवा जो गर्मी और सर्दी में बराबर और तर हैं ।

सौदा के चास्ने घनी हुई दवायें ।

सिकंजबीन इप्तीमूनी, नौशदारु, पाजून सुकरात, याहू-ती, घूमली, मुफर्रइ दिलकुशा, शर्बतगाणर्वा शर्बतबादरमबोया आदि, और उचित है कि हर जगह गर्मी और सर्दी का भी ध्यान रखें जो सौदा सड़नाय और तप होय तो ये दवायें औदा कर दें कासनी के बीज, कसूम के बीज तीन तीन दिरम् ( दिरम् ३॥ माशे का होता है ) मुल्हादी, जररक, हरएक हो दो दिरम, नावजर्वा ५ दिरम, कन्द या सिकंजबीन के साथ और इससे पहिले चाहिये कि घुंभिज देकर खुल्लाब दे लिया हो तो जन्दी गुणकरेगा बादी के रोगों में बहुत दिनों तक दवा देने चाहिये इस लिये कि चाही दवा को देर में गुण करने बेसी है सड़े हुये सौदा की दवाइयाँ और चपाय तप में छिलेंगे ।

सूघने मलने आदि की औपधि ।

शामूम—उस खुशक या तर दवा को कहते हैं जो सूंघी जाय ।

खललखा—उसको कहते हैं कि पतली खुशबूदार दवायें भीशी या किसी बरतन में ढाककर सूंघे ।

सकत—रस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय ।

नफूक—वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जाये ।

बजूर—अर्थात् तर दवा को गले में चुभाना ।

सनून—अर्थात् र्मजन ।

कतूर—अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख में टपकावे ।

नतूल—अर्थात् धारना ।

सकूब—अर्थात् बहती हुई दवा को दूर से रह रह कर बदन पर छालना ।

इकबाव—अर्थात् भपारा लेना ।

कुमाद—अर्थात् कोई दवा गरम करके बदन को मेकदे चाहे दवा खुश्क हो या तर ।

धुसूर—अर्थात् दवाओं को गलाकर घूनी उसकी पहुंचाना ।

आवजन—अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना ।

पाशोयां—अर्थात् गरमपानीमें या औटी हुई दवामें बीमार के पांव रक्खें-भूसी छलखेरु, बनफशा के फूल बाबू के फूल, वेद के पत्ते, और घेरी के पत्ते औटावे यह उपाय सिर के दर्द और घुलारके लिये बहुत अच्छा है । पाशोये के समय बीमार को तकिया लगादे और सिर पीछे झुका रहे, और मुख के आगे परदा-ढाल दे कि आप सिर को न पहुंचे इससे खफ कान ( पागलपन ) हो जाता है ।

तमरीख—अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना ।

सिदहीत—अर्थात् बदन पर कोई तेल मलना ॥

धिरुद—अर्थात् ठडी दवायें मिलाकर आंख में लगाना

जरूर—अर्थात् खुश्क दवायें पीस कर छिड़कना ।

निमाद—अर्थात् गाढ़ी और तर दवा को बदन पर लगावे।

विला—अर्थात् तर और पतली दवा को बदन पर लगावे।

फुरल—अर्थात् सज्जन ॥

हुकना—अर्थात् किसी पतली दवा को छुदा या सूत्र की तरह से भीतर पहुँचावे ॥

शाफा—अर्थात् दवा की बची बनाकर बदन के किसी छेद में रखवे।

फलीता—अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर और बची बनाकर बदन के किसी छेद में रखवे ॥

हमूल—अर्थात् कपड़ा दवा में भिगोकर किसी जगह रखवे।

फरजजा—अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर गद्दी की तरह औरत के मूत्र करने की जगह रखवे ॥

शमम—गरम बीमारियों को फायदा करता है, सहृद चन्द्रन घिसकर सिरका और घनिये के पत्तों का रस और गुलाब मिला कर सुँघें और जो खलखला बनालें तो बहुत अच्छा है और जो नींद न आती हो तो सिरका न मिलावें और जो गरमी बहुत होय तो कपूर भी मिला दें और खीरे को काटकर और ठंडे मेंवे और फूलों का संघना फायदा करता है और जिसको हरे घनिये की सुगंध अच्छी न लगे तो तरबूज का रस या सुने हुए घीए का रस मिला दें ॥

शमम—ठंडी बीमारियों को फायदा करता है, सुरक, शंवर, दातचीनी, जुन्द घेदस्वर, लोंग, केसर, फलों की थोड़ी थोड़ी लेवें ॥

सकत—सिरकी गर्म और खुशक बीमारियों को फायदा करता है काहू का रस, नीलोफर का सेल, एक २ हिस्सा, लहू की की माका दूध दो हिस्से, बादाम का सेल या कद का सेल मिलाकर नाक में डालें और जो नींद कम आती हो तो खशखश का सेल भी उस में मिला लें ॥

सकत—सिरके ठंडे और तर रोगों को फायदा करता है



सऊन—रस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय ।

नफूर—वह खुरक दवा है जो नाक में डाली जाये ।

वजूर—अर्थात् तर दवा को गले में चुभाना ।

सनून—अर्थात् र्मजन ।

कतूर—अर्थात् किसी दवा को घदन के किसी सुराख में  
दपकावे ।

नतूल—अर्थात् धारना ।

सकूब—अर्थात् बहती हुई दवा को दूर से रह रह कर  
घदन पर डालना ।

इकवाव—अर्थात् भपारा लेना ।

कुमाद—अर्थात् कोई दवा गरम करके घदन को सेकदे  
जाहे दवा खुरक हो या तर ।

धुखूर—अर्थात् दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुँचाना ।

आवजन—अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें  
बिठाना ।

पाशोयां—अर्थात् गरमपानीमें या औटी हुई दवामें बीमार  
के पाँव रक्खें भूसी, गुलाखैरु, बनफशा के फूल बाबू के फूल,  
वेद के पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावे यह सपाय सिर के दर्द  
और बुखारके लिये बहुत अच्छा है । पाशोये के समय बीमार  
को तकिया लगादे और सिर पीछे झुका रहे, और मुख के  
आगे परदा डाल दे कि भाप सिर को न पहुँचे इससे खफ  
कान ( पागलपन ) हो जाता है ।

तमरीज—अर्थात् तर दवा को घदन पर मलना ।

सदहीत—अर्थात् घदन पर कोई तेल मलना ॥

धरुद—अर्थात् ठंडी दवायें मिलाकर आँख में लगाना ।

जरूर—अर्थात् खुरक दवायें पीस कर छिड़कना ।

इकलीलुग्मुसक, नम्माय, मर जन्जोशविरन्मास्क, सातर, सर-  
कुशगार सष परापर लेकर पानी में औटाकर तरेडावे और  
पहर चढ़ाकर पफारा दे ॥

विट-सिरकी गर्म बीमारियों में तरेडा न दे जब तक कि  
खुलाय न दिया हो ॥

नतुल-वातनाशक वायू ने फूल, इकलीलुग्मुसक, कर-  
फसके धीज और पचे राजीयाना, किरमानी जीरा, मरजन  
जोश, सोया, सातर, परापर लेकर पानी में औटावे तरेडावे ॥

कमाद-फसी हुई रही को पचावे-बाजरा और नमक  
पोटली में बांध कर मदी आग पर गरम करके सेके रेह या  
गैहूं की भूसी या गर्म ईंट से कपड़े में लपेट के सेकना भी  
लाभकारक है ॥

कमाद-जो देह को नरम करता है और दर्द को आराम  
देता है वनफशे के फूल, वायूने के फूल, सोये के बीज, पानी  
में औटा के इस्पज अर्थात् मरा हुआ पादल उसमें भिगोकर  
सेके ॥

पखुर-अर्थात् घूनी जो मस्तक और स्मरण शक्ति बर्द्धक  
है यह स्वफकान मूर्च्छा और सुस्ती को दूर करता है ऊदगर  
की, मीठा कूट, सफेद चदन एक २ दिरम, कपूर, मुरक,  
आधे २ दिरम सष को कूट छानकर गुलाब में सातकर  
गोलियां बनाकर सुखा रखते और आग पर जलाकर घूनी दे ॥

घनी-यह पसीना लाती है और पित्त रक्त के उ्वार को  
दूर करती है पहिले मुमिश देना चाहिये, सोंफ की बड़की  
छाल, सोंफ अमीठी में जलावे और पहर ओढकर घूनी है  
इससे बहुत पसीना आवेगा ॥

आषजन-देह की खुरकी और तपेदिक को अच्छा करता  
है घोया ककड़ी, कुल्फा, काहू, तरबूज, नीलोफरके फूल,  
वनफशे के फूल, जिले हुये जी, इन सष को औटाकर ऐसे

लुआ, मुरमकी, कुंदर, माजू, जुंदवे दस्तर, केसर, दोना मरु-  
वा के पानी में पीसले ॥

नफूख—मूच्छा वालेको होशमें लावे और सिरके सुहों को  
खोले नफबिकनी, कुटकी कुट छानकर थोड़ी २ नाक में फूके।

बजूर—लडकोंके पसली चलनेके रोगोंको फायदा करता  
है सातर, जुद वेदस्तर, जीरा फिरमानी, सबको बराबर लेकर  
दूधमें घोलकर लडके के मुखमें टपकावे ॥

बजूर—मिरगी वालेको होशमें लावे हींग जुन्द वेदस्तर  
सिकंजवीन, सदामें घोलकर मुखमें टपकावे ॥

मंजन—दांतोंको दृढ करता है सुरभान. लोंग. मोथा माई  
पीली हरडका बकल. सफेद चदन, गुलाबके फूल सबको बरा-  
बर लेकर मंजन बनावे जो गरमी हा तो लोंग न डाले ॥

कतूर—कानके दर्दको जो मर्मीसे हो गुण करता है रोगन  
गुल ६ दिरम, रोगन बादाम ३ दिस्म, अगूरका सिरका १०  
दिरम मिलाकर मंदी आग पर पकावे जब सिरका जल जाय  
और सेल रह जाय तो गुन गुना कान में टपकावे और जो  
दर्द बहुत हो तो थोड़ी अफीम भी मिलावे ।

कतूर—सोनाक को फायदा करता है कासगरी, सफेदा,  
कुन्दर, ईजरुत, धयूल का गोंद, निशास्ता, दम्मुल अखचैन  
बराबर लेकर कुट छान कर लडकी की मां के दूध में घोल मूत्र  
के छिद्र में टपकावे ।

नतूल—जो नींद लावे और गर्म सरसाम को फायदा  
देती है घनफसे के फूल, काहू के बीज प्रत्येक पांच दिरम  
पोस्तदाने समेत, गुलाब के फूल नीलोफरके फूल हरे धीया  
के छिन्के धायूने के फूल, दस २ दिरम, जो छिले हुए ५०  
दिरम इन सब को ५ सेर पानी में पकाकर चरेदा दे ।

नतूल—जो सिर की ठंडी बीमारियों को फायदा देती है

(६) इरकुभिसा-यह रंग गांठदार पिंडली पर है पांच के हसने से दिखाई देती है और जो यहां न मिले तो पांच की छिगुलियां और चौथी घंगली के बीच में खोलें इसी रंग क दर्द के लिये इसकी फस्द लाभ देती है ॥

(१०) चाररग-वे चार रंगें हैं जो दा ऊपर के होठ में और दो नीचे के होठ में हैं फस्द इनकी गाल नशतर से होठ के भीतर खोली जाती है यह मुख और मसूहों के रोगों को लाभ देती है । जब नशतर शिरियान को लगभावे तो उसकी पहिचान यह है कि रुधिर साफ और चञ्चल कर निकले और दिव्य शीघ्र सुस्त होता जाय जब ऐसा होतो नन्दी से रंग पर अगुली रखदे और १ चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदे और हाथ एक ऊचे तकिये पर रखदें और हिलाने न दें दस दिन तक घधा रखें ग्यारहवें दिन घीरे से खोलकर फिर बांधे इसी प्रकार से जब तक घाव न पुर जावें किया करे चिप्पी की दवायें यह हैं दम्मुल, अस्वचैन, इनरुत, फिटकिरी, किन्किता, अकीफिया, जलनार, पलुआ, कुन्दर, एक २ दिरम और बबूल का गोंद दो दिरम सप को कूट जान कर अण्डे की सफेदी में मिलाकर खरगोश के रूपें या गकड़ी के जाले में सानकर सलाई से घाव में भर दें और दूसरी ओर के हाथ और पैरों को बांध रखते इससे रुधिर हट जावेगा ।

### तीसरा अध्याय ।

सिंगी और जोंक के विषय में ।

भारी सिंगी और जोंक लड़कों के फस्द की जगह लगाते हैं दो वर्ष की अवस्था से कम में न लगाना चाहिये और चौदहवीं या पन्द्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी न लगानी चाहिये परन्तु सोलहवीं या सत्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी लगानी चाहिये स्नान करने के पीछे सिंगी लगाना बुरा है जिस

की सीध पर कीफाद के नीचे है फस्द इसकी सब देह के रोगों को लाभ करती है ॥२॥

(३) वासलीक—यह रग धोच कीवंगली के सामने अफ हल की तरह घन रोगों को लाभ देती है जो देह में गरदन नीचे उपस्थित हैं इस रग के नीचे एक रग और है जिसका हलना तथा फुदकना मालूम होता है ऐसा न हो कि इस र में मशर गहरा लग जाय ॥३॥

(४) हजलुज्जिरा—यह रग किसी के हाथ में वासलीक और किसी के हाथ में अफहल से मिली होती है अगूठे सामने कलाई के ऊपर फस्द खोलना उचित है इसकी ओर कीफाद की फस्द का लाभ परावर है और कभी २ वासली के बराबर भी हो जाता है ॥४॥

(५) इवती—छु गलिया अर्थात् कनिष्ठिका वंगली की सी पर कोहनी के बराबर है भीतरकी बीमारियों को और नीचे देहके रोगोंको लाभ देती है ॥ ५ ॥

(६) असैलम—इवतीसे मिली हुई है इसकी फस्द घाई खोलते हैं और हाथ को गरम २ पानीमें रखते हैं यह फस्द दाहिने हाथ से जिगर के रोगों को और बायें हाथ से तिल्ली के रोगों को फायदा देती है रुधिर और फैंफर्ड के रोगों को दोन ओर से लाभ देती है इस रग से दिक् और जिगर निकलते हैं इस वास्ते थोड़ासा ही रुधिर लेना चाहिये ॥ ६ ॥

(७) साफन—इस रगकी फस्द टकनेके ऊपर पाँवके अगूठे सामने खोलते हैं जो स्त्री रजस्यक्ता न होती हो उसको खोलने के लिये और घात और खुजली के लिये लाभ देती है और मवाद को सिर से निकलती है ॥ ७ ॥

(८) माविज—यह रग है जिसकी फस्द घुटनेके नीचे खोली जाती है यह साफनसे अधिक लाभ देती है पीठ गुदा और पेशाबकी जगह के रोगोंको और भीतरके दर्दकोलाभ देती है ।

(६) इरकुमिसा-यह रग गांठदार पिंडली पर है पांश के हसने से दिखाई देती है और जो यहां न मिले तो पांश की छिछुलियां और चौथी सगली के बीच में खोलें इसी रग के र्वर्द के लिये इसकी फस्द लाभ देती है ॥

(१०) चाररग-ये चार रंगें हैं जो दा ऊपर के होठ में और दो नीचे के होठ में हैं फस्द इनकी गाल नश्तर से होठ के भीतर खोली जाती है यह मुख और मसूहों के रोगों का लाभ देती है। जय नश्तर शिरियां को लगजावे तो उसकी पहिचान यह है कि कपिर साफ और छल्ल कर निकले और दिक्क शीघ्र सुस्त होता जाय जय ऐसा होता जन्दी से रग पर अश्ली रस्वदे और १ चिप्पी लगाकर और गही रस्वकर बांधदे और हाथ एक ऊचे तकिये पर रखदें और दिक्काने न दें दस दिन तक घषा रखें ग्यारहवें दिन घीरे से खोलकर फिर बांधे इसी प्रकार से जय तक घाब न पुर जावें किया करे चिप्पी की दवायें यह हैं दम्मूल, अखबैन, इमरूल, फिटकिरी, किलिकतार, अफीकिया, जलनार, पल्लुआ, कुन्दर, एक २ दिरम और बबूल का गोंद दो दिरम सय की कूट छान कर अण्डे की सफेदी में मिलाकर खरगोश के रूपें या मक्की के जाले में सानकर सलाई से घाब में भर दें और दूसरी ओर के हाथ और पैरों को बांध रखे इससे कपिर हट जायेगा।

### तीसरा अध्याय ।

सिंगी और जोंक के विषय में ।

भारी सिंगी और जोंक लड़कों के फस्द की जगह लगाते दो वर्ष की अवस्था से कम में न लगाना चाहिये और चौदहवीं या पन्द्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी न लगानी चाहिये परन्तु सोलहवीं या सत्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी लगानी चाहिये जान करने के पीछे सिंगी लगाना बुरा है जिस

मनुष्यका रुधिर गाढ़ा हो उसके स्नानसे एक घड़ी पीछे सींगी लगाना चाहिये और जब किसी जगह मवाद इकट्ठा हो तो पहिले फस्द खोलकर सींगी लगाना चाहिये सींगीके पीछे पछने लगाना सरारु फस्दकी तुल्य है कुछ नीचेको लगाना चाहिये और गरदन के माहगोंपर पछने लगाना अकहल की फस्द के समान है और दोनों मोठों अर्थात् मुठ्ठों के बीच में लगाना बासंतीक का काम देती है परन्तु पेट को और खफ कान को डुग है चाहिये कि ऊपर चढ़ाकर पछने लगावें और पिंढलीपर पछने लगाना साफन की फस्दका काम देता है और खाली सींगी बुखार अर्थात् तप और मवाद के निकालने में काम आती है जो मनुष्य पछने को न सह सके उसके नोक लगानी उचित है ॥

## ✽ चौथा अध्याय ✽

### मुंजिसके विषयमें ।

मुंजिससे कच्चा मवाद पक जाता है और मवादके पकने से यह प्रयोजन है कि गाढ़ा मवाद पतला हो जाय और जो पतला होतो गाढ़ा हो जाय जानना चाहिये कि रुधिरमें मुंजिस न देना चाहिये और जब रुधिर में और मवाद मिले हों तो मुंजिस फायदा करेगा ॥

वे औषधें जो विषको पकाती हैं यह हैं-सन्नाष ७ दाने बनफरी के फूल, नीलोफरके फूल, स्यातरा, गुलाबके फूल, हर एक दो दो दिरम कासनी के बीज ३ दिरम पानी या अरक में चारपहर का आठ पहर भिंगोवे और खाली या सिक्कंजीन तुरंजजीन या कोई और शर्बत मिलाकर पीवे छुसांदा इनही दवाओं का औटानेसे बनजाता है दवा औटानेसे उसमें गरमी आजाती है जिस रोगीको गरमी अधिक हो उसको दवा औटाकर न दे भिगे

कर व शीरा निकाल कर या असेले ठण्डे योगदे, जो तोल दवा-  
ओं की ऊपर लिखी गई है वे जवान मनुष्यके वास्ते हैं, जो बर्षा  
हो तो दवाओं का कम करदे, पित्त तीन दिनमें पकता है जो  
उष्मे किसी और दूसरे मवाद का मिलाव न हो, नहीं तो पांच  
या अधिक दिनों में पकेगा ।

सु जिस पलगमका, मूनका ५ दाने १ सौ फकुटी हुई दो दिरम  
या सौ फ भगव अनी मून हा तो अधिक फायदा करे । मुन्हैटी  
जिल्ली हुई तीन दिरम मुचकाई कुचली २ दिरम, हमराज ५  
दिरम, पीले अनीर ५ दाने, गुलाबके फूल ३ दिरम इन सबको  
झोटाच और ७ दिरम गहदका गुलकद डाल कर छानके पिलावें  
और जो २ तोल सिकमधीन डाले तो अच्छा होगा जो रोगी  
को खांसी हो तो सिकमधीन न मिलाव खारी चलगम में पित्त  
और कफ दोनों का मिलाकर सु जिस देवे ॥

और यह बात समझले हुए मवादोंमें याद रखनी चाहिये,  
झोटाया हुआ चनेका पानी कफ और घादी के पकानेका बहुत  
अच्छा है परंतु तपमें न देना चाहिये और जो तप पुरानी होय  
तो छाम करेगा जो कफ गाढ़ा या पक्का न हो, वह नीं दिन में  
पकेगा और जो गाढ़ा या पक्का हो तो पांच दिनमें या नीं से  
अधिक दिन में पकेगा ।

सु जिस सौदा का, जिहसौदे ० दाने, चन्दा १० दाने,  
गाजरवा, बादरजापोया, उस्तखुद्दस, हसराज सौफ, स्वावरा  
दो २ दिरम छोटाकर कद या तुरज धीन या गुलकद मिलाकर  
दे ये दवायें अकेली घादी की है ॥

जो घादी किसी और मवाद क जकनेसे पैदा हो तो वसी  
मवादके पकने वाली दवायें या घोदी २ मिलाकर, दे अकेली  
घादी १५ दिनमें या एक दो दिन कम पद में पकती है और  
मजबूत पकने से यहाँ यह है कि मवाद जुल्लावके जोर में जि-  
कलजाय इससे जानागया कि सु जिस का असर मवादमें धीरे-  
धीरे



होता है ऐसे रोगों में कि मांसा जनका गाढ़ा हो बार २ मुंजिस देकर जुल्ताव दिया जाता है और जब तक मुंजिस का असर अच्छी भांति मालूम न हो तो दूसरा जुल्ताव न दिया जावे कभी ऐसा होता है कि बिना मुंजिस के मवाद पक जाता है। और रोग बिना खाने दवाके जाता रहता है इससे जाना गया कि उपर्य से रोगी के दिल को मदद होती है ॥

## पाचवां अध्याय

### जुल्ताव और मुल्यन के विषय में

जुल्ताव उसे कहते हैं जो मवाद को रगों और दूर २ से खेंचता है। मुल्यन वह है जो केवल पेट और आंतों से मवाद को निकालता है जुल्ताव के देनेमें मुंजिस पहिले देना अवश्य है मुल्यन में उसकी आवश्यकता नहीं और जो मुल्यन से पहिले मुंजिस दे तो अच्छा है।

मुल्यन सुवारिक भीतर और बाहर की बहुत सी बीमारियों को लाभ कारक है। गर्भवती स्त्री बच्चों और बूढ़ों को भी पिछा सकते हैं सिवाय ज्वर के भीतरकी सूजन को भी लाभ कारक है और सब प्रकार के मवाद को अच्छा है। अमलतास लेकेर गुलाब या गरम पानीमें मलकर छान ले और जो गरम बहुत हो तो कासनी का रस या ठण्डे धीजों का शीरा उसमें मिलावे और जो पेट के भीतर सूजन होय तो हरी मकोय का रस उसमें मिलावे और पायगोले के वास्ते सोंफ का शीरा और गुलकंद मिलावे जो अमलतास की दुर्गंधि दूर किया चाहें तो सोंफ और गुलाब का मिछाना अच्छा है जो उसे अधिक चक्कड़ करना चाहें तो शीरस्त्रित असील और तुर्रनबीन मिलादे उन्नाब, गिहसोहे, बनफशोके फूल, मुनका, गाईनब आदिको भीठाकर अमलतासको उसमें घोलादे तो बहुत अच्छा

जानना चाहिये कि मनुष्य की आँतें निर्बल हो और बसे  
 परोड़ा होसका हो—तो रोगन बादाम पिलाये बिना अमलतास  
 न दे और ऐसे ही गर्भवती स्त्री और बूढ़ों को भी दें। दूध पीने  
 बच्चों को रोगन बादाम पिलाने की आवश्यकता नहीं है—उनकी  
 आँतें दूध पीने से ऐसी नर्म होजाती है कि अमलतास उनमें  
 चिपट नहीं सकता और अच्छे तरुण आदमी को सोलह दिरम  
 अमलतास देते हैं। एक दिरम साढ़े तीन मासे का होता है इससे  
 अधिक हानिकारक है ॥

अब जुल्माब का वर्णन होता है—जो बड़ी आवश्यकता के  
 समय जुल्माब देना पड़े तो उसके पहिले मुजिस नहीं दी  
 जाती—जैसे कूचन के दर्द में रात, बादल मेह और बहुत दवा  
 का विचार नहीं करते—जिस जुल्माब की दवा ओटाकर या  
 गिगो कर दीजाय उसके ऊपर गरम पानी न देना चाहिये, इससे  
 उसका असर जाता रहता है और जो जुल्माब पेट में परोड़ा  
 करे तो उसके ऊपर थोड़ा सा गरम पानी पिला देते हैं और  
 जो दवा जुल्माब के लिये गोखियां या फकी हो तो गरम पानी  
 पिलाने से दस्त आने लगते हैं और जो जुल्माबमें व्यास लगे तो  
 ठण्डा पानी न पीना चाहिये—ठाना पानी थोड़ा सा पीले, परंतु  
 गर्म प्रकृति वाले को ठण्डे पानी का डर नहीं है, और कुछ दवा-  
 इयां, ऐसी हैं—कि जिन पर ठण्डा पानी पीया जाता है—गर्म  
 पानी के देने से उनका असर जाता रहता है—जैसे शरबत  
 बर्द और दवाए जुल्माब की जिनमें अमालगोटा या तुरमुद  
 और नमक मिश्री हो। जिस मनुष्य को दवा अच्छी न लगती  
 हो उसकी दोनों घुना फसकर बांधदे और नाक पकड़ कर दवा  
 पिलावे और कुल्ली करादे दवा पिलाने के पीछे पोदीना  
 बबाना और सुघता या पान और इलाकची खाना अच्छा है।

जो इस पर भी वमनका हो तो पहिले वमन कराके जुल्माव मिलाया चाहिये और जुल्माव के पीछे सोना, न चाहिये और गुदा मज्जातन के लिये रेशाग्वसमी डाल कर औटाया हुआ गुनगुना पानी ले ॥

जो जुल्माव न हो तो उसी दिन दूसरा जुल्माव न दे, और शाफा करे आलू गुल्लारे का रस या इमली गुल्लकंद और तुरगवीन मिलाकर जुल्माव पर पिछावे इसमें अमलतास भी देते हैं इसी प्रकार मस्तगी को कूट खान कर डेढ़ दिन घुरा या मिथी मिला कर गरम पानी में फांकना बहुत अच्छा है और जो जुल्माव से मुर्चा आजाय तो जल्दी से वमन करादे जो इससे भी लाभ न हो और कोई हानि न देखे तो वासलीक और अकहल की फस्द खोलें और दो पेट और आंतदियों में गरमी लगे तो बीदाने और इसबगोल का लुग्माव पिलावे, और जिस मनुष्य की प्रकृति समान हो उसे तुलमरेहा शरबत गुल्माव के साथ दे और एक घड़ी पीछे नर्म भोजन करावे । जानना चाहिये कि घुरे जुल्माव और फस्द से गद्दी हानि होती है इसमें बीमार का धल देख कर दूसरा जुल्माव दे जिसमें जो मवाद निकालना हो निकल आवे और जो बीमार निर्वल हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्माव दो दो तीन तीन दिन पीछे दें । जुल्माव से जो बहुत दस्त आवे और उनको बन्द करना चाहै और ज्वर भी न हो चावल छाछ में मिलाकर दे और जो ज्वर हो तो तुलमरेहा शुना हुआ शुने हुए कुलफे और धारतंग के रसके साथ पिलावे और वह उपाय जो दस्तों के विषय में लिखा जायगा करे ॥

पित्त के जुल्माव की दवा यह हैं ।

पीलीदड़, इगली, तुरगवीन, वनफले के फूल, रफसन्तीन सफ

सकमूनिया भुनी हुई (१) इशकपेना, आलूबुलारा स्यातरे के पत्ते,  
 पिलुधा, जुलाब के फल, शीरखिश्त इन में से कुछ दवा चलिष्ट  
 है और कुछ निर्बल चाहे अफेली २ दें या मिलाकर और  
 सकमूनिया घे भुने न दे।

### पित्त निकालने वाला जुलाब

पीली हरद का बहुत ६ दिरम, काले आलू १५ दाने  
 लिहमोटे २० दाने, सनायमकी स्यातरा तीन २ दिरम उज्जाव  
 ८ दाने कासनी ५ बीज २ दिरम, कुसुम के पीज देठ दिरम,  
 शीर खिश्त या तुरजवीन १ दिरम से १५ दिरम तक मिगोकर  
 या औटाकर मिलावे और जो दस्त, उससे अच्छे न आये तो  
 अमलतास भी मिलादे और जब अमलतास मिलाया हो तो  
 रोगन घनफशा या रोगन मादाम एक दिरम मिलाया चाहिये  
 और कमती बढ़ती दवा की हकीम की बुद्धि पर है।

जुल्लाब की कोई दवाऐसी नहीं जो एकही मवादको निका-  
 ले जो जुल्लाब जिस मवाद को बहुत निकालता है वह उसी  
 मवाद के नाम से प्रसिद्ध है तब में एक पंखवाड़े से पहिले पीली-  
 हरद न देनी चाहिये इसमें २ इस हालकविदी हो जाता है और जो  
 आवश्यकता हो तो रोगन मादाम में उसे चिकनाले और बीदाने  
 और ईसबगोल के जुआबमें मिलाकर पिछाने तो हानि न करेगा

( १ ) सकमूनिया के भुनने की रीति यह है कि सेब या विही  
 का पेट खाली करके उसमें सस्तगी के साथ सकमूनिया रखें और  
 उसको बन्द करके फिनागों पर आटा लगादे जिस में प्यार मग्न हो  
 जाय और मिट्टी के परतन में रख कर प्यूदे या माद में रखवे जब  
 सुन जाय निकाळ कर काम में लावे ।

२ इस हालकविदी फलजे के दस्त आने को चाहते हैं ।

## कफ के जुल्लाव की दवा

बकायन के फलका बिलका, कंतूर्यून, माहीज हजम गा  
इन्बुलतील, तुबुर्द हर्मल, कडबिस फायज, कलाजी शुभ

### जुल्लाव कफ का

अयारिज फैंक, तुबुर्द सफेद इन्बुल नील एक २ दिरम ।  
कून-अनीमून डेढ़ २ दिरम नमक-और बकायन के छि  
डेढ़ २ दांग इन सब दवाओं को कूटें और सौंफ के अर्क में ।  
यह एक पूरी यात्रा युवा आदमी की है । गारीकून को कूटन  
वाहिये इस्में एकबीज नाखूनसी होती है । यह कूटे से नहा  
जाती है, इस बास्ते उसे वालों की चखनीमें छान लेना वा  
कि महीन महीने उसका निकल आवे ॥

## वादी के निकालने वाली दवा ।

कावली हरद, काली हरद, सनाय, मक्की बालगू, अर्घात  
रंजयोया इफतीमून सस्तखुददूम लाज वरद घुला हुआ  
) हमर अरमनी आबला ॥

## जुल्लाव वादी का ।

अचारिज फेकरा पांच दिरम इफती मून दस दिरम लानः  
[ घुला हुआ साठ दिरम हजार अरमानी नौ दिरम, सकः  
या सुनी हुई, बकायन का बककल, काली खरबक दे  
दिरम सुबलु तवीव, अनी मून एक एक दिरम सबे को  
छानकर करफस के पानी में साज कर गोलियां बना रखें  
ी माथा ढाई दिरम है ।

## दूसरा जुल्लाव

वादी की बीमारियों को छान देता है कालीहरद दो तोले ११  
बिसफायज, अर्घात खंघाली १ तोले ५॥ माशे इफतीमून  
२ ओकाशवेला २ तोले ७ माशे, सनाय मक्की २ तोले ४ रची  
खुददूस अर्घात रुदाजर २ तोले ४ रची, गुलाबके फूल १ तोले  
१०, गादमर्षा १०॥ माशे बालगू १०॥ माशे, अनी मून अर्घात  
१० रुची ७ माशे, सौंफ ७ माशे कालीकुटकी २ दमिसिफेद  
२॥ माशे सौंठ १॥ माशे इन सबको औटावे और खनी हुई  
इन, इनर अरमनी मिला निफती अर्घात नमक निफती दो दो  
कुचल कर पकते में गिलावे और छानकर पिये जो अधिक

लाजवरद के घोंने की यह रीति है कि काजवरद को मंईन पीच  
नी में औटावे और थोड़ासा जेतून का तेल डाले फिर मिठाई  
पीछे बहुत सा पानी डाल कर धीरे धीरे घोलें और दहीम  
सदे बरतन में निकाळ कर उस बरतन को छक कर थोड़ी देर  
जो लाजवरद मितरकर बैठ जावे उसे निकाळ कर सुखालें  
छार सप घोलें ।

पुष्ट करना चाहे तो वक्रायन के वक्रल और पलुभा, सकोती और बहादे ।

जिसद्वयमें आकाशज्वेल शक्ती होती, दवाओंके औदनमें उसको पोटलीमें बांधकर डालें और जन्दीमें उतार व ध्यानकर पिलादे हुकना और शाफा भी मवादके निकालने के लिये अच्छा है परंतु हमारे देशोंमें हुकने की रीतिकम है और जोबट वैद्यक की रीतिसे नहो तो हानि करता है, इसलिए इसका वर्णन यहाँ नहीं किया जाता और शाफा हुकने की जगह किया जाता है उसका वर्णन यह है कि जब जुल्माव दिया जाय और अपना असंन करे तो शाफा करना उचित है और कूलजमें जब तक शाप से मवादको न निकाल सकें जुल्माव न पिलावे और ऐसाही वक्र कूलजमें जब तक आवश्यकता नहो तब तक शाफा न करे वयं किशाफा बहुत करनेसे पवासीर उत्पन्न होती है इसजगहबहुधा शाफे अच्छे अच्छे लिखे जाते हैं ।

१ शाफा-जो कूलज की बीमारी को अच्छा करता है और दस्त लाता है इसे तपमेंभी दसक्ते हैं वनफशाके फूल ७ माशे, सनाय ७॥माशे, हिन्दुस्तानी नमक अर्थात् खारीनोंन ३॥माशे, अमलतास का लुआव ३५माशे लाल शक्कर ३५मासे लेकर शाफा बनावे इसकी लम्बाई रोगीके ६ अंगुल की होनी चाहिये ।

२ शाफा-जो जुल्मावके पीछे दिया जाता है जबतककि उसके प्रभावमें देर हाजाय, यह गर्म प्रकृति वाले को अच्छा है तुरज चीन १७॥माशे, सावन ईलाकी ७माशे, खतमी ७ माशे, सोभर नमक ७माशे, लाल शक्कर १७॥ माशे इनऔपघों को कुट्टवान कर शाफा बनाले ।

३ शाफा-जो जन्दी प्रभाव करे एक टुकड़ा सावन का छुहारेकी (१) लुडके दस्त न हो उसे कन्न कहते हैं ।

पुठली की बराबर लेकर पालाने की जगह में रखले और जो पुत गगन से चिकना करलें तो अच्छा होगा ॥

४ शाफा—लडके और बूढ़ों को लाग करवा है मोम ७॥ माशे, नमक ५॥ माशे, घूरह अरमनी ५॥ माशे, इन दोनों को मोम में मिलाकर शाफा बनायें और गुल रोगन में चिकना करके काम में लावें ॥

## छटा अध्याय ।

घमन लाने वाली औषधियों के विषय में ।

पहले घन सपार्यों का वर्णन किया जाता है, जो घमन (अर्थात् चकटी) से पहिले अवश्य है भानलो जय घमन का काम रहे तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म मोजन करें और जो गरमी या और कोई बात न हो तो सुगंध वाला तेल मलें और जिस दिनें घमन करै तो पहिले मूग की दाल या चावल पतली हरकें पीवें और थोड़ी देर पीछे घमन लाने वाली दवा पीकर घमन करै और जिसके मिनाम में तरी हो उसको पहिले दाल चावल खिलाना न चाहिये और जिसको कठिनता से घमन आती हो उसे तीन तीन दिन गर्म जगह में रखें और देह पर तेल की मालिश करै और भातिर के मोहन करावे इसके उपरान्त चकटी करै और चकटी करने के समय सीधा बैठे और पेट तथा कमर को दाबले बहुत घुमा मनुष्य खड़े होकर घमन करते हैं और ऐसी घमन पेट की जड़से मवाद को निकाल लायी है और चाहिये कि घमन दो बार या द्वािीर देर के पीछे की जाय इससे बेचकृता पेट निर्मल होजायगा और इस के पीछे गरमी में गर्म



ठंडे मिर्जाज वाले को हाथ में गर्म पानी से धोना चाहिये और शहद की सिकनबीन से कुन्नी के पीछे मस्तगीर ॥ माशे पीसकर शक्कर के साथ या बिना शक्कर के सेब के अर्क के साथ पीये और जो मस्तगी की जगह गुलफद, इतरीफल सगीर हो तो गीदर नहीं है और जो औषधों की तेजी से हिचकियां आने लगें तो थोड़ा गर्म पानी पिलावे और छींक लाने का उपाय करें और जो वमन के पीछे छाती और पसली में पीड़ा होजाय या पेट फूल जाय तो गुल-रोगन या वाघुने का तेल मले और गर्म पानी की चारदे और जो वमन की तुरत आवश्यकता हो तो इन बातों के बिना ही वमन करना चाहिये और जो पित्त के खाने पर वमन कराना पड़े तो उसे पेट से अच्छी भांति निकालना चाहिये ।

**वमन द्वारा पित्तों को निकालने वाली दवा ।**

सिकनबीन कन्दी १० मिसकाल, पातक का अर्क ४० मिसकाल, जौ के ओटाये हुए पानी में या खुबामी के पानी में घोल कर गुनगुना पिलावे ॥

**वमन में बलगम को निकालने वाली औषध ये हैं ।**

मूलीके बीज ७ माशे, साये के बीज ३॥ माशे, खारी नमक २॥ माशे सब को कूट खान कर शहद में मिला के, खिलावे जो वमन आप से आजाय ता अच्छा है, नहीं तो ऊपर से गर्म पानी पिलादे ॥

**वमन द्वारा बादी को निकालने वाली दवा ।**

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदे फिर उसकी सिकनबीन में राख भर दाख रखे सवेरे खिलादे और ऊपर से सिकनबीन सोपिया के पानी में घोल कर पिलावे ॥

(१) मिसकाल ४॥ माशे का होता है और बाजे ३॥ माशे का

वमन द्वारा कफ पित्त को निकालने वाली दवा ।

शहदकी सिकनधीन १० मिसकाल, खारी नमक २ मिस-  
काल, मूली का अर्क ४० मिसकाल मिलाकर गुनगुना करके  
पिलावे ॥

घमन द्वारा पित्त कफ और वादी को  
निकालने वाली दवा ।

मुलहठी ५ मिसकाल, सोये के बीज ५ मिसकाल, खुग्गाभी  
; बीज और जौ, हर एक ३ मिसकाल, सय की एक कटोरे  
नी में औटावें जब पानी आधा रहजाय तब उसमें आकाश  
त का अणवत १० मिसकाल डाल के और अंगूर का सिरका  
लाफे और गुनगुना करके पिलावे और वमन करादे ।

जबतक सलटी कराने की अत्यन्त चाहना न हो तबतक काली-  
टकी न देना चाहिये, क्योंकि वह विष है, और वस्से खुसाक  
स्पन्न होता है और इसी प्रकार जिसने वमन न की हो उसे  
ना आवश्यकता वमन कराना न चाहिये ॥

सातवां अध्याय ।

मूत्र द्वारा मवाद निकालने वाली दवा ।

इस प्रकार की औषधें मवाद को रगों के अन्दर से निकाल  
में बहुत काम आती हैं परन्तु जब मवाद बहुत हो तो जब  
फल्द या जुल्लाव न देंगे इन औषधों को काम में न लावें  
हकीमों ने कहा है कि जो मवाद भिन्न के पीछे हो तो उसका  
निकालना, इन औषधों से अशुद्ध है पेशाब के जारी होने से  
पसीना, और अस्त रुक जाता है इसी प्रकार दन्तों के जाने  
से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूधरी और ये निकल  
जाता है, इन औषधों से पतला मवाद निकलता है, इसलिये  
चाहिये कि जब तक तरीका रोग न हो इन औषधों को न दे,  
इसलिये, इस्त्रिंसका, (अर्पान् जलधर) फाजिक, जोरों के दर्द में

इन्हीं औषधों को देते हैं और मवाद के पकने से पहिले इनको न देना चाहिये ॥

**पेशाव लाने वाली ठंडी दवाइयां ।**

कासनी—खीरे ककड़ी के बीज सिफजबीन लोकी अर्थात् घीया का अर्क, कुलफे के बीज, गोखरू, काकनज, तरबूज का पानी आदि ।

**गर्म औषध ।**

कंफस के बीज, सौंफ, जीरा, विरन्जार्क, सूखा हुआ जूफा अनघायन, गान्गर के बीज, सुदान, कषाया आदि ।

**मौतादिल अर्थात् वह औषधि जिनमें सरदी**

**गरसी बराबर हैं यह हैं**

हंसराज खरबूजे के बीज, ठंडी और गरम औषधों का मिलाकर देने से भी यही बात होती है ।

**पेशाव लानेवाली मौतादिल औषधि**

जीरा, सौंफ हर एक सातमाशे, कुचलकर एक प्याले पानी में औटावे जब पीनेके अनुमान रहजावे तो उसे छान ले और खीरे ककड़ी के बीज, और खरबूजे के बीज हर एक साढ़े दस माशे, पीसकर इसमें मिलादे, और मिश्री मिलाकर पितादे, यह दवा मवाद को बहुत निकालती है और बन्द पेशाव को जारी करती है और जो, जीरा और सौंफ को कूट छानकर पहिले फांक ले और ऊपर से खीरे ककड़ी और खरबूजे के बीज पीसके पीवे तो भी यही फायदा होगा ॥

**बन्द हैज को जारी करनेवाली औषधि ।**

तन, कछौली दोमिसकाल, अवहाल, शुन्दवेदस्तर, हर एक ७ माशे, सब को कूट छानकर दुगुणें शहद में मिलावे, और एक पिसकाल से दो पिसकाल की गोली घाँघ ले और

एक गोली निगलकर ११ तोले ८ माशे सोंफ का अर्क पीवेजो  
बन्द होनेका कारण रुधिर की कमी या मित्राज की गर्मी न  
होगी तो यह औषध लाभ करेगी नहीं ता हानि ।

**जोशांदः** जो हैजको जारीकरे और पुरुषका वीर्य  
जो ठण्ड से रुका हो उसे निकाल दे ।

अफसनतीन (अर्थात् सवाक) दुरमनय तुर्की, तुरमस,  
मुदाव, सोंफ, कफसके बीज, हर एक ७ माशे ईंजीर ३ गुल-  
कन्द १० मिसकाल, सबका औटाकर और गुलकन्द मिला  
कर बराबर तीन दिन पिलावे, और फिर तीन दिन पीछे  
फिर पिलावे, जिसमे यवाद अच्छी तरह से निकल जावे और  
हैज जारी करने वाली औषधों को रमस्वला होने के दिनों में  
पिलावे इससे बड़ा लाभ होगा ।

### आठवां अध्याय

उन औषधोंके वर्णनमें जो दिल और सिर और  
जिगर और मेदे को पुष्ट करती हैं ।

सिरकी पुष्ट दाता ठण्डी औषधें यह हैं मोती, आमला,  
बिही, सेव और अमरुदके हरेफूल, गुलाबके फूल, गुलाब, नारंगी  
और गर्म यह हैं, बलादर, फन्दक, बालगू, सोंठ, नागर  
मोषा बालझड़, मुरक, ऊद, अम्बर, गालिया, लोंग, कुन्दर,  
अबहर का तेल, भेड़ी का दूध ॥

दिलकी पुष्ट दाता और मसज्जता करने वाली ठण्डी दवा-  
इयां यह हैं, नाशपाती, मोठाअनार, आमला, इमली, सेव,  
चन्दम, बसलोषन, गिलेमखतूम, रायभास, बसद, कइरवा,  
कपूर, गाँठ जुवां, धनियाँ, गुलाब के फूल, मोती, नीलोफर,  
नारंगी, हरद याकूब चांदी के धरक ॥

गर्म यह है, सोने के बरक, इतरज बिलके, वस्तुखुददस, अवरेशम सफेद यहमन लात यहमन बिसफायज वाल जगती तुलसी, निरविमी, दालचीनी, नरकथूर, दारुनज जाफरान सुम्पुल नागरमोथा, तज शकाकुल ऊदगर की, अम्बर फिरमन मुरक ऊदसलीब इलायची पोदीना, लाभवर्द ।

जिगर की पुष्टि दाता उणहो औपधे यह है कासनी, जरि-  
शक, अनार ॥

गर्म यह है छडीला, अजफाकस्तीब जायफल, इम्माया, हवर बिलसान, दालचीनी, गाफिस, लोंग, तज, फसशू रुमी मस्तगी

जानना चाहिये कि जिगर की कमजोरी बहुधा सरदीऔर  
सरी से होती है । इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औपधे यह है

मेदेकी पुष्टिकारक उणदी औपधे यह है आमला अनार-  
दाना समक, बहेडा, हर्द और हर्दका मुरब्बा, विही, बसला-  
चन, गुलाब के फूल ॥

गर्म यह है सरकंडे की टडी, नारंगी के बिलके, बालगू,  
जायफल, दालचीनी, जरम्बाद नागरमोथा, तज सान्निज  
हिन्दी लोंग, इलायची, कुन्दुर रुमीमस्तगी, मशकत राम-  
शीह पोदीना ऊदगर की ॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे को पुष्टि कारक है वह  
अतद्वियों को भी पुष्ट करती है, और जा औपध दस्त लाती  
है वह मेदे को कमजोर करती है परंतु हर्द दस्त भी लाती है  
और मेदे की पुष्टिकारक भी है और सनाप को भी बहुत से  
लाग मेदे की पुष्टि कारक कहते हैं ॥

## सिर के रोगों का वर्णन ।

### पहिला पाठ ।

जो दर्द रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द सरारु ।  
सिर के पीछे सींगी लगावे और थोड़ा ही रुधिर निका  
नीबू का शरबत पिलावे और रुधिर लेने के पीछे ना क  
रे, जुद्ध अहामिग. या मुक्तप्यन मुखारिक और जो बी  
के लिये लाभदायक है काम में लावे ॥

और पित्त की पकाने वाली और ठीक करने वाली औष  
वे इसके पीछे जुल्हाब उसी का दे, और सफेद घदन ।  
निर्वा के साथ पीस कर सिर में लगावे ॥

और जो कफ अधिकता से हो तो कफ को ठीक करें औ  
को औटा के शहद डाल कर पिलावे और कुस्त का ते  
पर मले और मुन्नस और जुल्हाब कफ काटे और वेदा  
की जड़ और सौंठ को पानी में घिसकर लगाना अच्छा है ।  
और जो वादी की अधिकता से हो तो वादी को ठीक क  
ससकी मुन्नस और जुल्हाब दे बाबुने और बादाम क  
मिर में मले ।

जो दर्द इन मवादों से हो वसमें पाशोया बड़ा लाभदायक  
है ॥

ऐसी पीड़ा में सिर को दबाना नहीं चारिये क्योंकि इससे  
तो बदन बहुत टै परन्तु अतमें दुःखदायक है इसकी जगह  
को दवावे और तलुओं को मले परन्तु जो सिर को केवल  
से पकड़े तो दर नहीं और जुल्हाब के पीछे हीलेर दबाना  
लाभदायक है ॥

जो पीड़ा-अकली, गरमी या अकली सरदी से हो

जुल्लाव की आवश्यकता नहीं जो गर्मी से हो तो ठंडाई पिलावे और सरदी से हो तो गर्म औषधें दें ॥

और जो सिर की पीड़ा किसी और रोग के कारण से हो तो पहिले उस रोग का उपाय करे ॥

( आघासीसी की पीड़ा ) आघे सिरमें होती है और देर में जाती है उसका उपाय वैसे ही करना चाहिये जैसे कि ऊपर लिखा गया है ।

और इस औषधि का सिरमें लगाना गुणदायक है, बचल का गोद ३॥ पाशे, अफीम १॥ पाशे, केशर ७ रत्ती पीसकर गुलाब में मिलाकर कागज पर लगावे और कनपटी पर चिपटा दे और इस रोग का जल्दी उपाय करे नहीं तो दृढ़ हो जाने से कठिनता से दूर होता है ।

बहुत से लोग सिर की पीड़ा में अफीम आदि का लोप करते हैं इनसे पहिले तो तुरन्त चैन पड़ता है, परन्तु इकीमों ने इनका लगाना नहीं बतलाया है, और जो अत्यन्त आवश्यकता हो तो अफीम के साथ केशर या धावूना मिलादे ॥

सिरकी पीड़ा में जो गुलाब सिर पर डाले तो इतना डाले कि सिर भीगा रहे नहीं तो हानि करेगा ॥

जो सिर की पीड़ा बाले की नकसीर फूटे तो उसे धन्द न करे क्योंकि यह उसके लिये अच्छा है परन्तु जब रुधिर अधिक निकले और उससे कमजोरी बहुत पैदा हो तब धन्द करना चाहिये सिर के रोगों में नाक या कान से पीप का निकलना बहुत अच्छा है ॥

## दूसरा पाठ २

सरसाम के विषय में

सिरके रोगों का उपाय

साम कहते हैं ॥ जो वह रुधिर की अधिकता से हो तो उस का चिन्ह यह है कि रोगी के मुख पर इसीसी मालूम होगी ॥

और जो पित्त की विशेषता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी को भू भूखाहट और चिड़चिड़ाहट होगी ।

और जो कफ से हो तो उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा ।

और जो घादी से होतो रोगी चौकथा मालूम होगा बादी से बहुत कम होता है, और जो २ चिन्ह हर मवाद के लिये हम पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सरसाम में पाये जायेंगे ॥

सरसाम जो रुधिर से हो उसे करानीतुम कहते हैं और पित्त वाले को करानीतुस खालिस और बछगमी को लीसरतुस कहते हैं ॥



सरसाम में भी फस्द को अच्छा लिखा है परन्तु इन दोनों में  
रुधिर कम निकालना चाहिये ।

बढ़ना और घटाना सरसाम में अवश्य है परन्तु कभीर  
बिना सरसाम ऐसा होता है । जैसे कि घारी के तप में चारों के  
समय और किसी पीड़ा या रोग की अधिकता में इसको सर-  
साम नैरहकीकी कहते हैं, जब वह रोग जाता रहता है तो  
बढ़ना और घटाना भी जाता रहता है इसलिये यहिसे  
वस रोग का उपाय करना चाहिये ॥

### तीसरा पाठ

#### जुमूद के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य बैठा हो तो बैठा रह जाता है  
और जो खड़ा हुआ हो तो खड़ा और सोता हो तो सोता और  
खड़ा होता खड़ा रह जाता है, कारण इसका यह है कि बादी  
सिर के पीछे गिरती है और वहीं बन्द होके रह जाती है, उपाय  
इसका यह है कि बेहोशी के समय कोई गरम खाफा या बादी  
के निकालने वाला हुकना करें । और शब्दों के फूलों का तेल  
और बादाम के तेल में सोंठ, या जुन्दवेदस्तर, मिलाकर  
सिरपर मलें और जब होश होनाय तो मुञ्जिश और सौदा  
का जुल्काव दें । और गर्म और तर लिखावें, और सिरके पीछे  
घोंप रोगन लगावें, जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द  
भी करें, और पिटलियों पर सींगियां लगावें । फस्द का नखर  
गहरा दें, परन्तु रुधिर कम निकालें ॥

### चौथा पाठ

#### सकते के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य खड़ा हो तो खड़ा रह जाता है

जाता है, और मूर्दे की तरह चिरा पड़ा रहता है, जो रक्ता-  
म जाता होता इसका कारण यह है कि सिर के सब परदे  
बन्द हो गये होंगे जो यह रुधिर की अधिकता से होती फस्ते  
सरासू करें नहीं तो ऊफ के निकलाने वाले हुकने और शाफे  
हैं और सिरके बाह्य काट कर सिर को सेटें, और नफूख और  
सज्जत काम में लावें और जो किसी प्रकार उलटी होसके तो  
बहुत अच्छा है, और हाथ पाँच का मलना और जोर से बाँचना  
भी लाभदायक है, सिरपै पड़ने लगाकर उसपर पारा मलना  
या बछनाग, पीस कर मलना अच्छा है और भय होश आ-  
जाय तो कफ की मुञ्जिशा और शुल्काय दें ।

इस रोग में जब दम जाता जाता मालूम न हो तो ज़ंता  
होना असंभव है परन्तु जिसमें दम जाता जाता हो उसका  
अच्छा होना भी अति कठिन है इस रोग में और मृत्यु से यह  
अन्तर है कि इस रोग वाले की पुतली में परछाई दिखाई देती  
है, और मूर्दे की आंख में नहीं दिखाई देती, चाहिये कि रोमी  
का तीन दिन रात दाइ कर्म न करें किन्तु उसके अच्छे होने  
की आशा नहीं है, परन्तु परमेश्वर की कृपा से अच्छा हो  
जाय तो क्या आश्चर्य है और जो देह नीली होजाय तो  
उसका उपाय न करें ॥

### पाँचवां पाठ

#### सवात के विषय में

स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसीको  
सवात कहते हैं, कारण इसका यह है कि सिर में तब अधिक  
होमाती है, चाहे अकेली तरी हो या उसमें बलगम और रुधिर  
का मवाद भी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसा ही  
शुल्काय दें, और सिरका घ घाजें, खुरकी लाने वाली दस्त

और इतरीफल खिलाना बहुत लाभदायक है, और इसका कारण मेदा का खुलार होना है। चिन्ह इसका यह है, कि पहिले बंदहज्मी हुई होगी, और भ्रूण के समय कमती पालूप होती होगी, उपाय इसका यह है कि पेट को साफ करें, और इतरीफल करने ली जा खिलावे और सूखा धनियाँ कूट खाने के पीछे फकावें।

### छठा पाठ

#### सहर के विषय में

सहर उस रोग का नाम है जिसमें स्वभाव से विशेष गर्जुष जागे और नींद उसे थप आवे कारण इसका सिर में खुरकी, होजाना है, चाहे वह अकेली हो या चर्म बादी और पित्त और सारी कफ मिला हो, जो यह रोग अकेली खुरकी से हो तो सिरको तर रखें और खाने पीने और सूघने में तर वस्तुओं को काम में लावें और जो यह मयाद से होतो उसी का जुल्लाव दें और सिरका कभी न सुंघावें क्योंकि यह नींद को बहुत खोता है, निद्रा खाने वाली औषधें यह हैं, हरा सोया सिरहाने रखना और कफ वाले सहर में सिरपर भी लेपटना और नार्जधु गुलाब में भिगोकर सूघना और लम्बलत्वा हरदम पास रखना अफीम और बनफश के तेल को मिलाकर सिरपर मलना।

जब आगने का कारण तप हो तो पहिले उसका उपाय करे और सिरपर तेल मले और पाशोया करके हाथ पांव मले ॥

### सातवां पाठ

#### सवात सुहरी और सहर सवाती के विषय में

यह वह रोग है जो सहर और सवात के से होता है और बहुतसे ॥ यह के इकठे विषय

और कफ से दिमाग में सूजन होनाने से होजाता है चिन्ह इस रोगका यह है, कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहती है और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करता है और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग में कफता और बगले पयर जाना अग्रग्य है आ निद्रा अधिक होतो इसे सपान सहरी कहेंगे और जो जागना विशेष होतो सहर सुवासी कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत कम देखा गया है जो ऐसा हो तो पहने वाला जिस शब्द को चाहे पहिले बहे सच ता यह है कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परन्तु सूजन में यह रोग हो सकता है ऊपर के दो पाठों में जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिलाकर सुचावे और जिन समय पित्तों की अधिकता से हो तो ठण्डा वस्तु सुचावे ऐसे ही और उपाय लाने ॥

और जब यह रोग भेजे की सूजन से हो तो वह उपाय करें जो कफ और पित्त के सरसाग में ऊपर लिखा गया है ॥

**आठवां पाठ ।**

**काबूज के वर्णन में ।**

यह वह रोग है कि मनुष्य सोते में घुरे २ स्वप्न देखता है जैसे कि कोई भारी चीज उस पर गिर पड़ी वा किसी ने उसे दबाया और वह घबराके बराने लगता है, जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द सरारू करे, और पिंडलियों पर पड़ने लगावे, और गोमन कम दें, और जो बलगम वा पादीकी अधिकता से होतो उन्हीं का पुनःस्थाप दे, और इस रोग का उपाय सुरन्त करे नहीं तो मृगी हो जायगी ॥

## नवां पाठ ।

### मृगी के विषय में ।

यह वह रोग है जिसमें मनुष्य अचेत होकर गिर पड़ता और मुख और हाथ पाँव टेढ़े और खिंचे रह जाते हैं, और तड़फा करता है, इस रोग में सिङ्का घेँझ होना और जी की रगों का हरा होना अपश्य है। कभी यह रोग घरी होता है जो इसकी घरी बहुत होती। युग है परन्तु बालकों कभीर ऐसा देखा गया है, कि एक दिनमें आठर बार आ है और फिर ऐसी चली जाती है कि कभी नहीं होती चप इसका यह है कि घरी के समय वह चिकित्सा करें जो मुख होती है, और कोई वस्तु या कपड़ा लपेट कर उसके मुखमें रें, कि वह अपनी जीम चवा न डालें और हाथ पाँव उस अकड़ दें, कि चोट न लगे और जब होश में आवें तो मवाद हो बैसा ही जुल्लाव दें, और तर में और दूध दही खिछावें और ऊदसलीव, का गले में लदकावें और नास दूसरे स्रद में लिखा गया है सुधावें ॥

बच्चों को जो पसली का रोग होता है वह भी इसी मा से है। उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये बिना कारण के जाने अधिक गर्म और अधिक ठदी औपन दें और दूध पिलाने वाली की दुशायारी रखें कि हानिका वस्तु न खावे। उससे भोग न करे कि इससे दूध बिगड़ जा है और बच्चों को कब्ज होतो शाफा करें ॥

## दसवां पाठ ।

### माली खोलिया के वर्णन में ।

यह वह रोग है कि मनुष्य को अच्छी घातें नहीं सुंझती यह घातें मध्य पक्षी के लो

और झंझकार और घमट और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं ॥

जैसा मनाह हो उसके अनुसार जुल्लाव दें और दिलकी खुश करने वाली वस्तु और नोशदाह खिलायें, और भोजनमें ऐसी वस्तु खिलाना और थोड़े-दिन पीछे कईवार जुल्लाव देना अधिक लाभदायक है और जानना चाहिये कि ऐसी रोगों में उपायका काम बहुत कालके पीछे परपक्ष होता है घबराने नहीं ॥

ग्यारहवां पाठ ।

जुनून के विषय में ।

यह रोग कई प्रकार का है जो इसमें मद्योष और क्रोध भाषा नाय तो, मानिया कहलावेगा, और जो हसी-खेल और सवाना हो तो उदात्त कम्ब कहेंगे ॥

और जो मनुष्य से न मिले भुले तो कुतरवव कहते हैं यह रोग माली खोलिया से बढ़ कर है उपाय इसका वैसा ही करें जो मालीखोलिया का है और हिन्दियों का दूध दुह कर नाक में डालें और बनफशे और सादाम का तेल सिर पर मलें और पेह पर गर्म पानी डारें और मनाह पकनाने के पीछे माजून सुमार, खिलायें ॥

बारहवां पाठ ।

सदर और दब्बार के विषय में ।

जब मनुष्य खड़ा हो या चले और आँखों के तले व्यंगेय आभाय हो उसको सदर कहते हैं ॥

और जब यही बहुभाय और सिर मूयमे लगे हो अर्द्धदब्बार है जैसा अवाद हो वैसा ही जुल्लाव दें, जो अवाद सिर में हो तो सिर में भी कोई रोग माजून होगा, और जो अवाद

पेट में होगा तो नी मचलायगा और पेट में कोई रोग होगा संचित हो पैसा ही सपाय करे, और जो कमजोरी के सिर घूमें तो भोजन में हलफ़ी और दिल, खुरफ़ करने वस्तु खिलावे, और मोतियों को पीसकर, नीबू या चदन, अमर के शर्बत में मिलाकर चमाके और जो सिर में सरदी चने से सिर घूमे तो सेक और गन्ध लेप लगावे और मसाला पटा हुआ भोजन खिलावे ॥

तेरहवां पाठ ।

निसयोन अर्थात् भूल जाने के रोग के वर्णन में

बहुधा इस रोग में वल्लगम या दादी अधिक होनाती है या मिनाज में अकेली गरमी बहुत होनाती है, कफ और घा के मवादमें मुञ्जिनस देकर, हठ्ठ फोकाया, आदि खिलाकर सफ़ा करे, और माजून फिलासफ़ा और बज और सोंठ व भूरब्बा, कुन्दर, और शकर मिलाकर खिलावे और ठंडे पानी बचते रहें और सौदाबी में तेल सिरसर मलें और जो यह रोग अकेली गरमी से हो तो ठंडी और तर वस्तु काम में लावे ॥

चौदहवां पाठ ।

फ़ालिज के विषय में ।

यह वह रोग है कि आधा पदन लुम्बाई में हिलता भुलता नहीं है, बहुधा इसका कारण कफ़की अधिकता है, और कर्म रुधिर से भी होता है । कफ़में चार दिन तक पुष्ट औषधें न देवे और खाना पीना बिछकुन चन्द करदे । और जो भ्रूम न रुक सके तो, जीरा और दालचीनी औटा के दे । और पानी की जगह, मानस, मल, पिलावे फिर सोने के चूने के

ती मुञ्जिश पिलानों, और ६ दिन या चौदह दिन के पीछे मग  
ह मवाद पक जाय तो जुल्ताव दें, और जुल्ताव के पीछे कूट  
तेल मलें और, अवारिशविलादर, और तिरयाक करीब,  
और ममरोदी तूस, विलाना बहुत लाभदायक है, और जु-  
ल्ताव के पीछे, मुरक, और कुन्दश, फिलफिल, नौसादर, पीस  
त सु घावों और गर्म पानी बदन पर न डालें, क्योंकि वह इस  
रोग के लिये ठण्डे पानी से अधिक हानिकारक है, जो फाल्तिज  
सार्वरुधिर की अधिकता हो तो, फस्द भी खोल सकते हैं  
और जो यह रोग, गरमी से हो तो गर्म औषधें न देना चाहिये  
हिले गर्मी को दूर करलें, फिर इसका उपाय करें। और जो  
फाल्तिज रुधिर की सूजन से हो तो पहिले फस्द खोल कर  
सका उपाय करें ॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना भुलना बढ  
गया हो तो उसको इस्तिस्खा कहते हैं ॥

### पन्द्रहवां पाठ

खदर के विषय में

मनुष्य की देह में कोई जगह सुन पड जाय उसे खदर कहते  
जा, यह रोग रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलें,  
और भोजन कम दें, और जो कफ की अधिकता से हो तो कफ  
त जुल्ताव दें, और जो खुश्की से हो तो उसका चिन्ह और  
पाय आगे लिखा जायगा और जो दूध जाने और जो रस  
चिने के कारण से हो तो उस कारण को दूर करें ॥

### सोलहवां पाठ

लकवे के विषय में

इस रोगमें मुख टेढ़ा हो जाता है, और कारण इसका खिंच  
जाना या ढीला होजाना मुहकी एक ओर का है ढीलाहोजाना

भी लिखि है



कफ से होता है, बिन्ह उसका सुख होना, और जीभके  
 में फर्क पड़ जाना और नीचे की पलक और तालू का  
 आना है, और खिच जाने का बिन्ह थूक का कर्म होना और  
 पाये का खिच जाना है। ठीले होजाने में फाल्तिज का उपाय  
 करे, और खिच जाने का उपाय आगे लिखा जायगा, ज  
 तक चार दिन या सात दिन न व्यतीत हो जाय, कुछ उपाय  
 न करे, और भोजन बन्द करदे, और जो हो सके तो पानीमें  
 न दे, और अधेरी जगह में बिठावे और चीनी आईना आ  
 रख दे, कि रोगी हर दम उसमें अपना मुख देखा करे, औ  
 जायफल मुख में रखवावे और कित्त की जड़ की छाल ज  
 माउल अस्त में ओटी हुई हो उससे कुन्ली करवावे, और ज  
 रुधिर की अधिकता से होतो फस्द भी खोल सकते हैं इस रोग  
 के उपाय में देर करनी न चाहिये, जो तीन महीने व्यतीत हो  
 जायगे तो मुंह सीधा न होगा ॥

चीनी आईना चांदी तांबे और पीतल को मिलाकर बनाते  
 हैं इसमें मुख देखने से जार पड़ता है, इस कारण मुंह सीधा हो  
 जाता है ॥

## सत्तरहवां पाठ

### तशन्नुज के विषय में

‘तशन्नुज’ किसी जगह के खिच जाने को कहते हैं जो कारण  
 उसका कफ की अधिकता हो तो उसका नाम ‘तशन्नुज’ रतब  
 और इमतिताई कहते हैं, बिन्ह उसका यह है कि अचानक उ  
 त्पन्न हो जाय, और बिन्ह कफ के दृष्टि पड़े और जो खुरशी  
 के कारण पैदा हो उसको, तशन्नुज या बिस कहते हैं। बिन्ह  
 उसका यह है कि धीरे पैदा होगा और उसके पहिले के या  
 दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या

तेगी बहुत आगा होगा या उसका क्लेश बहुत हुआ होगा और उसका वदन दुबला होगा । तशन्नुज इमतिहार्इ काउपाय कालिज के अनुसार करना चाहिये और तशन्नुज याविस में बदन को बाहर से और भीतर से तरी पहुँचाना चाहिये, और घोष का वनफशे या बादाम के तेल में मिलाकर मर्से, और स्त्री का दूध नाक में डालें ॥

बिच्छू के डक मारने से और पट्टेपर घाव लगने से या कीड़े पड़ने से या तशन्नुज हो चाहिये कि उस कारण को दूर करें और मृगी के समय जो तशन्नुज होता है वह मृगी के दूर होने में जाता है और जो न जाय तो रोगनगुल या कोई और तेल गुनगुना करके मर्से, और कभी २ आदमी का मुख चम्डाई लेने में खुला रह जाता है, उसमें किसी तेल का पक्षना लाभदायक है, और या इसमें अच्छा न हो तो तशन्नुज इमतिहार्इ का उपाय करें ॥

## अठारहवां पाठ

तमदुद के विषय में

अंग का कोई भाग लम्बाईमें तनकर रह जाता है और सपेटने में नहीं सिमटता कारण इसका यह है कि कोई पट्टा दोनों और से लिंच जाता है उपाय इसका बही करें जो तशन्नुज में लेला गया है ॥

## उन्नीसवां पाठ

कजाज के वर्णन में

तशन्नुज जो गरदनमें हो और गरदन इधर उधर न फिर सके । स कजाज कहते हैं, जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज के

अनुसार करें, और यह रोग मय प्रकार के तथान्तुजों से बुरा है, इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये ।

## बीसवां पाठ

### राशे के वर्णन में

इस रोगमें मनुष्य का शरीर कांपने लगता है, जो यहकफ की अधिकता से हो तो निसर्गान और कफ के चिन्ह पाये जायेंगे, उपाय इसका यह है कि कफ को निकालें, और जो विषय की अधिकता से हो तो उसके छोड़ दें और ताजा दूध पीना और देह पर तेल मलना अति लाभदायक है ॥

## इक्कीसवां पाठ

### इख्तलाज के विषय में

शरीरमें किसी जगह के फटकने को इख्तलाज कहते हैं । नितप्रति मुख का फटकना लफका आने का चिन्ह है । पेट का फटकना भृगी हो जाने का, और वगल का पछाती और वगल की सूजन का चिन्ह है और सारंग का फटकना सूकता होजाने का चिन्ह है, पेट की फटकना माली खोलिया का चिन्ह है उपाय इसका कि नमकको गर्म करके उस जगह सेके, और जो इससे न हो तो कफ को निकाले, और रैन के बन्द हो जाने रोग हो तो फस्द खुलवाने से जल्दी जाता रहता है ॥

## बाईसवां पाठ

### लुवी के विषय में

इस रोग में देह भारी हो जाती है और सुह और आंखें लाल होती है, और जम्हाई और अंगहार्द आती है, और ऐसा मालूम होता है कि तप आने

क्रांत के पीछे यह बात जाती रहती है। या बार बार आती है जो बार बार आये तो रुधिर और पित्त का कप करे। और भोजन थोड़ासा दें और गर्म मित्राज वाल को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभदायक है और घनिया का कूट छानकर शकर क साथ फांकना या चसेका बिगा कर और मिठाई में मिला कर पीना लाभदाता है ॥

### तेईसवां पाठ ।

#### हिस के वर्णन में ।

यह वह रोग है कि भोजे में खुजली बिना दर्द के होती है वषाय इसका यह है कि भोजे को ठण्डा और तरी पहुँचावे क्यों कि यह रोग पित्तके बुझार क कारण से हाता है। और जो इस से भी अच्छा न हो तो पित्तों का जुन्लाव दें। और जो रुधिर की अधिकता देखें तो फणद भी खोल दें ॥

### चौबीसवां पाठ ।

#### असावा के वर्णन में ।

यह वह दर्द है जो भों अर्थात् भृकुटी में होता है। जो अकेली गरमी से हो तो इसका बिन्ह यह है कि सूरज के निकलने से उत्पन्न हो और भों भों दोपहर तक दिन बढ़ता जायगा क्यों दर्द भी बढ़ेगा और दोपहर पीछे घटता जायगा यहाँ तक कि बिलकुल न रहेगा और फिर सवेरे योंही हागा वषाय इस का यह है कि, वषूर को रोगन गुल में घाल कर नाक में उपकाये और बाहर से देह को साफ रखें, और जो देहकी गरमी ऊपर बढ़ने के कारण यह रोग तो तो बिन्ह इसका यह है कि रोगी ओंघा पड़ा रहेगा और माये की खाल निचि हुई होगी, वषाय इसका यह है, कि नाक में कोई वस्तु कटी और खुरखुरी

हाल कर या नख और अंगुली चिभो कर नकसीर फोड़ो  
जो इसमें न फूटे तो फस्द सरारु करे और कपूर सुघावे  
हाथ पाँव मलें ॥

## पच्चीसवां पाठ ।

जुकाम और नजले के विषय में ।

जानना चाहिये कि भेजे का मत जो नासिका के द्वारा  
उसे जुकाम कहते हैं, और जो गले पर गिरे तो नजला हो  
गरमी का चिन्ह यह है, कि यह मत पतला और जलता नि  
लोगों । और सरदी का चिन्ह इसका गाढ़ा होना या जलन हो  
रूपाय इसका यह है, कि पित्राग को दुरुस्त करें और जैसा  
बाद हो वैसे ही उसे निकालें चाहिये कि जुकाम में मवाद  
आक करने से पहिले बहुत धन्य न खांय पीवें जो मवाद को नि  
लने से रोके, और बदन का दूर करे, और सिर को ठाँके  
नजला चाहै गरम हा या ठण्डा बहुत सोने और चित्त लेट  
और बहुत चलने फिरने और सिर झुकाने और खड़ी वस्तु आ  
दृष्ट दृष्टि खाने से बचते रहें और जो जुकाम से साथ खांसी  
हो तो उपाय भी अति आवश्यक है ॥

माशरा और बावश नाम सूजन है जो मुख पर हो जाती  
और जुकाम से जाती रहती है उनका वर्णन इस पुस्तक  
अंत में आयेगा ॥

## दसरा अध्याय।

आँख के रोगों के वर्णन में ।

नेत्रों में सात परदे और तीन शृङ्खलें और एक असबा  
को रंग क मृदुल बीज में से खाली है और इसी असबे में रं  
दिखाई देता है और आँख की पुतली भी इसमें है बीचाबी  
में आकर रुकवत मली दीया पड़ा

श्रीया में सब चीजें दिखाई देती हैं और असब से निकल कर  
दृष्टि की इन्द्री तक पहुँचती है वह इनको पहचान लेती है ॥ और  
इसी रतूबत और असबे क बचाव के लिये और सब परदे और  
रतूबते आस पास हैं ॥

अब जानेंका कि आंख का परदा जो बाहर की ओर हुआ  
से मिला हुआ है छुआ जाता है वह मुलतहिमा और करनियॉ है  
अर्थात् सफेदी आंख की जो दिखलाई देती है वह मुलतहिमा है ।  
गोल और कासी वस्तु करनियॉ हैं ॥ यह दोनों परदा रगदार है  
और करनियॉ में रग है वह इसीका है इसी परदे के बीच में एक  
छिद्र है, और चित्रों क निकलने क लिये और आंख में पानी च-  
तरने की जगह भी यही है इस परदे क पाछे रतूबत बैनिया है,  
इसका रग अ डे की सुपेदी क समान है इसके पीछे परदा अन्नक-  
भूमिया है यह परदा मकड़ी के जाले क समान है, इसके पीछे र-  
तूबत जलीदीया है और इसके पीछे रतूबत जनाभिया है जो पि-  
चली हुई काँच की सी है और इसके पीछे परदा शबकीय है जो  
जाल क अनुसार है और इन दोनों रतूबतों को घेरे हुये है और  
इसके पीछे परदा मशमिया और इसके पीछे परदा सलनिया है  
जो आंख क डेले से लगा हुआ है इन दो परदों और रतूबतों में  
अलगर रोग होते हैं उनका बर्णन आगे करेंगे ॥

## पहिला पाठ ।

रमद अर्थात् आंख आने के विषय में ।

मुखतहिमा पर सूजन आमाने का नाम रमद है जो यह ब-  
धिर में हो तो बिन्दुसका यह है कि आंख लाल और भारी हो  
जायगी और दर्द होगा और चीपड़ उसमें बहुत निकलेगी और  
जो पित्त से हो तो जलन और पीडा बहुत होगी परन्तु चीपड़

बहुत न होगा और जो कफ से हो तो रंग इसका सफेद, और आँख फूल जायगी चीपट आम् बहुत बहेंगे और जो से हो तो सूजन बहुत होगी और और चीपट कुछ भी न निकलेगी और पलकें न चिपकेंगी आँख बोकल होगी और सिर में दर्द रहेगा, और जो रहिसे हो तो बोकल न होगा न चीपट निकलेगा उपाय इसका यह है कि मषाद के अनुसार उसे साफ करें और फस्द और जुल्ताव जो पहिले कोई औषध आँख में न डालें परंतु जब यह रोग हलका तो तो दो तीन दिन पीछे यिना फस्द और जुल्ताव के दवा डालनी चाहिये, गर्म रमद में रसौत को लटकी माफ दूध में घोल कर आँख के अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है, और जब पीडा बहुत हो तो थोड़ी अफीम भी उसमें मिला लें और चाकसू पीसकर आँख में डालना सब प्रकार की रमद में अच्छा है परन्तु इसको थोड़े दिन पीछे डालें रोग के होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावें ॥

चाकसू के बनाने की रीति यह है, कि उसे छीलकर पानी में पकावें और गल जाय तो सुखादे, उसके दो हिस्से लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी ममीरा को मिला और आँख में डालें, लटकी की आँख में कभी कभी बहुत होजाता है, उसको घादीनम, कहते हैं, उसका है, कि सिर के पीछे पछने लगावें और घुटकी च आँख में डालें ॥

## दूसरा पाठ ।

### तुरफा के वर्णन में ।

इसमें मुत्तवहिमा पर रुधिर की फुटकी पड जाती है उपाय इसका यह है कि, कचूसर या मसख का कच्चा पर पखाड कर

सके रुधिर की सूद अकेली पा गिले भरपनी के साथ आंख  
 टपकावे, और कुन्दर को जलाकर उसकी पूनी आंखको दें  
 और जो उसका कारण अत्यन्त मुटापा होतो पहिले फस्द करें  
 और पछने लगा कर जुम्लाम दें ॥

### तसिरा पाठ

#### जुफरा अर्थात् नाखूने के विषय में

इसका उपाय यह है कि साहोरी नमक की सलाई बनाकर  
 ईबार दिनमें आंख में लगावे और जो मवाद बहुत होतो  
 तब सरारू करें और इन्हा अयारिज खिलावे और बलगम  
 स्पष्ट करने वाली वस्तु से घेरे और जो नाखूना बहुत घमरा  
 । तो किसी अच्छे दस्तकार से ठेवा लें ॥

### चौथा पाठ

#### आंखमें जाला पड़जाने के विषय में

इसका कारण यह है कि करनिया पर कोई वस्तु छप  
 ई होगी उपाय इसका यह है कि समदरफेन पानी में घिस-  
 त् आंख में लगाये थोड़े दिनों में अच्छा हो जायगा और जा  
 बाद पुष्ट होतो येजे को मवाद से साफ करें और उस जालेको  
 तबकाल बिनाकुछ खाये जीभसे चाटना घति लाभदायक है ॥

### पांचवां पाठ

#### सबल के वर्णन में ।

इसरोग में आंखकी रंगें लाल और मोटी होजाती हैं ।  
 और खुजली होती है जो इसमें आंख भी निकलें और पलकों  
 पानी भरा रहे तो उसको सबलरतब कहेंगे और ऐसा न हो  
 तो सबलयाबिस कहेंगे, उपाय इसका यह है कि फस्द सरारू  
 करें इसके पीछे भावे की रंग और कीये की रंगकी फस्द खोलें



और जो यह रोग कम हो तो, शियाफदीनार आँख में और जो भारी हो तो शियाफअहमर, और घासलीकून, लगावें और सबलयाविस में सुरमा और औषधों के लगान से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठकर स्नान करना आवश्यक है, जब रमद और सबल दोनों मिले हुए हों तो दोनों के चिन्ह पाये जायेंगे, ऐसे समय में न गर्म औषध देना चाहिये न ठंडा परन्तु मवाद को निकालें और अह की सफेदी आँख पर लगावें यह दोनों रोगों को लाभदायक है और इस उपाय से न जावे, तो दस्तकारी से ठाढ़ें ॥

### छटा पाठ

#### मुलतहिमा के फूलजाने के विषय में

जो मुलतहिमा का फूल जाना रीह व कारण से हो तो चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और पहिले आँख के कोनों में मक्खी या मच्छर के काटने की सी जलन होगी और बलगम से हो तो धारे धीरे उत्पन्न होगा और पीड़ा बहुत न होगी। और अगुली के दवाने से चिन्ह रूखायगा और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देर तक न रहेगा उपाय इसका यह है, कि जैसा मवाद हो वैसा ही जुल्दाव दें, और ठंडी रमद की औषधें काम में लावें, और जो यह रोग रीह से होतो तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा ॥

### सातवां पाठ

#### मुलतहिमाकी खुजली का वर्णन

इसमें बहुधा पल्लक भी घायल या लाल हो जाते हैं। उपाय इस का यह है कि नमकीन और शरपरा भोजन न खावें, और फसद और जुल्दाव लें। और नेस्त को नरकुलपर रगड़ कर

मांस में लगावें और गर्म पानी में धुव धोया करें ॥

### आठवां पाठ

सोसतुल मुलतहिमा के वर्णन में

इस रोग में आंख की सफेदी पर बड़े धीरे की ओर  
नरम मांस पतन्न हो जाता है उपाय इसका यह है कि कई  
बार मवाद को साफ करें, और फिर दस्तकारी के काट डालें ॥

### नवां पाठ

दोक्तुलमुलतहिमा के विषय में

यह वह रोग है कि आंख में बहुत धीरे की ओर कहे  
और लाल और काले रंगे यह आते हैं उपाय इसका यह है  
कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ करें नहीं तो गुलाब में  
पड़ा भिंगो कर आंख पर रखना अच्छा है और इससे अधिक  
प्राय की आवश्यकता नहीं ॥

### दसवां पाठ

दसआ अर्थात् आंसू बहने के विषय में

यह गर्मी से होता सुरमा लगाकर और सरदीसे होता बालसी  
जल और जो आंख की निर्बलता में होता लकी हुई पीली  
रक्त, और नमक, और माजु, बराबर बराबर कूट खान कर  
मांस में सलाई में लगावें और जो थोड़ी २ देर आंसू बहकर  
प्रवाह करे तो उसको हिन्दी में मतना कहते हैं। उपाय  
यही यह है, कि पहिले मवाद को निकालो, और इसके पीछे  
मांस बहाने वाली दवा लगावें। जैसे वासलीकून और  
प्रोफ अहमर ॥

### ग्यारहवां पाठ

द्वक्तुलपेनअर्थात् आंखमें जलन होनेके विषयमें

जो यह गर्म मवाद के कारण से होता उस मवाद को

निकालें और जो कोई मवाद न होतो तूतिया को कंधे खट्टे अंगूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगायें । और हरी कासनी के पत्ते कूट कर पानी घसकां तेल में मिला कर लगायें, और कपूर भी घस के साथ मिलायें तो अति लाभदायक हो ॥

### चारहवां पाठ

**कुजा अर्थात् आंखमें किसी वस्तुके पड़जाने का विषय**

जब आंख में कुछ पड़ जाय तो आंख को कभी न घल ऐसा न हो कि कोई कड़ी वस्तु हो तो घलने से आंख में खुम जाय । आंख को गर्म पानी से धोयें और स्त्री का दूध आंख में डालो । और दिखाई देती हो तो उसे रुई या नर्म कपड़े से ञ्ठालें, और वह भीतर पिपटी हुई हो और छुट न सके तो निशास्ते को पीस कर आंख में भरदो, और थोड़ी देर ठहरे रहे इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी, फिर उसे अलग रुई से ञ्ठालें, और कोई भुनगा या गच्छर आदि हो तो मूला-तानीमिष्टी या गेरू पीसकर आंख में डालें, और थोड़ी देर आंख में बांधदें, वह वस्तु लिपट आवेगा । फिर उसको रुई से ञ्ठालें और शीशे का चूरा आंख में जा पड़े वस्तु समय-बह पीचना जो ऐसे कामों के लिये बनाया गया है काम में लायें या जिस प्रकार से बन सके निकालदालो, और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सफेदी मिलाकर आंख में डालें, इस से मन्द करने में आंख नहीं चिमटेगी ॥

### तेरहवां पाठ

**आंख पर छोट लगने का विषय ।**

जो छोट लमने से आंख पर लाली या सूजन हो तो ब्याय इसका यह है कि फस्द खोलो, और मुलाय्यन चुक्रम, कबाक,

तो पिताघे और गुद्दी पर पड़ने लगावे, इसके पीछे अगड़े की फंदी गोगन गुल्ल में भिजाक आंख में लगावे और जो पीड़ा होने के पीछे पाठ का बिन्द अर्थात् नीलाहट रह जाय तो अनिया बोदीना और काला पत्थर या मिरचों की धैली में नकलता है, और हरताल पीसकर लेप करे इस से नीला ट जाती रहेगी, और तलवार या पत्थर का घाव गुल्ल-हेमापर लगा हो, उसका उपाय यह है कि फस्द और जुम्हाव कई बार दें और अगड़े की जरदी का आंख पर लेप करे, इस के पीछे बही उपाय करे जो आंख के घाव का उपाय आगे लेखा जायगा ॥

### चौदहवां पाठ

#### आंख के घाव का वियय

आंख के सब परदों में घाव हो सकता है। परन्तु जो घाव जल गुल्लतहिमा पर लगा हो और दूसरे परदेवेषों से सलाहिल रहते हैं उसमें पीड़ा कम होती है। गुल्लतहिमा, करनिपां, और मनबीया. का घाव आंख से देख सकते हैं, परन्तु परदों के शेष में केवल अधिक पीड़ा मालूम होती है और जब तक तीप नहीं पड़ती कोई बिन्द घावना नहीं मालूम होता उपाय इसका यह है कि फस्द सरास तुम्हा करे और ऐसी औपचो ले रहे भिनसे कम न होने पावे और जब पीड़ा हो तो स्त्री ना दूध टपकावे और जो वह घाव तुरंत न पके ला पाई हुई मेथी का जुम्हाव टपकावे अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर एक पानी में भिगो रखें, फिर निकालकर पीस गुने पानी में ढाकावे जबबह पानी आया रहनाप उसको हिलाकर निकाल ले रही पाई हुई मेथी का जुम्हाव है, जब घाव पक कर रहने प्रगेवी दूध और शहद मिश्राकर आंख में डाले इससे घावसाफ

होनायगा, इसके पीछे शिवाफ कुन्दर काम में लावे, और  
असर घाव भर आने पर भी रह जाय तो जो उपाय  
दानो व घाव दूर करने का है. वही काममें लावे, और  
लिए पुरानी हड्डी गुलाब में घिसकर लगाना लाभदायक है

## पन्द्रहवां पाठ

### कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाभ है एक जब पलक रीढ़ से मारी हो  
जाय और फूलनाय और मागने के पीछे ऐसा मालूम हो कि  
आँखोंमें धूल पड़ गई ॥

दूसरे जब करनियाँ के पीछे पीप एकट्ठी हो जाय ।

तीसरे मुक्ततडिमा पर सुर्खी हो तो इससे कम दिखाई दे

और सब वस्तु धुंधली मालूम हों ।

यह जो केवल पलक का रोग है । उपाय उसका पलक क  
आँखोंमें लिखा जावेगा, और करनियाँ के रोग का उपाय यह  
है कि मेथी और मशामी का जूआर आँख में डालकर मबावे  
वो पकावे और कई बार गर्म पानी में स्नान करे इसके पीछे  
साफ करने के लिये रुपासुखी पीसकर आँख में लगावे और  
जो इससे लाभ न हो तो दस्तकारी करे और नहीं तो इसे  
छेंडे नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग पठ खड़ा हो और जो  
मुक्ततडिमा का रोग है उसका भी उपाय करे जा बाद  
का है, और मेथी, शजूना, और अकलेतकमुलक  
के आँख में धार ॥

## सोलहवां पाठ

### रतौंदी का विषय

उपाय इसका यह है कि शहद का सोंफ के पानी में घोलकर  
आँख में लगाने, और पीपल को चकरी या भादसीनेकी क

१) मैं जुधोकर आगपर रखदें उससे जो पानी निकले उसको मैंने लागेवे इसमें तुरन्त ही श्रद्धा हो जायगा, और जो बाद अधिक हातो जुन्हाव दे और फसद खावे ।

सतरहदां पाठ

### दिनोद्दी के विषय में

उपाय इसका यह है, कि लहड़ी की या का दूध सिर पर  
ले और नाक में टपकावें, और उधे पानी में गाता लगा कर  
स में आखें खोले और उन्हाव का शरबत पीवें ॥

## अठारहवां पाठ

सुदाहिदकहः और शकीक चश्म के विषय में

यह वह रोग है कि आँख के अन्दर घमक होती है और  
पूँसी ज़िदती है और ऐसा मालूम होता है कि आँखों  
कोई दबोचता है और कभी पीटा जाती रहती है, और फिर  
हो जाती है जैसे आधासीसी और रमद का कोई बिगड़ नहीं  
हो तो जो बग़ाम आधासीसी का है वही इसका फरे। और  
कनपटी की रग को बाट डालें ऐसा न हो कि कोई रोग  
बल्य हो जाय ॥

## उन्नतसिवां पाठ

हज्जुजउलफेन के विषय में

इसमें बिना सृजन और बाहर निकल आती है, उपायास का यह है, कि जैसा मना हो वैसा ही उसे साफ करे। और हरद्विषित करे आत्म में लगावे और भोजन कप खाद्य ॥

वीसवां पाठ

करनिया के उभरआने के वर्णन में

ज्याय इसका यह है कि पचास गाछा हा तो उसे साफ करे

और लहर अस्तर को मलाई से आख में लगावे और  
 से होंठ धोया करें और उसकी भाप आँख को दें  
 के अगर आने का यह चिन्ह है कि फटी होती है और स-  
 य नहीं दहती, और आँख नहीं हो तो और उसमें पीटा न  
 होती और फुन्सियाँ जो करनियाँ में हो जाती है बंद न  
 है, और दवाये से दब जाती है और उनमें पीटा भी होती है

### इक्कीसवां पाठ

करनियाँ पर फुंसी हो जाने के पिषयमें

जानना चाहिये कि करनियाँ के चार परदे हैं कभी सबमें  
 फुन्सी होती है और कभी एक में परन्तु फुन्सी पड़ने की जगह  
 किसी में सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं, उपाय  
 इसका यह है कि फस्द और जुल्लाव दे और पहिले ऐसी  
 ठही औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोके और  
 इस के पीछे शियाफ अहमरलीन लगावे फिर शियाफ अ-  
 यनकुन्दरी ॥

### बाईसवां पाठ

भोरसिरच के वर्णन, में

यह वह रोग है कि करनियाँ का परदा फट जाय और उससे  
 मल्ले से अनविया ऊपर को उभर आये, उपाय इसका इससे  
 पहिले करें जब कि किनारे करनिया के मोटे न पड़ जाय और  
 ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने से रोके और अनविया को  
 अन्दर दबा दें, यह इस प्रकार है कि धोया हुआ शादना और  
 चांदी को इकलीपीया जली हुई सीपी पीस के आख में डालें  
 और धोये हुए शादने का सुरमा आँख में भरें और ऊपर से  
 गही रखकर भाँप दे या सीसे का टुकड़ा आँख के बराबर  
 बनाके या सीसे का घुसावा छोटी सी पैली में भरके आँख पर

। दें, और पट्टी से कस दें और जो पिसा हुआ घुरमा छोटी  
 पैती में भर के आंख पर रखकर पट्टी से कस दें, तो अति  
 मदायक है, और जब किनारे करनिया के माटे हो जायेंगे  
 फिर किसी प्रकार अच्छा न होगा इस रोग का उपाय  
 न्त करना चाहिये ॥

### भेगा होने का विषय ।

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती, हैं जो यह रोग  
 न्य से हो तो अच्छा नहीं हो सका, परन्तु बच्चों की मृगी  
 रोग से और एक करमट मुलाने या भयानक शब्द सुन  
 र अचानक चौंक पडने से भी यह रोग हो जाता है, उपाय  
 नका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के  
 त्नारे के उस ओर रख दें जिसर कि आंख को फिराना  
 ।हते हैं बच्चा हर दम उसे देखेगा इससे आंख उसकी सीपी  
 । जायगी ॥

जो यह रोग जबानी में उत्पन्न हो तो कारण इसका तशन्नुज  
 मतिछाई या याविस होगा, पहिचान तशन्नुज याविस की यह  
 कि इसमें पहिले गर्म रोग हुए होंगे, उपाय इसका यह है कि  
 आंख को ठीी पहुँचावे और छड़की की मा का दूध सिर पर  
 ।रें और पहिचान इमतिछाई की यह है कि पहिले मृगी आई  
 ।नी और तशन्नुज इमतिछाई के चिन्ह पाये जायेंगे उपाय  
 सका मवाद को साफ करना और निकालना है ॥

जो आंख के डीले हो जाने से यह रोग हो तो इसके चिन्ह  
 और उपाय वही हैं जो इस्तिस्ला में लिखे गये हैं ॥

और रीह के कारण आंख का कोई पदार्थ या रक्तवर्षाती  
 हो तो आंख फड़केगी उपाय उसका यह है कि भेजे से बल  
 ।म को निकालें, हव्व अयारिज खिलावे और बदलजी को दूर करें



## इततिसा और इन्तशार का वर्णन ।

असवे के चौड़ा हो जाने या अनवीया के छेद के बढ को इततिसा कहते हैं, और आंख में रोशनी फैल जाने इन्तशार कहते हैं ॥

जानना चाहिये कि इततिसा असवे के साथ इन्तशार होता है, परन्तु ऐसा हो सकता है कि इततिसा अनवीया साथ इन्तशार न हो, और कभी २ इततिसा असवा और तिसा अनवीया दोनों साथ होते हैं, इततिसा या असवे अच्छा होना बहुत कठिन है, परन्तु इततिसा अनवीया उपाय कारण के अनुसार हो सकता है, कारण जान के उपाय करें जैसे चौड़ा लग जाने में हो तो फस्द सरारु करें और पिलियों पर पछने लगावें ॥

और किसी पत्राद की अधिकता या रतूवत वैजिया अधिकता से हो जैसा कि पथों को हुआ करता है, या अनवीया की सूजन से हो तो फस्द और हुकना करें और अनवीया की खुरकी से हो तो बिन्ह और उपाय इसका जो बसर पुवसी के पाठ में लिखा जायगा ।

## अनवीया के छेद के सड़ जाने का विषय ।

यह रोग जन्म से हो तो बहुत अच्छा है, इससे दृष्टि तीव्र हो जाती है और जो किमी रोग से हो तो दृष्टि कम हो जात है, पहिले देखें कि कारण इसका अनवीया की तरी है, या खुरकी या रतूवत वैजिया की कमी खुरकी और तरी के बिना सहज में मालूम हो जायगे ॥

और रतूवत वैजिया की कमी का बिन्ह यह है कि आंख छोटी हो जायगी और बहुत बली मांति दिखाई न देगी और कैमूस अनवीया के कटे हो जाने और बिगड जाने से भी

रोग होता है उसका चिन्ह यह है पुसली न दिखलाई व जब कि अनबीया की सुरकी या रतुरत बैजिया की कमी के कारण से यह रोग हो तो चाहिये कि आँख काँचरी पहुँचावे और जब रतुरत अनबीया की अधिकता से हो तो उस तरी को दूर करें और फेसूस धिमड़ नामे में मवाद को साफ करें और तरी भी पहुँचावे ।

### खयालात का वर्णन ।

इसमें आँख के आगे धुनगं से चढ़ते मालूम होते हैं यह तीम प्रकार के हैं एक तो मोतियाबिन्द के होने से पहिले होते हैं, दूसरे पेट क बिगड़ने से और तीसरे दृष्टि सीम होने से ।

मोतियाबिन्द होने से पहिले जो हों उनकी पहिचान यह है कि हर दम दिखलाई देंगे और बरि दिन बढ़ते जायेंगे और बहुतसा एक आँख में होंगे चपाय इसका मोतियाबिन्द में शिखा है, और जो यह रोग पेट क बिगड़ने से हो तो उसका स्वाली होने और भरे होने पर अधिक दिखलाई देंगे और आँख के परदों और रतुरतों के बिगड़ने से हो तो आँख रगीन होगी और इसमें कोई रोग पहिले हुआ होगा, चपाय उसका यह है कि भेजे और पेट का मवाद से साफ करें और इसके पाले, आँख के परदों और रतुरतों का मवाद कारण के अनुसार निकालें और जो ऐसा दृष्टि के सीम होने से हो तो उसके चिन्ह यह है कि दृष्टि ठीक होगी और भेजे की इन्द्रीयाँ सब सीम होंगी यह कोई रोग नहीं है बदन से जो धुँआ और दबा में छोटी रक्त चढ़ती हुई दिखलाई देती है ।

### मोतिया बिन्द का वर्णन ।

यह नमूना है कि योड़ा २ या एक ही बार आँख में चपाय है और अनबीया के बिन्द में ठहरा रहता है जो यह नमूना

हो तो दृष्टि जाती रहती है जो पतला होगा तो घु घला दि-  
 लाई देगा इसको गु तशिरफ़ीक कहते हैं, जो नजला पूरा  
 गया होगा तो आँख से कुछ भी न दिखाई देगा और ५  
 घदली हुई दिखलाई देगी परन्तु मोतियाबिन्द से पहिले  
 छात का रोग अवश्य होगा उपाय इसका यह है कि कनपटी  
 नस पर दाग दें जिससे बहरग मल जाय और दाग देने के  
 पीछे तीन दिन तक बस पर हराम मग्न मलें फिर रोटी के  
 तिलों के तेल में भिगा कर बस पर रखें, और दाग से जितना  
 पानी बहे अच्छा है, और भारी वस्तु खाने से, और मैथुन से  
 बचते रहें और पानी उत्तर आने के पीछे जब १ वर्ष व्यतीत  
 हो जाय तब देखें कि आँख मलने से पानी फैल कर फट जाता  
 है या नहीं जो फट जाय तो फस्द खोलने जुझाव न दें उसके पीछे  
 दस्तकारी करें ॥

ज्यादातः के पीछे जब तीन महीने व्यतीत हो जाय और  
 इस पर भी पानी न बतरै तो जानलो कि उसके पीछे मोतिया-  
 बिन्द न होगा ॥

नील के बीज को सुरमे की तरह पीसकर आँख में लगाने  
 से पानी को आँख की ओर आने से रोकता है, और ऐसा ही  
 कान के पीछे की रंग की फस्द खोलने से और बस पर दाग  
 देने से होता है ॥

रस्सी, आसमानी, मुन्तशिररकीर, अजाभी, अखजर अचि-  
न घरदी, अस्मर, अहमर लवीमरक, असपद, और यह भी  
क होने क पीछे दस्तकारी क योग्य हो सकते हैं परन्तु इनका  
रोग होना कठिन है, और जबल उस पानी में जो सफेद और  
लफ हो और आँख मलने में कट जाय दस्तकारी हो सकती है।

**असवे में सुहा पड़जाने का विषय ।**

जो यह बिना मोतियाबिन्द के हा तो बिन्दु उसका यह है  
क पुतली पूरी अच्छी दिखलाई देगी और सूजन न होगी परतु  
देखलाई न देगा उपाय इसका यह है कि भेजे से मवाद का  
नकालें और कोय की रग की फस्द खालें और कनपटी की रग  
र जाक लगावें और पियहली पर पछने लगावें और पाँच  
लो मलें ।

**आँख के कज्जा होने का विषय ।**

जो यह रोग कन्म से हो ता उपाय इसका नहीं होसक्ता  
और जो किसी रोग से होजाय तो इसको बगुल पन करते  
इसका उपाय कारण के अनुमार करें ।।

जो तरी की अधिकता से हो ता देह को आँख को मवाद  
ने साफ करे और जो खुरकी से हो तो तरी पहुँचावें ।

यह रोग जो खुरकी से होता है, उसमें सुझाई नहीं देता,  
सिमें और मोतियाबिन्द में यह अन्तर है कि मोतियाबिन्द में  
सहित खयालात का राग आशय हागा और इसमें यह बात  
नहीं होती है, आँख दुबली हो जायगी और दस्तकारी से लाभ  
न हागा यह रोग जो बच्चों की आँख में हो तो नवान होने पर  
जाता रहता है ।।

**जोफ थसर अर्थात् कम दृष्टि का विषय**

जो कारण इसका कभिर की अधिकता हो तो फस्द करें  
और कभिर के बदले जाने को रोग कहते हैं और तूतिया को

कच्चे और, खट्टे अमूर के रस में भिगोकर आँख में और जा यह कफ के कारण से हो तो उसके पकाने के पीछे कफ का जुलूस दे, और वासलीकून आँख में लगावें, और जो इसका कोई और कारण हो तो उपाय उसका करें, बुढ़ापे में यह रोग बहुत हाता है उसका उपाय नहीं हो सकता परन्तु बचाव के लिये कफ का मवाद निकाले और मवादरात का सुरमा लगावें ।

### वतलान वसारत का विषय ।

अधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली हो जाती है या रतुषत बैजिया काली पड़ जाती है, उससे यह रोग उत्पन्न होता है ।

आँख में वासलीकून लगावें, और हल्की हल्की औषधें और भोजन खावें, और जो अचानक अधेरे के बाहर निकल आने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो तो नीला आस्मानी रंग का कपड़ा आँखों पर डालें वहाँ या आस्मानी रंग की पुनक खगावें, और इसका भोजन खाँय और भूखे रहने और पैधुन से बचते रहें और रात को कुछ न खावें ॥

### खुन्धा होजाने का विषय ।

इस रोग में दिन को कम दिखाई देता है यह जन्म से हो तो इसका उपाय नहीं हो सकता परन्तु पलकों और आँख के पर्दों के काला करने का उपाय करें यह इस प्रकार से है बिबनफशे और बादाय के तेल से कामल बनाकर आँखों पर लगाया करें इसमें दृष्टि पुष्ट हो आयगी ॥

### कुमूर अर्थात् दृष्टि के थकजाने का विषय ।

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तुओं पर जैसे सूर्य या चरफादिक हैं दृष्टि नमाने के कारण से उत्पन्न होता है ॥

उपाय इसका यह है कि काला कपड़ा आँखों पर लपटावें और रहवने और बिलाने से कपड़े भी सध काले रसमें और

में कपटा भिगोकर आँखों पर रखें या स्त्री का दूध  
खों पर दुहें ॥ और कड़वे बादाम पीतकर या कृपल के  
खों पर चर्बें ।

### आँख के दुबला होने का विषय ।

इसमें घूप और रोशनी की आर देखना भुग लगता है  
। यह रात गरमी से हा ता उठ और तरी पहुँचाने और का  
।द आदि के कारण स हा तो पहिले बमे दूर करे ॥

### आँख के मिजाज पहिचानने की रीति ।

आँख का मिजाज गर्म और ठर है, और जो इसके विप-  
।स हा तो जान लो कि कई राग होगा ॥

ऊपर से छूने में आँख गर्म मालूम हो और ठारे रंगीन  
। और आँख लम्बी २ फड़के ता यह निन्द गरमी का है  
। और सरदी के बिन्द इससे विपरीत है ।

जो आँख स धीपद आँध्र बहुत निक्खें, और फूली हुई  
। खाई दे, तो यह निन्द तरी क हैं, और खुरही के बिन्द  
। ससे विपरीत हैं ॥

काली आँख सब प्रकार की आँखों से अधिक गर्म और  
। र होती है, इसलिये ऐसी आँख में मोतियाबिन्द और २ गरमी  
। रोग बहुधा होते हैं, परन्तु बहुत मनुष्य यह करते हैं कि  
। इसी आँख में मोतियाबिन्द बहुत होता है ॥

### तीसरा अध्याय

#### पपोंटे और पलक के रोगों का विषय

#### कमना का विषय

कमना उसको कहते हैं, कि मनुष्य जब जागे तो आँख में  
। कटक हो जेसे रेत पड़ गई है और थोड़ी देर पीछे-यह कटक

जाती रहे, पहिले इसमें जुम्ताव दें और, शियाफ अइमर मलीन और शियाफ अइमर हाद लगावें और गरम पानी से स्नान करना भी लाभदायक है ॥

**पपोटे के ढीला होजाने का विषय ।**

पहिले मवाद को निकालें इसके पीछे एलुआ, अकाकिया सुर्पकी पीसकर हलक और पलक और माथे पर लगावें, और जो इससे लाभ न हो तो पलक कावनी पड़ेगी इसकी रीति दस्तकार जानते हैं और नाक के भीतर को रंग की फस्द करना अच्छा है ।

**पलकों के आपस में चिमट जाने का विषय ।**

यह रमद क पील या पलक काटने के पीछे या सवत नाखून में होता है, उपाय इसका यह है, कि सलाई से दोनों पलकों को छुटावें और फिर जीरा और नमक चवाकर पान घसका आंख में डालें और कई रोगन गुल में भिगो के पलकों के बीच में रखें और अडे की जरदी में रोगन गुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावें ॥

**पलक के छोटे होजाने का विषय ।**

इस रोग में ऊपर की पलक सुकड़ जाती है और नीचे की पलक बाहर पलट आती है और दोनों पलकें परापर बन्द नई होती इस रोग के कारण पपोटे के ढीला होजाने के कारणों से बिपरीति है और अधिक मांस जो पपोटे में होजाता है उसे काकर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किस मवाद से हो तो पहिले उस मवाद को निकाले फिर कारण अनुसार इसका उपाय करे जो दस्तकारी हो सके तो उसे भी करे **शिरनाक का विषय ।**

इसमें पलक पर नम मांस होजाने से पलक मोटी होजाती है ।

और आँखों में पानी भरा रहता है, उपाय इसका यह है, कि पहिले मवाद को निकालें और फिर आँख खाने वाली औषधें आँख में डालें और जो इससे लाभ न हो तौ दस्तकारी करें, और यह वस्तु न खावें जो हानि करती है ॥

**पपोटे के ऊपर गांठ के पड़ जाने का विषय ।**

उपाय इसका यह है, पहिले नर्म होने के लिये मोमरोगन लगावें और मरहम दाखलीयून लगावें, जो काटने क योग्य हो जायें और कोई मवाद निकालना हो तौ उसे भी निकालें ॥

**शेरसुनकल्लिब और शेरजायद का वर्णन ।**

जो पल्लव के पाल छलटे होकर आँख में लगें में और चुभा करें उसे शेरसुनकल्लिब कहते हैं ।

और जो बाल पल्लव के सिवाय अपनी जगह की भीतर की ओर निकलें और इनके जुगने से आँख खरका करें उसको शेर जायद कहते हैं ॥

उपाय इसका यह है, कि पहिले मवाद को साफ करें फिर वह बाल जो नये उगे हैं गोचने से छलाहें और उस जगह पर नौशादर रगड़ दें और चेंटी के अडे और इन्जीर का दूध और चला कलीली का रुधिर जो कुश या ऊट के देह पर होती है या हरे मँडक का रुधिर या जुह २ का पिचा उस जगह पर मर्लें और समन्दरफेन इसवगोले के लुआब में पीसकर लगाना पाल उत्पन्न होने की जगह को शून्य कर देता है ।

और शेरसुनकल्लिब का उपाय यह है कि दिमकका खासा खगाकर सीधे बाल के साथ चिमटा दें फिर बाल न चुमेंगे ॥

जब बाल को छलाहें तौ बारीक सलाई से उस स्थान को दाग दें और जहाँ बाल हों उस जगह को काट डालना और सीध देना भी इसका एक बड़ा फेदा उपाय है ॥



## पलकों के झड़ जाने का वर्णन ।

जो यह रोग बुरा भोजन खाने से या पिछो या सोदा के अधिक होने से हो तो उस मवाद को निकालें और जो पलक की कमजोरी से हो तो जैसा करानीसस, और गर्भ तप के पीछे होता है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुँचाना चाहिये और घासलीयून और रोशनाई सुरमा आँख में लगावें, और जो यह रोग कफ के अधिक होने से हो तो कफ को निकालें और पुष्ट करने वाली वस्तु काप में लावें ॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुँच सकें तो उस कारण को दूर करें ॥

## पलकों के सफेद हो जाने के विषय में ।

उपाय इसका यह है, कि पहिले प्रलगम को दूर करें फिर जंगली छाले के पत्ते, जेत के तेल में मिलाकर मर्ते और सुरमा रोशनाई सलाई से आँख में लगावें ॥

## पलक में खुजली और फुन्सियाँ होने का वर्णन ।

जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये, और बरूद बनफाजी, आँख में सुरमे की जगह लगावें ॥

## वरुदा का वर्णन ।

वरुदा एक मवाद गाढ़ा और सफेद ओले की सदृश पपेटे के ऊपर उत्पन्न हो जाता है उपाय इसका यह है, कि मोमरोमम और घासलीयून लगावें, इससे नर्म होकर बैठ जायगा और नहीं तो काट कर निकाल लें ॥

## पलक के मोटे और कड़े हो जाने का वर्णन ।

जब पलक मोटी और कड़ी हो जाती है, तो आँख बन्द करना और खोसना कठिन हो जाता है, और यह रोग सोदा के मवाद से होता है, इसलिये उपाय इसका यह है कि पहिले सोदा को

पकावे और पचाद निकालें, और उस जगह को नर्म करें, और और अकलील सब पलक, पाधुना, बनफशा, सतधी के पचे, पानी में छोटा के आँख पर थपारा दें ॥

और जो बिना किसी पचाद के इस रोग में खुमली होता उसको यष्टु सतुलपेन कहते हैं ॥

**पलक सोटे और लाल होजाने का वर्णन ।**

इस रोग में पलक के किनारे बहुत मोटे होजाते हैं, उपाय इसका यह है कि पहले मेथों का मुकुआ पीवें और समाक को गुलाब में भिगोंकर पानी उसका टपकावें, और फिटकरी और कुलफा और कासनी के पचों को रोगन गुल में पिटाकर लेप करना लाभदायक है ॥

जब यह रोग पुराना होजाय तो पहिले फरद और खुम्बाव दें फिर शिपाफ अहमर जीन आँख में लगावे ॥

**पलकों में जूयें पड़ने का वर्णन ।**

यह रोग बलगम से होता है, पहिले बलगम का पचाद निकालें फिर पलक में से जूयें खुने । और जो छोटा होने के कारण धुनना कठिन होता फिटकरी और ममक को छोटाके पलक को पीवें । और थोड़ी देर सत्ताई को पारे में रखकर होले से हाथ से पीछलें और आँख में फेरें । यह जू मारने को अति लाभदायक है ।

**गुहांजनी का वर्णन ।**

यह एक सूजन है जो जो के सदृश पलक पर प्रत्यक्ष होती है जो अवश्य होती पचाद निकालें नहीं तो रसौत और पलुवा और गिल्लैअरमनी हरी कासनी के पानी में पीस कर आँख पर लगावें फिर दासलीयून और योग गरम करके लगावे जो इस में लाभ न हो तो नाखून से कुरेद डालें और थोड़ी देर फिर

पहने दें जल्दी घन्द न करें फिर जरूर अस्फर उसपर छिड़क दें।

### तोसलुलअजफान का वर्णन ।

शहतूत के सदृश एक वस्तु नीचे के पलकके अन्दर उत्पन्न होती है उपाय इसका यह है कि फस्द और जुल्ताप के पीछे दस्तकारी करें और काट के जीरा और नमक चबाकर उसपर टपकावें ॥

### तहज्जुरजफन का वर्णन ।

इसमें पलक पत्थर के सदृश कटी हो जाती है और यह सौदा के गाढ़े मवाद के जन्म जाने से होता है, और इसमें बरदे से अधिक पलक मोटी हो जाती है उपाय इसका यह है कि पहले मवाद को निकालें और रोगन मौम को पिघलाकर लगावें और कभी यह रोग फोटे की तुल्य हो जाता है।

### पलक में घाव पड़जाने का वर्णन ।

इसमें मसूर अनार और पिस्ते के छिलके सिरके में पकाकर लेप करें, और जब खुरद गिरने लगे तो अडे की जरदी केसर में मिलाकर लेप करें ।

### पपोटों के फूलजाने का वर्णन ।

जो यह निगर और मंदे की कमजोरी के कारण से हो तो पहिले घनको पुष्ट करें ॥

और जो कफ के अधिक होने से हो तो इतरीफत खिलोण और फस्द काफाक करें और शिगाफ ममीरा और घन्दन हरे घनिये के पानी में पीसकर लेप करें ।

### पपोटों में मस्से पड़जाने का वर्णन ।

इसमें पहिले सौदा का मवाद निकालें और कलोजी और नमक को पीसकर सिरके में मिलाकर लगावें जो इससे लाभ न होय तो मोघने से दवाकर नाखनगीरी या नरतर से काट

ते और रुधिर बहने दें फिर घाव पर फिटकरी छिड़क दें कि  
र बन्द होजाय ॥

### पपोटों पर पित्ती उछलने का वर्णन ।

इसमें खुजली और सूजन होजाती है, जैसा कि भिड़ खे  
से होता है व्पाय इसका यह है कि फस्द करें और पित्ता  
जुल्लाव दें और शादने अदसी घोया हुआ मांस में लगावें

### नमलय पलक का वर्णन ।

इस रोग में पलक पर फु सियां होजाती हैं और थोड़ी सी  
तन और जलन भी होती है, और घाव पटक फैलता जाता  
पित्तका मवाद निकाले, और रस्तेव और पलुआ घिसकर  
तक में लगावें ॥

### पलक पर से भूसी उड़ने का वर्णन ।

कभी इसमें घाव भी पड़जाता है जो रगइस भूसी का मैला  
तो सौदा का जुल्लाव दें और जो सफेद होता वल्लग्न का  
हर छियाफ अहमर लगावें, और जो यह रोग पुराना होजाय तो  
जने लगाकर शकर मलें और सुरमा रोशनाई आल गलतावें ॥

### सुला का वर्णन ।

यह एक बस्तु त्वचा और मांस से जुड़ी पलकपर पड़  
जाती है, व्पाय इसका यह है, कि मवाद निकालने के पीछे  
सको काटकर अलग कर दें ॥

### गेट से पपोटे का नीला या हरा होजाने का वर्णन ।

जो घाव भी होजाय तो फस्द और जुल्लाव दें, और  
वन्दन और सुरदा सग को गुलाब में घिसकर मलें और जो  
घाव न हो तो कोरी ठीकरी पानी में घिसकर लगावें, यह सब  
मगह की नीलाहट को दूर कर देती है ॥

कोये के पास नाक की ओर नासूर होजाने का  
फस्द और जुबजाय के पीछे शियाफ गर्ज टपकावे  
पहिले घाग को कई में पोंछलें, और पीप को साफ कर  
और औषधि के पभाव के लिये मुद्दर मांस काट दाँजों को  
से लाप न हो तो धाग दें, और मरहम अस्फेदान लगावें ॥

यह नासूर बन्द होकर फूज जाता है, ऐसे समय में कनो  
के बीज स्त्री के दूध में या गर्भेया के दूध में पकाके थोड़ी  
केसर मिलाकर लगावें इससे फूटकर फिर बहेगा ॥

कोये और पलक में बिना जलन और दोनों के

### खुजली होने का वर्णन ।

जो यह रोग रुधिर से होता फस्द करें, और मवादो  
उन्हीं मवादों को निकालने वाली औषधी देकर घमन करावें  
और कासनी को छूट के गुल रोगन में मिलाकर लेप करें, औ  
जो कोये मवाद से साफ किया चाहें तो पासलीकून औ  
कुहल अजीजी लगानें ॥

कोये में नाक की ओर अधिक मांस होजाने का वर्णन

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकाले फिर शि  
याफ जंगार या मरहम जंगार लगानें कि अधिक मांस कट जाय  
जो इससे लाप न होय तो दस्तकारी से काट डालें और जरूर  
अस्फर छिड़कें पीड़ा के दूर होने के लिये अडे की जरदी रोगन  
गुल में मिलाके मले इसके पीछे मसयकी मरहम लगाने ॥

### चौथा अध्याय

### कान के रोगों का विषय

जानना चाहिये कि कान अ इन्द्रि है और सब इन्द्रियों से  
अधिक है इसके रोग जो पवाद से हो जन्मे दूया कान में

हाथनी चाहिये और जो बालें भी तो गुनगुनी करके क्योंकि  
 रही ओषधें हानि करती हैं ॥

### कान के दर्द का वर्णन ।

जो यह पीड़ा या सूजन आने के कारण से हो हो उसका  
 पाप आगे लिखेंगे और जो किसी मवाद से या केवल गरमी  
 हो तो फस्ट आदि से मवाद निकालें और जो केवल ठंड  
 हो तो उसका उपाय करें और मवाद की पीड़ा में मवाद  
 निकालने के पीछे उसके अद्वितीय उपाय करें और कान में  
 पीड़ा कीड़े के घुस जाने या पानी की चूद रह जाने से हो तो  
 उसे निकालना चाहिये और एक पाँच पर खड़े होकर कुदना  
 उस कान पर हाथ धर कर जिसमें मानी है और सिर को उसी  
 ओर झुकाना पानी को निकाल देता है और जो इस्फन (अर्थात्  
 मरा हुआ घादल) की बनी बनाकर कान में रखें और उसी  
 ओर देख सक लेते रहें तो सब पानी निकल आवेगा ।

जो कान में कीड़े उत्पन्न हो जाने के कारण से यह पीड़ा हो  
 तो चिन्ह उसका यह है कि कान में गुनगुनी मालूम होगी, और  
 कभी कीड़ा आप से आप भी निकल आएगा इस में शकनालू के  
 पत्तों को और फोड़ें या उसका रस निचोष कर कान में डपकावें  
 या एलुमा सिरका में घोलकर टपकावें इससे कीड़े मर जायेंगे  
 फिर सूफ की पत्ती बनाकर उसमें सरेस मलले कान में रखें कि  
 कीड़े उस पर चिपट के निकल आवें फिर पाँच घाब साफ हो जाय  
 तो उस घाब का उपाय करें ॥

### कान की सूजन का वर्णन ।

पहिले सुल्लाव दें इसके पीछे देखें, कि सूजन किस ओर की ओर  
 है या बाहर, भीतर होने का चिन्ह यह है गुमई कप देगा और

कान से रुधिर निकलने का की औषधि

जो इसका कारण रुधिर की अधिकता हो तो भीतर ले  
बहुत सा रुधिर निकालें और जो किसी चोट के लगने और जो  
तो फस्द से रुधिर कम निकालें और फिर माजु को र कि पक  
औटा के कान में डालें जो बोहरान के दिन कान से रुधिर  
तो उसे बन्द न करें जब तक कि रोगी को मूर्च्छा न आए देगी

जो साँप के काटने से रुधिर निकलता हो उसका उपदे  
इस पुस्तक के अन्त में लिखा जायगा ॥

कान के टूट जाने का वर्णन ।

फस्द खोल कर, नर्म करने वाली औषधें पिलाने, पल्लुआ,  
मुगाय, अकाकीया, राशीमन और मेंहदी के सूते पचे पीसकर  
उस जगह पर लगावे ॥

जड़ से कान के उखड़ जाने का वर्णन ।

पहिले फस्द करें फिर नर्म करने वाली औषधियाँ दें और  
कान को अपने स्थान पर जमा के गद्दी रखकर पट्टी बांध दें  
और जो पीड़ा रह जाय तो बतख की चरबी पिघला के उस  
में खतमी के पत्ते और धीरे के छिलके मिलाकर मर्ने ॥

कनकटी का वर्णन ।

यह रोग बहुधा बच्चों को होता है ॥ इस रोग में कंधों के  
बीच में और कान के जड़ में पड़ने और जोखें लगाने, और  
उस जगह को स्त्री के दूध से धोने, और मुर्दा सग और  
कबीला नरम, २ पीसकर छिड़के ॥

कान में खुजली होने का वर्णन ।

इसफ्तीन को सिरके में औटा कर और कड़वे बादाम  
का तेल उसमें मिलाकर कान के अन्दर डालें ॥

में चिल्लाहट का सा शब्द मालूम होगा ।  
ऐसी औषधें और भोजन जानें और सुबे नो भेजे को  
करें ।

## पांचवां अध्याय

नाक के रोगों के विषय में ।

यह दो मार्ग हैं एक भेजे की ओर और दूसरा गले की ओर है ।  
स्वप्न का वर्णन ।

यह वह रोग है कि इसमें सुषने की शक्ति जाती रहती है  
र किसी वस्तु की गन्ध नहीं आती ॥

जो नाक में जुरे घास के उत्पन्न हो जाने से यह रोग हो  
जसका उपाय इसी अध्याय में आगे सिखा जावेगा, और  
सूजन या सुषे के कारण से हो तो यह मालूम करे कि किस  
बाद से है और जो केवल गरमी या ठंड से हो तो उसके  
रुद्ध सहज से मालूम हो जायेंगे । कारण के अनुसार इसका  
प्रायः करना चाहिये और जो यह रोग खुरकी और पित्तान्न के  
कारण से और गम रोगों के पीछे हो तो उपाय बहुत कम  
सकेगा ।

प्राणशक्ति के बिगड़ जाने का वर्णन ।

इसमें कुछ कुछ घास मालूम होती है यह रोग तीन प्रकार  
का है (१) सब वस्तुओं की घास एकसी मालूम हो (२) एक  
वस्तु से कई प्रकार की घास सुनी जाय (३) किसी वस्तु की  
घास आवे और किसी की न आवे । उपाय इसका यह है कि  
भेजे को मनाद से साफ करें और जो नाक के भीतर घास हो तो  
उसे अच्छा करें जब केवल सुगन्ध मालूम हो तो जुन्दवेदस्तर  
की घासमें और जब केवल घुरीघास आने ली घुरक को नाक  
में टपकावे और जो यह रोग पुराना हो जावे तो घुमंघ आने के  
घुरक और घुरीघास मालूम होने में जुन्दवेदस्तर नाक में



सपाय यह है कि नली पर गरम लगा के नाक में  
 से श्वास न रुके जब यह सीधी हो जाय तब पलुआ  
 या और गुर्रमकी पीसकर चारसग के पानी में मिला  
 पर लगा के ऊपर चिपका दें ॥

## छटा अध्याय ।

मुख और जीभ के रोगों का वर्णन ।

जीभ की सूजन का वर्णन ।

कारण के अनुसार मवाद को निकालें फिर कुझा करावें  
विर या विच से हो तो तीन दिन के अन्दर काहू, कासनी  
मकोय के पानी से कुझा करें और तीन दिन पीछे क्रम-  
। और मकोय के पानी में अलसी के बीजों को मिला के  
। करें और भप सूजन घटने लगे तो बापूना, नाखूना,  
शा और अमलतास की कुल्ली करें और कफ की सूजन में  
से कुल्ली करें या उसमें सावर और अयारिज और भी  
जों और बाढ़ी की सूजन में इन्गीर पेयी के बीज और  
तास को और के बनफो का रस मिला के कुल्ली करें,  
कभी हरा धनियाँ और हरी कासनी चबाया करें कि  
न का रोग न हो जाय, और जो विष जाने से सूजन हो  
। का उपाय आगे आयेगा ॥

जीभ का घोखल होना ।

हिन्दी में इसे तोवलापन कहते हैं, इसमें ऐसा होता है कि  
। से मछी भाँति नहीं निकलते, कारण जान के उसका  
करें और कसू और छुल्लाव आदि दें, और जो जीभ  
होगई हो तो देखें कि सिर में कोई बिगाड़ है या नहीं जो  
में को मवाद से साफ करें और बच और राई आदि  
। जीभ पर मर्जें कि राख बरे, और जो सिर में कोई बिगाड़  
तो फालिज का उपाय करें, और ठुड़ी के नीचे पड़ने  
और जो जीभ की रंग टूट जाने से मवाद बहुत सा  
ने के कारण वशन्तुम हो जाने से हो तो इसका उपाय

नहीं हो सकता और जो सरसाम के पीछे हो या पुराना यह भी अच्छा न होगा परंतु पुराना पहने से पहिले नमक और नीसादर मर्ने इससे छार टर्पकेगी ।

### जीभ का बड़ जाना और निकल आना ।

जो रुधिर की अधिकता से हो तो सरारु और नीचे फस्द खोले और खड़ी वस्तु जैसे अनार मर्ने फिरा और जो कफ से हो तो अयारिज लिखा कर कफ निकाले जो न सिरके में मिलाकर मर्ने ॥

### जीभ के ढीले हो जाने का वर्णन ।

इसका उपाय जीभ के तोतलापन के वर्णन में लिखे हैं

### जीभ के फटे जाने का वर्णन ।

जो खुश्की की अधिकता से जीभ फट गई हो तो तर काम में लार्गे और मोमरोशन और घनफशे का तेल मर्ने और जो ठीक करें और खीरे के भाग जीभ पर लगावें वे मेदे के घूँये से यह रोग हो तो पहिचान यह है कि खुश्की न होगी इसमें मेदे का मवाद निकालें और शिसो में रखें ॥

### जीभ की खुश्की का वर्णन ।

जो जीभ की खुश्की गरपी और खुश्की से हो तो ठंडी दाने का लुआब नीलोफर के पानी में निकाल कर मिलाकर कुत्ता कर और देर तक मुख में लिये रहें और जिसदोर कफ जीभ पर जग कर सख गया हो तो वेद की शिकंनबीन में मिंगोकर जीभ पर पनी उससे यह कफ छू

इस रोग की पहिचान यह है कि धूसर सदास आया करेगा और जितनी ठंडी दस्तु देंगे उतना ही वहस अधिक होगा ॥

### जीभ की जलन का वर्णन ।

ठंडी औषधें दें और जो किसी मवाद से हो तो जुल्लास ही दें और कपूर मलें और ईसबोला-रैहा के भीम घृत का तैल मूत्र में रखें जल्दी रक्त पदार्थों किंहु देर तक मुख में रहने दें ॥

### जीभ में खुजली होने का वर्णन ।

इस रोग या लक्षण यह है कि जीभ काश होगी और रोगी दांतों से जीभ को खुरल्लाया करेगा (उपाय) पहिले मवाद निकालें फिर गरम पानी से कुश्ली करें फिर दूध और घाकर से कुश्ली करें इसके पीछे सिरके में कोई तेल मिलाकर छुव्वी करें और पीली हरड़ जवाकर जीभ पर मलें ।

### जिप्फडललिसान का वर्णन ।

इस रोग में गाढ़ा कफ या रुधिर जीभ के नीचे जह में जम कर कड़ा पट जाता है (उपाय) मवाद को निकाल कर नौशादर फिटकरी भुनी हुई, जगार, हरगल्ली, सिरके में पीस कर मलें और जो इससे न जाय तो काटकर निकालें परन्तु सावधानी से काटें ऐसा न हो कि जीभ के नीचे जो रंग है वह कट जाय कमी मवाद इस रोग का पथरी बन जाता है मथ कपूर की खास चीरते हैं तो यह पथरी निकल आती है और कमी सूखन हो जाती है उसके छेदने से गाढ़ा पानी निकलता है और फिर इकट्ठा हो जाता है उपाय वस्तुतः यह है कि पहिले छेदके पानी निकालें और फिर घृत सावधानी से पमड़े को कुँधी से कतर डालें ॥

### फिसादजौक का वर्णन ।

इस रोग में एक नया स्वाद स्वभाव के विपरीति मालूम

होता है चाहे कुछ खावे या न खावे जिस मवाद से होगा उसका  
भिन्ने उसके पत्रों से मालूम हो जायगा उसी मवाद को फसद और  
जुल्लाव देकर निकालें और शिकञ्जवीन से कुल्ला करें ॥

### वतलानजोक का वर्णन ।

इस रोग में जीभ को न तो स्वाद आता है और न  
न ठह मालूम होती है इसका कारण यह है कि जीभ में तभी  
अधिक होती है पहिले मवाद का पका के पेजे से निकालें और  
अफूरफरा, मुनेका, और राई को औटाकर कुल्ला करें और न  
गरमी हो तो गुलाब के फूल, और मिमाफ, औटाकर शिकञ्ज  
वीन पिलाकर कुल्ला करें ॥

### तकशशुरजवान का वर्णन ।

इस रोग में जोम और गुल्ल से छिलके उतरते हैं औ  
मलने से अधिक हो जाता है इसमें पहिले फसद और जुल्ला  
से पित्त को निकालें, आस और गुलाब के फूल और गुल्ल  
सिरके में औटाकर उससे कुल्ला करें ॥

### मुख के भीतर फुन्सियां हो जाना ।

इस रोग में फसद खोजें और जुल्लाव दें और पनिया  
पसूर और मकैया के पत्ते सिरके में औटाकर कुल्ला करें ॥

### मुंह आने का वर्णन ।

यह रोग भीतर के मवाद से होता है इसका कारण जो  
कर मवाद निकालें, जो पित्त या रुधिर अधिक हो तो व  
औषधों से कुल्ला करें, जो मुख की फुन्सियों पर लिखी गई  
और घसलोचन, गुल्लनार, पाजू और कपूर सघको पीस  
मुह के भीतर छिड़कें और जो घाव हो जाय तो सिरके अ  
नमक से कुल्ला करें इससे मवाद ऊपर को निकल जायगा नि  
जो सिरका की तेजी न सही जाय तो उसके बदले केसर

पानी में औंटाओं और जो यह रोग कफ की अधिकता से हो तो  
 घामीरा, हरद और अकरकरा सिरके में औंटा के कुन्नी करें,  
 और जो बादी में हो तो गहूँदी की पत्ती चवामे, और पाजू  
 धनियाँ पनार के छिलके सिरके में औंटा के कुन्नी करें ॥  
 बच्चों के मुँह आने में शीखिरस को पकोय के पानी में  
 घोलाकर कुन्नी करावें ॥ ३, और गाबजलाकर छिड़कें ॥

### आकिल तुलफ़्म को वर्णन ।

यह रोग बहुत ही पुरा है इसमें घाब सारे मुँह में फैल  
 जाता है इसका उपाय यह है कि कछे हुये मषाद को निकालें  
 और उन औषधों से कुन्नी करें जो 'मुँह' आने के पयान में  
 वर्णन हो चुकी है, और जो घाब फैलने से ठहर जाय तो,  
 फिन्द फियूनया मुरतीजान घाब पर लगावें, और जो इनमें  
 जलन हो तो लुभावों से या ताजा दूध में शकर मिलाकर  
 कुन्नी करें ॥

जागते और सोते में मुँह से बहुतसी राल बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी,  
 या ठंड और तरी विशेष होगी, पहिचान गरमी तरी यह है कि  
 खाली पेट में राल बहुत बहेगी और ठंड और तरी की पहिचान  
 यह है कि पेट भरे पर राल अधिक आवेगी, और मुख का  
 स्वाद खट्टा होगा और भोजन न पचेगा, जो मषाद अधिक हो  
 उसे निकालें, और गरमी में हरी कासनी का नमक के साथ  
 कुट कर चवामे और रस बसका निगलें, और ठंड में कुन्दुर और  
 पस्तगी चवावें ॥

### मुख से दुर्गन्ध आने का वर्णन ।

जो इसका कारण केषल मुख ही में होवो उसे मषादसे  
 करें, और जो भेजे से मषाद गिरता हो या मेदे में गरमी

मुख में रखें और दन्तघन किया करें, और खिली का तेल  
रोगनक्षत्र से कुल्ला प्रातःकाल कर लिया करें ॥

**ताल की सूजन का वर्णन ।**

यह रोग या तो रुधिर की अधिकता से होता है या फफ  
अधिकता से । जो रुधिर की अधिकता में होगा तो ताल  
पीड़ा और छाती होगी और जो फफ से होगा तो सफेदी होगी  
पीड़ा न होगी इसमें पहिले मवाद को निकालें और जो कुछ  
ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें ॥

**सातवां अध्याय ।**

**होठों के रोगों का वर्णन ।**

**होठों पर सफेदी हो जाने का वर्णन ।**

यह रोग कोढ़ से अलग है, इसमें फफ को निकालें, आ  
वस्तु न खावें, और खेरी का तेल नाक में डालें ॥

**होठकी खुश्की और फटने और छिलके उतरने का वर्णन**

इसमें भी वही उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा गया  
है तथा होठ को इस्त्रान लगाने दे गांजू, निशस्त्रा, क्वीरा, कु  
छान कर छपावें और जो दवा लगावें उसके ऊपर अच्छे का पतल  
झिलका जो भीतर होता है बिपका दें इससे होठ हवा  
फटेगा नहीं ॥

**होठ के फड़कने का वर्णन ।**

जो रुधिर रों से होठ में आकर गीह बन जाय और उस  
से होठ फड़के तो सरारु की फस्व खोलें और भोजन कम करावें  
और जो बस रीह चढ़ा गाढ़ा हो तो सिर्फ फड़कने का पं  
उपाय है करें और जो भेरे का विगाड़ हो तो जो गंधलावेग  
और छिचकियां आवेंगी और बसुन आने में नीचे का हो  
फड़केगा, इसमें बसुन पाहव सी करा दालें ॥

और जो मेजे के बिगाह से हो तां, उसके पीछे लकड़ा और पिगगी हागी, (उपाय) तर पस्तु न खावे पानी थोड़ा पीवे और ऐसा उपाय करें कि लकड़ा और पिगगी न होने पावे ॥

**होठ का छोटा होजाना और सुकड़ जाने का वर्णन**

जो तशन्नुज तरी से हो तो मवाद को निकालें और गर्म तेब मलें, और जो तशन्नुज खुरफ से हो तो उसका उपाय कठिन है है यच्चा जो जो यह रोग हाभाता है यह खेचने और बांधने से अच्छा होमाता है ॥

**नीचेके होठपर अधिक मांसउत्पन्न होजानेका वर्णन ।**

कधिर और वादी का मवाद निकाछे, और मसूर या मुर-दासग का मरहम लगावे, और मवाद निकासने के पीछे रम इस मांस का कासा हो तो पछने लगाने और सिरका मलें और जो र ग खाल हो तो कुछ उपाय न करें ॥

**होठ की सूजन का वर्णन ।**

जो कधिर ही व्यर्थकता से हो तो कस्द खोलें और लगाने और रसोत को, इरी मफोप क रस में घोळकर लगाने यह उपाय गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा परन्तु यह छेप इस रोग के होते ही लगाने और अन्न में बादाय के तेब का मर-हम लगाने ॥

**होठ पर फुन्सियां होजाने का वर्णन ।**

इस में मवाद निकाछे और जो घाव पड़माय तो छेप-और मरहम लगाने ॥

**होठ में घाव पड़के पीव बहना ।**

इसमें सफेदा का मरहम लगाने अथवा गाजू और मुर-दासग का मरहम लगाने ॥



मुख में रखें और दन्तधन किया करें, और तिली का तेल रोगनशुद्ध से कुचला मातःफल कर लिया करें ॥

### तालू की सूजन का वर्णन ।

यह रोग या तो रुधिर की अधिकता से होता है या अधिकता से । जो रुधिर की अधिकता से होगा तो तालू पीड़ा और लाली होगी और जो कफ से होगा तो सफेदी है पीड़ा न होगी इसमें पहिले मवाद को निकालें और जो कफ ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें ॥

### सातवां अध्याय ।

#### होठों के रोगों का वर्णन ।

#### होठों पर सफेदी हो जाने का वर्णन ।

यह रोग कोष्ठ से अलग है, इसमें कफ को निकालें, वस्तु न खावें, और खेरी का तेल नाक में डालें ॥

#### होठकी खुरकी और फटने और छिलके उतरने का वर्णन ।

इसमें भी वही उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा है तथा होठ को हथान लगाने दे गाजू, निशस्ता, कसीरा, घान कर लगावें और जो दवा लगावें उसके ऊपर थड़े फा प झिलका जो भीतर होता है चिपका दें इससे होठ हल फटेगा नहीं ॥

#### होठ के फड़कने का वर्णन ।

जो रुधिर रोगों से होठ में आकर गीह बन जाय और से होठ फड़के तो सरारु की फस्व खोजें और भोजन कम कर और जो बस रीह बहुत गाढ़ा हो तो सिरके फड़कने का उपाय है करें और जो घेरे का विगाड़ हो तो नी पाचला और हिचकियां आवेंगी और बगुन धाने में नीचे का फड़केगा । समो सम सम सम करे ॥

अगर से दूसरी जगह फैलता और फिरता हो तो दांत से होगा पहिले इसमें मवाद का निकालें फिर सोंफ अनीसन और जीरा इनको औठाकर कुन्ना करे ॥ जो कीड़े बढ़ने से दांत में पीड़ा हो तो दांत में पहिले छेद पड़ा होगा, इस में गन्धना के बीज, खुगासानी अजवायन और प्याज के बीज कूट छान कर मोप में मिला कर आग में जलावै और धूआ चसका नर कुल की राह से दांत को पहुँचावें ॥

गन्धक का अर्क पीड़ा में दांत पर डालना लाभदायक है परन्तु और दांतों पर लगाने न पावै क्योंकि यदि और किसी दांत पर लग जायगा हानिकारक होगा जो उगड़ से दर्द हो तो दाग देना अति लाभदायक है। चाहिये कि कई बार इस उपाय को करे, परन्तु ऐसा न हो कि दाग और किसी दांत पर लग जाय।

जो दांतों के हिलाने से पीड़ा और दांत थोड़े हिलते हैं तो उनको पुष्ट करे, और जो बहुत हिलते हैं तो उनको निकलवा दें, परन्तु पहिले नर को दीला करलें, नहीं तो आँख को हानि पहुँचेगी और पीड़ा के बमने के किये अकरकरा, अफीम कुन्दर की भाँदन पीसकर स्त्री के दूध में मिला कर दांत पर लगावै ॥

**दांतों के कुन्द होजाने का वर्णन।**

जो खट्टी या कसैली वस्तु खाने से दांत कुन्दर हो गये हैं तो मिर्जाज में कुल्लों का साग या बीज चवानों और गर्म रोटी दांतों में दावें और जो केवल गर्मी से हो तो कड़वी पादाम और जोजहिन्दी चवानों और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी टफारें आयेगी और मुख का स्वाद खटा होगा और थूक बहुत आयेगा इसमें कफ या पादरी का मवाद बमन द्वारा निकालें, क्योंकि मवाद का मेदे से बमन के साथ

## होठ में घाव पेड़क फैलत जाना ।

इसका यह उपाय करें जो मुँह के आने में वर्णन हुआ जब होठ में कोई बिगाह हो तो उसको पहिचान कर ले करना चाहिये जो गरमी से हो तो नर्म कपड़ा हरे धनिरे पानी, हरेवारतग का पानी, हरी कासनी का पानी और गु में बिगोकर बर्फ से ठंडा करके हाठ पर रखें, कपूर, चन्दन को ईसबगोल का लुआब और गुलाब में पीसकर स सूखने न दें ॥ और जो ठंड से हो तो सुरक, जुन्दवे अकरकरा, चमेली और नरगिस का तेल लगावे ॥

और जो सुरकी से हो तो रोगन बदाम लुआब ईसब आशानो, शकर मिलाकर पितावे और रागन बनफशा व पट्टू आदि में पिताकर लगाया करें ।

और जो तरी से यह रोग हो तो लकवे का उपाय और जो मवाद न हो तो भी फस्द और जुल्ताव दें ।

## आठवां अध्याय

### दांतों और मसूड़ों के रोगों का वर्णन ।

#### दांतों की पीड़ा का वर्णन ।

जो दांतों में पीड़ा गरमी से हो तो ठंडे पानी से जायगी और जो सरदी से हो तो गरम पानी से और जो बिगाह बिजाज में गरमी से बिना मवाद के हो तो सिरके गुलाब से कुल्ला करें और ठंडे बिगाह में पोयबिंदग को अ कर कुल्ला करें और जो किसी मवाद से हो तो उस मवाद निकालना चाहिये और जो पेट भरे पर पीड़ा हो तो क

मेदे में बिगाह होगा, उस समय मेदे का मवाद निकालने के लिये बालों को पछें दें, और भोजन में धनियां ।

जगह से दूसरी जगह फैलता और फैलता हो तो घात से होगा पहिले इसमें मवाद का निकालें फिर सोंफ मनीषून और नीरा इनको ओंटाकर कुन्ता करे ॥ भा कीड़े पड़ने से दाँत में पीडा हो तो दाँत में पहिले छेद पड़ा होगा, इस में गन्दना के बीज, सुरासानी अजमायन और प्याज के बीज कुट्ट छान कर मोम में मिला कर आग में जलाऊँ और घुंभा चसका नर कुल की राइ से दाँत को पहुँचाय ॥

गन्धक का अर्फ पीसा में दाँत पर टालना लाभदायक है परन्तु और दाँतों पर लगने न पावै क्योंकि यदि और किसी दाँत पर लग जायगा हानिकारक होगा जो उषद से दर्द हो तो दाग देना अति लाभदायक है। चाहिये कि कई बार इस उपाय को करें, परन्तु ऐसा न हा कि दाग और किसी दाँत पर लग जाय।

जो दाँतों क हिलने में पीडा और दाँत थोड़े हिलते हैं तो उनको पुष्ट करे, और जो बहुत हिलते हैं तो उनको निकलवा डालें, परन्तु पहिले जड़ को ठीला कालें, नहीं तो आँख को हानि पहुँचेगी और पीडा क घपने क लिये, अकरकरा, अफीम इन्दर की आदन पीसकर स्त्री क दूध में मिला कर दाँत पर लगावै ॥

### दाँतों के कुन्द होजाने का वर्णन ।

जो खट्टी या कसैली वस्तु खाने से दाँत कुन्दर हो गये हैं तो मिर्जाज में कुल्लफे का साग या बीज चबावें और गर्म रोटी दाँतों में दागें और जो कंधल गरमी से हो तो ककयी पादाम और जोजहिन्दी चबावें और जो कोई भीतरी कारण हो तो सट्टी दफारें आलेंगी और मुख का स्वाद खट्टा होगा और धक् बहुत आवैगा इसमें कफ या बादी का मवाद बमन द्वारा निकालें, क्योंकि मवाद का मेदे से बमन के साथ

निकलना सहज है और दर्द न होने से कोई मवाद भी दांतों पर नहीं गिर सकता ।

**दांतों की आब जाती रहने का विषय ।**

इस रोग में हर प्रकार की पस्तु खाई और चवाई न जाती इसमें यदिसे मवाद छो निकालें और बकरी की तिल्ली मूत्र कर गरम गरम दांतों पर रखें, और जो मित्रांश में कोई बिगाड़ गरमी में हो तो रोगनगुल और काफूर से छुल्ला करें ।

**दांतों के टूटने और खोखले होजाने का वर्णन ।**

इसमें भेजे को मवाद से साफ करें, और रसोत, गाजूपल अकरकरा इनका गुजन बनाकर रात पर मली । और जो यह रोग दांतों की तरफ जाते, इन्हें से हो तो दांत नीचे पक जायंगे इसका नपाय नहीं हो सका परन्तु दांतों के थोम्भने के लिये तर औषधें दें ।

**हफर का वर्णन ।**

इस रोग में दांत की जड़ में एक पीला हरा या काला कण्डा सा पदार्थ होता है और छीलने से नहीं छिलता जो मवाद अधिक हो उसे निकालें फिर लोहे की सहरनी से उसे काट डालें और नमक समन्दरफेन दुग्धना जलाकर मली इससे रहा सहा जाता रहता है और फिर उत्पन्न नहीं होता ॥

**दांतों के रंग बदल जाने का वर्णन ।**

जो दांत का रंग पीला हो तो पित्त की अधिकता होगी और जो नीला हो तो वादी की और जो चूने का सारग हो तो कफ की अधिकता होगी मवाद के अनुसार उसे निकालें पीलापन में मसूर मिरके के साथ मिलाकर मनी और काले रंग में किन्नरी जड़ रोगनगुल के साथ मिलाकर मनी और साफे में पस्तगी का तेल मनी ।

जो घटों और घुटों को हो तो उसका उपाय न कर  
 क्योंकि उसका कारण इनकी अवस्था है परन्तु इसके सिवाय  
 दोसरी या पादरी कारण से हो तो उसका उपाय करना चाहिये ॥

बहुधा दांत तंगी की अधिकता और कथिर के बिगाड़ से  
 हलने लगते हैं इसके बिगाड़ में फस्द सरार और चार रंग की  
 मोलें और ठुड़ी पर पड़ने लगाने, और मसूहों पर जोर लगाना  
 कामदायक है और फिर दांतों के घुट करने वाला मजान  
 मल्ल और जो इससे भी कामदा न हो तो दांतों को ब्रह्माद डाल  
 ना चाहिये, परन्तु पहिले दांत की जड़ को नश्वर से खीर कर  
 दोस्ती करले और उम पर इन्जीर के पत्ते उसीक दूध में भिलाके  
 दो तीन दिन मल्लें तो दांत हीना होजायगा और ब्रह्मादने में  
 सुगमवा होगी ॥

### दांत का लम्बा और मोटा होजाना ।

जो कथिर की अधिकता हो तो पीड़ा भी होगी इसमें फस्द  
 मोलें और मवाद को निकालें ॥ जो कफ की अधिकता होगी  
 तो पीड़ा न होगी, इसमें कफ को निकालें और उसीके अनु-  
 सार कोई उपाय करें ॥ कभी ऐसा भी होता है कि और दांत  
 चिम कर खाटे होजाते हैं और जबत एक दांत लम्बा दिखाई  
 देता है, यह कोई रोग नहीं है ना इसका उपाय करना हा ता  
 उस बड़े दांत को भी सोहन या आभी से रगड़ कर और  
 दांतों के बराबर करलें ॥

### दांतों में खुजली होने का वर्णन ।

इस में रोगी को दांत रगड़ने या कोई वस्तु चबाये बिना  
 चैन नहीं पड़ता, सन आगीर और बिजोप कर भेजे का मवाद  
 निकालें और खट्टी सया तेम और खारी वस्तु न खावें और  
 भी पि दि २०

चूके की जड़ को सिरके में औंटाकर या सिकनेवीन को पानी में घोलकर कुल्ला करें ॥

### सोते में दांत रगड़ने का वर्णन ।

जो तरी से हो तो भोज से मवाद निकाल कर कूटका गरदन पर मर्से नहीं तो केवल मिजाज के ठीक करने से आराम हो जाता है ॥

लडकों के दांत सुगमता से निकलने का यह उपाय है धी कछ्छे पर मर्से और कड़ी वस्तु न चबाने दें और हरी मक्का रस रोगन गुल में मिलाकर गुनगुना करके मर्से, अगुली से मसूढ़ों पर लगावे इससे जो पीड़ा दांत निकलने होती है वह न होगी ।

### मसूढ़ों की सूजन का विषय ।

जैसा मवाद हो वसी के अनुसार मवाद को निकाल वैसी ही औषधों से कुल्ले करें ॥

### मसूढ़ों से रुधिर बहने का वर्णन ।

जो यह मसूढ़ों की निर्वलता से हो तो माज्ज, मसूर अथवा मलोचन पीसकर मर्से और जो रुधिर की अधिकता से तो फस्द खोले और ठंडी औषधों से कुल्ले करें ॥

### मसूढ़ों में घाव और नासूर होजाने का वर्णन ।

मसूढ़ों में पीव निकले तो घाव होगा और जो ऐसे चालीस दिन ठण्डी होनाय तो नासूर को सत्ताई से दाग

### दांतों की जड़ में निर्वलता होने से दांतों

### के हिलने का वर्णन ।

इस रोग में दांत की जड़ का मांस कम और सुख हो जाता है गुलाब के फल, यतूल गुलनार, इन्जुलंभास, हर एक चौदह चौदह मोशे, खरबूषनिषवी, सिमाक, अकरकरा, हर एक १७॥ मोशे पीसकर मसूढ़ों पर जमादे ॥

मसूड़ों पर घुरा मांस उत्पन्न होने का वर्णन ।

कभी कभी पिछली दाढ़ के पाम सूजन हो के घुग मांस  
[अ] हो जाता है मुरमकी किटकरी पीसकर उस मांस पर  
नै तो गल जावेगा ॥

## नवां अध्याय

कंठ और श्वासनली के रोगों का वर्णन ।

कव्वे [काक] की सूजन का वर्णन ।

जो मवाद अधिक हो उसी को निकालें इसके पीछे रुधिर  
और पित्त की अधिकता में सिरक, गुलाब और इरी मकोय  
गदि से कुल्ला करें और कफ की सूजन में कांजी शिकनवीन  
और राई पानी में औटाकर कुल्ला करें और घादी की अपि-  
त्वा हो तो अमलतास को ठाजे दूध में घोलकर कुल्ला करें ॥

कव्वे के जटक आने का वर्णन ।

जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खालकर  
और सिरके और गुलाब के फूल, चन्दन, गुजनार, फूपूर  
को पीसकर कव्वे पर मर्ने ॥

और जो कफ की अधिकता से हो तो कफ को निकालें  
और शहद को पानी में औटाकर कुल्ला करें और मत्ती हुई  
किटकरी और चारहसिंगी नौशादर के साथ पीसकर किसी  
पतली वस्तु पर रख के कव्वे पर जमाके ऊपर को सठाये ॥  
और माजु सिरके में पीसकर या मुलतानी मिट्टी जली हुई  
सिरके में सूद के या सरेस सिरके में पिघलाकर और उसमें  
ईसबगोल मिलाकर सिर के ऊपर ताखू की मगह छेप करें जब  
यह सूख जायगा तो ताखू की खाल खिंचेगी इससे कब्जा भी  
ऊपर को उठ आयेगा जो इन उपायों से कुछ लाभ न हो और



गलापन्द होजाने का दर हो तो दस्तकारी करनी पड़ेगी बहुत सावधानी से, जितना अधिक हो काटलेगी परन्तु इससे काटने और गलाने में बहुत दर है अधिक कट जाने से का रक्षण अच्छी प्रकार नहीं हो सकता ।

### खुश्माक का वर्णन ।

इस रोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और रोगी रुकती है और खाना पीना पन्द होजाता है जो रुधिर और पित्त की अधिकता हो तो सरास फस्द खोले और जीभ को नीचे जो रग है उसकी फस्द करें और रुधिर कई बार थोड़ा निकालें और जो रोगी निर्बल न हो तो एक बार जितना चा रुधिर निकालें और जो पीछे फिर आवश्यक्ता पड़े तो थोड़ा रुधिर निकालें और फस्द हो तो मवाद के नर्म कर निकालें फिर सिमाक और ठही धीपघों से कुल्हा करे और गर्मी निकालने के लिये ठंडे शर्बत पिलाये और भोजन की जगह आशजौ पिलाये और जो खासी न हो तो खट्टी वस्तु से कुल्हा कराये और पिलाये जो सूजन वातर गरदन पर हो आनी त उस पर पड़ने या जोकें जनाये इससे भीतर का मवाद बा निकल जायेगा और रुधिर की अधिकता में पिंदली पर पक लागानें यह लाभदायक है जब इस रोग को तीन दिन व्यती होजाय तो अपलतास गाय के दूध में घोलकर कुल्ही कराये जब रोगी बहुत निर्बल होकर रुधिर के पास आवे पिना आवश्यकता के फस्द न खोलना चाहिये जब सूजन पकजाय और अपने आप न फटे तो घुरा करमा रिंग और अनाबील की पीठ दूध में घोलकर कुल्ही कराये इससे फूट जायगा, फिर शहद और दूध को मिलाकर कुल्ही करे कि पीठ साफ होजायगा, और भोजन की जग

यह हरीरा खाने को दें गेंहू की भूसी पानीमें धिगोकर छान लें और उसमें रोगन बादाम डालकर औठावें और थोड़ी सी शकर मिलाकर हरीरा पनाले ।

गले की पीड़ा में ठही औषध गले पर न मले परन्तु मवाद निकालने के लिये पीछे घुरे अरमनी जिफ्त और राई बानी में पीसकर गले पर लगावें मवाद भीतर से बाहर निच आवेगा, और ठुड़ी पर पड़ने भी लगावें ॥

जो यह रोग कफ की अधिकता से हो तो जुम्लाव पिलावे और मूली के पत्तों के रस में शिकंजीन घोलकर कुल्जी करे और जो यह रोग बहुत बढ़ जाय तो जीभ के नीचे की रग की फस्द खोले और घुड़ी के ऊपर और ठुड़ी के नीचे पड़ने लगावे और जो सौदा की अधिकता से हो तो फस्द बासलीक खोले और नश्तर लगावे और जुम्लाव दे और दूध और अमलतास की कुल्जी करे और मेथी और करमपन्ते के पत्ते कुट के उसके रस में रोगन नरगिस और बघल की चरबी मिला के गले के चारों ओर लगावें ॥

जुम्लाफ कच्ची पकृत घुरा रोम है इस में रोगी अपना मुख हथो की प्रकार खोल देता है और जीभ बाहर निकल आती है यह गले के सजले की सूजन के कारण से होता है ॥

उपाय इसका फस्द और जुम्लाव से करें, और कमी गरदन के जोड़ों के हट जाने से भी ऐसा होता है चाहिये कि जोड़ों से ठीक करें ॥

एक प्रकार का सुष्माफ और होता है जिसे जेम्हा फस्ते हैं । यह सबसे घुरा है इसमें रोगी के मुख से बात कफ नहीं निकल सकती, न कुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलावे है वो खे में फटा पाट के नाक से निकल आता है ऐसे ५

में जो गले पर लाल रंग हो जाय तो बहुत अच्छा है, वरना इसका बही है जो ऊपर लिखा गया है ॥

अब रोगी कोई वस्तु निगल न सके तो गरदन के दूसरे ओर पर सींगी लगा कर वृत्त उस से खाना उतरने के लिये कुछ खुल जायगी और पसली वस्तु उतरने लगेगी और जब दम रुक जाय तो गले में छेद कर दें उस की रीति का पुस्तक में लिखी गई है ॥

**गले और मरी और कुसवेरैया में फुन्सिया होना का वर्णन**

मरी में फुन्सिया का चिन्ह यह है कि निगलने के समय पीडा बहुत होगी और खट्टी और तेज और कड़ी वस्तु खावे तो और भी अधिकता होगी और कुसवेरैया की फुन्सिया का चिन्ह यह है कि घात करने में और चबाने में धुआं और पहुंचने में अधिक पीडा होगी और निगलने में कुछ न माल होगा, फस्ट खोले और ठड़े मेवों का पानी पिये और बड़ा पानी न पीना चाहिये और तेज तथा सूखे भोजन का सेवन न करे और पकने की वशा में मवाद को पकावे और फटने पीछे साफ करने का उपाय करें, जैसा कि खुआफ में लिखा गया है और गले में जो फुन्सिया पड़े तो वही कुसली करें जो खुआफ में लिखी गई है ॥

**गले में जोक चिपट रहने का वर्णन**

बहुधा ऐसे पानी होते हैं जिनमें छोटी २ जाक होती जय बिना देखे कोई उस पानी को पीता है तो जोक गले में जम नसी या रपासनली में चिपट जाती है कभी ताज्जद राह से नाक की ओर बढ़कर चिपट रहती है ॥

जो जोंक गले में नीची हो और दिव्याई न दे तो आप से आप रुधिर बह निकलेगा और बेचैनी होगी ॥

और जो कुसवेरेया में चिपटे तो हरदम खासी आवेगी और जो नाक के पास चिपटे तो नाक में रुधिर बहेगा और दिमाग बन्द होजायगा और कभी खखार के साथ मुंह से रुधिर निकलेगा ॥

जो गले में ऊपर को दिखलाई दे तो पहिले मोचने से सिर उसका दबाचकर थाकी देर ठहरे फिर बह मुंह खोल देगी तब उसको निकाल लें, और जो दिखाई न देती हो तो काली मिट्टी एक पोटली में बांध के मुंह में गले के पास ले जाय यह मिट्टी की सुगन्ध से पाटली में चिपट जायगी फिर उस पोटली को निकाल ले ॥

और जो तालू में चिपटी हो तो करेला का रस और कुटकी सिरके में औटाके नाकमें डालें, जो इससे जोक पेट में आ प्रहे तो जङ्गीसे बमन करा दें, और जो इससे भीन निकले तो जुल्हाव दें पानी बहुत साबधानी के साथ देन कर और खान कर पीना चाहिये ॥

### सुई निगल जाने का वर्णन

सुम्बक पत्थर को गुलाब में पीसकर बिनाकुछ खाये पिछाये और घड़ी भर पीछे जुल्हाव दें । और फिर मेदे को ठीक करें ॥

### सरी के भिचजाने का वर्णन

इस में पसली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती, और कही वस्तु उतर जाही है इसमें अयारिज खिलाकर बलागम को निकालें, और अनीसून कुन्दर, सुम्बक, लालवहमन, और सफेद बहमन औटा के और खानकर योर्दा २-पिछाये और ठुड़ी के नीचे पछने लगाकर जुन्दवेदमत्तर और शिफजबोन मले

## नरखरे के ढीले होजाने का वर्णन

विन्ध उम का यह है कि सांस नहीं लीजाती या मन्द हा जाती है ॥

इसका उपाय यही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है अब सांस दिशकुल न ली जाय तो जल्दी से गले में छेद का लोहे या ताँबे या पीतल की नली उस में अटकाने दें कि उस में से सांस लेंगे और फिर उस का उपाय करें ॥

## मरी में खुजली होने का वर्णन

वात करावें और पूराने सिरके से फुलती करें और और शक्कर एक २ घूंट करके पीवें ॥

## कुसवेरैया के फड़कने और कांपने का वर्णन

फड़कने का विन्ध यह है कि बात करने में हर घड़ी रुक पालूम होगी, और कांपने का विन्ध यह है कि बात करने कपकपी पालूम होगी, जैसा कि घूटों को होता है, इस का उपाय यही है जो पेशी, और इस्त्राजान का उपाय है, और इस में कुछ कराना भी लाभदायक है ॥

## दूबे हुए के उपाय में

जब आदमी को पानीसे निकालें और उसे होश न हो पाय आता हो तो उस को उलटा लटका कर पेट उसका दबा कि पानी निकल जाय और मिर्च और लीठ सिरके में और उस के घूंट में उपचारें कि होशमें आवे इसके पीछे हरीरा और और दूध पा दें कि फेंफड़ा ठीक हो जाय और सांस आधी नहीं है तो जाने कि वह पर गया ॥

## गला घोंटे हुए और फांसी दिये हुए का उपाय

जो दम आता जाता देखें तो जल्दी से फन्दे को काट

फिर देखें कि उसके मुख में कफ है या नहीं जोन हो तो सरास  
की फस्द खोलें । और तलबों में राई मलें जब उस का होश  
या चाय तो रोगन बनफसा और गर्म पानी से छुला करावे  
और जो मुह में कफ पाया जाय तो जीने की आशा नही ।

### उसरउलमला का वर्णन ।

इस रोग में कठिनता से निगला जाता है, जो यह गले  
के लग होजाने मे हा तो खुसाफ और मरी क भिष जाने का  
प्राय करे जैसा उपर लिखा गया है और जो मरी में कोई  
पिगाह होजाने से यह रोग हो तो कारण के अनुसार उस पि-  
गाह को दूर करे और दोनों कषों के बीच में क्षप करे, इस  
लिये कि मरी पीठ से और श्वासकी नली छाती से मिली हुई है ।

### मरी की सृजन का वर्णन ।

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार उसे निकालें, और बैसे  
ही शरवत पिछावे ॥

### मरी में घाव पड़जाने का वर्णन ।

इसका चिन्ह यह है कि मरी की जगह पीड़ा होगी और  
चेज और खट्टी वस्तु के खाने में दुःख होगा और त्रिकनी वस्तु  
मुली मांति निगली जायगी और मरी की सृजन के चिन्ह इसे  
विपरीत है और घाव कमी २ फूटजाने के पीछे पड़ा करता है  
और कमी बिना सृजन के गर्म मवाद के कारण पटजाता है  
प्राय इसका यह है कि सफेद मोम रोगन गुल में पिघला कर  
एक एक घूट करके पिछावे परन्तु इससे मरिले दो तीन दिन  
सुख और दूध और शकर मिलाकर पिछावे कि घाव साफ  
होनाय ॥

### आवाज घन्द होजाने और धीमी पड़जाने का वर्णन ।

इस में मरिले यह देखें कि ममले से है या गले के किसी

बिगाड़ से । जो नजले से हो तो खशखश का शरबत पिए और पोस्त खशखश से कुल्ला करें इस से नजला रुक जाय और जो गले के बिगाड़ से हो तो जैसा उचित हो वै चपाय करें ॥

कषात्रचीनी चवाना, चाकला मुनक्का, छुहारा इम चिलगोजा, बादाम, गन्ना, शहद, अलसी के बीज इनमें हर एक आषोज को साफ करता है ॥

नजले के लिये रूमात गले में लपेटे रहै और सिरको हवा से बचावें ॥

## दसवां अध्याय

### छाती और फेंफड़े के रोगों का वर्णन

#### दम का वर्णन ।

यह रोग बड़ी कठिनता से जाता है और दूर होकर होजाता है, इसकी चिकित्सा में जितनी जल्दी होसके करे कफ से हो तो छांशी के साथ कफ निकलेगा और छाती में खराबट पाई जायगी इस में पहिले कफ की मुझिश दें, जुल्लार देकर मवाद निकालें और बहुत गर्म दवा न दें से सुरकी रहजाय या मवाद गाढ़ा पड़कर जम जाय औ बाद निकालने के पीछे शरबत जूफा दो तोले गर्म पानी में कर सवेरे और संध्या को सोने के समय पिलावें और क मूली के बीज शहद के साथ धौटाकर बमन कराया करें, जिस समय कफ की अधिकता हो अलसी छुचली को में धौटाकर शहद मिला करे पिलावें, इसमें बहुत जल्दी होजायगा और अलसी के तेल में मींग को पिघलाकर पर मत्ता करें ॥

और जो यह रोग दिलकी गर्मी से होतो चिन्ह वसव है कि नाही और श्वास जल्दी जल्दी और भारी चलैगी

पास बहुत होगी और ठण्डी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें पाँचे हाथ से फन्द पासलीक खोले और नर्म करने वाली औषधें पिलावें और हाथ पाँव मर्ने ॥

और जो यह रोग फेंफड़े में अधिक गरमी होजाने से हो तो नाटी जरूरी जरूरी चलेगी परन्तु भारी न होगी और प्यास बहुत होगी और ठण्डी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें ठण्डी औषधें पिलावें और बाह्ये छाती पर सगावें । जो यह रोग छाती के परदों के ठोका पड़माने से हो तो नाटो की चाल धीमी होवी श्वास दुर्गम आवेगी जैसी कि रोने में आती है और छाती को सीधापरे बिना पूरी श्वास न आवेगी इसमें फाल्तिज की सी चिकित्सा करें और मेथी के बीज और दालचीनी शहद में औटाकर एक एक घूट पीवें और नरगिस का तेल मर्ने ।

और जो फेंफड़े की खुरकी से हो तो प्यास अधिक होगी और आवाज धीमी निकलेगी और सर वस्तुओं से लाभ होगा इसमें फेंफड़े को तारी पहुँचावे और सर औषधें छोटाकर उस में रोगीको बिठावें और बफरीका दूध पीना अति लाभदायक है और जो फेंफड़े की सरदी के कारण से हो तो ठण्डी वस्तुओं से हानि होगी और गरमी के चिन्ह न पाये जायगे, इस में फेंफड़े को गरमी पहुँचावे और मेथी के बीज औटाकर पिलावें, और गर्म तेलों को मर्ने ॥

और जो दग लेने की राह में हवा भर जाने से हो तो सूखी खासी होगी, और कफ न निकलेगा, और वादी की वस्तु खाने से और बढ़ेगा, और छाती भारी न मालूम होगी, ब्याप इसका यह है कि वाय को निकालें और खुल्लाव दें, और सोया और बायूना छाती और घगलों में मर्ने और माजून फिदासका लिखावें ॥ जो यह रोग फेंफड़े की सूजन से आ



जिगर आदि के परवों की सूजन से हो तो इसका उपाय रोगों में लिखा जायगा ॥

हेतु : जमा खुआक के कारण से हो तो इसका उपाय घसीटने का है ॥ और जो मेदे की तरी से हो तो पेट में दम बढ़ने लगेगा और छाती पेट में कम होगा इस पेट से मवाद निकालें और भोजन कम दें और पाचक औषध लिखें ॥

एक प्रकार का खांस रोग बहुत घुरा है, इसमें छाती में सीखा करे बिना दम नहीं किया जाता, और करवट से नहीं ले जाता कारण इसका या तो कोई गाढ़ा मवाद है या खांस का की शह में सूजन है या छाती के परवों का छीला हो जाना उपाय हर एक का ऊपर लिख चुके हैं ॥ इसका नाम इनकसाइस फरा है ॥

### खांसी का वर्णन ।

जो यह फेफड़े की गरमी ठंड और तरी या खुरकी से होत पहिचान इसकी लिख चुके हैं उस कारण को दूर करें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से हो तो नाड़ी भारी है और श्वास की हवा गर्म होगी और मुख का रंग लाल होगा इस में वासलीक की फसद सीलें, और ठंडी औषधें पिलावें ।

और जो जिगर की गरमी से हो तो ठंडी औषधें दें और सुकृष्ण मुलद्वयन पिलावें ॥

और जो कोई पचला मवाद भोजन से गले में उतरने लगे तो गले में सरसराहट होगी और खांसी में कफ न निकलेगा, और रक्त को सोते में अधिक हो जायगी, इसमें नमले को रोके, और पोस्त लशुन को औटा कर उससे कुत्ता करें, और पबुल गौद हस्त में रखें ॥

और जो घेले से फेंकट पेर मवाद गिरके गारा होनाय तो पड़े जोर की खासी से रफ निकलेगा, और छाती भागी बालूम हागी और इससे पहिले जुकाम हुआ होगा इसमें जुका, इन्जीर, पेयी के बीज और गुलाबटी इनको पानी में औटाकर पीवै, और गुलाबटी का सव, फाखी मिरच और शफर, बराबर लेकर पोलिषा यमाकर सुग में रखवें ॥ और जो फेंकटे और खासी में अधिक तरी होमाने से हो तो खासी में जसदार रफ निकलेगा और छाती के भीतर खरखराहट होगी, यह बहुतपा सुड़ों और तर बिजाज वालों को होता है, इसका उपाय वही है जो कफज रसास का है ॥ और जो फेंकटे में घूँसा पा गई पहुँचाने या बिछाने से खासी हो तो उस कारण को दूर करे और तर और नर्म वस्तु खावै और ठही और गुस्सा पर चीखगावै । और जो खासी किसी और रोग के कारण से हो तो उस रोग की बिकिस्ता करने से जाती रहेगी ।

जो फेंकटे में फुगिसियां पड़े जाने से खासी हो तो जाही बन्दी बन्दी चलैगी और पेसाब में मखन होगी और ठही वस्तुओं से आगम मिलेगा इसमें फसद खोले और छाती पर पड़ने लागवें और निच का जुल्लाव दे फिर जो उपाय गले की फुगिसियों का है वही इसका करे ॥ जो मेदे की तरी से हो तो मेदे से मवाद निकालें और भोजन कम दें । जो फेंकटे में वादी आजाने से खासी हो तो उसमें कफ काला और नीला निकलेगा और इसके अतिरिक्त अन्य बिगड़ वादी के पाये जायगे, इस में मेंहूँ की भूसी का हरीरा शफर या राहद डालकर पिछावें और मुगिश देखकर वादी का जुल्लाव दें ।

और जो मरसरे में पानी या और कोई वस्तु जा पड़े और उस से खासी हो तो जब तक वह वस्तु वहाँ से दूर न हो तो

## मुख से पीव निकलने का वर्णन ।

जो यह फेंफड़े की सूजन के फूट जाने या सिल आदि हो तो वषाय इस का आगे लिखा जायगा और जो गले और मुख के भीतर से आवे तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ होगा और इन स्थानों में सूजन होगा इसका वषाय पहिले लिखा चुके हैं ।

परन्तु जो सूजन के फूटने के कारण से पीव छाती से आवे तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो 'कफ की खांसी' लिखा गई है इससे मवाद पतला होके टपक जायगा और मो को भावना के तेल में पिमलाकर मर्नें और कोई ठण्डी वस्तु औ कंबज करने वाली वस्तु कभी न खाये और मवाद के पतल करने के लिये जूफा, हाशा, इन्मीर और मुन्हटी औटाक पीना अधिक लाभदायक है और यह औषध हर परदे की सूजन में चाहे यह छाती की हो या फेंफड़े की और फूट गई हो लाभ देगे ॥

ज्ञानता चाहिये कि छाती का मवाद फेंफड़े में चरकर सखरे की गद्द मुख से निकलता है विषय इसके और को शक्ति छाती के मवाद निकलने की नहीं है ॥

## फेंफड़े का सूजन का वर्णन ।

जो सूजन रुधिर या पित्त या खागे कफ से हो तो तप बहुत होगी श्वास न ली जायगी छाती भारी होगी पीड़ा होगी गालों पर लाली होगी और प्यास बहुत होगी किन्तु इन चिन्हों में मवाद के अनुसार कमी और अधिकता होती है इसमें फस्द बासलीक छोली और लो रुधिर की अधिकता हो ती पहिले फस्द खोलै इसके पीछे मत्सूर मुखयन से मवाद को नम

करें, और भा नमले से सूजन हाती फस्द सराक कर ।

फेंफड़े और छाती और उसके पास में जो सूजन हो उस में तीन दिन से पहिले फस्द खोलें, और मिघर सूजन हो उस की दूसरी ओर की फस्द खोलें और जब मवाद गिरने से ठहर जाय ता दूसरी ओर की खोलें अर्थात् मिघर सूजन हो उस ओर फस्द खोलें ।

शरह असपाव नामक ग्रन्थ में लिखा है कि पित्त क रुधिर में जिस तरफ मवाद हो उसी ओर की फस्द खोलनी चाहिये इससे बहुत लाभ होगा क्योंकि यहाँ सूजन पास हाती है ॥

फेंफड़े की सूजन में जब तप अधिक होगी ता सूजन की ओर का-गात लाज होजायगा, और भारीपन भी उसी ओर मालूम होगा, और सूजन की ओर छेदने से मुख से पानी बहुत निकलगा जो रोगी कमजोर न हो तो तीन तीन दिन पीछे फस्द खाला करें, और उसके पीछे मवाद को नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें ।

और राग के आदि में ठण्डी औषधें जो मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोकें मलें और इसके पीछे सूजन की पटकाने अर्थात् बिठाने वाली औषधें मलें और मिमाद शोया पीडा को जल्दी से अच्छा करता है ॥

विशेष दृष्ट्य—जिन औषधों में कटन हो जैसे कासनो का रस और गाढा करने वाली औषधें जैसे खशखाश और ठंडा पानी इस राग में नहीं देना चाहिये परन्तु जा यह सूजन पित्त से हा तो उस में यह औषधें दे सकते है ॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तपके लिय ठंडाई पिलानी होता माधल अस्ल और शर्वत गुलाब और आशाजी दें और ग्योरे और लोही

तथा तरबूज का पानी भी दे सकते हैं क्योंकि यह साफ करता है और इन में कब्ज नहीं है, और शिफॉनबीन जो बहुत खट्टी न हो अति लाभदायक है और जब श्वास लेने में रोगी हापने लगे तो छुआश इसवगोल पतला करके कन्द और गुलाब के साथ एक एक घूँट पितावे और छुन छुने छाती और पसली पर तरा दें जब तक श्वास होजाय और ठहर जाय ।

जो फेंकने की सूजन ठण्ड से हो अर्थात् कफ या वादी से तो कफन के बिन्ध यह है, कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारीपना और श्वास का रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के बिन्ध कोई नहीं होंगे परन्तु हलका रहेगा और गर्म म ऊपर अधिक होगा ।

सूजन जो वादी से हो तो सूखी खांसी होगी और श्वास रुकितता से लीजापगी और जो पित्तज गर्म सूजन हो फिर कटो प्रोत्राय इसका लक्षण यह है कि कफ पकने से पहिले गर्म सूजन के बिन्ध पाये जायेंगे ॥

कफन सूजन में पहिले मवाद को नर्म करें और ऐसी औषधें मर्से जो ठण्डो हों और मवाद को फेंकने पर गिरने से रोकें और थोड़े दिन पाछे जब ऊपर कम होनाय वा कफ की दृजिश पिलाकर जुलाब दें और जो वादी से हो तो खत्पी के तीज और अलसी के बीजों का जुलाब बादाम के तेल में मिलाकर एक २ घूट पिलावें और लट्ठी की मोर्ता का दूध और नर्म करने वाली औषधें मर्से परन्तु बातें सूजन का पाय बहुत कम होसकता है फेंकने की सूजन में कभी पपेरी बजाती है, खांसी रुक जाती है और कभी इससे सिलका ग. होजाता है ॥

### सिल का वर्णन ।

फेंकने में घाय पड़वाने का नाम सिल है लक्षण इसका यह है कि इस में तपेदिक अवश्य हावानो है खांसी में पीव निकलती है पीव और कफ के पहिचानने में खाखा हावाता है सलिये इसकी पहिचान याद रखनी चाहिये कि पीव पानी में उ. जाती है और आगपर जलाने से इसमें से गंध निकलती है, और कफ पानी पर तैरता है और आगपर रखने से गंध नहीं आता इस रोग का उपाय नहीं हो सकता परन्तु जो चर्चित उपाय

के साथ दैवयोग से दूर हो जाय तो कुछ अचम्भा नहीं है। इस में शीघ्रता से कस्द वासलीक एस आर खोलने मिथर पीट न हो और जो कस्द न खोल सकें तो छाती पर पड़ने लगां और जो इस में नजला भी हो तो कस्द सगरु भी खोलें और आवाजों में कैंकड़े पकाकर खिलायें और तपेदिक का रसा करें और इकीम घुसली ने लिखा है कि इस रोग में जर्रात नया गुलकन्द खिलाया जाय खिलायें यहाँ तक कि रोटी साथ भी वही खिलाया जाय परन्तु इतना न खिलायें कि दो आने लगे क्योंकि इस रोग में दस्त बहुत घुरे हैं। इस में सरतान, शरबत छाया या शरबत खशखाश के साथ नटा चक्षम है ॥

सफूफ सरतान के बनाने की विधि कैंकड़े को जाला राख करों और यह राख १० माशे घघूल का गोंद और अरमनी हर एक ५ माशे, सफेद खशखास और फाली खशख हर एक २ माशे कतीरा ३ माशे पीस के सफूफ बनायें और माशे सेवन करें ॥

छाती के परदों, झिल्लियों और घधनों उज के आस पास के जोड़ोंकी सूजनो का वर्णन

(१) जो सूजन आगे की पसलियों के भीतर भिज या एस परदे में जो भोजन की नली मेदे और जिगर के में बना हुआ है पड़े उसको जांत वल जनब खातिस और वल जनब सही कहते हैं (२) जो सूजन भीतर के सब में हो उसका नाम खानिका है (३) जो सूजन पसलियों के सजलों में हो उसको जांत वल जनब गैर सही गैर खातिस कहते हैं (४) जो ऊपर की पसलियों की

(५) जो पीठ की पमलियों के भीतर की भिन्नी में मूजन हो  
 ५१ नाम शासा है (६) जिगर और मेदे की बीच में जो पग्दा  
 वसती मूजन को वरसाम कहते हैं (७) जो भिन्नी छाती से  
 नी हुई है उसकी मूजन को मात वलसदय कहते हैं (८) और  
 भिन्नी के सामने पीठ से मित्नी हुई जो भिन्नी है उसकी  
 नाम का नाम जातवलभर्ज है जो उपाय फेंकने की मूजन में  
 जा गया है वही इसका भी करें मूजन की जगह पीड़ा से  
 रूप हो जायगी । अर्थात् जिस स्थान पर पीड़ा हागी वहाँ  
 नाम भी होगी । जातवल सदर में लेप छाती पर और जातवल  
 में कन्धों के बीच में लेप करें । इन मूजनों और फेंकने की  
 मों में यह अन्तर है कि फेंकने की मूजन में नाड़ी लहगाती  
 चलती है और श्वास बहुत रुकता है और इन मूजनों में  
 ही ऐसी नहीं होती और श्वास भी कम रुकता है और सर-  
 म में होश और ज्ञान जाता रहता है इसी कारण से इस में  
 मनुष्यों का सरसाम का धोला हो जाता है ॥

कभी ऐसा होता है कि जिगर की मूजन में श्वास रुकने  
 जाता है इस कारण से जातवलजनन का धोला होता है परन्तु  
 वलजनन और जिगर की मूजन में यह अन्तर है कि जिगर की  
 मूजन में रग पीला हो जाता है और त्वसी नहीं होती और  
 गर की धार पीदा होती है और पेशाब गाढ़ा आता है ॥

अब मवाद इन मूजनों का एक जायगा तो जो थूक मूत्र  
 निकलगा उसमें पकने के लक्षण होंगे उस समय बाहिये कि  
 ॥ उपाय करें जो पीड़ा बमने से पहिले सब मवाद खला  
 ॥ निकल जाय इसलिये गर्म पानी, आशमौ शक्कर और  
 द घनघुना करके पिछाना बाहिये हमसे मवाद थूक बम कर



निकल आवेगा और रोगी को कम करवट से सुलावे जिधर है इससे फेंकवा सूजन के पास आ जायगा और पके हुए को घूस के निकाल देगा ॥

जातवज्जनव दो प्रकार का है एक हकीकी और हकीकी । हकीकी तो यह है जो सूजन हो और गैर हकी कि गाढ़ी रोह पसलियों के आस पास और भिन्नियों में जाय और पीड़ा होने लगे ॥

रोह फसने के कारण आगे नहीं बढ़ सकती इसलिये जातवज्जनव रोह में पारीपन और उपर नहीं होता और जातवजनव हकीकी में यह दोनों बातें पाई जाती हैं इसकी चिकित्सा यह है कि रोह में पटकाने वाली औषधें लगावें और फस्द उसमें खोलना शीघ्र लाभ देता है ॥

छाती के आस पास पीच रुक जाने का वर्णन

यह इस प्रकार होता है कि फेंकटे आदि की सूजन पक फूट जाती है और पीच छाती के आस पास फेंकटे से बाहर गिरती है और गाढ़े होने के कारण वहीं फस कर रह जाती न फेंकटा उसे घूस कर निकालता है और न घूस और न मूत्र द्वारा निकल सकती है लक्षण उसका यह है कि जिस अंग में पीच होगी उस में पहिले सूजन मालूम होगी और फिर आधा शय की ओर पीच आवेगी इसमें तपेदिक अवश्य होता है हुन्मीर, सुल्फाजुफा, जिंदसोड़े, मुल्हटी, हसरान, घुनफा, बानी में औला कर रोगन वादाम और मिथी मिला कर पितावे कि यह पतला होकर पेशाब द्वारा निकल जाय और वह औषधि जो गुर्दे और मंसाने को जोखें प्रयोग करें और जो पीच दस्त में निकले तो नम करने वाली औषध दें और जो दोनों हो तो कभी यह दें और कभी यह परन्तु पेशाब कम होता है ॥

छाती का ठण्ड पा जाना और जकड़ जाना ।

यह रोग या तो बाहर से अधिक ठण्ड पहुँचने से हागा या  
 १२ से हागा और उस में दम रुक कर आयेगा (उपाय) सार  
 १ हींग आदि के तेल में जुन्द बेदस्तूर मिलाकर मर्ले और  
 औषधें आँटा कर चारों ओर हींग मायबल अस्त में मिला  
 एकर घूट पिलावे और हरींग और माबल अस्त भोजन  
 ॥

कभी यह राग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के घूए  
 पहुँचने से हो जाता है इसमें वह गर्म औषधें दें जा छाती  
 लिये है और गर्म घागों क जोश दे सकें ॥

जा अफीम पीने से हो इसमें कसर का तेल छाती पर मर्ले  
 र जा सीसे क घूए से हा ता कूट का तेल मलना अति  
 मदायक है ॥

**ग्यारहवां अध्याय ।**

**दिलके रोगों का चर्चन ।**

**दिलके मिजाज का बिगड़ जाना ।**

जो किसी मवाद से हा तो पहिले उस मवाद को निकाले  
 १२ फिर मिजाज की समाधा करे और जा फस्द की आबरप-  
 ता हा और कोई हानि भी न हो तो दोनों कर्णों के बीच में  
 इने लगवें, और मिजाज का ठीक करने और मवाद निकालने  
 कई बातों का ध्यान रखना उचित है । (१) तो यह देखलें कि  
 १२ रोग का कम है या अधिक (२) रोग एक कारण से है  
 १३ कई से (३) दिलको कपमोर न जाने दें (४) जो तप हो तो  
 तका भी ध्यान रखलें और उपाय करें इस रोग का उपाय  
 १४ तप से बचें नहीं जो घराना पढ़ कर कठिनता से जाता है ॥

## स्वफकान अर्थात् दिल घबड़ाने का वर्णन ।

यह रोग जब बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है । ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है अर्थात् या तो इसका केवल दिलमें होता है या शरीर के और स्थान में जैसे भेजा जिगर, आँते फेफड़े, और गर्भाशय आदि या सारे में होता है और जो जहरीले जानवर के काटने से बढ़ती । प्रकार में समझना चाहिये ॥

जो इसका कारण दिलके सिवाय किसी और स्थान में तो उस स्थान को ठीक करें पन्तु दिलको पुष्ट रखें जो केवल दिलमें हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक और जुल्ताव दे ॥

जो यह रोग दिलके तीव्र होने से हो तो इसे खिजावे ॥

और जो बहुत घमन आने रुधिर निकलने अथवा आने से दिल कमजोर हो जाय और उससे यह रोग हो तो दिल को पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥ जिस किसी यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थान में गरम इधामें और गर्म शहर में न रहे नहीं तो अवश्य घमन कम हो जायगी या घमन बहुत हुआ करेगा ॥

तख्ती पयश की कौड़ी के स्थान पर लटकाना इस रोग अति लाभदायक है ॥

## मूर्च्छा का वर्णन ।

जब स्वफकान बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मर जाता है मूर्च्छा दो प्रकार की होती है ॥

घुट जाय ॥ (३) यह कि चरपल कम हो और इन चीनों प्रकार में रोगी कमजोर हो जाता है ॥ रुह के जाते रहने के भी कई कारण हैं । (१) यह कि दस्त बहुत आये या रुधिर अधिक निकल जाये । (२) कोई खुशी अधिक और अघानक हो । (३) चैन और स्वाद अतिक्र होने से । (४) अधिक पीड़ा और बचेनी से रुह जाती रहती है ।

रुह के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

[१] किसी मवाद के अधिक हो जाने से अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा हागाने से (२) अधिक दुख से (३) अघानकादर के होने से रुह घुट जाती है ।

रुह के कम बराज होने के भी कई कारण हैं जैसे दिख में बिगाह होना या पुरे भागन खाना या बहुत बीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दिला में पहुँचता है वह या तो दिला की रगों में समाता है या दिला के ऊपर रहता है वसला वर्णन पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्च्छा में कारण के विपरीत उपाय करें अर्थात् जो मूर्च्छा गरमी से हो तो ठही औषधें दिला की पुष्ट करने वाली सुघावें, जैसे चन्दन, कपूर, आदि और केमड़े का अरक गले में टपकावे, और जो ठंड से हो तो मुररु और फसर आदि सुघावे, और गले में टपकावे और मित्राज के अनुसार लेप छरे, और गर्म मित्राज वाले की गुलाब और ठंडा पानी छाती और सुह पर छिड़कना लाभदायक है परन्तु जो बहुत दस्त होने से शरीर ठंडा पड़ गया हो और इसका कारण से मूर्च्छा हो तो पानी और गुलाब न छिड़कना चाहिये, इस में गर्म राती न पावे और मात्रा शस्त सुह में टपकावे और गरम तेल टूटो न नीचे मले ॥

## स्वफकान अर्थात् दिल घबड़ाने का वर्णन ।

यह रोग जब बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है अर्थात् या तो इसका केवल दिलमें होता है या शरीर के और स्थान में जैसा भेजा जिगर, आँते फेफड़े, और गर्भाशय आदि या सारे में होता है और जो जहरीले जानवर के काटने से यह भी प्रकार में सम्भनना चाहिये ॥

जो इसका कारण दिलके सिवाय किसी और स्थान तो उस स्थान को ठीक करें पन्तु दिलको पुष्ट रखें जो केवल दिलमें हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक और जुल्लाव दें ॥

जो यह रोग दिलके तीव्र होने से हा तो हल्लावे ॥

और जो बहुत घमन आने रुधिर निकलने अथवा आने से दिल कमजोर हो जाय और उससे यह रोग हो तो को पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥ जिस किसी यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थान में गरम इधामें और गर्म शहर में न रहे नहीं तो अवश्य उस कम हो जायगी या घमन बहुत हुआ करेगा ॥

तबतो यमश की कौड़ी के स्थान पर लटकाना इस रोग अति लाभदायक है ॥

## मूर्च्छा का वर्णन ।

जब स्वफकान बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मर जाता है मूर्च्छा दो प्रकार की होती है ॥

ट जाय ॥ (३) यह कि उत्पन्न कम हो और इन तीनों प्रकार रोगी कमजोर होनाता है ॥ रूढ़ के जाते रहने क भी कई तरह है । (१) यह कि दम्भ बहुत आवें या रुधिर अधिक रक्त जाये । (२) कोई खुशी अधिक और अचानक हो । (३) चैन और स्वाद अधिक होने से । (४) अधिक पीटा और घेनी से रूढ़ जाती रहती है ।

रूढ़ के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

[१] किसी मवाद के अधिक होमाने से अधिक मदिरा ने, से और अधिक मोटा होजाने से (२) अधिक दुख से (३) अचानक ढर के जाने से रूढ़ घुट जाती है ।

रूढ़ के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं जैसे दित्त बिगाह होना या पुरे भोजन खाना या बहुत बीमार रहना र भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दित्त में पहुँचता है वह या तो दित्त की में समाता है या दित्त के ऊपर रहता है उसका वर्णन पाठ आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्च्छा में कारण के विपरीत उपाय करें अर्थात् मूर्च्छा गरमी से हो तो ठंडी औषधें दित्त की पुष्ट करने की सुझावें, जैसे चन्दन, कपूर, आदि और बेशदे का अरक में टपकावे, और जो ठंड से हो तो गरम और कसर आदि जावे, और गले में टपकावे और मित्राज के अनुसार लेप, और गर्म मित्राज वाले की गुलाब और ठंडा पानी छाती, र मुँह पर छिड़कना लाभदायक है परन्तु जो बहुत दम्भ ने से शरीर ठंडा पड़ गया हो और उसका कारण से मूर्च्छा हो पानी और गुलाब न छिड़कना चाहिये, इस में गर्म रोटी ॥वे और मावज अस्तु मुँह में टपकावे और गरम तेल दूँकी रोचें मले ॥

जो गर्मी की अधिकता से बहुत सा पसीना श्रीकर मूच्छा होनाय तो ठंडे पानी या गुलाब से हाथ पांव धुलावे और पसीना बन्द करने के लिये मूद्द के मुखे पत्ते या माजू पोस कर शरीर पर मर्दन करै । जो पाछा की अधिकता से मूच्छा हो तो माजून फलोंनिया खिलावे, और कूलज की पीछा में भी ऐसा ही करे जो यह रोग जी मचलाने या हिचकी से हा तो बमन करावे और बहुधा मूच्छा में बमन कराना अच्छा है, परन्तु जो बहुत पसीना आवे सो न करावे जो जहरीला जान बर के काटने या डंक मारने से हो तो तिरियाक और विषकी दूर करने वाली औषधें दे और जो गर्भाशय के बिगाड़ से हो तो दुर्गन्धित वस्तु सु घाना चाहिये और गर्भाशय के अन्दर सुगन्ध लगादे हर प्रकार की मूच्छा में हाथ पांव पलना लाभदायक है और जब रोगी चैतन्य होनाय तो कारण के अनुसार उपाय करे ॥

मूच्छा के लक्षण यह हैं गग पीला होजाता है हाथ पांव ठंडे होजाते हैं नाडी होले २ चलती है और जो मूच्छा अधिक हो तो आंखें भी बन्द होजाती हैं मूच्छा और सक्ते में अन्तर यह है कि मूच्छा वाला पुकारने से सुनता है और सक्ते वाला नहीं सुनता जो बिन्ह मूच्छा के ऊपर लिखे गये हैं वह सक्ते और सवात के रोग में नहीं होते ॥

मौतदिल औषधें जो दिल को पुष्ट करती हैं यह हैं याकूत फीरोजा, सोने पांड़ी के गावजर्बी और गर्म औषधें यह हैं निर्विंसी, देरुनज मुरक, अम्बर, नरकाचूर, कच्चा रेशम, केसर, दोनो बहमन, लागे, कच्चा उद, घालगू पीप और बत्ती छोटी और बड़ी इलायची, रेहां के फल और कवचा, तुर्रज के खिलके, तेजपात, रसान ठंडी औषधें यह हैं कहकना, विसद

पूर, चन्दन चशलोचन, गिलेपलतूप, मेव, घनिर्षा, याकू-  
र्षा और हवाचलमिस्क भी दिल को पुष्ट करती है जो खुशकी  
और चरी दोनों प्रकार की औषधें देना चाहें तो चन्दी में से  
ही और गर्म औषधें समझ कर मिलावें ॥

जब अधिक गर्मी दिल में हो या मूर्च्छा हो तो भी बहुत  
ही औषधें न देना चाहिये ॥

**दिल के दोनों कानों के सूजने का वर्णन ।**

दिल के ऊपर दो वस्तु चमरी हुई हैं जिनमें शिश्न भी हैं  
और इनमें से हवा दिल को पहुँचती है वगैरे दिल के कान कहते  
जब कोई रोग देर तक रहता है सूझ जाती रहती है तो भोजन  
इस को नहीं लगता और इनमें सूजन होजाती है यह सूजन  
एडे मवाद से होती है । क्योंकि गर्मी कम होने से भाजन  
को भक्ति नहीं पकता और वही इस सूजन का मवाद बन जाता  
और गर्मी से हो या ठण्ड से दिल के लिये बहुत बुरी है, और  
गर्मी की सूजन से तो मृत्यु पर ही जाता है और ठण्डी सूजन  
रेणुपाय का अवसर मिलता है इसका जल्दी उपाय करना  
चाहिये नहीं तो रोपी दुयला हो के मर जायगा ॥

झाती मरी रहना, बहुत मूर्च्छा रहना, उदासी, आँखों  
पर झुरझुराहट और मुख का रंग बहुत पीला होना यह ठण्  
ही सूजन के लक्षण है ॥

इसमें चाबूता, नाखूना, हसराम, गैहू की भूसी, पानी में  
मोटाकर छाँती को टूटी तक धारे और पटकाने वाली औषधों  
को लेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें, दिल के ऊपर की  
फिस्ती में जो सूजन होती है उसमें इन कानों की सूजन से कम  
इस और मूर्च्छा होती है ॥



## दिल से भूआं उठने का वर्णन ।

यह किसी मवाद के बल जाने से होता है और जेब पुराना हो जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और तुरी २ बातों का ध्यान होते है, इसमें घादी का मवाद निकालें, और तुरी पहली बातें इस रोग में जो रंग रंग के फालें दस्त आवें या नकसीर फूट या घशासीर हो जावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा ।

## जगतिल कल्ब का वर्णन ।

इस रोग में ऐसा मालूम होता है कि दिल को कोई दवा चला है और जब ऐसा होता है तो मूर्च्छा आजाती है और हृदय से भाग निकलते हैं और थोड़ी देर के पीछे रोगी अच्छा हो जाता है इसमें दिल का ठीक करे और दिल और भेजे को पुष्ट रखें, घादी का जुल्मा बंद, मुफर्रह सगीर और सिरयाफ कबीर खिलावे ॥

## तकशुर कल्ब का वर्णन ।

इसमें दिल दिलता है और पीड़ा भी होती है और जब पीड़ा अधिक होती है तो मूर्च्छा भी आजाती है, और थोड़े समय पीछे होश आजाता है और मूर्च्छा के समय पीड़ा की अधिकता से मुह पर झुरियां सी पड़जाती है और सारे बदन से पसीना निकलता है ॥ इसमें पहिले कारण को मालूम करे कि मवाद भेजे से आता है या किसी और स्थान से फिर वैसा ही उपाय करे । जो पित्त से हो को निकासें, और जो नजला हो तो निजलाश का शोधन दें ।

ता है जो रुधिर की अधिकता होगी तो मुँह का रंग लाल  
गा और पित्त में पीला हागा इस में दाहिने हाथ से फस्द वा-  
जीक गोलें और पित्त का जुल्लाव दें और चन्दन का शर-  
ब वेदसुरक के अरक और गुलाब में घोल कर पिलाया करे  
रि मोजन अच्छा दें और दिला हो प्रसन्न करने वाली औषधें  
छावें ॥

### दिलके बैठने का वर्णन ।

यह रोग दिल में रुधिर या पित्त की अधिकता हो जाने से  
ता है और कभी इसके साथ पीड़ा और मर्च्छा भी होती है  
मुँह का रंग लाल हो तो रुधिर की अधिकता और पीला  
प तो पित्त की अधिकता होगी मवाद के अनुसार फस्द खोलें  
र जुल्लाव दें ॥

### दिल पर तरी छाजाने का वर्णन ।

इस रोग में ऐसा जान पड़ता है कि दिल पानी में डूबा  
ता है और कड़कता है यह रोग दिल घबराने के प्रकार में से  
इस में दिल के ऊपर की मिट्टी में कफ इकट्ठा हो जाता है  
पाँप) अपारिज त्रिस्तारें और गुलाब के फूल बालेंगु। वातक  
दि का लेप छाती पर करें और रोगी से मिहनत करावें और  
प्र दिलावें इससे तरी दूर जाती है कभी यह तरी लसदार हो  
दिलसे चिमट जाती है तो श्वास भली भाँति नहीं आता  
जाता रहता है क्रोध आता है और दिल को खुशी नहीं  
ही, इस में नर्म करने वाली औषधें दें और खुरकी दूर करने के  
ये छाती पर मोम रोगन का तेल मले फिर मवाद को निकाले  
र दिल को पुष्ट करे सारे शरीर में दिल बहुत वरम वस्तु है  
के बचाव में सुस्ती नहीं करनी चाहिये ॥

जाता है, या ठण्ड से जम जाता है और देर तक दूध के निकलने से भी ऐमा होता है कारण के अनुसार उपाय और जब देर तक दूध न निकलने से या घबड़े के न पीने से या किसी और कारण से ऐमा हो तो छातियों पर गर्म पानी से तरेदा दें और धीरे-धीरे दूध को खुसवावे कि सादा दूध निकलनावे और जो दूध के बन्द होने से छाती पक जाय और दूध का रंग और स्वाद बिगड़ जाय तो सूजन को पकाने के लिये चायूना, अलुसो के बीज, मेथी के बीज और खैर के बीज धरा धर लेकर चुकन्दर के पानी में पीयवा केवल पानी में पीस कर दिन में दो तीन बार छाती पर लगाने और जो सूजन आप-आप पक कर फूट जाय तो अच्छा है नहीं तो नश्तर लगावे । कभी ऐसा होता है कि नश्तर गहरा नहीं लगता और पीस की लगह नहीं पहुँचता और उससे केवल ऊपरफारुधिर निकलता है ऐसे समय में दूसरी बार गहरा नश्तर लगा में जिससे पीस निकले फिर घाव का उपाय वही है जो सुह और जीभ के घावों में लिखा गया है क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रंग और मांस है जैसे कि जीभ और सुह में, जो छाती में गूठली हो जावे तो मोम रोगन बाँधें ॥

### स्तनों का कुचल जाना ।

इस मृग को सर्ब के पत्तों के पानी में पीस कर खेपू करें और जो सूजन हो जाय तो उसका उपाय करें ॥

फिटकरी को रोगन जैत मिठा के शीशे के घासत में रगड़ें और लगावे तो छातियाँ पढ़ने न पावेंगी और जो उपाय कि अण्डपृदि का है वही इसका भी है ॥

## तरहवा अध्याय ।

### मेदे के रोगों का वर्णन ।

#### मेदे के मिजाज बिगड़ जाने का वर्णन ।

जो गरमी से मिजाज में बिगाड़ हो और कोई मवाद न  
ता याड़ा और इसका योजन पेट में जाकर बिगड़ जाता है  
र बहुतसा और भारी नहीं बिगड़ता और थली यांति पच  
ता है खारी कफ भव मेदे में होता है तो प्वास पड़ जाती है  
र उस में विशेषता यह है कि ठंडे पानी से अधिक होती है  
र गरम पानी से कम और जो मेदे में पित्त या गरमी हो  
तो प्वास बढ़ जाती है ।

और यह ठण्डे पानी से बुझती है और गर्म पानी से  
बिगड़ जाती है जो आमाशय में केवल गर्मी हो और कोई  
वाद न हो उसे ठीक करे और जो कोई गर्म मवाद हा तो उसे  
निकालें आमाशय का मवाद बमन द्वारा थली यांति निकलता

और जो किसी स्थान से मेदे में मवाद जाता हो तो वहाँ  
मवाद को निकालें बहुधा भेजे और तिल्ली और गिर से  
दे में मवाद गिरा करता है लक्षण मन्वेक के यह है जो भेजे  
गिरै तो नजला होगा और गिर और तिल्ली से गिरने में  
न स्थानों में बिगाड़ पाया जायगा जो भेजे क कारण से हा

। फस्द सरारु खालें और गिर में दाहिने हाथ से फस्द बांस  
कि या ओसीजम खालें कमी ऐसा होता है कि आमाशय पुष्ट  
गैर साफ हो लेकिन देर में गामन करने के कारण निर्बल  
जावे और मवाद उस में गिरै यह पात बहुधा गर्म मेदे की हो  
ता है कि भोजन में मिश्रण में बचै न हो जाता है और कभी  
स की अधिकता से मूर्छा आजाती है ऐसे मनुष्यों को चारिपे  
क मातः पात ही कोई खटा पस्तु खालिया करें और वेद  
मि० वि० १६

खाद्यी न भस्त्रे और कभी आमाशय के परत में मवाद के फस जाने से यही रोग होता है उसमें अयाग्निक फैहरा खिन्ना कर वमन करावे और जो इसमें शरवत इफसंतीन या पीडा हर्द मिलावें तो मवाद आमाशय की तह से बलवत्कर निकल आयेगा ॥

### पेट की पीडा का वर्णन ।

जो यह आमाशय के बिगाड़ से हो तो इसका वर्णन हो चुका है और मेदे में सूजन या घाव हा तो इसका वर्णन भी आयेगा और जो पात की अपिकता से हो तो पीडा किरवी हुई मालूम होगी डकारें और दिचकियाँ आवेंगी और पेट बालेगा और फूला हुआ होगा और जब भोजन मेदे में नीचे बतरेगा तो बाई और पीडा होगी इस में पेट कां सेकें और इलायची को गुलाब में औटाकर पिलावें और पोदीना चबावें कि डकार खुलकर आवें और कर्मनी खिन्नावें और जो पात गाढ़ी हो तो कफ का जुम्लाव दें और पचाव कराने के लिये सपाव करें पेट पर बारी कगाने से पीडा मन्दी जाती रहती है किसी कारण से पीडा हो उस में शिकमबीन को गुलाब वा बाजी में पिला कर पिलाना अति लाभदायक है कभी ऐसा होता है कि पीडा पतले या खासी कफ से हो और कोई वस्तु ठही दी जावे और कफ से पादी कुछ कम नठे और इस कारण से पांश में कुछ कपी हो तो जान पड़ता है कि गर्भ मवाद है क्योंकि ठही वस्तु से कपी हुई और इसी तरह कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्भ हा और कोई औपपि गर्भ दीजावे और वह पूरे को पचावे और पादी को तोड़े तो घोसा होता है कि मवाद बंटा है क्योंकि ठही वस्तु से लाय हुआ इन

नो थोड़ी मे बड़ी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि और  
छणों पर भी ध्यान रखें ॥

अधिक भोजन या ताज्य वस्तु खाने से पीड़ा हो तो बमन  
के बसे निकाल दालें और कई दिन तक भोजन कय खाद्य  
और तीव्र भोजन खाने से हो सो ऐसी वस्तु खाएँ जो  
सु मकार की न हों ॥

जो आमाशय के निर्बल होने से यह रोग हो तो छसछ  
सका यह है कि भोजन करने के पीछे पीडा की अधिकता  
जो और जब तक वह बमन या दस्तों से निकल न लेगा  
तो नहीं ठहरैगी इस में वह औषधें दें जो मेदे को शुद्ध करें,  
और मीशदाक का खिजाना अति लाभदायक है ॥

और जो आमाशय मवाद इकट्ठा होमाने से दुर्बल होमाय  
तो उसका लक्षण यह है कि भूख बन्द होजायगी और गर्म  
रवाद में प्यास और मतली अधिक होगी, इस में आमाशय से  
रवाद निकालें और कुर्स कीकय और कुर्स मनीसून दें ।

जो मेदे की हिस्स बहुताने से पीडा हो तो पहिचान  
सकी यह है कि पाटे कागज से पीडा उत्पन्न होजाती है, जैसे  
भोजन भी भाप या वाष्प से या वादी गिग्ने से जो मेदे के  
साथी होने के समय तिरली से गिग्ता है और उससे भूख  
बाध्प जाती है और ठंड पानी पीने से । ऐसे समय में भारी  
भोजन या ऐसी दवा खिलाएँ जो मेदे को कुंघ और सुप्त कर दें  
जैसे पोस्त कशकाश को पानी में भिगोकर और छानकर खिलायें ।

एक प्रकार की पीडा ऐसी है जो खासी पेट में बिना कुछ  
काये होती है और जाने क पीछे जाती रहती है इसके तीन  
कारण हैं एक यह कि तारी मेदे में इकट्ठी होमाय और पेट के  
कोठी होने के समय भूख की गर्मी से और उससे वाय

## भूख के बिगड़ने का वर्णन ।

इस रोग में मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने के योग्य नहीं जैसे मिट्टी, कायला, कागज, रुई, आदि और यह बहुत पेट वाली स्त्रियों का होता है इसमें पुरे मवाद मेदे में इकट्ठा होजाने हैं और उनसे विपरीति खाने की चाहना होती है इस मेदे से मवाद निकालें परन्तु पेटवाली स्त्रियों का कुछ उपाय करें उनका ऐसा स्वर्थाश तीन चार महीने पीछे आपसे आ जाता रहता है और अजवायन जीरे का चयाना और उस रस निगलना भी लाभदायक है ॥

## भोजन का होका हो जाने का वर्णन ।

इस रोग में ठण्डे से मेदे में बिगाड़ हो जाता है और तब से मेदा पेटता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होना है लक्षण उसका यह है कि खाने का होका हो और प्यास बिलकुल न हो और पेट फूला रहे और नाकी धीमी चले इस में मेको गर्मी पहुँचावे और अनीसून अजवायन, जीरा, मसूरी, आदि गर्म औषधें चवावे और मेदे पर चालछड, जायफन, आदि पीसकर मलें, और कफ से बिगाड़ हो तो उस मवाद को निकालें और तिन्ती से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और उससे यह रोग होता लक्षण उसका यह है कि जब तक पेट खाली रहे मेदे में जलन पायी जायगी इसमें सौदा का मवाद निकालें और दाहिने हाथ से फस्द बाँसलीक और असीलय खोलें कि भिन्न से सौदा निकल जाय और तिन्ती पर बार बार लागवें, जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गर्मी से भोजन खर्ची पच जाया करे, जैसे कि रसायन या कुराना खाने में होता है, उपाय इसका समझें

सुतार करे जिससे यह कारण दूर होनाय, जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर श्रफ का गिरना और खट्वा हो जाना जो तो खट्वा टकार आयेगी, और पहिले इससे नजला हुआ होगा, इसमें नजले को राकें और जो आँसों में केंचुए पड़ने से यह राग हो ता इस कारण से कि केंचुए भोजन को खालें तो उठका धरुन सोंसहवें अथवाय के नवें पाठ में किया जायगा ॥

### जू उल धकर का वर्णन ।

इस रोग में भूय बिलकुल जाती रहती है और भोजन से ऐसा दित हट जाता है कि एक टुकड़ा खाना कठिन होता है परन्तु सारा शरीर सूखा होता है, और दिन पर दिन दुबला होता है और जोर घट जाता है, और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता, जब यह घट जाती है तो मूर्च्छा उत्पन्न होती है जब मूर्च्छा हा ता पहिले बसका उपाय करें और फिर कारण का परिचान के उसे दूर करें और जब रोग कमजोर हो तो कभी जुस्वाव न दें उचम उपाय यह है कि मेदे को शुध और ठीक करें ॥

### मूख की असहनता का वर्णन ।

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आजाती है जोरिये कि हर समय भोजन बन्ता रहने और मेदे का शुध करें और खट गोठे अनार के रस में राटी भिगोकर खिलावे इस से मेदा शुध होता है ॥

### अधिक प्यास होने का वर्णन ।

यह दो प्रकार का है एक तो सखी प्यास होना और दूसरी सखी प्यास यह है कि जिसमें गरमी के वरी घट जाने के कारण पानी की चाहना हो, मा सि दि- १७



और खुरशी के लक्षण पाये जावेगे और पानी से प्यास बुझती  
 और भूँठी प्यास यह है कि खारी या हिस्सी कफ या मली  
 हुई बादी मंदे में बिगटे और उसके धोने के लिये पानी की  
 चाहना हो, इसमें पहिले तो ठंडे पानी से प्यास बुझ जाती  
 है परन्तु थोड़ी देर पीछे फिर लगती है और मुख का स्वाद  
 मवाद के अनुसार होता है, और थोड़ी देर पानी न पीये तो  
 प्यास घीमी हो जाती है जब यह रोग गरमी से हो तो यह दे  
 खना चाहिये कि, वह गरमी मंदे, जिगर, छाती और फेफड़े  
 आदि जिस स्थान पर हो ठंड पहुँचावे, और छाती फेफड़े  
 और दिल की गरमी में ठंडी हवा खाना और ठंडी वस्तु सूँघ  
 ना अति लाभदायक है तथा मंदे और जिगर की गरमी को  
 ठंडा पानी लाभदायक है, इसी से पहिचान सकते हैं कि गरमी  
 किस स्थान पर है, और जब कोई ठंडा मवाद हो तो गर्म  
 पानी में सिकजबोन घाल कर पीतावे, और बमन करावे  
 तथा सोंफ का अर्क दे और चनों को औठाकर उसका पानी  
 पीतावे परन्तु खारी में निभाये सोंफ के अर्क के और कोई  
 वस्तु गरम न देनी चाहिये, और जब खुरशी हो तो तुरी पहुँ  
 चावे, और बादाम का तेल और दूध पीतावे और जो प्यास  
 ज्वर या जिगर की सूजन के कारण से हो तो ज्वर और  
 सूजन का उपाय करें, कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर  
 निकलने से पित्त की अधिकता हो कर खुरशी बढ़ जाती है  
 और उसके कारण से प्यास लगती है इसमें ठण्ड और  
 तुरी पहुँचावे। किसी कासदार भोजन के खाने से भी प्यास  
 है क्योंकि वह मंदे में जाकर बिगड़ जाता है और उस  
 धोने और छुटाने की चाह होती है इसका  
 तो कफ का प्यास है और इसमें पा



में मिलाकर लेप करें कि यह पक कर फूट जाने और जो भाग से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दबा दें कि यह फूट जावे और फिर मानकअसक्त और गुलाब का शर्बत दूध में मिलाकर पिलावे इससे मंदे से मवाद निकल जायेगा और जब देखें कि मंदा होगया तो कुन्दर दम्भुलकज्जमैन गुलनाम फहरवा, गिलेश्वरमनी पीस कर फकावें कि घाव पुर जाय और घाशानो या हरीरा भोजन की जगह खिलावें ॥

### मंदे के घाव और फुन्सियों का वर्णन ।

इसमें पीड़ा और जलान अट्टी और तीव्र वस्तुओं को काने से होगी और घाव घामाशय के मुख पर है या भीतर है इस की पहिचान यह है कि जिस स्थान पर पीड़ा होगी वसी के घाव और फुन्सियां होंगी इसमें फस्व खोलें और सती के पीछे बंधवाय करें जो सूजन का है तो काली गायके मूत्र में थोड़े गुलाब के फूल, चूने के बीज और कंसलोघन पीस कर देना लाभदायक है और जब फुन्सियां फूटजाय तो पहिले में औषध दें जो घाव को साफ करें, फिर वह औषधें दें जो घाव को भरवाने जैसे ऊपर के पाठ में लिखी गई हैं, और नर अमलातास को हरी फासनी के पानी में लाभदायक है ।

### पेट फूलने का वर्णन ।

इसका कारण या तो कोई उगड़ा और सादा पिनाह है या भोजन या पिनाह या किसी मवाद का मंदे में इकट्ठा होना है उसके बिना और चाय जोफहज्म और मंदे के पिनाह को जितने है । छोटी हलायची कुचला के गुल्लोब में मोटाकर पिलाना लाभदायक है ॥

र जंभार्ई और अंगडाई अधिक आने का वर्णन यह तीनों रोग सब शरीर में या घेदे में यादी क बरगष से और उसमें स सचिक धु आ उठने से होते हैं, इनमें से बाद को निहाले और पचाव का ठीक करै, तथा सोंफ मीन, पीस कर गुलफद में मिला कर लिखावे, तथा मुरक स्तंगी शहद में मिला कर देना भी अति लाभदायक है, सारे शरीर से यादी का दूर करता है ॥

बमन उवाकी जी मिचलाने का वर्णन ।  
बमन वह है जिसमें कुछ घेदे से मुह की राह निकलता है । ई वह है जो कुछ न निकलें परन्तु ऐसा गालूम हो कि प-  
तोगी, जी मिचलानो बमन से पहिले हावा है, और बराबर होना तड़कलुव तपस कहना है । बपाद के अनुसार जुझाव र गरम पानी में सिकनवीन घाल कर पिलाने और आ कुछ न हो तो बमन कराना उत्तम है और जो मवाद किसी स्थान से घेदे में आकर गिरता हो तो उस स्थान का जुझाव र उसे ठीक करे, और जो बर में मुहान के दिन बमन से कभी न रोके ॥

रक्त की बमन को दूर करने वाली औषधियां ।  
आपला, कहकशा, पसलोचन, जो का सस्तु इनको चारे क-  
र दें या मिला कर ॥ (कफ की बमन और आपाशय को शुद्ध पाली औषधि) ऊदगरकी, लोण, सस्तंगी और खला ग बराबर लेकर कूट छानले और सरमें से साढ़े तीन माशे पीसीस माशे गुलफद में मिला कर दे ॥ (यादी की बमन प करे) लाटन, जाखुना, खडीला और मोन्द के इरे पचे ॥ में पीस कर घेदे और लिफली पर लगावे, और कुर्स ऐला अधिक कफ और यादी की बमन में कोई बरतु लाभदायक

## आधिक हिचकी आने का वर्णन ।

जो बहुत खा जाने से हिचकी आने लगे तो खाने के  
 होगा यदि ऐसा हो तो जल्दी वमन कराके भोजन को  
 दालें और पचाव की औपधिर्मा दें और कभी इलायची  
 पीसीना चबाने से भी जम जाता है और कभी घास से जो  
 जो हिचकी का कारण भासी हो तो वातल वस्तु के खाने  
 ऐसा होगा और पचाव न-होगा जैसे बच्चों को बहुत  
 है इस में यह वस्तु जो बासी को दूर कर दें और जो हि  
 तीव्र मवाद या औपधि के खाने से हो तो पहले सिक्करी  
 और गरम पानी पिलाकर वमन करावें और ठंडे और  
 लुसाव और शीरे दें और गर्म पानी में बादाम का तेल मिला  
 कर एक घूंट पीना और भोजन में भस्मवन डालकर खाना  
 अति लाभदायक है । और जो मेदे में कक के चिमटे रहने  
 ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि मुह से पानी निकलने  
 पचाव न-होगा और खट्टीसहारे आवांगी, अपारिज का लुप्त  
 देके उस मवाद को निकालें और जो यह किसी सादे बिल  
 से हो तो लक्षण उस दिग्द के पाये जायेंगे इसमें गर्म और  
 पीने या खाने पर प्रकार की हिचकी में उत्तम उपाय दाम  
 रोकना और बिलखाना है । और जो कारण इसका जिगर  
 मेदे की सृजन हो तो लक्षण और उपाय उसका लिख  
 इसमें छींक लेना लाभदायक है और अकं नाना और  
 मनार का उस मिलाके पीना बहुत सा ठंडा पानी पीना  
 को गले में लटकाना चमना मस्तगी और दालचीनी और  
 पिछाना लाभदायक है ॥

## इकिलवाव मेदे का वर्णन ।

इस रोग में भोजन ठहर के वमन में निकल जाता है कारण

## मेदे के फडकने का वर्णन ।

इस रोग में जिस घबराहने की भी दशा आमाशय में मालूम होती है वेबाद के अनुसार जुन्ताप दे और ना केंचुपे पड गये हों वा उन्हें निकालें ॥

## वज्रउलफवाद का वर्णन

यह एक पीडा है जो आमाशय में होता है इसमें हाथ पाँव ठंड हो जाते हैं और मूर्छा हो जाती है और जिस तक इसका दुख पहुँचता है तथा जो यह रोग देर तक रहता है तो रागी मर भी जाता है जो उपाय मेद की पीड़ा का है वही इसका है ।

## पेट में जलन होने का वर्णन ।

जो यह राग कभी राटी या कबो फलों के खाने से या मेदे में कभी तरी के इकट्ठा हो जाने से हो सो लक्षण उसका यह है कि पहिले मारी वस्तु खाई होगी और भूख के समय जलन में कमी होगी और जो पादी के गिरने से हो वा भूख के समय जलन होगी और चिक्नाई खाने से जलन जाती रहेगी जो मारी और तर भोजन के खाने से हो सो उस में कमन करावे और हल्का भोजन दें और आमाशय को-

करें और जो बाड़ी से हो तो पाये हाथ से फस्द अस्तोप वा  
तामनीक खोलें और हड्डी का मुग्धता और सिकनधीन बज्जीदि  
मेदे के ढीला हो जाने का वर्णन ।

यह दो प्रकार से होता है एक तो आमाशय स्वयं ढीला  
हो जाय और दूसरे उस के बधन जिन से कि वह नया हुआ  
है ढीला हो जाय पहिले का लक्षण यह है कि पचोब न हो  
और छाती घबर आवे दूसरे का लक्षण यह है कि आमाशय  
भुक पड़े और जिस ओर भुकेगा वसी ओर पोभ होगा इस  
में इसतिरता और फालिज का पचाय करें इन्का भोजन दे  
सुगंध वाली और शब्ज करने वाली औषधें दें और बड़ पचाय  
करें जा अगल पाठ में दिखा जायगा ॥

मेदे की बुनावट के ढीला हो जाने का वर्णन

यह रोग बहुत बुग है इसमें चाहे जैसा उत्तम भोजन लाया  
भोजन कभी नहीं पचता नया सूजन और बिगाड के लक्षण  
नहीं पाये जाते अवारिश ऊद खिलावे और पस्तगी का तब  
आमाशय पर पलें और पालतू मृगे का सगदान सुन्नाकर और  
पीस कर सत्रा दो माशे इतरीफत यो शर्वत इन्पुल आस के  
साथ चढावे और इग यशव पीस के पीने दो माशे ॥ दें

मेदे के खिचजाने का वर्णन

जो यह रोग मेदे में हो पचाय नहीं रहेगा और जो पीठ के  
बधन में हो तो स्वाते ही भोजन आंत में उतर जावेगा और रोगी  
दहनी या शई और भुक जायगा पेट सीधा न कर सकेगा और  
इसली के बधन में हो तो रोगी आगे की भुका रहेगा और पीठ  
मीधी न हो सकेगी इस में बड़ी पचाय करें जो तशान्नुज का है ॥

मेदे के कड़ा हो जाने का वर्णन

यह कड़ापन हाथ लगाने से पालूप होता है और जब बड़  
जाता है तो दिखाई भी देता है इस में मेदे का बिगाड अपरप

होगा जो गरमी से हो तो फस्द पासलीक या कसीलम खोलें; और कच्चा घाम रोगन बनफरी या रोगन गुल में पकाकर लुगाईं और जो सर्दी में हो तो घामूना, बालघृत सफ़ेद की जड़ मेथी के बीज, गुग्गुल और कदुए बादाय कूट धानकड़ लेप करें, कभी ऐसा होता है कि तिल्ली क कटे हो माने से उसी ओर से आमाशय भी कटा हो जाता है इसमें तिल्ली का उपाय करना चाहिये ॥

### मेदे के ऊपर के पद्यों के कड़ाहोजाने का वर्णन

इसकी पहिचान यह है कि बड़ापन एक ओर से पतला और दूसरी से मोटा होगा और मेदे में कोई बिगाड नहीं पाया जायगा इसका वही उपाय करें जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है ॥

### पेट चलने का वर्णन ।

जो कोई सादा बिगाड या मषाद हो तो लक्षण और उपाय उसका ऊपर लिख चुके हैं और जो फुसियों और घाव से हो तो उसका वर्णन कर चुके हैं जो भिन्न में दुर्बलता न हो तो सफ़ूफ चातुस्त्रम और सफ़ूफ इम्बुलामा लाभदायक है और जो नजले के गिरने से हो उसमें सोने के पीछे दस्त आनेगे, इससे नजले का उपाय करें दस्तों का न राकें परन्तु मषाद को निकालें और भोज को पुष्ट करें और जो भोजन से दस्त आवें तो पषाघ और योमन को ठीक करें और जो रगों क मषाद से ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और दस्त पड़े आवेंगे इस में फस्द खोलें और बदन मलें और पसीना निकालें और मूत्रें रहें और जो भिन्न न दुर्बलमाने से हो तो दस्त सफ़ेद या हरे आवेंगे इसमें भिन्न और आमाशय को पुष्ट करें और मषारिशफ़स्तनी साबुन और जो दस्त



धारी बांध कर आँधे तो पचाद क रंग से लक्षण मालूम होगा  
फस्द और जुल्ताव से उस मवाद को निकालें ।

और जो आसारीका में सुहा पड़ने से ऐसा हो तो बससका  
पर्यन्त जिगर के सुदे में होगा और जो आमाशय के सूतों के  
जाने से ऐसा हो तो कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा, या  
मेदे में गर्म सूजन हुई होगी, या बिष खाया होगा कारण के  
दूर करने के पीछे सिपाक, गरबर्द मसलावन, छालियाँ बदम  
सनार के छिलके, रसौव पीसकर, बिही या अंगूर के पानी में  
मिलाकर मेदे पर लेप करे, और सलू मव और बिही रोगन  
बादाम पिलाकर खितावे श्री खाने के पीछे देवे तक दाहिनी  
कबड छेदे रहें और कहते हैं कि दूध और मेदे को हरीग मेदे के  
सू में का साफ करता है, और जो जुल्ताव के पीने से अधिक  
दस्त आये तो छट्टा मठा ठंडा करके पिलावें ।

### आमाशयके छोटा होने का वर्णन

जो यह जन्म से ही तो अधिक भोजन चाहे इलज हो दुख  
देगा इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि नित्य  
बोहा और पुष्टि कारक भोजन दिया जाय और जो खिचाव  
या सूजन आदि से हो तो उसका उचित उपाय करे ॥

### चौदहवां अध्याय

#### जिगर के रोगों का वर्णन

#### जिगर के बिगाड का वर्णन

यह रोग मवाद से हो या बिना मवाद के इसमें जिगर  
में कोई बिगाड होगा और इसके साथ हृत् प्रकाश के लक्षण  
पड़े होंगे इस में काया के दूर करें जिगर के बिगाड को  
सनायात लाभकारक है यह अप्रत्यक्षतः के साथ हर

क बिगोट को लाभ देती है, परन्तु अमलतास उस समय जब कि पवाद को नर्म करना चाहें, अब वहाँ यह वे लिखते हैं जो कषल मिगर को लाभ देती हैं, इन्हें त के देने और बन्धन का ध्यान रख ठही औपघे, इसी का कारस जरिरक का शीरा अस्पगाल का लुध्याव, चन्दन गर्भत, और सिनऊ चीन और मटा चाहै इनका अफेला दें मेलाके और जा कन्न न हा तो कुर्म मवाशीर काविम बिही के सत्त में पिनाके या गर्भत हुम्मान के साथ दें, और इव हो तो हड़ और अमलतास औटा के दें और लष की अधिकता हो और काई गोक न हो तो फस्ट लालें, पिलों से हो ता ठहाई अधिक ट, और जो अमरु हो ता लालें और ठही औपघों क मिगर ग रलना मिगर की का बुझता है, परन्तु अब तक मिगर स पवाद न निकालें औपघे न लगावें ॥

और गर्भ औपघे यह है मोंफ, क कम क चीन शब्द का इन्द, असानासिवा, दबाउलकरकम, और क के निशालने केवे पाउलअसल और इन्नुकमिध लाभदायक है, और लूफे को पानी में औटा क साठे चार पाशे दबाउलकर के साथ देना मिगर का गर्भ और पुष्ट करता है, और नुकतामफा और घनिये का इतरीफल भी मिगर को करता है और पवाद अघि न निकले कि इससे निर्बलता दुबलापन होता है और जो इस रोग में दस्त भी आते हैं इसफा, रोईके बीज, बजुल का गोद पत्येक साठे दश पाशे और अर्क गुलाब में धिगोकन दने और जो पादी की रकता हो तो वही पहुँचावे और पादी के निशालने के लिये पीपम औटाकर या इफतीमून की गोलिएया माखना-

घन के साथ दें और कैकसीमुरचव जिगर पर लगाय  
खुरकी और कड़ापन जाता रहता है परन्तु तब  
पहुँचावो नहीं तो जलशर होजाने का डर है और  
सावत देव और जो उसको साथ कई राग भी हो तो  
भी उपाय करें ॥

## जिगर के निर्वल हो जाने का वर्णन

चाहे जिस कारण से हो उसका लक्षण यह है कि  
और मूत्र पॉस के घोवन का सा हागा और शरीर दुबला  
और भूख बिलकुल न होगी और दाहिनी ओर बगल में  
से नीचे की पसली तक लम्बाई में पीका हागी परन्तु  
पीछे जब भोजन जिगर में जाने लगेगा तो अधिक पीका  
और रोंगी कारण सफेद और हरा होगा और कभी पीका  
कभी कात्ता जानना चाहिये कि देह के प्रत्येक स्थान में  
शक्ति है पचाव दूर करने वाली शक्ति खेच लेने वाली  
और जानने वाली शक्ति जिगर की चारों शक्तियों में  
निर्वल हो जायगी उसे जिगर की निर्वलता कहेंगे । और  
इन चारों की निर्वलता के अलग अलग है जिगर के पचाव  
निर्वलता के लक्षण यह है कि दस्त और मूत्र घोवन  
होगा और सूजन और बढ़ासी आदि पाई जायगी और  
शक्ति के लक्षण यह है कि दस्त और मूत्र थोड़े होमे  
में रंग भी थोड़ा होगा और भूख न लगेगी और तीसरी शक्ति  
लक्षण यह है कि दस्त बड़े सफेद और पसले आयेगे और  
दुबला होगा और चौथी शक्ति के लक्षण यह है कि दस्त  
मूत्र पॉस के घोवन से होंगे और रुधिर के बतला होने से  
पीला होमायगा और मुख पर सूजन और बढ़ासी होगी  
जो जिगर के बिगाह से हो उसका उपाय लिख चुके हैं और

यों सूजन या जिगर ब फट जाने से या किसी और कारण  
 हो उसका उपाय आगे आवेगा और जो किसी और स्थान में  
 तो उस स्थान का उपाय करें और जिगर और रुढ़ को पुष्ट  
 रहें और फस्द असीलम भी लाभदायक है ॥

## जिगर के सुहे का वर्णन ।

इस रोग में जिगर के अन्दर या उसकी रगों में कोई गाढ़ा  
 फस्द रहता है बिना उसका यह है कि शरीर में रुधिर कम  
 हो और रंग पीला हो, और दस्त घोबन से आवें, और  
 भारी हो, और जो सुहा जिगर के ऊपर होगा तो पोभ  
 होगा, और मूत्र थोड़ा और पतला आवेगा और जो सुहा  
 हो तो बड़े और पतले आवेंगे इस रोग में और जिगर की  
 में यह अन्तर है कि सूजन में तग होती है, और अधिक  
 हो तो सुहे में बोझ अधिक होगा जो सुहा जिगर से ऊपर  
 पिंजाज के अनुसार मूत्र लाने वाली औपधे पिलावे और  
 मगर के भीतर हो तो नर्म करने वाली औपधे और जुम्लाध  
 उपायों में प्रकृति का ध्यान रखें, और जो दृज करने  
 वस्तु खाने से सुहा पड़े तो रोगन बाधम और दूध और  
 का हरीरा पिलावे और अनार का रस भी लाभदायक  
 और जो जिगर की रगों के सफ़ा हो जाने से सुहा हो तो  
 रोग जन्म से ही होगा, इसका उपाय कुछ नहीं है सिवाय  
 कि भारी भोजन खाने से बचते रहें, और कभी २ मूत्र  
 पाखी औपधे पिया करें ॥

## मासरीका के सुहे का वर्णन ।

समस्त इसका यह है कि मेदे के बीच में भीतर को लिंघा  
 बोझ पालूप हो और आमाशय और जिगर दोनों

चंगे हो और दस्त कछे आनें, और शरीर दुबला होता है  
इसका ठीक उपाय वही है जो जिगर के भीतर के छुरे को  
और वह औषधें दें जो सुई का दूर करें ॥

### जिगर के फूल का जाने वर्णन ।

इसका लक्षण यह है कि दाहिनी पसली के तले पीड़ा  
खिचाव हो और घोम न हो और तब और पचाव के पीछे  
अधिक फूल जाय, इसमें कामूनी खिलानों, और शर्करा दो  
पित्तानों और गर्म पानी से बिना कुछ खाये पीये स्नान  
परन्तु हवा न लगे, और एक बाजरे और रात से मकई की  
आवश्यकता हो तो जुन्ताव दें, और मूत्र लाने वाली  
पित्तानों और इन्का भोजन जिसमें वातनाशक  
पड़ी हो खिलानों ॥

### जिगर की पीड़ा का वर्णन ।

जो इसका कारण कोई शिगाद या सुई आदि हो तो  
का उपाय लिख चुके हैं, और जो शिरका या सूजन  
जिगर के फटने या प्यरी या रेत पड़ने से हो उसका उपाय  
आगे लिखेंगे ॥

### शिरका का वर्णन ।

जब बिना कुछ खाये या मिहन्त करने के पीछे या  
ही जन्दी से ठंडा पानी पीले उसकी ठंड जिगर को लगे  
पीड़ा हो तो गरम पानी में कपड़ा भिगो के गरम २ जिगर  
रखें और बालछद् और यस्तगी गुलाब और सोंफ के  
में पोसकर गर्म करके जिगर पर लेप करें और गरम प  
से धारें, और जो इसमें हकीम से कोई भूल हो जायगी  
जस्तम्बर या जिगर की सूजन हो जायगी ॥

## जिगर की सूजन का वर्णन ।

जो यह रुधिर या पित्त की अधिकता से हो तो लक्षण  
 रम का यह है कि तप और प्यास होगी और जिगर में बोझ  
 पीडा और जलन हागी और उसके सिवाय रुधिर और पित्त  
 की अधिकता के लक्षण पाये जायेंगे और जिगर की सूजन के  
 भीतर या बाहर जाने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके ।  
 और सिवाय इसके जिगर की भीतर की सूजन में वमन मूच्छा  
 और हाथ पाँव ठण्डे होंगे और पाहर की सूजन में खाँसी  
 और दम का रुकाव होगा और इसकी जीभ को खिंचेगी और  
 मूत्र थाड़ा होगा और सूजन टेढ़ी दिखाई देगी जब सूजन  
 रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द वासलीक या हफ़ अंदाप  
 खालें और कई बार करके रुधिर निकालें कि निर्वलता न हो  
 और कासनी और खट्टे पीठे अनारों का रस सिकजवीन  
 पिलाकर पिलाव और जो सूजन अदर हो तो मूत्र लाने वाली  
 औषधें न दें परन्तु फलों के अर्क से मवाद को नर्म करे और  
 जो अधिक नर्म करना हो ता अपलतास इसी कासनी मकोय  
 के पानी में मलाकर पिलावें ।

और जो सूजन जिगर के ऊपर हो तो मूत्र लाने वाली  
 औषधें पिलावें परन्तु कब्ज के दूर करने का भी ध्यान रखें  
 और नरम करने वाली औषधें दें जैसे खुआब बीदाना या  
 ईसवगोल आदि, और जो सूजन जिगर में रुधिर की अपि-  
 कता से हो तो उसके आदि और अंत में जो लेप करें उस में  
 उसी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और जो सूजन  
 के पटकाने वाली औषधें हों उन दोनों को मिलाकर बाह्य  
 आदि में पहिली प्रकार की औषधें अधिक हों और अंत में  
 दूसरी प्रकार की और मध्य में दोनों बराबर हों और

की सूजन में भी यही उपाय करें, परन्तु फस्द न खोलें और उसके आदि में केवल ठही औषधों का लेप कर सकते हैं जो मवाद को इधर गिरने से रोकें जैसे जो के आटे को सुखाव और सिरके में पीस कर लेप करें और जो अवरय हाँवा गरमी के बुझाने के लिये थोड़ा सा कपूर भी मिलावें और जो खारी कफ न हाँवा तो बौक अधिक हाँवा और तप न होनी, और पीड़ा कम होगी और मुँह जीभ और दस्तों का रंग सफेद होगा जो सूजन भीतर हो तो मवाद को नर्म करने वाली औषधें और जुल्ताव दें ॥

और जो सूजन ऊपर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और इस के पीछे मरुति को ठीक करें और जो सूजन बाही से हो तो निगर के स्थान पर कड़ा पन होगा इस में बाही की सु जिस दें और मोम रोगन लगावें और जब नरम हो जाये तब यह औषधें जो बाही का दस्त और मूत्र में निकालें और खचित हो तो फस्द भी खोलें इससे जल्दी लाभ होगा और एक प्याला भर के वर्ष दिने की जली हुई ऊँटनी का दूध मोठा डालकर पिलाना इसमें अति लाभदायक है परन्तु इस का ध्यान रखें कि गरमी न हो जो निगर पर जोड़ लगने से सूजन हो तो फस्द खोलें और इसबागेल के लुभाव में गिले अरमनी सादेसीन पाशे पीस कर पिलावें और राखद गिले अरमनी इच्छुलभास इसके लिये लाभदायक है और बिले खने और रेवतचीनी मत्येक सादे दश पाशे और मोमियाई सात पाशे पीसकर रोगन बनफशा या किसी और तेल में मिला कर लेप करें इसके पीछे बही उपाय है जो ऊपर लिखा गया है।

पेट के पट्टों की सूजन का वर्णन ।

यह सूजन एक ओर से मोटी और दूसरी ओर से पतली

ऐसा लम्बाई में हो या चौड़ाई में। इसमें और जगह का सूजन में यह अन्तर है कि जिगर को सूजन टेढ़ी घुलपा-कृति होती है और यह नहीं होती इसमें फस्टर खोलें और शुल्काव दें और आदि में केवल यह औषधें लगावें जो मवाद को उपर गिरने से रोकें और मवाद रुक रहा हो जाने से न हटें और अतः वे केवल वह औषधें लगावें जो सूजन को पटक दें और निर्बलता हो जाने का दर न करें और जब सूजन पकजावे और पीब पड़े तो नश्वर लगावे और दर न करें कहीं ऐसा न हो कि कोई और योग स्वप्न हो जाय ॥

### जिगर के फोड़े का वर्णन ।

जो उपाय मेदे के फोड़े का और फेफड़े की सूजन का है वही इसका है जो मवाद आँतों की ओर गिरने लगे तो इलाका सा शुल्काव दें और जो गुरदे की ओर गिरे तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और जो फूट के पेट में जावे तो जलपर होमाने का दर है उसमें मिक्की जलपर का उपाय करें और जो मवाद आपस आप पक कर पचजावे तो रोगों में कमी होगी और मूत्र दस्तों और मूत्र में पीब न निकलेगी ॥

### जिगर की फुन्सियों का वर्णन ।

कथन उसका यह है कि जिगर में कोई गरमी से बिगाड़ हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी रोमांच खड़े हो जाय और बाहर लगे इसका यह उपाय करें जो गरम मवाद के बिगाड़ से पहिले पाठ में लिखा गया है ॥

### जिगर के फड़कने का वर्णन ।

इसमें ऐसा पालूम होता है कि कोई फूँकता है, और यह बात थोड़ी देर तक रह कर पद हो जाती है कारण इस का जिगर का सुद्धा है और बाकी का फिरना और यह



इसमें वह औषधें दे जो सुखे को दूर करे और दाहिने हाथ से फस्द अभीलप खोले ॥

### जिगर की पथरी का वर्णन

लक्षण इसका यह है कि भोजन पचने के पीछे बसन् आवे और कोई वस्तु चुमे जिससे जिगर में पीड़ा हो और कभी हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कड़ापन मालूम हो और देखने में भी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फस्द पासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगे तो रुधिर के नीचे रेत हो इसका उपाय वही है जो अठारहवें अध्याय में मूत्र में रेत आने के वर्णन में लिखा गया है ॥

### जिगर के छोटा होने का वर्णन

इसका लक्षण और उपाय वही है जो आमोशिय के छोटा होने में लिखा गया है परन्तु इसमें जिगर से मवाद निकालना चाहिये चाहे गरम करने वाली औषधें दे चाहे मूत्र लाने वाली ॥

### जिगर से दस्त आने का वर्णन

यह रोग छः प्रकार का है, (१) कीड़ी जिस में दस्तों में पीव आती है, कारण इस का जिगर के फोड़े का फूटना है उपाय इस का लिख चुके हैं ॥ (२) गस्माली जिसमें मांस के धोषन के से दस्त आते हैं इसका कारण जिगर की निर्जलता है उपाय इसका भी लिख चुके हैं इसमें गुनक के घण्टे समेत खाना अति उत्तम है ॥

(३) दमनी जिस में रुधिर के दस्त आते हैं, कारण इस का जो केवल रुधिर की अधिकता हो और घाबल हो तो लक्षण इसका यह है कि एक बार बहुत सा रुधिर निकल कर ठहर जावे और फिर थोड़ी देर पीछे निटले और चिन्त

की अधिकता के उत्पन्न हों, और जो जिगर पर घाव या तगने से हो ता मेंदे और आंतों के जाली होने पर थाड़ा रुधिर परापर चला आवेगा और बिन्दु घाव के उत्पन्न । जो यह रोग रुधिर की अधिकता में जानो जब तक निर्गन्ध न बढने लगे दस्तों को न बन्द करें और शुरू में फस्द खोलें मवाद को दूधरी और गिरावे, उपाय इसका यह है । य पाँच और छातियों को बन्द कर बाँधें और फस्द में २ रुधिर ठहर ठहर के निकालें और वन्धन की आवश्यक हो तो कुर्स, कहरुवा कुलके क बीनों काशीरा और चारतगानी मिला कर दें और भाजन थाड़ा खोलें और, जा घाव जरण से हा उसका उपाय यही है, और जो यह रोग रुधिर अधिकता न हो तो कारण को दूर करें और कुर्स नफपुछदम राबन्द बढ़ा कर देना वन्धन और घाव भरने के लिये अति रदायक है ॥ (४) सफराबी इसमें जिगर पर गरमी होगी, का उपाय भी जिगर के बिगाह में लिख चुके हैं, परन्तु य निकालने और ठीक करने से पहिले दस्तों को न रोके ॥ (५) सदीदी कारण इसका जिगर में रुधिर या किसी और मवाद जल आना है, इसका लक्षण और उपाय भी यही है, जो ये प्रकार में लिखा गया है । चंदन को गुलाब में घिस कर गर पर लगावे, और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥ (६) सासरी इसमें दस्त गाढ़े कीचड़ से आते हैं, इसका कारण जिगर के फोड़े का फूटना है या जिगर के मुड़े का खुलना और जुरे मवाद का बहना या जिगर के मवाद का जलना है इसमें लक्षण और कारण जान कर सचित उपाय करें, और जब तक दुर्बलता न बढने लगे दस्तों को कभी न रोके, इन दस्तों और आमाशय के दस्तों का अन्तर जिगर और आमाशय

के लक्षणों से जाना जाता है जिगर के दस्तों में डूरी होगी, दस्त धारी करके आयेगे, खाली पेट में दस्त रुक पीड़ा न होगी और प्रति दिन रोगी दुबला होता आया प्यामाशय के दस्तों में यह घातें न होगी, परन्तु जब दस्त देर तक रहते हैं तो मेदे से भी दस्त आने लगता समय मरोह और जिगर के चिन्ह इकट्ठे हो जायेंगे, ऐसे पर दोनों के अनुसार उपाय करें ॥

### सूउल किनीआ का वर्णन ।

यह रोग भी जिगर का पिगाह है और जलधर से होता है । लक्षण इसका यह है कि मुख और हाथ पाँव पर सुखाहट होती है और जिगर की निर्बलता के लक्षण उत्पन्न हैं ॥ उपाय इसका जलधर में लिखा जायगा कि यह रोग घृष्ट नहीं होता है इसलिये ठण्डी निर्बल औषधें और फर कटें और पैदल चलें, तो यह रोग बढ़ जावे और जल होता जान पड़े तो एक रसी ऊटनी के ताम्रा दूध में दो रस सिकलबीन मिला कर दें अथवा अनार का रस पिलावें, दूध पानी बिछाहुल न पीवे उसके बदले कासनी और सोंफ और कोय का अर्क, पिलावें और जो हो सके तो भूले रहें नहीं भूग या चनों को भोटा कर उनका पानी दें और जो बहरे बवासीर या मासिक रुधिर के रुकने से हो तो मूत्र लाने वाला औषधें देकर और लेप लगा कर उन्हें जारी करें और जो इस काम न हो तो फस्द साफिन खोलें और रुधिर थोड़ा निकास फस्द से पहिले सुन्ताव पिलाना उपाय है ॥

### जलधर का वर्णन ।

यह रोग तीन प्रकार का होता है ( १ ) लहमी रस में सा

र, पर सूरस्रगाहट होती है और मवाद भास के भीतर होता  
 (२) जिसकी इस में पेट मशक सा हो जाता है, और हाथ पाँव  
 कभी सूजत होती है और कभी नहीं होती, और पेट के पर-  
 में तभी सपा जाती है (३) तबली इसमें गाढ़ी बाढ़ी पेट के प  
 में सपा जाती है और पेट पर हाथ मारने से तबले की सी  
 म निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करे और फिर  
 र को ठीक करे और गरमी पहुँचावे और नी मरपी हो तो  
 शान्त करे फिर इस रोग का उपाय करे अर्थात् दस्त  
 पून और पसोना लाने वाली औषधें दे जैसे शरीर को बालू  
 ड देन, और खुरक औषधें मलना जैसे सरकपूर और  
 और खुरकला और महुवे का आटा आदि और खुरक  
 वाली औषधों का सेप करे उण्डा पानी न पीवे और गरम  
 में भी अधिक न दे और जो बिना उण्डा पानी पिये सैन  
 तो छोटा छोटा जिसकी टोंटी सकही हो उससे एकदू दूँद  
 गले में टपकावे और वह पानी भी पका हुआ और उण्डा  
 हुआ हो और गोदा सिरका भी उसमें मिलावे और जो  
 क बड़ले कासनी और सोंफ को अर्क दें तो बसप है और  
 पोदा हो । उचित है कि दिन भर में मोजन से तिगुना  
 पिलावे और स्वस्थ दशा में मितना भोजन खावे हो उस  
 । हिस्सा इस रोग में खावे इसमें अनार अति लाभदायक  
 ना ला सकै खावे और जहाँ तक हो सके अन्न न दे और  
 सोंफ अनीसून मिलावे और सूखी रोड़ी लिखावे, बरपी  
 का भी अति लाभदायक है । इसका भोजन और पानी के  
 रखावे, यह दूध पिलानेकी रीति यह है कि पहिले दिन १४०  
 लावे, फिर हर भोज १४० माशे बढ़ा दिया करे, पच्छु

इसका ध्यान रखें कि आमाशय में दूध जमने न पावे इस-  
 पोदीना और हठ सिक्कनचीन कभी न दिया करे तो दूध न  
 गा और लहपी जराबन्द का जुल्ताव दें, और जो गरमी हो  
 हरद को ओटा के दद मुकरर के साथ दें और जिक्की में जा  
 रमी न हो तो कलकलानमहार दें, और जो गरमी हो तो क  
 कलानमवारिद और पीली हरद का जुल्ताव, अति लाभदायक  
 है और तबली में पिंजाज के अनुसार जुल्ताव दें, और सब  
 कारों से मवाद निकालने के पीछे जिगर पुष्ट करने के लिये कुस  
 अम्बर वारीस आदि खिलाने और मूत्र लाने के लिये कुस मा  
 जरीयूर दें और एक ही ओषध मूत्र लाने वाली नित्य न दें उसे  
 बदलते रहें और जो ओषधें दें उसे भली भाँति पीसलिया कर  
 कि वह जिगर में तुरन्त पहुँचे। इस रोग में पसीना लाना भी  
 अति लाभदायक है ॥

रीति बसकी यह है कि खारनिमक का बाबूना के तेल में  
 पिटा कर शरीर पर मले और पसीना को पोंछते जायें और  
 दूसरी रीति यह है कि गरम रेत में रोगी को बिठावे या लिटावे  
 उसके चारों आर शरीर को रेत से तोप दें केवल मुख खुला रह  
 है जब रेत ठण्डी हो जाने ली और गरम तेल डालें इससे धूमन  
 जन्दी पटक जाती है और जो सुगान किसी एक स्थान पर हो  
 जैसे हाथ पांव में तो उसी को रेत में गाढ़े और ऐसे ही धूप में  
 बिठावे और समुद्र के पानी से स्नान कराने। जो नमक को पा  
 नी में घोलेकर कई दिन तक धूप में रखें वह भी समुद्र के स-  
 मान हो जाता है ॥ यह लेप तरी को सुझाता है यथा: मेयी का  
 घून, जगली पधुगर की पीठ पतख का पेद का

और पुरानी चरबी इन सब को मिलाकर परहय बनालें  
 जलन्धर में सारे शरीर पर लेप करें और तलबी में  
 पांच पर और जिकी में केवल पेट पर लेप करें तबली  
 जलन्धर में मवाद निकालने के पीछे बादी के तोफने का स्थाप  
 करें और सूखा सुहाय, इस्पद, सोंफ और उसका पानी इनकी  
 बनी बनाकर गुदा में रक्ख । जिकी जलन्धर में कोई हमीक  
 बीरा देते हैं उससे पीला पानी निकलता है परन्तु इसमें डर  
 है । इस रोग में जो यानी रोगी को पिलाते हैं उसके पकाने की  
 यह रीति है कि सो हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिला-  
 का भीटावे और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के  
 पदल पिलाया करें । इससे जलन्धर की प्यास बहुत बुझती है,  
 प्यास के बुझाने और जिगर क सुहा खालने के लिये सिरका  
 अति लाभदायक है जरिरक भी अच्छा है किन्तु जो खासी हो  
 तो जरिरक न दें । जा इस रोग व साथ कई और रोग हो तो  
 उसका भी ध्यान रक्खें । जिकी जलन्धर पेट पर लेप करें, नमक  
 भरपनी, मुलहटो फर्दमाना, और मुनक्का, मत्येक दश माशे,  
 करस के बीज, साठे चौबीस माशे, चकरी की मेंगनी १७५  
 माशे, जौ का आटा और गी का गावर मत्येक २१० माशे, सय  
 का पीसकर सोंफ या कामनी के पानी में मिलाकर पेट पर लगावें  
 तबली जलन्धर में जब बहुत दिन हा जावें और पेट कड़ा  
 होजावे तो इस समय पेट बहा हाने के सिपाय और कुज डेर  
 नहीं है और उपाय उसका यह है कि उन औषधों का लेप  
 करें जिनसे पेट नर्म हा उसके पीछे पायुना, नाखूना, दोनायरुमा,  
 सातरा, सुहाय के बीज, जुन्दवेदस्तर, भाऊ की राख और  
 नमकन, छूट जानकर सुहाय क पानी में पीस कर पेट पर लेप  
 करें, और जब जलन्धर में कोई औषध लाभदायक न हा ता

पाँच स्थान पर दाग दें एक मेदे पर दूसरा जिगर पर, तीसरा तिल्ली पर और चौथा मेदे पर नीचे को पाँचवा टूटी पर जो रोगी पुष्ट हो तो सब दाग इकट्ठा दें नहीं तो ठहर कर दें।

## पंद्रहवां अध्याय ।

यरकान तिल्ली और पित्तों के रोगों का वर्णन ।

### पीलिया रोग का वर्णन ।

इस रोग में शरीर का और आँखों का रंग पीला या काला हो जाता है, पीला यरकान पित्तों के फैलने और काला यरकान बादी के फैलने से होता है ॥

पीला यरकान (पीलिया) कई प्रकार का होता है, एक बड़े बुढ़ान के दिन पित्तों के चमड़े की ओर आजाने से होता है, इसमें जो रोगी पुष्ट हो तो कुछ सपाय न करें और जो दुर्बल हो तो घने गर्म पानी में बिठावें कि शरीर के बिद्रु खुलें और मवाद भली भाँति तरबा में आ जाय और केवल सिकन चीन को या उस को कासनी के शीरे के साथ पिलावें । जो पीलापन आपसे आप जाता रहे तो अच्छा है नहीं तो खोलने वाली और जला देने वाली औषधें पिलावें (२) जिगर में गरमी से कोई बिगाड उत्पन्न होने के कारण हो बहुत रुधिर की सप में होता है इसकी पहिचान जिगर के बिगाड से होगी इसमें वही सपाय करे जो जिगर के बिगाड में लिखा गया है ॥ (३) पित्त के बिगाड से उत्पन्न हो सद्यः उसके यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और उससे पहिले सफेद मूत्र आवेगा कि पीला होकर गाढ़ा और काला हो जायगा

और न कोई बिगाह और सुहा मिगर में होगा और भूल  
 सी की सैसी हो रहेगी इसमें भिकजवीन कासनी के शीरे के  
 पिछानों और जो उपाय मिगर गरमी का है वही इस  
 है (४) पिछे में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त  
 निकल कर फैले, लक्षण उसका यह है कि तप रहेगी और  
 भि में कटि पहुँगे और उबकाई और बपन होगी जो उपाय  
 गुरु की गरम सूजन का है वही इसका है ॥ (५) जो सब  
 तीर और रंगों की गरमी से उत्पन्न हो उसका लक्षण यह  
 कि देह जलेगा और कब्ज रहेगा और अग में खुजली और  
 लक्षण गरमी के जावेंगे । जो कोई सादा बिगाह हो तो  
 गूई पित्तानों और जो मवाद हो तो उसे निकाले और सारे  
 तीरों को ठीक करें और तंगी पहुँचाने वाले तेल मर्लें और उसी  
 तीर के आचजन में बिठानें ॥

(६) जो शरीर के छिद्र बंद होने से उत्पन्न होता है उसका  
 लक्षण यह है कि गरमी श्रुत में बहुत चलने से रेत शरीर पर  
 जाती है और छिद्र बंद हो जाते हैं इससे विष उबल कर  
 जाते हैं इसमें खैरु के फूल और गेहूँ की भूसी प्रोटाकर उसके  
 पानी से न्हावें ॥

(७) जो मिगर की गर्म सूजन से हो तो लक्षण और उपाय  
 जो उसी सूजन में लिखा गया है ॥ (८) जो मिगर के मुख  
 से हो तो इसका उपाय भी मिगर के मुख में मिलेगा ॥ (९)  
 बिपैले जानवर के काटने और बिपलाने से उत्पन्न हो,  
 बिप का अवगुण दूर करें और बड़ औषधें दें जो प्रविष्ट हों  
 जो गरम बिप व्याप्त हो तो कुर्स का पूर और ठंडी औषधें  
 और जो ठंडा बिप हो तो तिरियाक फारूक जिलावें (१०) पित्त  
 हो जावे और पित्तों को मिगर से न खेंवे, और



सप देह में फैल जाने, लक्षण उसका जीमचलाना, पित्त वमन हाना कब्ज रहना और दस्त बिना रंग के होता है इस उपाय वही है जो जिगर की निर्मलता का है, (११) जिगर और पित्त के बीच में जो रास्ता है उसमें सुई पड़े लक्षण का वही है जो पित्त की निर्मलता में लिखा गया है और दस्त भी धीरे धीरे सफेद आने लगेंगे इसमें जिगर के सुई को खोलें

(१२) पित्त और आंतों के बीच में जो रास्ता है उसमें सुई पड़े, इसमें अचानक दस्त सफेद आनेंगे, और कब्ज होगा इसमें भी सुई को खोलें और इन दानों प्रकारों में शपथ तास को करम कज्जले के पानी में घोला कर कढ़ये बादाम, रोगन मिलाकर पिछाना अति लाभदायक है ॥ (१३) व दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्सा उत्पन्न हो, लक्षण का वही है जो ऊपर के प्रकारों में लिखा गया है, परन्तु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

(१४) जो कफ की कूलज से उत्पन्न हो, इसका कारण यह है कि लसदार कफ उसका रंग के मुख पर चिपट जा जिससे पित्त गिरते हों, उपाय इसका वही है जो कूलज का इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आदि में रह जाय तो गरम स्थान में बैठ कर पुराना सिरका ना में डालें और सिरका और गुलाब मिलाकर आंस में टपकाएं और इससतीन को आँटाकर कुज्जा करे ॥

काक्षा बरकार (कमलवाय) भी कई प्रकार का होता है, (१) जो पुश्तान के दिन हो, तिब्बती के रोगों में इसके पीछे तिब्बती क यह रोग पट जायेगा, इसका उपाय वही है जो पित्त के प्रकारों में लिखा गया है, और पाबूना और सोये का तेल मलना और

लाभदायक है । (२) जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है उसमें सुहा पड़े, लक्षण उसके यह है कि भूख घीरे २ घटेगी और जिगर में घाफ़ होगा और यरकान भी घीरे २ बहेगा, इसमें सुदे खोल, और जुज्जाव दें, और पाये हाथ से फस्द बासलीक अथवा अमीलम खोलें ॥ (३) येदे और तिल्ली के बीच में जो रास्ता है, उसमें सुहा पड़े इसमें भूख अचानक जाती रहेगी और तिल्ली में घाफ़ हागा इसका उपाय भी ऊपर की प्रकार का सा करें ॥ (४) जा रुधिर के जल जाने से उत्पन्न हो, यह जिगर की गरमी के कारण से होता है इस का लक्षण और उपाय जिगर के बिगाड़ में देखो । (५) जो तिल्ली की निर्बलता से उत्पन्न हो इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

(६) जो तिल्ली की सूजन से उत्पन्न हो इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥ (७) जिगर में अधिक ठंड से बिगाड़ हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो उपाय इसका जिगर के रोगों में लेखा गया है ॥

जब यरकान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों ॥य से फस्द खोलें, तीन दिन बीच देकर और ऐसी औषधें प्रैदा कर पिलावें जो बादी और पित्तों को निकालें, और बाद अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें और जिगर और तिल्ली को ठीक करें ॥

### तिल्ली के रोगों का वर्णन ।

गरमी का लक्षण तिल्ली का जलना (भूख और दस्तों का रंग ॥ल और कासा होना गरमी के लक्षण पाये जायगे) ठंड का लक्षण यह है कि तिल्ली के स्थान पर गद् बट होना भूख न पचना और ठण्ड के दूसरे लक्षण खुरशी के लक्षण

## तिल्ली की सृजन के पकजाने का वर्णन

लक्षण पाँच पढ़ने का यह है कि पीटा होती है, जैसे की वस्तु चुपती हो और मूत्र में तलछट निकलती है और दुर्गंध आती है और वही ऐसा होता है कि यह सृजन अंदर की फूटती है और छलटी और दस्तों में निकलती है वषाव, इसका यह है जो जिगर के फोड़े का है परंतु मूत्र लाने वाली औषधि मकृति के अनुसार दें और जो पीव निकलजाने के पीछे भी कड़ापन रहे तो पादी की सृजन के लेप लगावें और कब्ज करने वाली औषधों से बचें और जब सृजन कही होके पुरानी हो जाय और कोई औषध लाभकारक न हो तो दाग दें इसकी रीति यह है कि चाम को तिल्ली की जगह से मोचन से पकड़ के अच्छे ठालें और लांहे के औजार से जिसकी दो नाकें हों अथवा भांति गरम करके दाग दें, और उसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीन बार में छै दाग हो जाय और जो शस्त्र छः पहल का हो तो और भी अच्छा है उससे एक ही में छः दाग हो जायेंगे ।

## तिल्ली की निर्बलता को वर्णन

जो तिल्ली की आकर्षण शक्ति में निर्बलता हो लक्षण उसका यह है कि भूख बिलकुल जाती रहेगी, आवासी के रोग उत्पन्न होंगे और जो उसकी मांस की शक्ति निर्बलता हो तो सौदा की छलटी और दस्त होंगे और जो उसके पचाव में निर्बलता होगी तो भूख बहुत होगी, या पादी के दस्त होंगे और दूर करने वाली शक्ति में निर्बलता हो तो तिल्ली बह जायगी और भूख जाती रहेगी तिल्ली के पुष्ट करने के लिये इफमतीन रुपी पालक भाज का फल कढ़वाना और सरकह

की मट्ट की कुन्धी करें, और किम की मट्ट और गुलाब के  
फल, गुगल सब को कूट कर भाऊ के पत्तों के पानी में या  
गुलाब के पानी में मिलाकर सिरके के साथ तिन्ही पर लेप  
करें और तिन्ही को खुगखुरे कपड़े से बन्धें और उस पर खाकी  
सींगी लगावें ।

### तिन्ही के सुहे का वर्णन ।

इस में तिन्ही में प्रोक्त होगा और सूजन के लक्षण बिल-  
कुल न होंगे निगर के सुहे में जो पुष्ट करने वाली औषधें  
लिखी गई हैं दें, और सिफमबीन बुज्जी तथा कुर्स किम  
अति लाभदायक है ॥

### तिन्ही की वातज सूजन का वर्णन ।

यह तिन्ही के पचाव और दूर करने वाली शक्ति की निर्ब-  
लता से होती है इस में तिन्ही की पुष्ट करें और गेहूं की भूसी  
बोनरा और नमक कूट कर सेके और सारी नमक, पोदीना,  
गुलाब सिरके और शहद में पीसकर लेप करें और चारे लगा-  
वें और तरातेजक का पूर्ण खिलावें ॥

### तिन्ही में पथरी पड़ने का वर्णन ।

इस में मूत्र में रेत आती है और तिन्ही में जुमती है इसके  
सिवाय और कोई रोग नहीं होता इजीर को सिरके में मिगो  
कर खिलावें और उसी का लेप करें और मूत्र लाने वाली तथा  
यह औषधें दें जो गरम और मसाने की पथरी को तोड़ती है ।

### सोलहवां अध्याय ।

#### आंतों के रोगों का वर्णन ।

#### जलकुल असमआ का वर्णन ।

इस रोग में भोजन पिना पचे हुए दस्त होकर  
सी ठि दि २१

जाता है, जो आंतों में फुन्सियां हों तो जलन और पीड़ा होती है और पसला और पीला पानी निकलेगा इसमें पिचों का जुल्मा दें फस्द खोलें ठंडी औषधें पिलाने और सफूफ जख्म इस अमश्रा खिलाने ॥

और जो फुन्सियां आंतों के बाहर हों तो खुनली और चुपना भीतर होगा पोषा कभी टूटी के ऊपर कभी नीचे और कभी आस पास होगी इसमें हुकना करें और ठंडी औषधें टूट के नीचे लगायें। जो कफ की अधिकता से हो तो जुल्मा दें और छलटी करावे और हल्ब अयारिज से मवाद निकालें और सुखानेवाली औषधें दें ॥

जो तरी से पिगाह हो तो सुखानेवाला सफूफ खिलाने और रोगनगुल पेट पर मलें ॥ जो पिचों की अधिकता हो तो पिचों को निकालें और पीली हरड़ दें ॥ जो कफ और पिच दोनों हो तो दोनों को निकालें और पीली हरड़ सात माशे इस्कुल आस, भाऊ मत्येक पौने सात माशे सब को कूट छान कर उस में हालों पौने सात माशे मिला के यह सफूफ सात माशे फकायें ॥ जो फासिज से यह रोग हो तो उसी का उपाय करें और जो जुल्मा से यह रोग हो तो चार तुरुम भून कर रोगनगुल में धिकना करके फकायें, और हालों को मटे इतना औठाने कि यह जम जायें तो उसका खिलाना अति लाभदायक है ॥

आंतों से दस्तों में रुधिर आने का वर्णन ।

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिल जायें दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों की किसी रंग का रक्त खूब आवे ॥

(१) आंतों के छिल जाने के कारण जो पिच हो तो पिच

दस्त आनेंगे, फिर दस्तों में खिलके निकलेंगे, और फिर रुधिर खिलकों समेत और आम निकलेगी, और गर्मी के लक्षण आये आनेंगे, आदि में कफे अगूरों का सव, अनार का रस और जो औषधें खट्टी और कट्टर करने वाली हों खिलाने, और जब मवाद अधिक हो जावे तो उसे निकालें, और हुआच अस्पगोल, हुआच बीदाना, और लसदार औषधें जो पाच को बढ़ करें पिलाने, और कुलफे का शीरा, मिला अरुनी के साथ पिलाना और सुफूफ विकल्पासा अथि लामायक है, और जब तुरन्त दस्तों को रोकना हो तो बीजों को न डालें और केवल वारतग लामदायक है और जब ऐसा अधिक हो तो चार तुखम का हुआच रोगनशूल में मिलाकर पिलाने ॥

और जो कफ से हो तो पहिले कफ के दस्त आनेंगे और हुआ लुकाम नजले के पीछे ऐसा होता है पहिले कारण को हटें और वह औषधें दें जो पाच पर दी जाती हैं जैसे रई, बीज वारतग और जगली तुलसी आदि और काली हरद से चिकना कर भूनकर और छूट धानकर तीन माशों में और उसके बराबर सफेद कंद मिलाकर खिलाने ॥

जो यह रोग बादी से तो हर समय मरोड़ रहेगी और दस्तों में बादी और रुधिर और खिलके निकलेंगे इसमें पहिले कारण को दूर करें फिर तिप्पली को पुष्ट करें, और मवाद के रोकने वाले बीज और सफूफ खिलाने ॥

जो तिप्पली के कट्टेपन और मवाद की सुरकी से हो तो देखे कट्टर होगा और ठीसी ही वस्तु खाई होगी और मवाद न कड़ा निकलेगा इसमें तर और गर्म करने वाली औषधों को जैसे बीदाने ईसबगोल का हुआच शर्नत बनफशा और राग

न वादाम आदि और मरोड़ घाकी रहे तो कठज करने वाले औषधों को वचित हों दें परन्तु जब तक मवाद को न और आंतों से सूखा मवाद न निकल चुके कमी कठज करने वाली औषधें न दें ॥

और जो बिपेली वस्तु खाने से मरोड़ हो जैसे इरता नौसादर और चूना आदि तो उस में बमन करावें और ताज दूध और हरीरे पिलावें ॥

और जो जुल्माव पीने से मरोड़ हो तो ठंडी औषधें दे और सुफूफ तीन और चीज खिलावें, और मठ में लोहा डुकाकर अकेला पिलावें या चावल के साथ खिलावें ॥

जब आंतों की रग खुलजाने से रुधिर के दस्त आने से मरोड़ बमासीर और जिगर के दस्तों के शूलण न होंगे और पीडा भी न होगी, परन्तु पेशिश में पीडा अवश्य होती है रुधिर अधिक निकल जाय और रोगी में बल रहे तो कर घासलीक खोलें, फिर बंद करने के लिये कुर्स कहवा और ऐसी ही औषधें दे और गिले अरमनी पीने दो माशे, शर्ब हल्बुलआस या शरबत अंजवार के साथ देना अति लाभदायक है और अनार के छिलके, भाऊ और गिले अरमनी बराब लेकर कूट छानकर गोखिया बनावें, उसमें से सात माशे खाने अति लाभदायक है, और पेट पर धारे लगाना भी अच्छा है।

जब तक हो सके इस रोग में अफीम के प्रकार की औषध न खिलावें और जो आवश्यकता हो तो शाफे में दें या बमन साथ उनकी ठीक करने वाली औषधें पिलादे ॥

**आंतों से पीव आने का वर्णन ।**

फोरण इसका या जो मरोड़ से घाब पड़ जाना है या प कर सृजन का फूटना, इसमें पहिले पेशिश होनी या खन

गी। पहिले घन औषधों से हुकना करें जो घाव को साफ करें और फिर घनसे जो घाव को भर लावे, हुकना करे ॥  
साफ करने वाली औषधें यह हैं, अनार के छिलके, सिपाक आस, चांबल, जी, सघ को कुचल के पानी में औटावे, और मल कर थोड़ा सा बिना धुक्का चूना मिला कर हुकना करे। और घर खानेवाली औषधें यह हैं, बभूल का गोंद, गिले भर-नी, दम्बुल अखवैन, बरगद के रेशे का रस, जला हुआ कागज-अव को पीस कर हरे बारतग के पानी में और कच्चे शहतूत के रस में मिला कर हुकना करें। जब परोड़ से पीप आवे तो पहिले कारण को दूर करें और फिर घाव के भरने का उपाय करे।

**कूय कर दस्त आने का वर्णन।**

इस में आंव निकलती है और कभी उसके साथ रुधिर भी होता है, यह सूखे मवाद के आंतों में फस रहने से होता है और कूयने में आंव निकलती है इसको जहोर काजिब कहते हैं लक्षण इसका यह है कि इसवगोह आदि के पिलाने से आंव नहीं आती इस में मवाद को नर्म करें और वैसा ही हुकना काम में लावे और कभी केवल गरम पानी लाभ देता है और इसमें कन्ज करने वाली औषधें कभी न दें कि उससे घरने का डर है। और जो कफ या पित्त या वादी से हो गई हो तो उपाय उसका परोड़ में खिला गया है इस रोग में हुकना और आफा अति लाभदायक है ॥

और जो नीचे की आंत में गरम सूजन होने से यह रोग हो तो उस स्थान पर बोझ होगा और कभी उप और मूत्र कठि-मता से होगा इस में फसद खोलें और कमर के नीचे पड़ने लगावे और मोजन थोड़ा दें और ठण्डी औषधें जो रुधिर की गरमी दूर करें पिलावे और जब मवाद का गिरना रुक जावे तो स्नेह-



मेथी, बनफशा, चाबूना परमकल्लों के पसे और पेट और गुदा को धारें जो और चलती हो सकती हो तो अच्छा है और जो गुदा में अधिक ठण्ड पहुंचने से बह हो तो सेंकें और गरम पानी से धार-और कटुका से गरम करके मले और ईंट गरम करके उस पर बैठें और ६ मासो हासों भून के बिना कुछ खाये फाँकें । जो सवारी या किसी कड़ी वस्तु पर बैठने से हो तो मोंम रोगन मलें ॥

खाकी पेट में खराई खाने से भी ऐसा रोग हो जाय उस में मिथी का शर्बत पिलावें ॥

### मरोड़ का वर्णन ।

इसका उपाय कारण के अनुसार करें जो ऊपर लिखा है और कूलंज में और केंचुए पड़ने के रोग में लिखा जाय और जो जुल्हाब के पीछे यह रोग हो तो थोड़ा थोड़ा गरम प पिलावें और रोगन गुल मलें ॥

### आंतों के फूलने और बोलने का वर्णन ।

यह रोग वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से भुरा भोजन खाने से होता है इस में अच्छा भोजन खाने और गुलकंद और गुलाब पीने और जो कारण निर्बल हो और उस से आंत को ठंड पहुंचे तो आंतें बोलेंगी इस में भोजन थोड़ा खावे और माजूम फलाफली और कपूती देना चाहिये और जो इसके साथ दस्त भी आते हैं तो जवारिश खोजी अति लाभदायक है ॥

### कूलंज का वर्णन ।

यह पीड़ा है जो कूलन नामक एक आंत में होती है, और इस के साथ बिलकुल कब्ज हो जाता है, अगर जो कुछ निकलता

जो है तो बड़ी कठिनता से, कारण इस का गाढ़े कफ का आंत  
 अटक रहना हो तो भोजन पुरा खाया होगा और कब्ज  
 अधिक होगा, और खट्टी और नमकीन वस्तु अच्छी लगेंगी।  
 गरिबे शाफे और हुकनों से मषाद को नरम करें फिर जुल्हाव  
 पिलावें, और यह जुल्हाव ऐसा हो कि मतली को दूर करे,  
 और मेदे को पुष्ट करे, जैसे सफरजली और जवारिख शहरयारा  
 का जुल्हाव दें ॥

जुल्हाव देने से पहिले आबजन और सेक, और लेप न  
 करें और कब्ज दूर हो जाने के पीछे एक रात दिन बिलकुल  
 भोजन न दें, और चनों को औटाकर उनका पानी गरम मसाला  
 वाला के दें, और पानी थोड़ा पिलावें, और जो पानी के बदले  
 बुझाव या सोंफ का अर्क या माबलमस्त दें तो अच्छा है ॥

जो गाढ़ी वायु के कारण से पीड़ा हो तो तकले से चुमेंगे  
 और पेट फूलने वाली वस्तु खाई होगी, और पेट बोलेंगा और  
 पीड़ा एक स्थान पर न रहेगी इसका उपाय भी ऐसा ही करें और  
 जुल्हाव देने से पहिले इसमें लेप आदि कर सकते हैं और सोये  
 का लेक मल्ले और कम्पूनी खिलावें और यह उपाय करें जो मेदे  
 के फूलने में लिखा गया है, सरद के आटे की रोटी एक ओर से  
 पका कर बची ओर से गरम गरम पेट पर बांधना और बारें ल-  
 गाना अति लाभदायक है ॥

पेट पर पादी के गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीड़ा  
 होती है, चिन्ह इसका यह है कि अचानक पीड़ा हो और पेट  
 फूल भावे और खट्टी बकारें, आंचे परन्तु पीड़ा अधिक न हो  
 इस में पादी का मषाद निकालें और कस्ट असीलम खोलें और  
 पेट मलें, और आंतों की सृजन के कारण से पीड़ा हो तो मषाद

के अनुसार जुल्हाव दें और फस्द खोलें, और यह उपाय जो मेदे की सूजन में लिखा गया है, वीली और कफ की बहुत कम होती है, और पादी की सूजन में उन औषधों हुकना करे जो वायु को तोड़ें, और उनमें रोगन मिले हों ॥

और जो आंत के टूट जाने से यह पीड़ा हो तो कूदने खाने से ऐसा हुआ होगा, इसमें पेट मलबावे इसी को लोग ना टूटना कहते हैं ॥

और जो आंत अपनी जगह से उतर आवे और मवाद आ में फंसा हुआ हो तो उस मवाद को निकालें और किसका वाल्मी औषधें दें, और ऐसा उपाय करे कि फिर यह रोग न हो

और जो आंतों के भीतर पित्त एकट्ठा हो के यह रोग हो तो केवल मवाद ही निकाल लेने से लाभ हो जायगा परन्तु ये बहुत कम होता है क्योंकि पित्त पतले होते हैं और शरीर उत्पन्न भी कम होते हैं ॥

और जो मसाने, घुसने, जिगर, विस्ली और रसम सूजन से हो तो उनका उपाय करें ॥

एक प्रकार का कुल्लम बहुत बुरा है, उसको पलाक कहते हैं और उबकाई, और छली भी इस में होती हैं ॥

और जब यह रोग बढ़ जाता है, तो दस्त मुक्त से निकलने से इसका उपाय नहीं है जो ऊपर लिखा गया है ॥

इस रोग के आदि में फस्द अति लाभदायक है, जब आ में सूजन हो या उसका दर हो ॥

इस प्रकार की कुल्लम में यह औषधें अति लाभदायक हैं दुर् का मांस, सुखाये हुये केंचुप, सुना हुआ बिच्छू जब

या हुआ पारसिंगा, और यही औषधें मरोड के रोग को एक  
रूप में खोदेती हैं ॥

**बिना पीड़ा के कब्ज होने का वर्णन ।**

इसमें कुल्लज का प्रपाय करें और शर्बत बनफशा रोमन  
आदाम के साथ गिलावें ॥

**पेट में कैंचुए पड़ने का वर्णन ।**

यह चार प्रकार के होते हैं एक ताम्बे पारसिंगा के पा  
गुज मर के उनको कैंचुए कहते हैं दूसरे चौड़े जैसे फल के बीज  
होते हैं उनको कद्दू दाने कहते हैं । तीसरे गाछ होते हैं । चौथे  
बतले और छोटे इनको बिचने कहते हैं ॥

वाच्य इनका यह है कि दिन को हाट गृह रहें और रात  
को राख बहा करे और मेदे के मुख पर छुरेद गालुष हो और  
शून्य के समय कैंचुए ऊपर चढ़ते हों और ऊपर ही की आंत में  
पड़ते हों और कद्दू दाने से और तीसरी प्रकार के कैंचुओं से  
शूल अधिक हो जाती है और वो कभी कभी दस्तों में भी निकला  
करते हैं और कुल्लज और अऊर, नामक आंतों में उत्पन्न होते हैं  
और बिचने पर्वों के बहुत पड़ते हैं और नीचे की आंतों में होते  
हैं उनसे गुदा में खुजली होती है ॥

इन्हें इस प्रकार से पारसिंगा निकालें कि तीन दिन परापर  
तामा दूध पीठा दास के पिलावे और चौथे दिन दूध का साथ यह  
औषधें दें खिला हुआ बिरग, कापली सरेखस, मुरबद, कबीला  
प्रत्येक १७॥ माशे काकला मिथी फटुषा कूट प्रत्येक २४॥ माशे  
शीह ३५ माशे, नमक २ माशे, कूट खान कर १० माशे दें और  
पीने के समय नाक बन्द कर लें नहीं तो बीसों को इनकी घास  
पहले जावगी गरम प्रकृति वालों को गरम औषधें कभी न दें उस  
के लिये यह औषध है खट्टे बनार के पेड़ की छाल और उस  
मि० वि० २२

की बड़ पानी में औटा कर छान कर पिलावे, इस से कीड़े मर जाते हैं और दस्तों के साथ निकल आते हैं, और जो दवा पीना थुरा मालूम हो तो हुकना या शाफा करें, और ये भी न हो सके तो सिपाक, अक्राकिया और गिले मखतूम शराब में पीस कर पेट पर लेप करें, या कटुये बादाम, कमीला, तुरफस, किम और करम्ब को सिरके में पीस कर लेप करें ॥

और बच्चों के लिये यह उपाय अति लाभदायक है कि मंइदी और मोम मिला कर बत्ती बनावें और उस का शोफा करें फिर थोड़े देर पीछे दीये से देख के जो फीड़ा किनारे हो उसे मोचने से पकड़ कर खेंचले । जैतून का कच्चा तेल भी सब प्रकार के कीड़ों को लाभदायक है चाहे खिलाने या गुदा में लगावे ॥

## सत्रहवां अध्याय ।

### गुदा के रोगों का वर्णन

#### बवासीर का वर्णन ।

इस में गुदा पर मस्मे फूल जाते हैं । जो उनसे रुधिर और पीला पानी बहे तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न बहे तो बादी की बवासीर कहलाती है इस रोग में बादी के मिलने से रुधिर गाढ़ा हो जाता है या जल जाता है और कभी पित्तों के मिलने से भी होता है, रुधिर के गाढ़ा होने के लक्षण यह हैं शरीर भारी होगा पीडा और खटक अधिक होगी, और पित्तों के मिलने के चिन्ह यह हैं कि मस्सों में जलन और पीडा होगी इस में फस्य खोलें और जो न हो सके तो पछने लगावें और कठन को दूर करें और रुधिर को ठीक करें और जो यह अधिक निकलता हो तो कुरस करुवा खिलावें, और

जब काला रुधिर निकलने लगे और निर्जलता का डर न हो तो कभी बन्द न करें क्योंकि इससे और रोग नहीं हाने पाते और जो मस्से फूले हों और पीड़ा हो परन्तु जन में रुधिर न बहता हो तो खतमी और सोये से सेकें, और रोगम शक्तालु मलें, और गरम सफेदे का अति लाभदायक है, परन्तु मस्सों के काटने में डर है, जो काटें तो एक मस्सा रहने दें और गूगल र्द बकार्यन के छिलके, काचली साँप की और टुडनी पैगन की गाढ़े सब को गाढ़े पकर को जला कर धूनी लेना मस्सों को हिला देता है, और गिरा देता है ॥

### बादी की बवासीर का वर्णन ।

इस रोग में गाढ़ी घात आँतों में उत्पन्न होती है यह कभी जेबे को चतरती है और कभी पीठ की ओर जाती है कभी पय पावों में आमाती है और कभी रुधिर बहता है कभी पेट ब्रूता है और कभी पीड़ा भी होती है, इस में बादी का बवाह कालें और घात नाशक औषधें दें, किन्ने की सब की आल त हिस्से और सातर फागसी बससे आधी पीस कर सात माशे गावे और बदन का मलना, घोडे की सवारी, मदनत करना र फस्द बासलीक अति लाभदायक है ॥

### गुदा पर नासूर हो जाने का वर्णन ।

जस से पीला पानी बहा करता है यह बड़ी कठिनाई से का होता है, इस रोग में शियाफ गर्म पानी में घिस कर सपेरे शाम को दो तीन घूँटें रोगी को बिच छिगा कर ठपकाया और जब तक दवा सुख न आय वैसे ही पड़े रहें और जो र में बत्ती आ सके तो बत्ती शियाफ की औषधों के गोद पानी लगाके रखें और सलाई में रुई लपेट कर बत्ती की रखना पसाम है और जब नासूर आव के पार हो जावा अच्छा नहीं हो सका ।

## गुदा पर सूजन हो जाने का वर्णन ।

जो सूजन गरमी से हो तो पीछा और जलन होगी इसमें फस्द खोलें और पकने लगायें, छलटी करावें जब सूजन पकने पर आवे तो तुरन्त खीर दें क्योंकि देर होने से नासूर पकने का डर है और जो सूजन ठण्ड और कफ की अधिकता से हो तो यह सरम होगी और गरमी के लक्षण मिलकृत न होंगे, इसमें छलटी करावें और पकाने वाली, गरम लगायें ॥

## गुदा के फट जाने का वर्णन ।

इस का उपाय वही है जो होठों के फटने में लिखा गया है बहुत ठण्डे पानी से बचे छलटी वस्तु न खावें और कबज न होने दें इस के लिये सघेरे शर्करा बनफशा और रोगम बादाय पिछा कर देवे हैं और नरम भोजन खिलावे हैं ॥

## शिरज के ढीला हो जाने का वर्णन ।

शिरज एक पट्टा है जो वस्त्र और पात को रोकता है जब यह ढीला हो जाता है तो दस्त और पात नहीं रुक सकती अचानक निकल जाती है । यह बात तुरी और ठंड पहुंचने से होती है इस रोग में उस मदाव को निकालें जिससे पट्टा ढीला हो गया हो और उस उपाय से मिजान को ठीक करें जो फाट्टिय में लिखा गया है, और जो सूजन हो तो उसका उपाय करें और जो चोट लगने या घासीर के मस्से काटने से यह रोग हो तो असाध्य है ।

## कांच के निकलने का वर्णन ।

जो कारण इस का सूजन हो तो उसका यह उपाय करें कि खतमी और बनफशा औषध कर, रोगी का उसमें बिठ्ठामें

र मोम का तेल मल्लें तो वह अन्दर बैठ जाती है और जो  
 ॥ से पट्टा ढोला जा जाने के कारण यह रोग हो तो जरा  
 कंधे में निक्का धाया करेगी, और सड़न से अन्दर को  
 जो जावेगी, सपाय ससदा यह है कि रोगन गुल मल कर  
 स पर सफेदा, गुलनार, पाजू, फिटकरी, सुरमा और अनार  
 खिलके पीस और धान कर छिड़के और गद्दो रखकर  
 स दें ॥

**गुदा में गहरा घाव हो जाने का वर्णन ।**

इस में काला मरहम लगाने और सुखाने वाली औषधें  
 रखें, और जो पीड़ा अधिक होतो अफीम मल्लें और पसी  
 पाय करें जो घावों का है ॥

**गुदा में खुजली होने का वर्णन ।**

जो कीड़े उत्पन्न होने से खुजली हो तो लक्षण और  
 पाय ससदा लिख चुके हैं, और जो कोई मवाद हो तो उसे  
 नैकाखें और हर प्रकार के मवाद में तुड़ही पर पछने लगाना  
 और सिर का और रोगन गुल मलना अति लाभदायक है ॥

**अठारहवा अख्याय**

**गुरदों के रोगों का वर्णन**

**गुरदे के बिगाड़ का वर्णन ।**

इस में गरमी, ठण्ड और मवाद के लक्षण जैसे ही पाये  
 पाये जैसे कि भिगर के बिगाड़ में लिखे गये हैं और ब्याप  
 ॥ पसी मफ़ार का करें जो गरमी से बिगाड़ हो तो काफ़ूर  
 खिना लाभदायक है परन्तु अधिक न मल्लें कि इस से पयसो  
 डमाने का डर है और निप्याशकि घट जाती है ॥



## गुरदे के दुबला हो जाने का वर्णन ।

इस रोग का लक्षण यह है कि मूत्र अधिक और आवेगा, शरीर दुबला होगा, विषय की इच्छा कम होगी, सिर में पीछे की ओर हलकी पीड़ा पड़ावर रहेगी । जिस से यह रोग हो उस कारण को दूर करें और फिर गुरदे मोटा करने के लिये पिस्ते, बादाम, पुटुक और तारी शक्कर के साथ और दूध चतुर्नवीन और विषय की उत्पन्न करने वाली औषधें लिखानें ॥

## गुरदे की निर्विलता का वर्णन ।

इस का लक्षण यह है कि ठेढ़ा और सूया होने में करबट घटने के समय कमर में पीड़ा होती विषय की इच्छा और मूत्र घट जायगा और मांस के घाबने का सा मूत्र आवेगा जो कोई सादा बिगाड हो तो उसी के अनुसार, वैसे ठीक और गुरदे के दुबला होने से ऐसा रोग हो तो उसका करें । जो गुरदे की खाल दीला हो जाने से और उस के खुल जाने से यह रोग हो तो कारण उसका विषय की कता अथवा चोट लगना अथवा मूत्र लाने वाली औषधों अधिक पीना होगा इस में कारण को दूर करें और जिगर को पुष्ट करती है वह गुरदे को भी पुष्ट करती मांजून लघूव और विषय की चाहना उत्पन्न करने वाली अति लाभदायक है ॥

## गुरदे में वायु की पीड़ा का वर्णन ।

इस रोग में कमर के आस पास पीड़ा और लिचाव और धोम न होगा पथरी के लक्षण न पाये जायेंगे, और के समय पीड़ा घट जायगी, इसमें जीरा, सोया, दूध

बाधना पीसकर गुरदे के स्थान पर लेप कर, और शर्बत पुञ्जुर हाथी और घादी की तोड़ने वाली औषधें खाना और शरीर मलना और पचाव का ठीक करना अति लाभदायक है ॥

### गुरदे की पीड़ा का वर्णन ।

इस का कारण गुरदे की घात या निर्मलता या सूजन या पी या घाव होगा उस कारण को दूर करें, और बाधना सोया और खतवी और कर्मब के पत्ते और कर आध करना हर प्रकार की पीड़ा को लाभदायक है ।

### गुरदे की सूजन का वर्णन ।

लक्षण और ध्याय इसका मवाद के अनुसार यह है जो गुर की सूजन में लिखा गया है, परन्तु कमर में पीड़ा होगी दाहिने गुरदे में सूजन हो ता कुछ ऊपर को जिगर के पास हो होगी और जो घायें गुरदे में हातो नीचे को मसाने के पास पीड़ा होगी यह इसलिये है कि दाहिना गुरदा बायें गुरदे के ऊपर ऊंचा है ॥ और जो पीड़ा अधिक हो ता परदो के पास मवाद से होगी ।

और जो सूजन गुरदे के रस्ते में होतो मूत्र रुकैगा, और आँवों के पास हातो भीतर की ओर होगी, और अधम्मा कि कि कूलेज का रोग भी उत्पन्न हो जावे और जब गुरदे की मूत्र धुरानी हो जावे तो फस्द मायिन लाभदायक होगी ॥

### गुरदे के घाव का वर्णन ।

लक्षण इस का यह है कि मूत्र में पीव और रुधिर और रक्त निकलेंगे, और गुरदे के स्थान पर पीड़ा होगी इसमें घाव को ठीक करें और जिस ओर के गुरदे में घाव हो उसी ओर फस्द पास कीक खोलें, और पुष्ट पुष्ठाव कभी न दें

परन्तु इसका जुल्माप दे सकते हैं इसके पीछे गर्मी और वृष  
अनुसार मूत्र लानेवाली औषधें पिलाने, और फिर  
धरने वाली औषधें दें, जैसे गिलेश्वरमनी, दम्मुल अथवा  
गला हुआ कागज, कुंदर आदि और कुर्त काकनज और  
कुल घुजूर खिलाना लाभदायक है ॥

### गुरदे में खुजली होने का वर्णन ।

सात दिन में दो बार मगद को निकालें, और छहटी  
और शर्बत बनफशा पिलाने, और शियाफ अविषश को  
बादाम में घित कर मूत्र के छिद्र में ठपकाने, और बगद  
घुजूर खिलाने ॥

### जिया बिलुस का वर्णन ।

यह वह रोग है कि पानी जैसा पीने जैसा ही तुरंत मूत्र  
निकल आती इसका उपाय गर्मी और ठण्ड दूर कर  
चाहिये गरम में कुर्स काफूर और कुर्स तवाशीर और कुर्स जिया  
दे, और ठण्ड में मसरोदीतूत और माजूत मासिक  
खिलाने ॥

### गुरदे में पथरी पड़ने और पेशाब में रेत आने का वर्णन ।

इस रोग की चारिया होती हैं कभी एक महीने के  
कभी वर्ष दिन में और कभी कमवक में और करता है । इस  
लक्षण यह है कि ठण्डी की जगह खिदाय और सोफ हो  
और मूत्र पीला और लाल आयेगा कभी उस में पथरी भी नि  
खेगी और जब आते भरेंगी तो पीडा अधिक होगी और पथरी  
अधिक दुख होता है और रेत पड़ने में दुख और रोग उस से  
होते हैं ॥

और जब मूत्र में रेत निकले तो जानें कि रेत पड़ी

( १७७ )

पहिले बपन करावे और मूत्र लाने वाली और साफ करने वाली ओषधें और जुल्लाव पिलावे, और जब पीड़ा अधिक हो तो बड़ आरमन करें जो घुग्घे की पीड़ा में लिखा गया है और पथरी को तोड़ने के लिये माजून अकरब और माजून ह-मकशयहूद अति लाभदायक है। और उन वस्तुओं से बच्चे को कपिर को गाढ़ा और मैला करें, और पचास का उपाय करें और जब पेट खाली हो तो मेहनत करें और ठण्ड पेयें, और विषय कम करें और कता क कपड़े पर सोना और भोजन के बोच में और कभी-० बिना कुछ खाये ठंडा पानी पीना पथरी का नहीं पड़ने देता है।

## उन्नीसवां अध्याय

मसाने के रोगों का वर्णन ।

मसाने की सूजन का वर्णन ।

जो गर्मी से सूजन हो तो पीड़ा अधिक होगी घुग्घे की चुमेंगी, पेड़ फूला होगा और गरम खर हागा इसमें फस्द बास-लीक लोले और तीन दिन पीछे माथिन की फस्द लोले और हिलेटपन मुखारिक पिलावे हरी मकोय के अर्क के साथ आदि में बड़ पुष्ट औषधें जो मधु लाशें विलकूल न दें, और अकेलो बड़ औषधें जो ठण्डी हों और मवाद को इधर गिरने से रोकें कभी न हों क्योंकि ऐसा करने से मवाद के कड़ा होजाने का दर है और कपिर की सूजन में तो कभी ऐसा न करना चाहिये । मधु सूजन का मवाद पड़ने पर हो तो पकाने के लेप पीछे बसके फोड़ने का उपाय करें और पीस निबलने के पश्चात् घाब को धरे और जो ठण्डी सूजन हो तो अगर उसमें नमी हो तो कंक का चिन्ह है और कड़ापम पादी का चिन्ह है बाकी और

लक्षण हर मर्राद के जो उसके लिये हैं पाये जावेंगे । रक्त-  
सूजन में वमन करावे और गरम औषधों से हुकना करे  
पटकाने वाले आशजन में बिठलाने, और मूत्र लाने या  
औषधें माउल अस्त के साथ और अमलतास दे बादी की सू-  
में नरम करने वाली औषधों का लेप, और तरेडा करे, क-  
कन्धे और चनों का पानी पिलाने, और खीरे ककड़ी के  
हिलयूत, हसराम और अमलतास का जुल्लाष बनाकर रो-  
बादाम के साथ दे, और मूत्र अधिक न लाने और जब ये  
नरम होजावे तो फस्द साफिन या घामलीक खोलें ॥

### मसाने के घाव का वर्णन ।

मसाने के घावका यह चिन्ह है कि मूत्र में खिलके, दुर्ग-  
न्धि और जलन होगी और मूत्र रुक कर आवेगा । उपाय इस  
वही है जो गुग्गुलु के घाव का है, और जब पीड़ा अधिक हो  
शियाफ अणियज स्त्री के दूध में घाल कर मूत्र के छिद्र में  
फावें, और जब पीप अधिक आती हो तो केवल माउल-  
टपकाने यह घाव के साफ करने में अति उत्तम है, और म-  
के रोगों में मूत्र के छिद्र से दवा का पहुंचाना ठीक काम  
है, और स्त्रियों को पिघारी से दवा पहुंचा सकते हैं ॥

### मसाने की खुजली का वर्णन ।

इस रोग में पेहू में खुजली जलन और पोड़ा होगी,  
मूत्र में दुर्गन्धि होगी और कभी २ उसके साथ रुधिर भी  
लेगा, इसमें मवाद को निकालें और ठीक करें, और खु-  
पीदाना और स्त्री का दूध और रोगन बादाम मूत्र के छि-  
टपकाने, और इन्हीं औषधों से हुकना करे और भोजन  
जगह आश जो और दूध और थावल खिलावे ॥

## मसाने में रुधिर जमजाने का वर्णन ।

यह रोग मूत्र में रुधिर निकलने से, मसाने में चाट पड़ने से और किसी रग के फटजाने या मुँह खुनजाने से उत्पन्न होता है इस रोग में हाथ पाँव ठण्ड होंगे, और कभी जाड़ा भी आवेगा और मूर्च्छा होंगी, केवल सिकन्धपीन अनसिली या चसमे थोड़ी अमूर की लकड़ी की राख मिलाकर पानी में घोला कर पिछाने और खरगोश का पनीर अमूर की लकड़ी की राख के पानी के साथ निताने, और पेड़ का चस पानी से घारे तथा मूत्र के क्षिद्र में टपकावे, कदाचित इस उपाय से जमा हुआ रुधिर न पिघले तो पयरी का तोड़ने वाली और मूत्र छाने वाली औपधें तथा पुराने चनों का सुहावक पानी में औठाकर पिलाने और जब कोई औपधें लाभदायक न हो तो जमे हुए रुधिर को चीर कर निकालें और भोजन की जगह पुराने चनों को औठाकर चसका पानी दाखचीनी दाखकर पिलावें ।

## मसाने की पीड़ा का वर्णन ।

यह रोग सूजन, घाव, खुजली, पयरी पड़ने अथवा मसाने में चाट उत्पन्न होने से होता है इस सबका उपाय खिल चुके हैं, एक प्रकार की पीड़ा जो मसाने के बिगाड़ से होती है जो यह परमी से हो तो व्यास होगी और मूत्र में गलान होगी और पहिले इससे गर्म वस्तु खाई होगी, इसमें टण्डियाँ पिलावे और ठण्डी वस्तु लगावें और ठण्डी बगदकृत भुजूर खिलाने और ठण्ड से हा तो मूत्र सफेद आवेगा और इससे पहिले ठण्ड वस्तु काम में लाये होंगे जैसे कपूर आदि और ठण्डी दवा लगाने से भी पीड़ा हो जाती है इसमें गरम भोजन और औपधें दे और गुनगुने पानी से पेड़ का घारे ॥

और दूसरी प्रकार इस पीड़ा की यह है कि बहरान के

ससस यह पीका हो इस में अधिक मूत्र निकालने का उपाय करें ।  
**मसाने के टलजाने का वर्णन ।**

पीठ पर घोट लगने से यह रोग होता है सुगंधि बाढ़ी  
औपथों का लेप पेड़ पर करें, और जो घोट लगने से पड़ा  
खिच गया हो तो मूत्र रुक जाता है और कभी पेटड़ा खुल जाता  
है तो अचानक मूत्र आने लगता है । इन दोनों में फस्द साफिन  
खोलें और कभी इस रोग के साथ और कोई रोग भी होता है  
ऐसी दशा में पहिले उस रोग का और फिर इसका उपाय करें ।

### **मसाने के फूलने का वर्णन ।**

इस रोग में मसाने में बाढ़ी भर जाती है, और पेड़ पर  
खिचाव रहता है इसमें घाय एक स्थान पर नहीं रहती और  
न बोक होता है और जो बोक और खिचाव एक स्थान पर  
हो तो जानो कि बाढ़ी के साथ तरी भी है इस रोग में कुछ दिनों  
तक माषल अस्तु गरम पिलावे या उसमें रोगन वेद इमीर  
मिला कर पिलाने और रोगन गरम जो बाढ़ी को सोड़े मले  
और मूत्र के छिद्र में टपकावे जैसे रोगन केसर को खिचावे  
और मले और जब मूत्र निकलने में कठिनेता हो तो खरबूने  
के सूखे हुए छिलके कुचलकर कद के साथ दें और रोगी को  
आबजन बिठावे, और जब बाव के साथ तरी भी हो तो बार-  
बार धमन करावे, और तरियाक और मसरवीतूस और इमीर  
खिलावे ॥

### **मसाने में पथरी पडने का वर्णन ।**

इस रोग का लक्षण यह है कि लिंगकी जहमें खुमली होगी  
प्रीत पोढ़ीर देर पीछे मूत्र आवेगा और बिपय की इच्छा पहिले तो  
एक बार अधिक होगा और फिर तुरत ही जायी रहेगी ॥ इस

में मूत्र का रुक कर आना या पित्तकुल न आना और  
ने में पीड़ा होना कुछ नहीं होता परन्तु जिस समय पथरी  
ने मूत्र पर आनकर अट जाती है तो ऐसा होता है और  
पथरी का उत्पन्न होना इस प्रकार से जान सकते हैं कि  
की जगह और रान में पहिले पीड़ा होगी ॥

इसमें बह उपाय करें जो घूरदे की पथरी में जिला गया है  
अधिक घृष्ट औषधें दें । बिच्छू और बिसक का तेल  
पेड़ पर मलें और मूत्र के छिद्र में टपकावें और जो अवस्था  
धीरे कर पथरी को निकालें और जो रागी की अवस्था  
हवा १६ वर्ष से कम हा तो कभी ऐसा न करें क्यों  
में रोगी के मरने का डर है और जब पथरी मूत्र के रास्ते  
कर फंस रहे और उससे पीड़ा हो तो रोगी को चित  
है और दोनों पाँव उठाकर गरम पानी से पेड़ को धारें  
नीचे से ऊपर तक मलें इससे पथरी वहाँ से हटकर मसाने  
र रक्ती जावेगी और मूत्र का रास्ता खुल जावेगा ।  
समय पर असली पथरी के तोड़ने में अति वधम है ॥

**मूत्र में जलन होने का वर्णन ।**

मूत्र में चलन घूरदे या मसाने की खुजला या इनही स्थानों  
पथरी पीस से हाती है खुजली और घाव का उपाय करें  
तो तिग के भीतर घाव हा तो उपाय उसका आगे लिखा  
और जो जिरर की गरमी और पिशों की अधिकता  
ता बनक लक्षण पाये जावेंगे इसमें बह ठही औषधें दें  
गर के बिगाड़ में लिख चुके हैं और जो मषाद की  
ता के कारण उनसे लाभ न हो तो मषाद का निकाल  
र श्याफ अभिजय स्त्री के दूध में घोलाकर रोगनशुल  
माने बादाम मिला कर मूत्र के छिद्र में टपकावें और  
अस्पगोल के लुमाह में रस ।



विशेष दृष्ट्य—लिंग के छिद्र में एक तरी चिमटी हो  
 उसके छिल जाने से भी यह रोग होता है, लक्षण उसका  
 है कि इस रोग से पहिले गरम औपघों मूत्र लाने वाली  
 होगी, और विषय की अधिकता की होगी इसमें पहिले क  
 को दूर करें और श्याफ अवियन को स्त्री के दूध में घाल  
 मूत्र के छिद्र में टपकावें, और लुभावों और बीजों को  
 पीवें और चाहे टपकावें ॥

### मूत्र बंद होजाने का वर्णन ।

जो यह रोग गुर्दे अथवा मसाने की सूजन से या  
 मैथी पड़ने या मसाने में रुधिर के जमने या पीव अटकने  
 या वात के फंसने से होता उसका उपाय उपर लिख  
 है ॥ और जो मूत्र के स्थान पर मांस उत्पन्न होने से यह  
 होता और किसी रोग के लक्षण नहीं होते । इसका  
 नहीं हो सकता, परन्तु थोड़ा सा लाभ होने के लिये  
 और नरम करने वाली औषधों का आपजन करें, कि  
 कुल रुकाव न रहे ॥

मसाने की गर्दन पर एक पट्टा है जो मूत्र को निचो  
 है, उसके छीला जाने से भी यह रोग हो जाता है, ल  
 उसका यह है कि मसाने के दबाने से मूत्र खुल के निक  
 है, इसमें गरमी पहुँचावें चाहे पीने को औषधों से या ल  
 की से और वह तेल मल्ल जो फालिज में लिखे गये हैं ।

और जो मसाने और श्रोत्रिय में लसदार मवाद  
 रहे और उससे मूत्र रुके तो पेड़ शोभल होगा, और  
 पहिले गाढ़ा करने वाली वस्तु खाई होगी और किसी  
 रोग के लक्षण न होंगे इसमें पुष्ट औषधें मूत्र लाने

पित्रा और आवजन करे और तिसक और रिन्डू का तेल  
 भी छिद्र में टपकावें ॥

और जो मसाने की दूर करने वाली शक्ति के बाते रहने  
 से यह रोग हो तो उससे पहिले रोगी ने देर तक मूत्र रोका होगा  
 इसमें आपजन करे, और पेडू को हाथ से दबावें, और  
 रोगन बिलसान और रोगन कुस्त पेडू पर मलें और जो इस  
 के लाभ न हो तो एक मोली सलाई चांशी शीशे या रांग की  
 डेकर छिद्र में डालें, रीत उसकी यह है कि योडा सा फूसडा  
 रोगन का लेकर घागे में बाधें, और सिरा उस घागे का उस  
 सलाई में डाल कर निकालें और जिस ओर वह फूसडा हो  
 वही ओर से सलाई उस छिद्र में डाले जब वह सलाई मसाने  
 के कुछ तक पहुँच जावे तो तागे का जोर स खींचले तो मूत्र  
 का रास्ता बिलकुल खुल जायेगा ॥

और जो गुज फ रास्ते में घाव या फुसी होने से मूत्र रुके  
 तो उनके लक्षण पाये जानेंगे इसका उपाय शुजाक में दखना  
 चाहिये ॥

और जब पीठ या पेडू पर चोट लगने से यह रोग हो ता  
 वैजना चाहिये कि सूजन है या मसाना ढोला और छिंच गया  
 है जो सूजन हो तो उपाय उसका करें और जो सिंचाप आदि  
 हो तो फुस्ड वासलीक खोलें और रोगनगुल मलें ॥

और जो मूत्र के मार्ग में सुरभी और कब्ज हो तो गरमी  
 के लक्षण पाये जायेंगे और सर खीपभी से लाभ होगा और  
 मसाने से थोडा सा मूत्र न निकल सकगा और जब बहुत सा  
 रुकता हो जायगा तो मली यदि निकला करेगा, इसमें तब  
 और ठर पहुँचावे ॥

और जो पेटों और बपनों पर कफ के गिरने से मसाने

जब गुरदा निर्जल होगा तो मूत्र सफेद और गाढ़ होगा ॥  
और जब जिगर निर्जल होगा तो मूत्र खाल और पतला होगा  
इस में जिगर और गुरदे को पुष्ट करें ॥

और जो मूत्र की रंगों में घाव हा तो पीव आदि से मान  
पड़ेगा, इसका उपाय लिख चुके हैं और इस में कुर्स का ककन  
लाभदायक है ॥

### वीसवा अध्याय ।

इस अध्याय में उन रोगों का वर्णन है

जो केवल पुरुषों को होते हैं

मैथुनेच्छा घट जाने का वर्णन ।

स्त्री सग की चाहना शरीर के बड़े बड़े स्थानों के आरोग्य  
होने से पूरी होती है यह दो प्रकार से घट जाती है एक तो यह  
है कि वह आप ही घट जावे, दूसरे पुरुषेन्द्रिय के बीला हो जाने  
से इन दोनों का वर्णन भलग भलग किया जाता है, पहिले  
प्रकार के कई कारण हैं, एक तो यह कि शरीर भोजन की कमी  
से निर्जल हो जावे और उससे रुह वायु और रुधिर जो स्त्री  
सग के मवाद हैं कम उत्पन्न हों लक्षण उसका यह है कि  
निर्जलता और दुबलापन होगा, और पहिले से भूख रहे हों  
इसका उपाय यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों और पुष्ट औषधों  
से शरीर को पुष्ट करें और खेला कूद नाच रंग में लागे रहें ॥

दूसरे यह है कि वीर्य थोड़ा उत्पन्न हो चाहे भोजन भल  
पाति खाएँ, लक्षण उसका यह है कि वीर्य थोड़ा निकलने  
कारण यह है कि कोई विगाड़-वीर्य उत्पन्न होने की जगह  
पह आपगा, और सन वस्तुओं से डानि होगी, जो उस विगाड़  
के अनुसार हो और सनके विपरीत से आराम होगा इसी

इसकी दशा जान पड़ेगी, कि गर्म है या ठंडी आदि इसमें प्रकृति को सीक करे ॥

तीसरे यह कि वीर्य अधिक हो परंतु उसकी तेजी और दिग्दाहट जाती रहे लक्षण उसका यह है कि वीर्य अधिक रक्तले और गाढ़ा हो और संगम करने के समय आदि में बल न हो और फिर अधिक हो जाय इसमें माजून भरझोनी और माजून लवूर और माजून पुजूर आदि लिखाकर रसी पहुँचावे ॥

चौथे यह कि बहुत दिनों से संगम करना छूट गया हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो तो चाहिये कि इसकी बातों में गे रहे और उसी प्रकार की औषधों काय में लावे और अकर- ॥ बिनोले के तेल में घिस कर पेदू गुसेन्द्रिय आदि पर मर्से, पाँचवें, यह कि दिवस पर किसी बात का दूर या भिन पन्न होने से यह रोग हो तो उस कारण को दूर करे ॥

छठे यह कि दिवस या मेदे या भिगर या भेमे या छुरद पर सी दोष के होने से ऐसा हो तो पहिले उस दोष का उपाय ॥ दूसरा प्रकार यह है कि शरीर में निर्बलता होने से या त दिनों तक संगम के झोक देने से लिंग सुस्त हो जाय तब इसका ऊपर लिख चुके हैं और गर्म पानी से बाँधे फिर ॥ हो तो देखे कि ठंड से है या गर्मी से या खुरकी से उसीके सार काम करें ॥ जो पट्टों पर कफ के गिरने या उषद करने से हो तो लक्षण उसका यह है कि पहिले ये सब बातें जानेंगी और वीर्य पतला होगा, और बिना बल करने का बला करेगा, इसमें यही उपाय करे जो कालिदास का है और गरम भाँके और हुकने और गरम औषधों में लें, और लिंग को

बहुत ठण्डे पानी से धारै, जो वह उसकी ठण्ड से न सिमटे।  
 सो उस रोग का बपाय नहीं हो सकता। अब ऐसी औषधें  
 लिखी जाती हैं जो लिंग को बड़ा करें। पहिले उसे खुसुरे  
 और कड़े कपड़े से बतना मलें कि लाल हो जावे फिर रोगन  
 मोर्चा और इसी प्रकार की और औषधें मलें और उस पर मिक्त  
 का लेप करें ॥ दूसरे कर्फस के पानी से कई बार धोवें ॥ बकरी  
 के घी से कई बार चिकना करें ॥ चौथे केंचुपे या जोंक मुलाकर  
 रोगन सोशम में मिला के मलें ॥

### वीर्य जल्दी निकलने का वर्णन ।

यह रोग ठंड या तबी से हो तो लक्षण इसका यह है कि  
 वीर्य बहुत सफेद और पतला होगा और गर्मी न होगी गरम  
 जुल्हावों से मवाद को निकालें, और चमन करावें और माजून  
 खुब सुल, इदीद, खिलाजों और उसकी शराब पिलावे और  
 शहदाने को ओटाकर शहद मिला के पिलावें ॥ और जो यह  
 रोग वीर्य और रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोनें,  
 और विषय छोड़ कर और भोजन कम खावें और वह वस्तु  
 खावें जिनसे वीर्य और रुधिर कम उत्पन्न हो ॥ और जो वीर्य  
 में तेजी आगई हो तो लक्षण इसका यह है कि वह पतला और  
 पीला निकलेगा और उसमें जलन होगी, इसमें ठंडाई और काई  
 के बीज ओटाकर पिलावें । और जो कमजोर होने के कारण से  
 यह रोग हो तो उस कारण को दूर करें ॥

### स्त्री संग की चाहना अधिक हो जाने का वर्णन ।

यह रोग भी रुधिर और वीर्य की अधिकता से होता है  
 उन्हें कम करें, परंतु ऐसा न चाहिये कि काई हानि हो और  
 जो बहुत ही अवरय हो तो फस्द और जुल्हाव दें, और वह  
 तन्दु खावें जो वीर्य को कम करें और भोजन भी कम खावें  
 और जो वीर्य में तेजी हो तो ठंडाई दें, और ठंडे पानी से

है और जो निर्वलता हो और रुधिर कम हो नावें और जो भी वीर्य की अधिकता हो-तो यह पतला और सफेद है, इसमें क्लोनी और सुहाव और सपालू के बीज देना है, और जवारिश कमनी अति लाभदायक है और जो इसके स्थान पुष्ट हो, परन्तु शरीर में और स्थानों पर निर्बल हो तो इसके लक्षण पागे जावेंगे, उपाय इसका यह है वीर्य के स्थानों को कमजोर कर दें और दूसरे स्थाना पुष्ट करें ॥

और जो वीर्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या खुजली होने से यह रोग हो तो लक्षण उसका यह है कि विषय के समय वीर्य आनन्द से निकले, परन्तु घाव में पीड़ा हो, और पीड़ा भी निकलेगी, इसका उपाय यही है जो पसाने का है, फस्द और जुल्हाव आदि ॥

और जो शरीर के फूलने से यह रोग हो तो गर्मी की कृता में ठंडी औषधें दें और जो तुरी अधिक हो तो यह दें जो वायु को तोड़े और खुशकी करे और जो बादी की कृता हो तो फस्द वासलीफ खोलें और सौदा का जुल्हाव दें

**वीर्य निकला करने का वर्णन ।**

जो यह रोग वीर्य की अधिकता या तेजी या उसके स्थान का होने से हो तो लक्षण उसका यह है कि मुरन्त ही की चाहना उत्पन्न हो जाय करेगी और हर बार में निकला करेगा, इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा है, जो यह रोग उस पट्टे के खिंच जाने से हो जो वीर्य धान पर है तो खिंचाव का उपाय करें, और पेदू आदि मग्न मल्लें जो गुरद की कमजोरी हो और उसकी विमल कर निकला करे तो लक्षण उसका यह है कि

जुल्लाव दें, और बालों के बीज पीसकर बेसन और  
में मिलाकर लेप करें ॥

और जो सूजन में कड़ापन और कालापन हो तो  
की अधिकता होगी इसमें नर्म करने वाली औषधें बाबून  
नाखूना के साथ लेप करें, और फिर सोदा का जुल्लाव  
सुनिश्च दें ॥

और जो किसी मषाद के लक्षण न हों और जो सूजन  
फूली हुई हो तो वायु से होगी, इसमें पटकाने वाली औषधों  
से सेक करे, और कमनी खाने और जो इससे लाभ न हो  
वमन कराने और जुल्लाव दें, जो रोग नीचे के घट में होते  
उनमें वमन कराना अति लाभदायक है, और उसमें हर  
नहीं है जो सूजन केवल पैला अर्थात् ऊपर खाल की में हो  
दुःख कम होगा, और सूजन दिखाई देगी, और भीतर की  
दुःख और तप और प्यास अधिक होती है ॥

### अंडकोष के बढ़जाने का वर्णन ।

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है, इसमें मोटा पन  
जाता है, इसमें खुरासानी अजवायन और शुकरान और तफा  
और पोस्त खशखश और सान के पत्यर की रेत हरे घनिये  
के पानी में पीसकर लेप करें, और जो गिलेअरमनी और सिरक  
भी मिलाएँ तो अति लाभदायक होगा, और इसी लेप की स्त्री  
की छाती पर लगाने से छातियाँ बढ़ने नहीं पाती, परन्तु इस रोग  
में भोजन भी थोड़ा खाना अवश्य है ॥

### लिंग में रहम के मुंह के फटकने का वर्णन ।

मषाद को निकालें और रुबिर को ठंडा करें और बसी  
नहम पर जोकें लागाना अति लाभदायक है, और भोजन भी  
अच्छा खाने ॥

## अंडकोषों की पीड़ा का वर्णन ।

जो सूजन के कारण से हो ता उसका वर्णन कर चुके हैं और जो वायु से हो तो पीड़ा एक अगहन ठहरेगी, उसपर सेकें और गरम तेल मलें, और जो गरमी और ठंड से बिगाड़ होतो उसका उपाय भी लिख चुके हैं, और जो चोट पड़ने से पीड़ा हो तो फस्द खोलें और बनफशा, खैर, मकाय, कद्दू, मोलों का लेप करें ॥

## अंडकोष के छोटा हो जाने का वर्णन ।

यह ठंड के पहुंचने से होता है, इसमें गरम पानी से न्हावें और गरम दवायें लगावें ॥

## अंडकोष के चढ़जाने का वर्णन ।

कभी ऐसा होता है कि बिल्कुल ऊपर चढ़ आते हैं नीचे कुछ भी नहीं रहता- उस समय सूत्र रुक के और टपक २ कर निकलता है और चला फिरा नहीं जाता और जो योषा चढ़े तो थोड़ी २ पीड़ा होती है और कुछ हानि नहीं होती और कभी पीड़ा भी नहीं होती परन्तु जो देख सक यह रोग रहे तो अच्छा नहीं है इस में गरम पानी से स्नान करे और फरफियून का तेल मलें और आबजन करे और बसी जगह सींगियां लगावें ।

इसी प्रकार से कभी लिंग भी चढ़ जाता है उसका उपाय भी यही है ॥

## रंगे उभर आने का वर्णन ।

इसका उपाय यही है जो पैर की रंगे उभर आने का लिखा जावेगा और जो कषापन भी आजावे तो उसका यह उपाय करे जो सूजन का है ।



**ऊपर की खास ढीली होजाने का वर्णन ।**

गाजू, आस, गुलाब के फूल, गुलनार, बलुत के फूल  
आदि कषण करने वाली औषधियों का लेप करें और बन्दी को  
पीटा के ढारें ।

**लिंग आदि के घाव का वर्णन ।**

जो यह घाव लगी हो तो मुर्दासग और तुतिया, बिरुके  
और लगावें चाहें सूखा पीस के या मरहम बना के और बा  
रुपिर की अधिकता से हो तो पहिले मवाद को निकालें और  
जो घाव घुमना हो तो यह मरहम लगावें दम्मुत, अलबैन और  
सुर मत्त्येक नौ माशे पलुथा, मुर्दासग, इमरुत मत्त्येक ७ माशे  
पीस के रोगन गुल मिलाके लगावें ॥

जो घाव लिंग के अंदर हो तो मूत्र आने में जखन होगी  
घस का उपाय मसाने के घाव का करें ॥

**लिंग के सूज जाने का वर्णन ।**

इसका उपाय वही है जो अंडकोष की घुमन में लिखा  
गया है ।

**लिंग आदि की खुजली का वर्णन ।**

इसमें फस्द खोने, और रान और जांघ पर पड़ने लगावें  
और पिछों का गुल्लाव दे, फिर गरम पानी और सिरके से ढारें,  
और रोगन गुल मर्ने, और अटे की सफेदी का लेप करें ।

**लिंग के फटजाने का वर्णन ।**

इसका उपाय वही है जो गुदा के फटजाने का है ।

**लिंग पर कड़ी फुन्सियां और मस्से होजाने का वर्णन**

काला दाना सिरके में मिलाकर लगावें, और वही उपाय  
करें जो मस्सों का है ॥

**मूत्र के छिद्र बंद होजाने का वर्णन ।**

जो फुन्सो निकली हो तो मूत्र कठिना से जखन के साथ

तोता इस में फस्द खोले, और हलके और तखमूजे के धीर्माँ का-  
 पीरा निकाल कर शर्मात खसपाश के साथ दे, और आस्पगोल  
 रोगन बनफसे और बादाम में मिलाकर लिंग पर रखें जब यह  
 रुक कर फूटे और पीव निकले तो रयाफ, अविपण रोगन  
 एत और स्त्री के दूध में घोल कर बिद्र में रपकावे और जो  
 पोका अधिक हो तो थोड़ी सी मफीम भी मिलावे ॥

और जो कोई बहसदार मपाद बिद्र में कसा हो तो मूत्र  
 कठिनता से निकलेगा और जलन न होगी और मूत्र में बस  
 रपाद का लक्षण पाया जायेगा इसमें मूत्र खानेवाली औपघों  
 हैं और पिघलाने वाली औपघों को जोड़ा के पारें और बसी  
 मोटे हुए पानी में थोड़ा सा रोगन बापुना मिला के पिचकारी  
 में और जो मस्सा हो तो मूत्र कठिनता से होगा और मलन न  
 होगे, न कफ निकलेगा जो बह मस्सा सिर पर हो तो पछमा-  
 और सफेदा रोगन घुल में पीसकर रपकावे और जो पीडा  
 अधिक हातो फस्द साफिन खोले और पिचकी पर पड़ने लगावे ॥

**लिंग के टेढ़ा होजाने का वर्णन ।**

इसकी कारण पहे का सिबाध या सूजन है बहिले बस  
 कारण को दूर करें और रोगन आदि मल के बस स्थान को मर्म  
 करें और फिर हाथ में भली माँति पसे सीपा कर लेने ॥

**हृक्कीसर्वा अध्याय**

**मिराक सिफाक और सर्व का वर्णन ।**

जानना चाहिये कि पेठ के चपटे को मिराक कहते हैं और  
 जो फिस्ली उसके नीचे है वह सिफाक कहलाती है और एक  
 परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तले है सर्व कहलाता है ।

## काल का वर्णन ।

यह वह रोग है कि सिफाक की रीह जो चट्टों की ओर अंडकोष के पास से खुलजावे या सिफाक आपही यहाँ से हट जावे और सर्ज या आंत या पायु या तारी अंडकोष की वैली में घसर आवे इसको फितक भी कहते हैं ॥

और जब कोई गाढ़ा मवाद घुसने लगे तो उसे कटुल लक्ष्मी कहते हैं । इन पांचों का वर्णन अलग-अलग करते हैं पहिले आंत के घसरने का लक्षण यह है कि योही २ घुसने और कठिनता से ऊपर को चढ़े और चढ़ने के समय गठबढ़ हो और कभी कूलन की पीड़ा भी इसमें होती है, उपाय इसका यह है कि बीरे २ मल के ऊपर चढ़ावें, और जो तुरत न चढ़े तो गरम पानी से धारें और आवजन में पिठावें, और जब चढ़ जावे तो यह लेप पेड़ और चट्टों और अंडकोष पर लगावें, मस्तगी इनके कुदरमरी के फल और पत्ते, अकांकिया, गुलनार, सुर, दम्बुल, अखबैन, फिडकरी, रसौत, अमल, एलुआ, सब को बराबर लेकर कुट छान कर सरेशमाही को हरी मकोय के पानी में पिघला कर यह औषधें उसमें मिलाकर एक कपड़े पर मरहम की तरह लगा कर अंडकोष पर चिमटा दें, और ऊपर से पट्टी रख कर बांध दें और तीन दिन तक गंधा रखें और रोगी को चाहिये कि तीन दिन तक विस पटा रहे और तीन दिन पीछे बहुत हीले से छे और चले फिर और जो वस्तु हानिदायक है उसे न खावे पीछे और हिलने झुलने से बचे और निब जवागिरा और कमनी गानों और आकडा जो इस काम के लिये बनाया गया है बांधे रहे ॥

दूसरे सर्ज के घसरने का लक्षण भी कठिनता से चढ़ना है परंतु इसमें गठबढ़ नहीं होती और यही इसमें और आंत के

रने में अन्तर है, इसका उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा  
 है। तीसरे पायु के उतरने का लक्षण यह है कि सड़ग से  
 र की चढ़े और गड़पट अधिक हो, इसमें घातनाशक औषधों  
 में लालों और पायु के उत्पन्न करने वाली वस्तु से धँसे और  
 धाँसे रहे। चौथे पानी उतरने का लक्षण यह है कि अंड-  
 की लाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसी  
 र से ऊपर न चढ़े, इसमें उस पानी को सुखावेँ जैसा कि  
 मलम्बर में लिखा है और जब उससे लाभ न हो तो खेवा  
 पानी निकाल दालें पाँचवे फर दुललहमी में गाढापन और  
 और फडापन यैली के अन्दर होता है नकि वसरी  
 में यही अन्तर है इस रोग में और यहाँ की सूजन में वस-  
 तीमून से मवाद निकाले और बाकी वही उपाय है जो  
 व की सूजन का है।

### पेट और चढ़ों की फितक का वर्णन।

भी सिफाक टूटी के पास ऊपर या नीचे की वससे फट  
 है, और मिराके जैसे का ऐसा रहता है और जो कुछ  
 के तले है उभर कर मिराक को ऊँचा करता है और  
 द्वार से चढ़ों में सिफाक फट जाता है और उस जगह  
 जाता है, और यह दोनों रोग बहुत करके स्थिर  
 हैं, उस जगह की मारी गहियों और पट्टियों से कसके  
 र वन वस्तुओं से धँसे जो ऊपर लिखी गई हैं, परन्तु  
 है कि यह रोग अच्छे नहीं होते उपाय करने से  
 लाभ है कि रोग मरने नहीं पाता कहते हैं कि इन रोगों  
 की घण्टियों पर शलाका को गरम करके दाग देना  
 है, और इसी प्रकार से उस बीटी रंग पर जो अंगूठे  
 हाथ की छुट्टी पर है दूसरी ओर दाग दें ॥

## टूंडी के उभर आने का वर्णन ।

जो उत्पत्ति के दिन धुरी तराह से काटने से या किसी रोग से उभर आवे तो उसी समय तुरन्त ही उसे ठीक करे नहीं के पुगना होने पर कुछ लाभ नहीं होगा उसी समय पही भाग से ठीक करे ॥

जो यह रोग सिकाक के फटने या कफ इकट्ठा होने से हो तो जैसा कि जिह्वा जलंधर में होता है या वायु के इकट्ठा होने से जैसा कि तबली जलंधर में होता है या टूंडी की लाल के नीचे मांस बढ़ जाने से या किसी रोग के फट जाने से और कफ इकट्ठा होने से हो इनमें से जो रोग फितक की प्रकार का है उसमें दधाने से टूंडी नीची हो जाती है चाहे गहबड़ हो या न हो ॥ और कफ में चोभ जान पड़ेगा, और वायु में बरपी होती और वायु की उत्पन्न करने वाली वस्तु खाने से उपाय अधिक होगा और उनकी विपरीति दवाओं से घटेगा यदि उत्पन्न में उगही कही होगी और दधाने से नहीं दबेगी और कफ के इकट्ठा होने में ऊपर का रंग नीलाया काळा होगा, जो यह रोग फितक की प्रकार से हो तो उसका उपाय खिल चुके हैं और जो कफ या वायु से हो तो उसका उपाय जलंधर के वर्णन में देख लें, और मांस उत्पन्न हो जाने में कुछ उपाय करें वह अच्छा न होगा ॥ और जो कफ इकट्ठा हो जाय तो भोक लगाने के उपाय करने वाली औषधों का लेप करे जो नक सीर के वर्णन में लिखी गई हैं कि रंगों का सुंदर जिससे कफ निकलता हो मन्द हो जावे ॥

## वार्हसवां अध्याय ।

उन रोगों का वर्णन जो केवल स्त्रियों को होते हैं

## बांझ होने का वर्णन ।

जो रक्त में कोई बिगाड़ गर्मी या ठण्ड या सुख या

और सादा या मवाद से हो तो उस का कारण जान के  
नष्ट करना चाहिये ॥

और भी पड़िखान यह है कि रोज का रुधिर काला और  
होना, और उसमें गरमी भी पाई जावेगी, उगद की पड़ि-  
खान यह है कि रोज का रुधिर देर करके और पिना मल्लन के  
निकलना, और लुण्फ की पड़िखान यह है कि पेशाब की जगह  
और रहेगी और रोज कम होगा, उरी की पड़िखान यह है कि  
स से उरी निकला करेगी, और ऐसी स्त्री के धीन यहीने से  
क पेट न रहेगा, और जो विगाह किसी मवाद से हो तो  
पिना नष्ट मवाद की उरी करग ता जानी जावेगी, ना कि  
स से बड़े ।

जो सुदापेके कारण गर्भन रहे तो दुबला होनेका उपाय करें,  
और जो अधिक दुबला होने से हो यहाँ तक कि इतना रुधिर  
निकले कि बच्चे को बढ़ावे तो मांदा होने का उपाय करें जो इस  
रुधिर के अन्त में लिखा गया है और जो रोज के बन्द होनाने  
से हो ऐसी औषधें काम में लावे और रोज को निकालें ।

और जो रहम की सूजन या बवासीर या घाव या कड़ेपन  
हो तो उसे कारण को दूर करें और इन का बर्णन अलग  
में किया जावेगा ।

और जो रहम में गादी वायु इकट्ठा होने से हो तो लक्षण  
का यह है कि पेट फूला हुआ होगा और शिथिल के समय  
में जो जगह से वायु आवाज के साथ निकलेगी इसमें वह  
जो काम लावे जो वायु को छोड़ें और पेट पर चारे लगावे  
रोमन वेद और सादे दश पाण्डे "भाऊल अष्टक में विरता  
कियावे ॥

और जो रहम के मुँह में कोई बिगाड़ हो जैसे सूजन का घाँस या मसला आदि जिसमें मुँह बन्द हो जावे तो उस कारण से को दूर करें उसका वर्णन आगे किया जावेगा और जो रहम का मुँह सामने से हट गया हो और जो उससे पीछे पीठ के जा सके तो विषय करने के समय पीछा होगी और उसका उपाय आगे लिखा जावेगा और जो विषय के पीछे स्त्री पुच्छ ही उठ खड़ी हो या कोई और इसी प्रकार की हो जिससे भी फिसल कर निकल जावे तो उस कारण को रोकें कभी पुच्छ भी बाँध होता है जैसे कि वीर्य के बिगड़ जाने से हो तो पुच्छ का उपाय करना चाहिये और वीर्य को ठीक करें। और कभी ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म से हो तो उसका उपाय नहीं हो सकता है ॥

अब इस बात को जानना चाहिये कि स्त्री-बाँध पुरुष, इस प्रकार से हो सकता है कि दोनों के वीर्य अलग-अलग और उन्हें गरम पानी में डालें जो ऊपर तैरता तो जानों कि वही बाँध है ॥ जो औषधें कि गर्म रहने लिये लाभदायक हैं यह हैं हाथीदाँत का चुरादा ४॥ ५ स्त्रियाँ या पनीर लगाने ॥

### बहुधा गर्भ गिरने का वर्णन ।

जो इसका कारण खोँट या क्रोध या दुख आदि या बूझ या भूल या कोई रोग होता उस कारण को रोकें बाँध के कारण और इसके एक हैं इस लिये ऊपर के वर्णन में देखा चाहिये ॥

### जनने में कठिनता होने का वर्णन ।

इसका उपाय ठण्डी और गरम दवा और समय के सार करना चाहिये और जो स्त्री कठिनता से बना करे

आदमी महीने से दूध पिलाया करै जिसना उसे पशु सके, और  
 पशु यह मनने को हा तो उसे गरम जगह में ले जावै और गरम  
 जगह पर पारै और आपजन में बिठावै, और तेज मत्ते  
 और ठंडा पानी और ठंडी वस्तुओं और खड़ाई  
 करै, और स्त्री को चाहिये कि अपने दम को रोके और  
 पशु पर नार करै और कूये और दाई रोपन बादाय या  
 अलसी का तेल, अलसी का लुभाव मिला कर चुन चुना करके  
 पशु के मुँह पर बहुत सा मत्ते इससे बच्चा सुगपता से उत्पन्न  
 होता है ॥

यह औषधें इस रोग को अति लाभदायक हैं जुम्बक पत्तर  
 बड़ा टुकड़ा बाँधे हाथ में बाँधें और म गे की जप बाहिनी रान  
 बाँधें, और दाल चीनी मिलावै, और जो बुद वेदस्तर या  
 जो भी मिलावे तो दुर्न्त लाभ होमा, परन्तु गरमी न हो और  
 पशुवास के दित के डेढ़ ताजा कुचल के ओटावै और शर्बत  
 पशु या चनों का पानी मिलाकर पिलावै, इससे दुर्न्त  
 बच्चा हो सकता है, और यशीमा भी निकल आती है और  
 यशीमा स्त्री को सुगन्धि कभी न सुघाना चाहिये और मनने  
 समय वा कभी नहीं सुघावै ॥

गीसाके रुकने और पेटमें बच्चा मरजाने का वर्णन  
 पेट में बच्चा मरजाने का लक्षण यह है कि फिरना उसका  
 होमाता है, और स्त्री के हाथ पाँव ठंडे होमाते हैं, और  
 जगती है, और साँस पेश में नहीं समाती इसमें हुरत ही  
 पेश या यशीमा को निकाले, चाहिये की पहाड़ी पोदीमा,  
 पशु, अथवा, मत्तेक साढ़े १०॥ पाये, दुग्धस और पोदीमा  
 पशु या यशीमा को निकाले और तीन लोले मिमी मिलाकर  
 पशु और नरकिकनी या पिंसी हुई कलौंगी या बघाक की



नास सुंघाकर छींक लिखावे, और जब छींक आने लगे तो मुँह और नाक बंद करावे, कि जार छींक का अन्दर को पेश और बच्चा मरा हुआ निकल पड़े, और साँप की काँच और कपूतर की पीठ जलाकर रहम में धनी दें ता तुलना ला होता है और जो इनसे कुछ लाभ न हो तो बच्चे को काटकर निकाले ।

जो रुधिर जनने के पीछे निकलता है

उस के रुक रहने का वर्णन ।

इसका उपाय यही है जो हैम के बंद होने का है कुछ स्थिति को जनने के पीछे पीछा हाती है उसकी औपधें यह है अक्स के बीज थोड़ाकर रहम को भरा दें, और गंधी का दूध गुना करके मूत्र की मगह को घोंवे और गंधे या तिल के घुम मलाकर घुनी लें और सातर का पानी पिलावें ।

और खुन्वाबी आँटा के पिलावें, और रहम में भी पचावें और जो कोई दवा लाभदायक न हो ता पोस्त को पानी में गिगोरकर उसका पानी थोड़ा सा पिलावें कभी गर्म गिरान पड़ता है, यह महा निषेध काम है, और जो अत्यन्त आबरु फता हो तो उसका उपाय यह है कि कागज की बत्ती बना कर रहम के मुँह में रखले और जो उसको कुतरान में अथवा अन्य घन के पानी में या उसके जुशादे में पिलावें तो अधिक पुष्ट गावेगा, और हींग दो माशे सूखा हुआ सुदाव दश माशे, मक्की तीन माशे कूट धानकर सिलावें और ऊपर से अण्डा और पीछे, सध्या और सवेरे यह सब एक खुराक है भोजन के पदो चनों का पानी दें तिरियाक अरबी भी लाभदायक है और जो औपध मरे हुए गशीमा को पेट से निकाळती है गर्भ के गिराने में काम आती है ॥

गर्भ गिराने के समय पहिले गरम स्नान में बैठकर रोगन  
 और नीर मल्लें और चिकनाई पिलावें, और गिर जाने तो  
 श्व और राई जलाकर रहम को घूनी दें कि रुधिर  
 जा जा होने पावे और निकलता रहे ।

जब साहें कि गर्भ न रहने पाने तो उपाय उसका यह है  
 के विषय के पीछे सात घास या नौ बार कुदें और दीर्घ निकलने  
 छे दूरन्त ही छठ खड़ी हों और झींक लें और पुरुष विषय  
 समय लिंग पर चिल्ली का तेल मला करे उसकी चिकनाई  
 दीर्घ किसल जावेगा और काछीपिचें विषय करने के पीछे  
 व के छिद्र में रक्खें और चूहे की मँगनी पीस के गर्भ  
 नाकर रक्खें ।

### रिजा का वर्णन ।

यह वह रोग है कि जिसमें सब लक्षण गर्भ रहने के से  
 ये जाते हैं परन्तु वह गर्भ नहीं है क्योंकि इस रोग में और  
 बनी होने में यह अंतर है कि मल्लें के हिलने झुकने के जो  
 मय हैं उनमें क्या हिलता नहीं है और लक्षण जो गर्भ के हैं  
 नहीं पाये जाते ॥ और ऐसा ही जलधर में और इस रोग में  
 मने वालों को अन्तर पालूप होता है अर्थात् ऐसा  
 पवन इस रोग में है वह जर्णपर में नहीं होता । कारण इस  
 रहम की सूजन हो तो उसका उपाय आगे लिखा जावेगा  
 और किसी मवाद के गिरने या वायु के उत्पन्न होने से हो  
 उसका उपाय पाम्क होने के वर्णन में लिखा गया है ।

और जो केमल स्त्री के दीर्घ से और रहम से कोई वस्तु  
 गिरा हो तो गर्भ को गिरा दें ।

### हेज की अधिकता का वर्णन ।

जो रुधिर की अधिकता से हो तो कस्तूरी से उसे कम करें ।

और बातियों को पट्टी से कस के बांध दें और उनके नीचे  
पछने लगाने और फुसके के पीछे कुर्सी कहूँवा रुधिर बंद करने  
लिये तिलानों और शाफा सुपसिक रहम में रखते ॥ और  
रुधिर पित्तों की अधिकता से पतला और तेज हो गया हो  
पित्त के लक्षण पाये जावेंगे इसमें पित्त की निकालें और  
ऊपर वाले कुर्सी और शाफा दें और चदन पेड पर लगाने  
रुधिर में तरी बढ़ जावे तो कफ के लक्षण पाये जावेंगे इस  
तरी को सुखाने और निकालें ॥

जो सौदा के पित्तने से रुधिर में तेजी आ गई हो तो रुधिर  
काळा या नीला या हरा होगा उसमें सौदा का फुसका  
जुल्लाव से निकालें ।

और इसका कारण रुध्र की पचासीर या घाव हो  
उसका उपाय आगे आवेगा ॥

और जो अनने की कठिनता से रुध्र की रों फट गई  
तो उसका उपाय आगे के बयान में लिखा जावेगा ।

और जो कब्बी फूटने से यह रोग हो तो काबिज शराब  
बिठाने और कब्ज करने वाली औषधें जैसे माजू और गुल्लनी  
और गुल्लाव के फूल ओटाकर आगे से पोखें और उस स्वा  
को चिकना रखें, और अंगूर की लकड़ी और पत्तों की रों  
कपड़े पर रखकर गही बांधें और अहर मुहरा मटे में घिस  
पिटाने, और जो उपाय घाव का है वही परहम लगावें ।

**रुध्र के घाव का धर्यन ।**

लक्षण उसका यह है कि पीड़ा बनी रहेगी और पीप पा  
रुधिर अकेले या दोनों मिले हुए निकलेंगे पायमें पीप  
न बदे और कोई हानि न  
मीक

और इस प्रकार श्वित्ताओं और कषम करने वाले हुकने  
 गरी काम में लावें और जब घाव में पीस पड़े या सूजन  
 फूट तो रागन गुल शकर और रागन बनफशा पानी  
 माला कर रहम में हुकना करें और जब मवाद साफ आनाय तो  
 रहम बासलीकून रोगन गुल में मिलाकर रहम में हुकना करें  
 घाव भर जाय ।

और जो रहम की गर्दन में घाव हो तो इनहीं औषधों की  
 रक्खें कुछ हुकने की आवश्यकता नहीं और अकेला शहद  
 ओढ़ हुआ दूध कई में भिगे कर रहम में रक्खें और रहम से  
 शह निकालना अति लाभदायक है ।

और जब पीड़ा अधिक हो तो अफीम और केशर स्त्री के  
 र में घोसकर सममें कई भिगेकर रहम के भीतर रक्खें ।

### रहम के फटजाने का वर्णन ।

इसमें विषय के समय अधिक पीड़ा होगी और श्लिग कथि-  
 मरा हुआ निकलेगा जो मरहम गुदा के लिये लिखे हैं वही  
 गोबे और मरहम बासलीकून और रोगन बनफशा अति लाभ  
 विक है कभी गुदा और मन्त्रेन्द्रिय के बीच में जो पर्दा है वह  
 नने की कठिनता आदि से फट जाता है इसमें मली का गुदा  
 केद भीम और बकरी के गुदे को लेकर बहुतसा सगमिराहक  
 ला के मरहम बनावें और उसको गरी पर लगाकर इस प्रकार  
 बाँधें कि घाव की जगह जमजावें और हानि कारक वस्तुओं  
 बचें ।

### रहम की खुजली का वर्णन ।

यह रोग पित्त सारी बलगम या सौदा पाक्षीकर्म में सेनी  
 जाने से होता है लक्षण इसका यह है कि रैम का कथि-  
 ला या सफेद या काछा-रोगा परिणो मवाद को निकालें फिर

पोदीना अनार के छिलके और दली हुई पसर कूट खान क  
मुमलस या शगव या सिरके में घोल कर रुई उसमें भिगो  
अन्दर रखें और रोगन गुल और रोगन बनफशा में जो  
जो मूत्र के स्थान पर खुगली हो तो उसका भी यही उपाय है।

### रहम की चवासीर का वर्णन ।

इसका उपाय भी वही है जो चवासीर का सत्रहवें अध्याय  
में लिख चुके हैं ।

### रहम की फुंसियों का वर्णन ।

यह रुधिर के बिगाड़ या पित्त से होता है फुंसियाँ छूने में  
आती हैं और खुगली होती है फस्द से मवाद को निकालें  
और सिकनधीन पित्तों और सफेदे का मरहम लगावें और जो  
रहम की गरदन में फुंसियाँ हों और जो भीतर को हों तो  
हुकना करें ।

### रहम के मस्सों का वर्णन ।

यह भी छूने से मालूम होते हैं फस्द खानों और सौदा का  
जुल्लाव दें और पावना नाखूना मेथी और अलसी के बीज  
औटाकर आबजन करें और पेशाब करने के पीछे बर्सी से  
धोने ।

### रहम के नासूर का वर्णन ।

जब घाव चालीस दिन का हो जाता है तो उसे नासूर  
कहते हैं लक्षण उसका यह है कि पीला पानी बहा करे और  
उपाय उसका वही है जो आठवें पाठ में लिखा गया है ।

### रहम से पानी बहने का वर्णन ।

इसमें फस्द और जुल्लाव से मवाद को निकालें, और  
मिनाम की ठह और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपाय करें ।

रहम से वीर्य बहने का वर्णन ।

इसमें और पानी बहने में यह अन्तर है कि पानी में दुर्गन्ध अधिक होगी और वीर्य में गाढ़ापन और सफेदी अधिक होगी, इसका उपाय वही है जो पुरुषों के वीर्य बहने का है ।

हौज के चन्द होजाने का वर्णन ।

जो यह रुधिर की जमी से हो तो शरीर दुबला होगा रुधिर की न्यूनता के लक्षण पाये जायेंगे, पुष्ट भोजन खाकर रुधिर बढ़ाने का उपाय करें, और जो ठंड पड़वने या किसी मवाद मिलने से रुधिर भी गाढ़ा हो गया हो तो उसे चन्द के कारण पाये जायेंगे, और ठंड के लक्षण होंगे, गाढ़े मवाद को निकालें, और वह औषधें जिनसे रुधिर ठा हो चाहे पिलायें या मपारा दें, और जो रहम की रगों के बंद हो गये, हों तो देखना चाहिये कि कारण क्या है गर्मी या ठंड या खुरशी फिर चीसा उपाय करें, जो पड़िले पाठ होता गया है ॥

जो रहम का घाव भरने में रुधिर रुक रहा हो तो उसका घाव नहीं हो सकता परन्तु अधिक हानि से बचने के लिये कभी फस्द खोला करे, और मिहनत अधिक करे और न कम न्हावे ॥

और जो रक्त के कारण से हो तो उसका उपाय आगे है और जो अधिक मुटाये से रुधिर निकलने के रास्ते बंद हो गये हों तो दुबला होने का उपाय करें, और जो रहम रुधिर जाने से होती उपाय हमका आगे के पाठ में आया

रक्त का वर्णन ।

यह वह रोग है कि मग के मुट पर या उसके और रहम के बीच में या रक्त के मुट पर कोई पदार्थ पड़ी हुई हो, पड़िले में बिना अन्दर न जा सके और दूसरे में

पूरा जावेगा, और तीसरे में जा सकेगा परन्तु हैज का रुधिर निकलने न पावेगा चाहिये कि इसको किसी से काट डालें।

### रहम के उभरने का वर्णन ।

इसका लक्षण यह है कि पेड़ और केसर के स्थान पर अधिक पीड़ा मालूम होगी और कुनाज और राशे के रोग उत्पन्न होंगे और भीतर कई पस्तु नरम पाई जायेगी, आँतों को छुलने से और पसाने को मृदुलानेवाली औषधों से साफ करे, चमेली का तेल या रोगने गुलालेंकर उसमें थोड़ा सा केसर का तेल और आगजा मिलावें और गुनगुना करके रहम में टपकावें और मूत्र और दाई से कह दें कि स्त्री को चित्ति ठीकी फर दोनों राने उठावें इस प्रकार से कि आपस में मिलने न पावें अलग २ रहें और भेड़ के नरम बाल जो खाल के पास बालों की जड़ में होते हैं उनको लेकर उस शराब में जिसमें कि कब्ज करने वाली औषधें फोटाई गई हों मिलाकर अकाकिया और सुक और रामक कुट ध्यानकर उससे उन बालों को लथेइ और पोटलीसी बनाकर रहम को उससे उठाकर भीतर करे और उस पोटली को वसी जगह रहने दें और दूसरी गरी से भग को भर दें और फसकर पट्टी बांधें और पेड़ पर उसके आसपास काबिज औषधों का लेप करें और तीन दिन तक इसी प्रकार से रहे, और हानिकारक वस्तुओं और दितने मुलने से बचे, तीसरे दिन पट्टी खोल के उस औषधि को निकालें और नई दवा रखें, और जब तक भली मीति आगम न हो खलने फिरने में पट्टी बांधे रहे और बुराबर सुगंधि सुंघावें ॥

### रहम के झुक पड़ने का वर्णन ।

यह दाई का शाय लगने से मालूम हो सकता है और

इसके समय पीड़ा होती है और कभी कभी पेशिया भी होती  
और घुट और दस्त बढ़ हो जाता है ॥

जो रुधिर की अधिकता से रंगें तन गई हों तो जिगर को  
हल हो घसी और फस्द साफिन खोलें ॥ और जो ठंड  
जने से हो तो तर आप्मजन में पिछार्य और रोपन बाधने  
वर्षा की चर्बी पिघलाकर मलें ।

और जो कफ गिरने से हो तो अपारिजै खिलाकर मवाद  
निकालें ॥

और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग न भावे  
तब भी वै भीमरोगन लगा के दारि सोषा करदें ॥

**रहम की सूजन का वर्णन ।**

जो गरम से हो तो लक्षण उसका यह है कि गरम उबर  
ग और नाही और रवास जन्दी र चलेंगी । और मइ  
र येने में बिगाड होगा और जो आगे को रुधम में सूजन  
तो पेडू में पीड़ा हागी और जो पीछे हो तो कमर की सोर  
र जो दोनों जगह हो तो दोनों फोख में पीड़ा होगी इसका  
तब यही है जो मसाने की सूजन का है ॥

और जब सूजन एकमात्रे और फूटे तो रहम के भाव का  
तब करें ॥

और जो कफ की सूजन हो तो पेडू के आसपास पीड़ा  
भी और बाऊ भी होगा सुखी और मसाने की ठंडी सूजन  
। बपाय करें । और जो पादी से हो तो कटापन होगा और  
। किसी ओर भुका हागा और पीड़ा कम और जो रुधम अधिक  
। फस्द और शुल्काय से पादी को निकालें और मरहम  
। ररबी और रोगनों से चारों पिचकारी में या गरी रपले  
को वि दि २५



या लेप लगावें, और सोये और खेरु को औटाकर रातदि  
दो बार आपजन करें ॥

### रहम के दुबले का वर्णन ।

जब सूजन पकजावे और न फटे तो उसको दुबला  
है जो यह रहम के मुह में हो तो छेवा देकर पीस को नि  
हाले ।

जो रहम के भीतर सह में हो सो मूत्र लाने वाली औ  
पिलावे, और नरम करने वाली औषधों का लेप करें कि औ  
आप फट जावे और जो फूटने में देर होती हो सो और  
राई औटाकर रहम में हुकना करें, और फोक उनका फूट  
सूजन की जगह पेडू पर लेप करें और जब फूटे तो पीस  
साफ करें और घाव को भरें ॥

### सरतान रहम का वर्णन ।

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे हो जाता है  
कटापन और गरमी और तपक होगी पीड़ा छाती तक हो  
और पांव पर सूजन होगी इसका उपाय नहीं हो सकता,  
पामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिनसे  
भीरी हो, और आपजन और हुकना आदि किया करें  
मरहम रसूल अति लाभदायक है और सोदा के निकालने  
लिये कभी २ फेसद और जुल्लाव दें परन्तु तबरी पहुँचने  
ध्यान बहुत रखें ।

### खतिनाक रहम का वर्णन ॥

इस रोग में मूगी और मूर्च्छा का सा हास होता है  
कफ मुह से नहीं निकलता और तदपन नहीं होती और  
ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ खबर नहीं है  
मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मूगी का है परन्तु

गर्भिणी कभी न सुंघाये दुर्गंधि सुंघानी लाभदायक है और और गुणल आदि जिसमें दुर्गंधि होनाक के आगे जलावे सुगंधि रहम के भीतर पसी और मुरक और अम्बर की और रहम में पहुँचाने और मज विषय के छुट जाने या की अधिकता से यह रोग हो तो हो सके तो विषय करे और जब हैन के रुधिर रुकने से हो तो फरकियून और मिरबे गरी में भीतर रखें और जब रोगी बेतन्म्य हो मूत्र छाने वाली औपचें पित्ताने और फस्द खोलें और निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

### रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

इस रोग में जिकरी जलपर की मांति पेट फूल जाता है कभी पानी ऊपर बह जाता है इसमें रहम और सारे र का मबाद निकालें और मूत्र छाने वाली औपचें पित्ताने यह उपाय करें जो जलपर और पंद्रहने पाठ में लिखा गया है अथवा रहना और मिहनत करना अति लाभदायक है कहते हैं कि सफेद कुटकी भीतर लगाना अच्छा है ॥

### रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

इस में पेट फूल जाता है और पीडा भी होती है और ने से तबले की सी आवाज निकलती है अथारिश खिला सारे शरीर का मबाद निकालें और वायु को तोड़ने वाली बों से ठूकना खोप, सेक, आयमन आदिक और जो उपाय में जलपर का है वही इसका है ॥ जो रोगी बीसवों अध्याय के आठवों, नवों और बारहवों में लिखे गये हैं वह स्त्रियों को भी होते हैं उनका उपाय है जो पुरुषों के किये हैं ॥

या लेप लगावे, और सोये और खरू को आटाकर रातदिन दो बार आवनन करें ॥

### रहम के दुबले का वर्णन ।

जब सूजन पक जावे और न फटे, तो उसको दुबला है जो यह रहम के मुंह में हो तो छेवा देकर पीव को निकासाले ।

जो रहम के भीतर तह में हो तो मूत्र लाने वाली औषध पिलावे, और नरम करने वाली औषधों का लेप करें कि आप फूट जावे और जो फूटने में देर होती हो तो इजीर और राई आटाकर रहम में हुकना करें, और फोक बनका कूट सूजन की जगह पेहू पर लेप करें और जब फूटे तो पीव साफ करें और घाव को मरे ॥

### सरतान रहम का वर्णन ।

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे हो जाता है कटापन और गरमी और तपक होगी पीड़ा जाती है कफ और पांव पर सूजन होगी इसका उपाय नहीं हो सकता, या यामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिनसे घीमी हो, और आवनन और हुकना आदि किया करें मरहम रसूल अति लाभदायक है और सौदा के निकालने लिये कभी २ फस्द और जुल्ताव दें परन्तु सरी पड़ने पर ध्यान बहुत रखें ।

### खतिनाक रहम का वर्णन ।

इस रोग में मृगी और मूर्च्छा का सा हाल होता है कफ मुंह से नहीं निकलता और तपक नहीं होती और मूत्र ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ खबर नहीं मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मृगी का है परन्तु

अभि कभी न सु घाघे दुर्गंधि सु घानी लाभदायक है और  
 और गुणक आदि जिसमें दुर्गंधि हीनता के भागे जलावे  
 सुगंधि रहम के भीतर मल और मुरक और अम्बर की  
 और रहम में पहुँचाने और जब विषय के छुट जाने या  
 की अधिकता से यह रोग हो तो हो सके तो विषय करे  
 और जब हैज के रुधिर रुकने से हो तो फरफियून और  
 मिरबे गद्दी में भीतर रखें और जब रोगी बेतन्व्य हो  
 जाने वाली औषधें पितामो और फस्द ओले और  
 निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

### रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

स राग में निचकी जलधर की सांति पेठ फूल जाता है  
 औ पानी ऊपर वह आता है इसमें रहम और सारे  
 का मवाद निकालें और मल लाने वाली औषधें पितामो  
 ह उपाय करें जो जलधर और पंद्रहों पाठ में लिखा गया  
 मूला रहना और मिहनत करना अति लाभदायक है  
 रहते हैं कि सफेद कुठकी भीतर लगाना अवज्ञा है ॥

### रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

स में पेठ फूल जाता है और पीका भी होती है और  
 से तबले की सी आवाज निकलती है अपारिण्ड खिजा  
 रे शरीर का मवाद निकालें और वायु को तोकने वाली  
 से डुकना लेप, सेक, आबजन आदिक और जो उपाय  
 जलधर का है वही इसका है ॥

रोगी को सों अध्याय क आठवों, नवों और बारहवों  
 लिखे गये हैं वह स्त्रियों को भी होता है उनका उपाय  
 जो पुरुषों के लिये है ॥

## तईसवां अध्याय

पीठ और हाथ और पाँव के रोगों का वर्णन

### कुभ निकल आने का वर्णन

इस में पीठ की गुरिया अपनी जगह से आगे पीछे हो पाये जिसका जाती है इस रोग के कारण पाँच है एक पट्टे की सृजन जो गुरियों के पास पास है, दूसरे गुरियों नीचे गाढ़ी यात का भरना तीसरे यह कि पतली तुरी गुरी की नसों में आने और उसे ढीला करने चौथे नसों का खिच पाँचमे यह कि गुरिया पर चोट पड़े पहिली प्रकार का लक्षण यह है कि पहिले पीठ में पीड़ा होती है और नाटी भागी हो है और तप अधिक होती है और दूसरी प्रकार का लक्षण है कि पीड़ा अधिक होती है बिना तप के तीसरे में मूत्र सप निकलता है और इससे पहिले तर धस्तु आई होगी और खिच और चोट पड़ने का लक्षण तो सब जानते हैं पहिली प्रकार फस्द खोलें और मुकायम करने खोली औषधें दें और वे लगावें और सृजन का उपाय हैं दूसरी आर तीसरी प्रकार में यह उपाय करें जो गुग्गु की चोट का है और निषाव तथा मूत्र का उपाय करें और चोट लगने में पीठ के गुरों ठिकाने से बिठावें जो भीतर को घुस गये हों तो ऊपर से सींगियों से या चारे लगाकर या जिप्स और गुग्गु धोड़ा अकरकरा मिला कर लेप करें कि सृजन से तनाव पड़े ऊपर लिखे जो गुरे बाहर उभर आये हों तो हाथ से मख भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें फिर कापिज औषधों का से करें कि फिर न उभरे ॥

### पीठ की पीड़ा का वर्णन ।

जो कारण इसका केवल कोई बिगाह बिना मुराद के रहवे

ठंड लगेगी और पीड़ा बिना शोभ के होगी और गरमी से आराम मिलेगा इसमें गिलास और लगाने से गरमी पहुँचावे और वा कफ उत्पन्न होने या गिरने से हो तो कफ उत्पन्न होने में पीड़ा शोभ के साथ होगी, और पहिले से कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खार्ह है ही ॥

और कफ गिरने के लक्षण इनके सिवाय, क्रोध, दीह, प मिहनत आदि है। मवाद को निकालें और साफा करें।

और कफ गिरने में पचाने वाली औषधों का स्त्रे भी लाभदायक है बिना मवाद निजाल हुए। और जो पीठ में ब फसी हो तो लक्षण बसना बही है जा कफ क गिरने का पान्नु इस में शोभ न होगा या हलफ होगा, और पीड़ा र चपन फिरेगी, इसका उपाय भी लिख चुके हैं, क्योंकि कफ की भी कफ है ॥

और जो विषय भी अधिकता हो तो विषय करना छोड़ और जो रोगन गुल और रोगन सुरमान पीठ पर मले और इससे लाभ न हो तो कफ का मवाद निजालें। और जो एवं कफजोरी हो तो लक्षण और उपाय बस के बही है, जा के रोगों में लिखे गये हैं। जो पीठ में बही रग है बस में र की अधिकता से हो तो पीठ के मुहरों में गर्दन तस कमर तक बराबर कम्बार्ह में पीड़ा और तपहो में फरद पासलीक और माविज खोलें और ठहराई विशावे बही औषधें लगेबें ॥

जो यह रोग रहम के बिगड़ से हो जैसे कि स्थियों को गर्ने के समय हुआ करता है अब कि मली भाँति खुल जाये इस में देज छाने वाली औषधें दे और बस के बने का उपाय करें और रोगन गुल पीठ पर मलें ॥

## कोख का पीड़ा का वर्णन ।

इसके कारण, लक्षण और उपाय पीठकी पीड़ा में देते  
गठिया का वर्णन ।

यह पीड़ा शरीर के जोड़ों में होती है, इसमें कभी सुन  
होती है और कभी नहीं होती जो चूतड़ों के जोड़ में पीड़ा ।  
उसे बज्रुल बर्फ कहते हैं, और जो कूले से नीचे पाँव तक उठ  
तो अरकुनिसा कहलाती है ॥

और जो टखने के जोड़ से ऊपर को चढ़े या पाँव की उ  
लियों में हो तो उसका नाम जुकरस है, बहुधा यह पाँव  
अगूठे में होती है ॥

और जो हाथ पाँव के सभ जोड़ों में हो तो वज्रय मफ  
सिला है सब प्रकारों के कारण और उपाय एक से है । इस वा  
एक उपाय लिखा जाता है और जो वस्तु केवल एक ही मफ  
के लिये है वह भी बसाई जाती है जो केवल गरमी ठंड  
खुरकी से हो तो घीरे, उत्पन्न होगा और बोझ और पीड़ा  
होगी और इन बिगाड़ों के लक्षण पाये जावेंगे पीने और कण  
की औषधों से मिजाज को ठीक करें, और तरी से यह र  
नहीं होता ॥

जो रुधिर की अधिकता से हो तो उस स्थानपर लाल  
और तपक और तनाव होगा, जो पीड़ा होतो दूसरी ओर फ  
झालें और जो दोनों ओर हो तो दोनों ओर से खोलें  
हाथ के जोड़े में हो तो फस्द हफ्त अंदाय खोलें, और पाँवों क  
जोड़ों में होतो घासलीक परन्तु रुधिर अधिक निकालें और  
जो मवाद के नरम करने की आवश्यकता हो तो वैसी औषधें  
और मिजाज को ठीक करने के लिये शर्बत पिलावें और  
न के आदि और बढ़ती में फस्द के पीछे इन उद्योगों

औपघों का लेप करें ना मवाद को इधर गिरने से रोकें और पीड़ा की अधिकता में सुन करने वाली औपघों भी मिला लें और रोग के अंत में वनफसा और खैरू आदि फिर पचाने वाली औपघों जैसे नाखूना और बायूने के फूल काम में लावें चाहे तरेदा करें या लेप करें ।

और जो पित्त के मिलने से रुधिर विगड़ जावे तो पित्त के लक्षण पाये जावेगे अर्थात् पीड़ा की अधिकता और नल्लन गदि होगी फस्द खोलें और मवाद का नरम करें परन्तु रुधिर अधिक न निकाले फिर मूत्र लाने वाली औपघों जो ठंडी हों वि लाभदायक है और पचाने वाली औपघों का लेप कभी चाहिये और इन दोनों प्रकारों में सिकतबी जो बहुत तेज की लाभदायक है ॥

और जो पित्त से पीड़ा हो तो केवल घन्ही के लक्षण होंगे और मवाद को नरम करें और मिला म को ठीक करें र वमन अति लाभकारक है और फस्द न खोलें यह रोग तो पित्त से बहुत कम होता है ।

जो कफ से हो तो जोड़ बोझल होंगे और अण्ड के लक्षण आवेंगे घसमें वमन कराने और मुमिश देके कई बार गोष दें जब मवाद निकल चुके मूत्र लानेवाली गरम औपघों लें ।

और इसमें भूत कर भी केवल यह ठंडी औपघों जो मवाद पर गिरने से रोकें या जो केवल पचाने वाली हों न लगावें और जो वादी से हो तो रंग काला होगा और पीड़ा कम और सूजन में कटापन और सनाम होगा इसमें फस्द खोलें जब मवाद भली भाँति पकजावे तो वादी के लुप्तताव दें उसे मरहम लगावें जो कटेपन को नरम करें ॥ फस्द में



नस्तर चौड़ा लगाओ जो रुधिर गाढ़ा और काला निकले तो  
बहुतसा निकाले और बंद न करें और जो लाल और साफ  
निकले तो तुरंत बंद कर दें और पश्चिम मवाद को बादी की  
धुंलियों में पतला कर लें फिर फस्द खोलें ॥ जो शाय में हो तो  
पीड़ा फिरंगी और तनाव होगा इसमें गुलाबकद गुलाब और सोंफ  
का अर्क और शर्बत बजूर पिताये और रोगन गुलाब मले और  
एक को निकालें और गवाब के ठीक करें एक पत्तार की बाय  
की बाय की पीड़ा ऐसी है कि बड़ा पन और खेनी उसकी दृष्टि  
हयों तक पहुचती है और उसे सोछती है और बिगाड़ती है इसमें  
रुधिर और पित्त को निकालें ॥ जो पीड़ा मिले हुए मवाद से  
हो उसका उपाय भी वैसा ही करें और सुरजान सब प्रकारों  
में लाभकारक है खाने में भी और लगाने में भी परंतु  
एक के मवाद को अति लाभदायक है और इसमें और  
और सोंठ मिला लेना चाहिये फिर मेदे हानि न करेगी  
और जब इसे खावे जोड़ों पर रोगन गुलाब मलते की रहे  
तो इसकी खुरकी से फिर हानि न होगी यह औषधें इस रोग  
में लाभकारक है सुरजान और मिश्रा मिलाकर कूट खान कर  
साढ़े दस माशे ठंडे पानी के साथ फेंकें ॥  
सुखा घानिया और बगार शकर मिलाकर साढ़े दस माशे  
मिलावे सफेद लवणवाश पीस के बराबर शकर मिला के साथ  
माशे फकाओ ॥ अरुणोला गरम पानी में घोलकर और रोगन  
गुलाब मिलाकर लेप करें ॥  
और मेथी के बीजों का लुमाव और सिरिखा मिलाकर लेप  
करे नुकसर आदि में सुख करने ॥ घाली औषधों और ठंडी  
औषधों से जब-मेजे में कोई बिगाड़ उत्पन्न हो ता औषधों को  
तुरंत ही छुड़ाओ और आधुना खेरु का ओटागर सिर छे घाटे  
कि मवाद मेजे से उतर आये ॥

जब जल उलवर्क और अरकुनिसा में औषधिसे लाभ न हो तो पहले रोग में कृत्ते पर दाग दें और दूसरे में टखने पर। अरकुनिसा भी रग है उसकी फस्द भी लाभकारक है यह रग यमीली होती है चाहिये कि लोहे की सीक मली भाति गरम करके टखने से आठ अंगुल ऊपर दाग दें। चौलाई में और एक दाग पाँच की छुगलियाँ और दूसरे छगली पर जो उसके पास है जह में ऊपर को सलाई गरम करके लगावें कि एक लकीर सी पक जावे चोबचीनी साबधानी के साथ जोड़ों की सब पीड़ाओं को भति लाभदायक है।

रेंडली की रगों का बड़ी और मोटी होकर उभर आना इसमें बादी और कफ का मवाद निकलें और फस्द पासकीक और जुल्हाब और छलरी के पीछे रगोंकी फस्द मोले कि उनके भीतर का मवाद निकल जावे और जब रोग कपी हो जावे तो बड़ी भाति नरमी से उन्हें पाँचें कि बाद छलट न आवे।

पाँच सूजकर हाथी के से हो जाने का वर्णन। इसका उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है और जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नहीं सकता।

एडी की पीड़ा का वर्णन।

जो पाँच में से हो तो मरहम लगावें जो चोट लगी हो तो ममीरा खे अर्मेनी पानी या गुलाब में पीसकर लगावें और ठंडे नी से भारें और पछने भी लगा सकते हैं और जो ज्वरे बनाने से हो तो भी बरी उपाय है और जो मवाद के गिर से हो तो संधिरके मवाद में फस्द खोलें और जो कोई मवाद तो छलरी कराने और जुल्हाब दें और गरम पीड़ा में रोगन और ठंडी में ने और फरफियून और कूब का लेक मले

## तलुये की पीडा का वर्णन ।

इस पीडा में घरसी पर पैर नहीं रखता जाता मसूर को सिरके में पका कर लेप करें और जो रुधिर का मवाद अधिक हो तो सप से पहिले फस्द खोलें ।

## चौबीसवां अध्याय ।

तप का वर्णन ।

तप तीन प्रकार की होती है हुम्मायौमी,  
हुम्माखिलती, हुम्मादिककी,  
हुम्मायौमी का वर्णन ।

यह वह तप है कि इसका सबन्ध रुह से होता है और एक दिन में बहुत जाती रहती है इसके कारण बहुत हैं जैसे दुःख, क्रोध, भूल, प्यास, भूष, आग, भोजन आदि जब कोई कारण इन कारणों से बढ़ जाता है तो रुह गर्म हो जाती है और उबर हो जाता है और रुह तीन है नफसानी, हेबानी, तबई इन तीनों में से जिस रुह के कारणों में हानि हो जानों कि वसी रुह में तप है ।

हुम्मायौमी का लक्षण यह है कि गर्मी बिना भजन के बराबर रहेगी, जैसे कि बहुत पिठनत करने में होती है, और सदीतप और दिक् के लक्षण न होंगे, और बहुत एक रात दिन रह कर उतर जाती है जब कि इसरी प्रकार की तप न हो जाये इस में कारण को दूर करें जैसे पचित हो ।

इस तप में भोजन बढ़ न करें सिवाय उस तप के जो हुक्मों में हो और पछटी भीन करानें, और न फस्द आदि को खोलें और जो तप घरे से हो और कारण इसका मवाद की अधिकता

हो और जब मेदे में पचाव न हो और गरम नमले में फस्द आदि कर सकते हैं और इसतहसाफी तप में भी ।

इसतहसाफी और सुदे की तप में शरीर का पखना और महनव करना और गरम पानी से नहाना अति लाभदायक है इसतहसाफी यह तप है जिसमें शरीर के छिद्र बंद हो जाते हैं और खाल मैली और मोटी हो जाती है, जैसे कि तण्ड की अधिकता से खाल मुकड़ जाती है ।

और सुदे की यह है कि पतली रगों में गाढ़ा मवाद फस जावे । कस्फी तप बसको कहते हैं कि महनव या नहाना छोड़ देने से गर्मी रुके और उस से रुह गर्म हो जावे चाहे सुषा पड़े या न पड़े ।

और जहरीरी तप यह है कि प्रेषित की अधिकता आदिसे पच हो जावे ।

### हुन्माखिलती का वर्णन ।

शरीर में चार मवाद हैं कफ, रुधिर, पित्त, वादी, इसलिये इस तपमें भी चार प्रकारों सिखी जाती है, पहिली प्रकार रुधिर का तप एक तो यह है कि रुधिर केवल गरम होकर ऊपर उत्पल करे और सड़े नहीं दूसरे यह कि सट जावे पहिले तपको सूनाखस इसरी को सुतविका कहते हैं पहिलेके लक्षण यह है कि रुधिरकी अधिकता होगी और शरीर एकसा गरम रहेगा और पसीना न आवेगा और सुतविका में मूत्र और दस्तमें दुर्गन्धि होगी और भित्तने लक्षण रुधिर जीटने के हैं इस में सोनाखस से अधिक गीले जैसे हो सके और सुगमता से रुधिर को निकालें जावरय-प्रत्य के अनुसार रुधिर की गरमी को मुक्त करें और रुधिर को शक करे परन्तु बहुत बंटाई देना इसमें बुरा है कि इससे कफ भी सरसाम हो जाता है सोनाखस में जितना अधिक रुधिर

निकाशों को अच्छा है और मुतबिका में आवश्यकता के अनु-  
सार जब रुधिर पतला होजावे तो शर्षत बजाव पिलाके उसे  
गाढा करें और जो गाढा हो तो सिरके की सिकंजबीन देने से  
पतला हो जावेगा और ऐसी औपधि दें जो मवाद को नर्म करें  
और जब मवाद युहरान के पीछे रगों में रहजावे तो इसी  
कासनी का अर्क ७० पाशे फाड़कर और साफ करके ५२॥  
पाशे शिकंजबीन मिलाकर दें जो खांसी का लगाव होता सही  
वस्तु कभी न दें । पीदाने और अस्पगोल का लुभाव पिलावे  
और शर्षतवनफसा चठावे और जो खटाई के बदले कोई और  
ऐसी औपधि दें कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप  
को भी, तो बहुत अच्छा है इस तप में बजाव मिगोरर या  
छोटाकर पानी ससका कई दिन तक पिलाना अच्छा है विशेष  
करके जब कि रुधिर को गाढा करना हो और केवल अस्प-  
गोल रुधिर के साफ करने को अच्छा है और आलूबुखार  
का पानी भी लाभदायक है और खांसी को भी हानि नहीं  
करता ॥

दूसरी प्रकार पित्तों का उबर है चाहे अकेला हो या को  
और मवाद मिला हो, लक्ष्ण पित्त आदि का अरम्भ में इस  
पुस्तक के लिखा गया है यहाँ इतना जानना चाहिये कि जो  
पित्त का मवाद रगों के मोतर सड़गया हो तो उबर बराबर  
रहेगा और एक दिन बीच करके अधिक होगा इसका नाम  
गिष्वेलाजिम है और जो यह मवाद दिस और मेदे के पास  
की रगों में सड़जावे तो रोगों की अधिकता होगी इसका प्र-  
सवेमुहरिका है ।

और जो मवाद पित्तों का रगों से बाहर न  
गिष्वेदायर कहते हैं ॥

फिर यह मवाद जो निरे पित्तका बिना किसी

गिष्मे खातिश कहेंगे ॥ और कफ पिला हो और ऐसा मि  
क दोनों मिल कर एक हो जावें तो गिष्मे गैर खातिश पा  
गा ॥

और जो कफ और पित्त का भली भाँति मेल नहीं हुआ  
और अलग अलग हो तो शतुरुक्तगिष्म कहेंगे ॥ गिष्मे खातिश  
तप एक दिन आवेगी, और एक दिन नहीं, परन्तु जो  
गिष्मे इकट्ठा हो इस प्रकार से कि एक २ दिन आवे औ  
सही दूसरे दिन आवे तो बारी से जाना पालुम न होगा ॥

और गैर खातिश में एक दिन अधिकता होगी औ  
दूसरे दिन थोड़ा अन्तर हो आवेगा ॥

शतुरुक्त गिष्म में पित्त और कफ रंग से बाहर सदे होते  
लक्षण यह है कि एक दिन केवल एक के लक्षण पाये जावें  
और दूसरे दिन दोनों के क्योंकि कफ की तप रोग बारी  
नहीं है और पित्त की एक दिन बीच करके तो जिस दिन  
पेश की बारी न होगी उस दिन केवल कफ के लक्षण पाये  
जावेंगे, और पित्त की बारी के साथ दोनों के ॥

जो दोनों मवाद रंगों के भीतर होते दोनों के लक्षण बरोबर  
हैं परन्तु एक दिन बीच करके अधिक अन्तर हो जायगा ।

और जो पित्त रंगों के भीतर हो और कफ बाहर हो तो पित्त  
की तप बराबर रहेगी और कफ की भी अपने समय पर रोग  
आवेगी और एक दिन बीच करके अधिकता होगी इन तीनों  
का नाम शतुरुक्त गिष्म गैर खातिश है ।

और जो पित्त रंगों से बाहर हो और कफ भीतर हो तो कफ  
की तप रहेगी और पित्त की एक दिन बीच करके

जाती है उसको हुम्मागशिया कहते हैं इसका उपाय यही है उस हुम्मागशिया का है जो मूर्च्छा से आजाती है और बागी समय रोटी निधू के अर्क में भिगोकर योही सी खिलावे ठीक कफ का तप है, जो इसमें कफ का मवाद रगों के भीतर स जावे तो उसको लस्का कहते हैं ॥

यह मवाद जो ग्वारी कफ हो और दित तथा मेदे के पा रगों के अन्दर सह जावे तो मुहरिका कहलावेगा इसमें अ पिच की मुहरिका में अंतर उनके लक्षणों से मालूम होजावे और जो कफ रगों के बाहर सके तो नाइया और मुद्याभिवार होगा, परन्तु लस्का बराबर रहती है बिना जाड़े और कमी मोड़ी देर के लिये कुछ कमी भी होजाती है और नाइय म दिन में एक दो बार उतर जातो है ।

कफ की तप में कफ के लक्षण पाये जावेंगे, परन्तु लस्का कफ में वह लक्षण नहीं होते, क्योंकि उसमें गरमी अधिक हो है इस पर भी लारी कफकी गरमी पिचों की गरमी को नहीं पक सकती ॥

लारी कफ का लक्षण यह है रोगटे शरीर पर सड़े है और ठंड और कपकपी योही हो ।

और नजाली कफ में कपकपी अधिक होती है और लट्टे क में ठंड बहुत मालूम होती है, मोठे से कम और बड़वा कई बार तक रोगटे खड़े होना, और ठंड कपकपी कुछ नहीं होती सोठ बि तक शहद की सिकनधीन और शहद का पानी जिसमें वेग सा जूफा मोटा हुआ हो और आस जो जिसमें योही सोंफ आ चने मोटे हो देते हैं और सिकनधीन और गुलकंद गुलाब साय देना अच्छा है इसके पीछे सिकनधीन और गरम पानी

धूपन करावे विशेष करके उस समय जब कि गारी आने को हो और बहुत सौ पिलावे, और जिसनी धूपन सुगमता से आवे अच्छा है और कभी २ गुलकंद के साथ धनीसून दें, और बोदीना और मस्तगी चगावर चबाया करें जब मवाद मछी साँवि पक आवे तो खुरलाव दें।

जो ककम हो ता रात को दवाय तुरबुद जिसनी वृद्धि हो सिखाया करें, और सबेरे गुलकंद १७॥ माशे खिलाकर ऊपर से शहद की सिकनधीन पिलाया करें, जब कि ककम हो करना हो, और जा मूत्र गाढ़ा और रंगीन हो तो फस्द हो सकता है और जब भेजा निर्वल हो तो सिकनधीन न दें और मवाद निकालने के पीछे कुर्स गुल अथि लाभदायक है ॥

जो कक की तप पुरानी हो और कपकपी अधिक आवी हो और शरीर देरमें गरम होता हो तो अनवापन कूट धानकर शहद में पिलाकर १०॥ माशे खिलावे और गारीकून ३॥ माशे शहद ४॥ माशे पिलाकर खिलाना भी ऐसा ही है।

ककका में पकाने वाली और पतली करने वाली औषधें में से इतनी जल्दी न करना चाहिये जैसी नायबा में कर सकते हैं क्योंकि कहीं ऐसा नहा कि मवाद पिघलकर सिरमें चढ़ जाय और सरसाव होजावे और सिर की पीड़ा और भेजे की पीड़ा में तो ऐसा कभी न करना चाहिये।

कक के तप का एक ऐसा भेद है जिसमें भीतर ठंड और गरमी होती है उसको इनकपालूप बोलते हैं और एक और है जिसमें भीतर गरमी और गाढ़ ठंड होती है उसका नाय हरिषा है उसका वर्णन और उपाय ऊपर हो चुका है।

कक की तप का एक भेद ऐसा है जिससे गरमी और ठंड



इकट्ठी भीतर और बाहर होती है और एक प्रकार में भीतर ठंड होती है और बाहर असली दालस और कपकपी कई बार बिना गर्मी के आवे इन दोनों का कुछ नाम नहीं है।

एक प्रकार की तप दिन को आती है और रात को चला जाती है उसको नहारी कहते हैं और एक प्रकार का ऊपर रात को आता है और दिन को चला जाता है उसको लैली कहते हैं इन सब में मवाद को पतला करें ॥

चौथा मेद बादी का तप है इसका मवाद भी जो रगों भीतर होती रुखाता जिम कहते हैं और लक्षण उसका यह कि तप परावर रहेगी और दो दिन बीच करके अधिकता होगी जो मवाद रगों के बाहर सहजावे उसको रुबदायक कहते हैं और यह दो दिन पीछे दौरा करता है इस तप के आने का ति चतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होता है इसलिये इस नाम रुखा रखता गया है इस प्रकार से पांचवें दिन बाला और छठे दिन बाला आदि जानों परन्तु चौथे दिन बाला आया करता है यह तपें या तो प्राकृतिक बादी के सहने होंगी लक्षण उनका यह है कि पहिले वह वस्तु सखी होगी बादी को उत्पन्न करें और नाड़ी हल्की होगी दूसरे यह अप्राकृतिक बादी से हो और यह बात हम पहिले किल है कि जो मवाद जलता है वह अप्राकृतिक बादी हो जात तो मालूम हुआ कि यह तपें रुधिर या पित्त या कफ या व से होती और लक्षण हर मवाद के पाये जायेंगे परन्तु पित्त की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी और जन्दी जाती रहेगी।

तपे रुखा देरतक रहती है और कभी पांच छः बारी होके जाती है और फिर आने लगती है इसमें बारी के दिन और

बहुत करके इस रोग के आदि में खाना पीना बन्द कर दें और  
 उष्ण पानी पेये और वायु चरपक करने वाली वस्तु गरम सुरक  
 और जल्दी सड़ने वाली वस्तु से पचें और तर औषधों तथा  
 भोजनों से जहाँ तक होसके मवाद को पकावें फिर मवाद को  
 कई बार करके निकालें और रुधिर की रुधा में फस्द खोलें  
 परन्तु दो तीन बारियों के पीछे और २ प्रकारों में भी फस्द  
 खोलें परन्तु मवाद के मछी यांति पकजाने के पीछे । और  
 पिचों की तप में मवाद का पकाना अवश्य नहीं है और  
 जब फस्द से रुधिर लाल और साफ निकलें तो रोक दें और  
 जो यह तप देर तक रहे तो रोगी में बल रहने का ध्यान रखे  
 और कड़ा परहेज न करावें और महीने के आरम्भ में फस्द  
 असीजम खोलना और थोड़ा सा रुधिर निकालना अच्छा है  
 और चारी के दिन ३ पड़ी पछिके खाली सींगिया लगा कर  
 बहुत देर तक घूसना लाभदायक है ।

मिच्छी हुई तपी की कई प्रकारें हैं नाम उनके अलग नही  
 हैं सिषाय शतुरुक्ष गिब्ब, और गिब्ब गैरलाजिसा के और  
 और मिसकी इनमें से चारी का ठीक न हो उसको शुल्लखित  
 कहते हैं और तपों के मिजने के तीन भेद हैं ।

एक यह कि एक तप चतरने नही पावी कि दूसरी यह  
 आवी है उस को सुदाभिला कहते हैं ।

दूसरी यह कि एक चतरे और दूसरी चड़े उसको सुषा-  
 दिला कहते हैं ।

तीसरी यह कि एकट्ठी दो तपें चटें, चाहे साथ चतरे वा  
 नही उसको सुषारिका और सुषाबिका कहते हैं वषाय इसका  
 सोच समझ के करें जो अधिक हो उस के दूर करने की अधिक  
 जानो ।

## दिक का वर्णन ।

यह तप है जिस में बुरी गरमी शरीर के बड़े र स्थानों और दिल में बैठ जाती है, और अच्छी तरी पहिले जाने लगती है और आदि में उसको दिक कहते हैं ।

और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलने लगता है उसको ज्यूज कहते हैं ।

और जब इससे भी बढ़ जावे और बाल गिरने लगे तब उसको मुफतित कहते हैं उस समय उपाय कठिन होता है ॥

अकेली दिक की पहिचान यह है कि हलका तप बराबर रहता है और भोजन करने के पीछे गरमी अधिक हो जाती है, और नाड़ी निर्वल होती है, परन्तु खाने के पीछे नाड़ी में बल पाया जाता है मूत्र में द्रिक् से निकलते हैं इस में शरीर की तरी और ठण्ड पहुँचावे और भोजन और मकान और हवा ठीक करें, और ठंडी औषधें और गंधी का दूध और मठा पिलाने, जो सही हुई तप न होतो इसके देने की क्रिया बड़े ग्रन्थों में लिखी गई है, इस तप में जहाँ तक हो सके शरीर के बड़े बड़े स्थानों को पुष्ट रखें और तरी पहुँचावे और दस्त न आने दें और जब निर्गलता बढ़ने लगे तो मासक लहम पिलाने ।

एक और रोग है जो दिक से मिलता हुआ है, उसको दिक शैखलत और दिफुल्ल हरम कहते हैं, यह यह है कि जबान सूखकर बुद्धों यासा होजाता है, और बुद्धों को होती यह और भी घुग होजाता है, पिना गरमी के और बहुत बुद्धों को यह रोग होता है, और जवानों को कम और बच्चों को बहुत कम तपों में ठंडी वस्तु अधिक खाने से दिल में ठण्ड से बिगाड़ हो है, या महनत करने के पीछे ठण्डा पानी पीलेने से या

और ऐसे ही कारण से यह रोग होता है, इसमें प्रकृति  
 और तर वस्तुओं से ठीक करें, परन्तु बहुत न दें,  
 और शरीर चाहे; और जब यह रोग मगह पक  
 तो अच्छी होना बहुत कठिन है, परन्तु उपाय से हाथ  
 कि मगदी मरने से बचे, और सोने का वर्क शरीर में  
 शरीर में मिलाकर खिलाना और माछल लहसुन  
 की मगदी देना अति लाभ कारक है ॥

### सीलजा का वर्णन ।

रोग में जो तप होती है उसमें घेबेनी और पीठ में  
 ती है, नाक खुजलाती है आँख बहते हैं और सोने में  
 ता है ।

मगदी मोतिया से घेबेनी अधिक और कपूर की  
 होती है ।

निकलने से पहिले रुधिर कम करें, मगदी के  
 और लहसुन के ओकें लगावें, और गरम करने  
 बड़े पिलोने और शरीर में घेबेनी पिलोया करें ॥

जब निकल आवे तो कभी मगदी में निकालें, पर-  
 मांति निकलने का उपाय करें, इस प्रकार से कि  
 गरम कपड़े से ढाके रखें और ठंडी पानी एक २  
 हैं और खुब कला बिछोने पर बिछोदे, और औंठकर  
 रा दें ।

### हुस्मावाई का लक्षण ।

यप बहुत घुरी है मगदी के दिनों में होती है ताकन एक  
 तक वह न निकले मगदी की निकालें और गरमी  
 र दिला और मेजे को छुट करके रहें और जब  
 आवे तो उसका उपाय करें जैसा कि आगे  
 गा ॥

लगावें, और जो गिले भरपनी या सिर धोने की मिठी  
मिलाते तो अच्छा है ॥

नमस्ता — एक दाना या बहुत दाने होते हैं, जलन और  
खुजली इसमें बहुत होती है, और अपनी जगह से बढ़ती जाती  
है जो केवल पित्त हो तो सतह के ऊपर ही होगा और जो रक्त  
भी मिला हो तो रक्त के ऊपर और मांस के भीतर पैदा हुआ  
होता है, कारण के अनुसार चयाय करें, और जमरे वाला  
आमदायक है और दवाय नरद आस पास लगावें और आस  
का चयाय सफेदे के मरहम से करें ।

जावरसिया — छोटे २ दाने खाल पर बाजरे के से हो जाता  
है । जो क, घनकी, सफेद और जड़ लाल होती है और बहुत र  
निकलते हैं इस में पित्त और कफ का मवाद निकलते, अनार के  
खिलके थोड़े से सिरके और गुलाब में पीसकर मल और जो  
आंतरयकता हो फस्द भी खोलें ॥

ताम्रफारसी एक दाना है, उसके भीतर पतला पाती भरा  
होता है, और खुजली अधिक होती है, जलन और खुजली  
अधिक होती है और जब निकलता है और जल्दी खुरद हो  
जाता है ॥ निकलने से पहिले इस जगह लाक और मोर के दान  
को लकीरें पड़ जाती हैं फस्द खोलें और पित्त का मवाद नि  
कालें और माजू गुलाब में या सिरके में पीसकर लगावें ॥

निफतात — आले पदने को कहते हैं इसके भीतर बहुत  
पतला पाती भरा होता है और कभी केवल गाढ़ी पाय होती है ।  
और कुछ नहीं होता फस्द खोलें और रुधिर को गाढ़ा करें  
और जब आला मदा होकर फूल जावे तो सोने की धुरी से  
फोड़ दें जिस से पानी बह जावे, और ठंडी ओपघें मलें ॥

पित्त — बड़ा होता है, लाक और चपटे छोटे हो या बड़े

और बहुधा अचानक होजाते हैं, खुनली और बेबैनी होती है जो उससे पानी नई तो दुलुन कहते हैं मवाद इसका बहुत करके रुधिर या कफ होता है और लक्षण हर एक के पाये जावेंगे रुधिर में फस्द खोलें और कफ दूर करें और सिरका गुलाब और रोगनगुल मलें और कफ में मवाद को निकालें ॥

माधरा-यह सूजन विष और रुधिर से मुंह पर होती है इस में मुंह लाल-और पीठा और ठपक होती है और सिर कान, नाक, गाल, और माथा ये सब सूजाते हैं इसमें बहुत सा रुधिर निकालें फिर विनाश को नरम करें और उस समय नखे और छाती पर ठंडी औषधें लगावें कि मवाद मुंह से ब-बर कर छाती पर न गिरे और ३० दाने ज्वाष के पानी में औषा कर सिकजधीन मिलाकर पिलाना अति लाभदायक है।

वाकन-सूजन है जो बहुधा बवा के दिनों में होती है इस में जलन बराबर रहती है और रंग इसका लाल या पीला या नीला या हरा या काळा होजाता है इन रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होता है इसमें दिल् और भेसे को उखर और जोर अधिक पहुंचावें और सूजन के भास पास उड़ी औषधें लगावें और उस पर गरु पकने लगावें और गरम पानी से धोवावें कि रुधिर भली मांत बह जावे और जो रुधिर की अधिकता होवो फस्द भी खोलें परन्तु पहिले सूजन पर पकने लगावें ॥

औराम मगाबिन-यह वह सूजन है जो बगल में या कम के पीछे या बड़ों में पत्यम हो बिना विष के और जो किसी और जगह के पोष के या गुठली के कारण से हो तो केवल निद्वार बिसकर लगावें मवाद निकालने की आवश्यकता नहीं और जो शरीर के बड़े बड़े स्थानों के मवाद दूर होने सेवो रोका करने वाली औषधें लगावें और उड़ी औषधें

मवाद को इधर गिरने से रोके न लगायें और मवाद को पका कर चीरने का उपाय करें ॥

आकिल्ला—मवाद इसका मांस में घागें और अन्दीर कौड़िया दे और सवेरे से सांझ तक अमलतास के बीज के बराबर हो भासा दे, इस में दाग दें, और गिलेअर्मनी सिरके में पीस कर आस पास लगावे और बदन से मवाद मली भांत निकालें और घाव को सिरके और पानी से धोवे जो इस से लाभ न हो तो दाग दें, इस प्रकार से कि तेल कड़ कड़ा कर आकिल्ले के आस पास आटे से घेरा बना कर यह तेल उस के बीच में छोड़ दें कि जितनी जगह खुलस जावे ॥

दुम्पल—इस सूजन को सब जानसे है, इस में रुबिर को फस्द आदि से निकालें और मवादों को जुझायों से निकालें और सिकनधीन पिलानें और आदि से तीन दिन तक ठंडी औषधें लगायें, और चौथे दिन अस्पगोल आटे की सकेदी में मिला कर लेप करे, और जब पकने पर हो तो पकाकर चीरे और पीप आदि से साफ करे, घाव के भरने का उपाय करें पकाने वाली औषधें यह हैं, इजीर इलक कूट कर मल गैहूँ का आटा घुँव कर घोड़ा सा नमक और अणसी का तेल और कड़ब पिछाकर सूजन पर पायें ॥

फोड़ने वाली औषधें यह हैं सही समीर, कनौदे के बीज, कबूतर की घीट, बिना धुंका धूना, अंडे की जर्दी शहद में मिला कर लेप करे और नरतर से चीर देना सब से उत्तम है ॥

डुकीला, यह सूजन दुम्पल से बड़ी बिना पीड़ा के शरीर के ऊपर या भीतर होती है इस का मवाद भी कई रंग का होता है, जैसे काबी मिट्टी और ठीकरी और माखन इतना कूने कासा, पहिले मवाद को निकालें, और भोजन जोका दें

और मरहम हालखियून लगावें जब मवाद एकमात्रे तो और है, चाहिये कि मवाद को कई बार फरके निकालें क्योंकि एक बारभी निकालने से इस में सूक्ष्मा आ जाती है और जब मवाद निकल चुके तो पुरानी कई घाव में भर दें कि सारी पीप को बसले फिर घाव के भरने का उपाय करें जो बुबुला भीतर होता है उसका चर्छन अपनी २ जगह सिल चुक है जब तक सूजन यकी यांकि न पकले वसे चीरें नहीं और चीरने का स्थान बमर्षे हुई जगह है जा पिलपिली हो और चाहिये कि छेदे को नीचे की ओर झुका रखें जिससे मवाद रेखे से निकल जावे ॥

कजीपा, सूजन है सफेद बिना गरमी और पीडा के इसमें बिनाम को ठीक करें, और कफ का मवाद निकालें, और और मसरुग की जगहों को अंगूर के पेह की राख से बनाई गई हो और थोड़े सिरके में मिलाकर लेप करें, और एलुआ सिरके और गुलाब में घालकर छाना लाभदायक है ॥

सफेदा-बांध की सूजन को कहते हैं वह इन्ही और बं-  
नकी से दवाने के पीछे फिर जोसा हो जाता है, जैसे मरक में हवा मरी हो, यांकि बरफन करने वाली वस्तुओं से बचे और नावकी छोड़ने वाली वस्तु जानें और बाजरे के आटे से सेकें और मयक और अंगूर की राख और गो का गोबर और फिट-  
करी और एलुआ सबको पीसकर सिरके में मिलाकर लेप करें ॥

मलामा-सूजन है मोटी बिना कटपन के कि नीचे जाके  
रिक्ताने से दिखती है अपनी जगह पर इसमें कफ का मवाद  
निकालें और मरहम हालखियून नित्य लगाते रहें ॥

और जो इससे लाभ न हो तो वह ओषधें लगावें, जो  
बहा सदाकर फोटें वा जरतार से चीरकर भीतर से साफकारी  
के साथ इस गुठल को निकास लें ॥



गद्द—और 'गाँठ' शरीर के ऊपर होती है इस में और सलामी में यह अन्तर है कि यह बड़े नहीं होते और कड़े होते हैं और जो मवाद अधिक हो तो एक के पास दूसरा भी निकल आता है इस में मरहम दाखलीयून खगामें और भारी टुकड़ा सीसे को उसपर बाँधें।

फूनिशला—इस सूजन को कहते हैं जो गद्द के स्थानों में उत्पन्न हो परन्तु यह ताऊन की मकार से नहीं है, ब्याय-पस का वही है जो औराम मगाबिनका है।

खनाजीर—बुरी सूजन है और सलामी की मकार बभरी हुई होती है और बहुधा नरम मांस से उत्पन्न होती है, बहुत करके गर्दन और बगल में बगामें को निकाले, और दाखलीयून खगावे, और मवाद निकालने के लिये इन्हे 'लीजगेन' और इन्हे बासली और इतरीकल गुददी सब से उत्तम है।

मुकैरस—कड़ी सूजन को कहते हैं, बहुधा बादी के मवाद से होता है, बादी को निकाले और दाखलीयून खगामें और कभी कफ या कफ और बादी से मिला कर होता परन्तु इस में कफापन कम होता है, मवाद के अनुसार उसे निकालें, यह सूजन दो प्रकार की होती है एक में पीड़ा होती है और दूसरी में नहीं होती, पहिली प्रकार का ब्याय हो सकता है और दूसरी का नहीं।

सरतान—यह सौदा की सूजन है, अधिक कड़ी काला पन गिये हुये बुरे रंग की और शीघ्र में मोटी और भीतर को बेड़ी हुई और उसके किनारे लाल और हरी रंग होती हैं, सब मिलाकर केंकड़े का सा हो जाता है।

इस में होले होले कई बार करके सौदा को मवाद निकालें और भिन्न के भिन्न को ठोक करे आदि में पेसी उड़ी ओषधें

जैसे जो मवाद को इधर गिरने से, रोक्के मबतक कि पीप  
 इस के पीछे पाव भरने वाली और ठंडक डालने वाली  
 करने रोक्कने वाली औषधों का खोप करें, जैसे कलाई का  
 फेरा, बोया हुआ तृप्तिया आदि तैला में भिंसाकर लगायें।

नहरमा, एक दाना होता है, उसमें छेद हो जाता है, जिस  
 एक बस्तुराग की सी निकलती है ताल और काकापन  
 में इधर और वदते २ एक एक बाकिस्त या उस से भी अधिक  
 मवी है और कभी ताल के नीचे कीड़े की तरह रेंगा करती  
 आदि में फसद खोने फिर मोकें लगावे, और बादी का  
 ख निकालें घरी पहुँचाने के साथ। एलुमा इसे पनिये और  
 कासनी के पानी में पीस कर लगायें, एलुमा इस रोग में  
 त कामदायक है, बाहिये पहिले दिन १॥ पाशे एलुमा इसे  
 तनी के पानी में रात को भिना दें और सबेरे अकेला या  
 के साथ भिंसाकर पिंसायें और दूसरे दिन ३॥ पाशे एलुमा  
 और तीसरे दिन ५॥ पाशे। और जब नहरमा बाहर निक-  
 लने तो सीसे के टुकड़े तर लपेटे कि बोक से बाहर को  
 लवा आवे, और आस पास सुन्न के रोगन मर्गे, और  
 पानी फु कने में भरकर सेकें और ध्यान रखें कि नहरमा  
 न पावे, और टुट भी नावे तो लम्बाई में चीर दें, कि  
 मवाद निकल जावे, फिर पाव को मर्दे, कपीले की  
 न इस रोग को नहीं होने देती।

कुमाप—इस में शरीर का रूप बिगड़ जाता है और माक  
 हो जाती है और आवाज बंद जाती है, और मुँह फूल  
 शेर का सा हो जाता है, इस में फसद और जुझारों से  
 का मवाद निकालें और नित्य गर्म पानी से नहानें और  
 पीने और माक में डालने और शरीर पर मलने से ठीकी

पहुँचाओं और बकरी का दूध अकेला या उसमें रोटी मिला  
खाना अति लाभ कारक है और जो वस्तु सौदा इत्यन  
उस से बचें, और इस के उपाय से मरगमें नहीं बढ़े  
अच्छा होता है।

साफा—घाव को कहते हैं, जो सिर और मुँह पर हो  
जो तरी के साथ हो तो फस्ट खोले, और हरे और शाह  
को ओढ़ाकर पिताले इस से मवाद निकलेगा और रुधिर  
भीक करे और हलदी अमार के बिल्वके सुरदासग, और पर  
पीसकर सिरका और रोमन गुला मिला कर लेप करें  
जो सूखा हो और सफेद बिल्वके स्वाख पर से बतरे ता  
पहुँचाने एक प्रकार इसकी ऐसी है, जिस में शहद कासा बना  
निकलता है और एक में दाने पकते हैं जिस की ओरें सूँ  
सी होती हैं और दूसरा बेधी है जिसमें कड़ा दुग्ध हो जा  
है और पीस नहीं पहुँचती और एक अमीर कासा होता है जो  
एक में इनामन बनवाने को सिर की खाल साक हो जाती  
इन सब प्रकारों में मवाद को निकालें और मित्रान  
भीक करें।

खुजली जो सूखी हो तो तर वस्तु लगावे फिर कई बार  
कर के मवाद निकालें और गरम पानी से स्नान करके रोमन  
और सिरका मिलाकर मज्जे और जो तर हो और पीला पानी  
उस में से मदे ती पहिले फस्ट खोले और जो मवाद अचिक  
हो उसका जुल्लाव दें और गरम दवा कभी न लगाने।

रिक्का—जस खुजली को कहते हैं जिस में दाने न बढ़ें  
का उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा गया है, और जो  
खुजली सूख स्थान और गुहा में हो उस में बेधी और अचिक  
के बीज शहद के साथ ओढ़ा कर कच्चा उस में मिला  
साफा बनाकर रखें ॥

**पिच्छी—और ( पिच्छी )** जो बच्चों को होती है, उस में  
 १। जो कैं-छगाने, गुच्छाव के फूँक और बनकवा और  
 २। और छिसे हुए जो आँखा के शरीर को दोनों ओर  
 ३। से रोगन मर्ने और दूध पिछाने वाली अर्थात् बच्चे की  
 ४। औपचि पिछाने ॥

**रसक—**छोटे छोटे सास धाने शरीर पर निकलते हैं उनमें  
 १। अधिक होती है फस्द और सुच्छाव से पित्त का मवाद  
 २। में, और नमक और महीरी सिरके में मिलाकर मर्ने ।

**शव—**खुरखुराइट फौली हुई खुमली के साथ होती है आदि  
 १। कि मांस के भीतर चुकाने होतो रसोव सिरके में पाल  
 २। १। हरद सिरके में पीस कर मर्ने, और जो कुछ मांस के  
 ३। २। बहुत चुका होतो उस जगह पर जो कैं लगाने और  
 ४। ३। या दूर सिरके में पीसकर ऊपर से मर्ने, और जो मछी  
 ५। ४। मांस के भीतर बैठ गया हो और खाल मोटी पड़ गई  
 ६। ५। तो परिले फस्द और सौदा के सुच्छाव से मवाद को निकालने  
 ७। ६। गरम पानी से स्नान करें, फिर उस जगह का कविर  
 ८। ७। मर्ने, और तीव्र औपचें जैसे हरताल, वशक और राई,  
 ९। ८। स, और फिरकरी गैहूँ के सेल में और सिरके में मिलाकर  
 १०। ९। मर्ने जब दाद जासा रहे तो ठंडी औपचें कई दिन तक  
 ११। १०। मर्ने, कि फिर न होने पावे, और बच्चों के शव में भासी चूक  
 १२। ११। मर्ने और जब दाद औपच से अकृषा न हो और संभव हो तो  
 १३। १२। मर्ने, फिर तीव्र औपचें लगाने कि धुरा मांस नश जाने फिर  
 १४। १३। औपचें लगाने जो पाव हो मर्ने ॥

**शरासे—**सफेद ऊ सिर्गा होती है ताक और मावे पर निक

लती हैं इन में शरीर से कफ का मवाद निकालने और अणु राख सिरके में मिलाकर लेप लगाने ।

बनातुल्ल तेज—छोटी २ फुंसियां रात को ठंड के स निकलती हैं और इनमें खुजली भी होती है फस्द और खुज से मवाद को निकालने और गरम पानी से स्नान करने मल के शरीर के छिद्र खोलने जैसे कि खुजली में छिन्ना है और कफस के पानी में सिरके की तड़कड़ट मिलाकर मल लाभ कारक है ॥

मस्से—अधिक कटी फुंसियां कई प्रकार की होती पहिले मवाद को निकालने और नमक और सिरका मल रोगनगुल से चिकना रखें ॥

बछलीयां इन फुंसियों में से फूट के पानी बहता है जो ऊपर खुरद जम जाता है और इनके साथ बहुत दिक् पच राता है और मूक्या आती है पहिले मवाद निकालने और विष अर्पनी सिरके में पीसकर नित्य लगाया करे जब तक जो सूख के नया मांस न जमे ॥

बतम—यह काणी फुंसियां होती हैं, जो पहिली निकलती हैं इन में से काणा पानी बहता है पहिले फस्द बांध लीक खोलो और कई बार सजाटी कराओ फिर जोकों या पजन से सस जगह का रुधिर निकालो और जली हुई में हदी मापी पीसकर सिरके और रोगन जेत में मिलाकर लगाया करे ।

तोसा—फुंसी है घाव बाणी कि मांस के भीतर शक की सी होती है, मवाद निकालकर गरम जगार जमाये नि रुप मांस गरा जाये फिर भरने वाले गरम जगाने ॥

दासम—गरम सूजन है, जो नखुनों की जग में होती है

पीड़ा तपक और खिचाव अधिक होता है और कभी भी आजाता है फस्द और जुन्हाव के पीछे पिनाज को करें और आदि में अस्पगोल सिरके में घोलकर बर्फ में करके लगावें और जो पीड़ा अधिक हो तो खुरासानी अम-  
न और अफीम सिरके में पीस कर लगावें और जो इस से न हो तो रोगन जैत गरम करके चगली उसमें रखें कि  
दो पंचमाष और जो इससे भी लाभ न हो तो अलसी  
कनोंच के बीज मलें और भय सूजन पकमावें तो घोर दै  
पीस साफ होजावें तो घरखाने का उपाय करें ॥

अधूरसमा..... चोट लगने या कुषल जाने से स्याल के  
रंग फट जाती है कधिर और बात उसकी स्याल के नीचे  
कर रह जाती है लक्षणा उसका यह है कि रंग के खुलने  
हमन दम जावेगी और बंद होने पर घमर आवेगी क्योंकि  
ने में कधिर रंग के अन्दर लिपजावेगा और बन्द होने में  
बाहर निकलेगा और वतनी स्याल का रंग बैगनी और  
गहरे लिपे होगा कज्ज करने वाली औषधें लगावें, जैसे  
बुलुत और माज्ज आदि और जो औषधें कधिर को दिलावें  
ने बचते रहें ।

कई प्रकार की फुसिया और दाने होते हैं एक यह कि  
२ दाने मिनकी जहें सफेद और कही हों और देर में  
और सिरों से बनकी चोड़ी २ पीस बहे तो उनको जातुल  
कहते हैं (२) यह कि कही हों और मुंह पर निकलें और  
उ पास से खाल हों उनको मोलम कहते हैं (३) यह जो कन-  
पर कान की जह में होती है और उनके पीरने से गाढ़ा  
र निकलता है (४) जो सिर और भरदन के नीचे निक-  
ते हैं यह बहुत सी निकलती हैं और पीड़ा उनमें अधिक  
जी ति दि २१

होती है (५) जो छोटी और कड़ी और पीड़ा रहित होती है और देर तक रहें और एक जगह से जाकर दूसरी जगह निकल आवे, इन सब में मवाद के अनुसार मवाद को निकालने का लेप लगा और सिर तथा गर्दन की फुन्सियों में रोगन का फराा स्त्री के दूध में निलाकर नाक में टपकावे और सिर मले ॥

आंवला फरंग—यह रंग बरंग के दाने होते हैं जिस मवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

### खाल के रोगों का वर्णन ।

सफेद दाग यह गाढ़ी सफेदी होती है, जो खाल पर होती है और सम्पूर्ण शरीर पर भी हो जाती है ॥

छीप—हल्की सफेदी खाल पर होती है अतः इन दोनों में यह है कि पहिली में घमक होती है और दिन प्रति दिन खाल के भीतर फैलती जाती है और सुई चुभाने से रुधिर निकलता और छीप बहुधा गोल होती है और अचानक बंद होना भी है और सुई से रुधिर निकलता है ॥

काली छीप—और दाढ़ में खाल बपकती है परन्तु छीप की पतली होती है और दाग की मोटी जैसे मछली के छिल सफेद छीप और दाग में कफ का मवाद निकालें, और काले सौदा काफिर घुरघुर और मूली के बीज सिरके में पीसकर सफेद छीप में लगावें और काली छीप और दाग में काबू कुटकी सिरके में पीस कर लगावें ॥

सफेद दाग—अर्थात् कोढ़ में काले साँप का रुधिर लगाना लाभकारक है ॥

भूई जो मुँह पर पड़ती है इसमें और काली छीप यह भेद है कि छीप खड़की होती है और यह साफ होती है

नमश—मुँह पर और शरीर, खाल मुँह होना भी है ॥

प्राप्त—गीसा ही काली घूदे हैं, इनमें रेगंदचीनी शहद पीसकर लेप करें, और पीला हरताल हरे घनिये के पानी पीसकर लगायें, जो इससे भी छाय न हो तो सप्त शरीर में मवाद निकालें, फिर लेप लगायें और औषधि लगाने से रोजे इस स्थान को गरम पानी से सेकें, और औषधि गरम करके लगायें ॥

विक—काले और नीले होते हैं, इनका यह उपाय है जो माई का है चोट पड़ने या दबने से रंग फट कर खाल के नीचे रुधिर ठड़ा हो केनीला हो जाता है अब पीका जाती रहे तो करम्ब के पत्तों वा पोदीने का लेप करें ॥

नीलागोदा—जो स्थियों के होता है उसके मिठाने का उपाय यह है कि नजरून और गरम पानी से उस जगह को धोयें, और फिर इच्छुल्लवतम शहद में पीसकर कई बार लगायें जो इससे न मिटै तो अस्ख बजादर लगाकर सुई की नोक कोंवें कि घाव पटक नीलाहट बंद जावे ।

बादशानाम—इसमें हाथ, पाँव और मुँह पर सुर्मा पड़ जाती है विशेष करके ठण्ड में इसमें फस्द खोलें और हरइको ओटाकर छुल्काव दें और जो घाव हो तो छाल परहम लगायें और वसी जगह का रुधिर निकालें और सावन लगायें जब वह सूख जावे तो गरम पानी से धोकर फिर लगायें और इसी प्रकार से कई बार करें ।

धूप में फिरने या निर्बलता या गर्म औषधों कोने या का रंग बदल जाने तो



सिर से भूसी भूँडे तो रोगन मलें और चुकन्दर के पां  
में नमक डालके सिर घोषें जो इससे लाभ न हो तो कफ औ  
रधिर और बादी का मवाद निकालें ॥

हाथ पांख आदि जो इषा की गरमी या ठंड से फटें  
मोम रोगन मलें और जो भीतर के बिगाड़ से फट जाय  
तर औषधें काम में लावें जैसे दूध आदि और मवाद  
निकालें जो खास कसी होजावे, या चसरने लगे तो मवाद  
निकालें और तर रोगन मलें जो सूजन का डर हो तो फस्द और  
और कपड़ा पानी में धिगोकर रखें परन्तु जो पट्टे के किना  
पर हो तो भीगा कपड़ा न रखें ॥

### बालों के रोगों का वर्णन ।

कभी बाल भूँडजाते हैं और स्याँ नहीं उतरती और कभी  
दोनों बातें होती हैं यह स्याँ का बिगाड़ है इसमें मवाद  
निकालें जो बिना बिगाड़ के बाल भूँडे और टूटें तो कारण  
अनुसार उपाय करें ।

जो सिर के बाल भूँडके स्याँ नरम हो जावें तो अन्दी  
सिर मुकाया करें आस और आँखों का तेल नित्य सिरपर मल  
करें जो बड़िया के बाल उतर जावें तो उसका भी यही उपाय  
है परन्तु जो बुढ़ापे से हो तो अच्छा कदापि नहीं हो सकता  
जो बाल खुँरकी से फटने लगे तो तर औषधें और रोगन लगा  
जो सिरकी स्याँ धिकनी हो जावें तो इतरीफलों से मवाद के  
निकालें ।

जो बुढ़ापे से पहिले बाल सफेद हो जावें तो सबेरे निस  
एक इंच का मुरब्बा स्याँ और महीने में सात दिन तक इतरी  
फल सगीर सराया करें और दो महीने पीछे कफ का जुल्मा

बेधा करें, और खड़ी वस्तुओं और फस और विषय की प्रविक्रता से बचे ।

जो चाहें कि बाल काले रहें तो तादन और आस का पक्का करें और बालों को खम्बा करने के लिये आंगुली में पानी में भिगोकर आस और गुलाब के फूल खान कर उस पानी में मिलाकर सिर घोंछें बालों को उत्पन्न करने के लिये पुराना रोगन जैत लेकर उस में कैल्स की राख और सुन्दर फल मिलाकर मलें और जो उपाय बाल झड़ने का बरी करें और बालों को उतारना चाहें तो घूना और इर-  
लाह लगाने इसको चूरा कहते हैं परन्तु पेड़ के बाल बस्तरे से उटना अच्छा है, इससे विषय की चाहना अधिक होती है और वहां चूरा लगाने से हानि है और जो चाहें कि बाल न निकलें तो बदन और अफीम और शूकरान सिरके में पीसकर लें और माजू और कछुये का रुधिर और चेंडी के अंगे खाना भी यही लाभ देता है, और घूंघर बालों और पने बालों के लिये बेरी के पत्ते और माजू और मेयी के बीज पानी बालकर उस पानी से सिर को धोवें और बालों को पक्का करने के लिये हल्दी की राख दूरे में मिला कर गोखी बनावें लें बालों पर दिन भर में कई बार सुखी गोखी फेरा करें परन्तु एक जगह पर न ठहराने नहीं तो बाल झड़ जायेंगे तबों को सीधा करने के लिये कि बलभूँ नहीं तेल को पानी में मिला कर घुन घुना मलें ।

जिआब के लिये सुर्दासग हुआ हुआ घूना गुलाबी पेटी बीनों बराबर लेकर पानी में पीसकर बालों पर लगाने और अरुह का पत्ता ऊपर बायें पहर भर पीसे ओख कर पानी में घोडावे और लगाने से पहिले भी ओखें कि मैल

और न कोई रोगन सिवाय रोगनशूल के लगाये और, पालों को लाल पीलापन लिये हुये करने के लिये गहदी शराब की सख छट और रातीनम मिलाकर पानी में पीसे, और फिर करी और डरताल पिला कर मर्ते ।

और पालों के लाल करने के लिये पोथा और कुंडुश को ओटाकर घोंघे बनुपाश को पीसकर सिरके में मिलाकर लगाना पालों को सफेद करता है ।

### नाखूनों के रोगों का वर्णन ।

नाखून सफेद हो जायें तो मेयी अलसी के बीज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे और जो इससे लाभ न हो तो मवाद निकाले । जो पीले पड़ जायें तो जरमीर के बीज सिरके में पीसकर लगाने और पित्त का मवाद निकाले जो चनमें पीका हो तो आसके पत्ते और सरुके पत्ते कूट के मले जो नाखूनों की जड़े मोटी और कुरूप हो जायें तो बादी का मवाद निकाले, और मरहम दाखलियुन और मौमरोगन लगाने ।

जो नाखून फटते हैं तो तरी पहुंचाना चाहिये और बाद का मवाद निकाले और बतख की और मुर्ग की चरबी मेयी में छुआव में पिजाकर मले ॥

जो नाखून कफ के कारण डीले होकर गिरते हैं, व पीका न होगी कफ का मवाद निकाले और जो रुधिर के तेजी से हो तो फस्द साफिन खोलें और पिड़ली पट पका लें जो हाथ के नाखूनों में हो तो फस्द वासलीक भी जो पाँव के नाखूनों में हो तो शरबत उभाव पिलायें ॥

जो नाखूनों में खुजली हो तो नदी के पानी से धोकर ईजीर कूटकर लगाने जो नाखून कुचक जायें तो आ

में आस और अनार के पत्ते कुटकर बांधें फिर गेहूँ का आटा जैत के तेल में पिटाकर बांधें जो नाखून अन्नक की मकोर सफेद और चमकीले और धुर धुरे होजायें सौ मासल चमूत और गुलकंद और सिफेनबीन रोगन बादाम में पिटा कर दें जब मवाद पक चुके तो इफ्तीयून औठाकर पिटावें और बकरी की पीठ का मैल चर्बी और बादाम मिटाकर लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिर नीचे भपजावै, तो त्रिफल लगावै, और जरबीर के बीज के सिरके में पीसकर मलें और दिन में कई बार सुह में जगली डाल कर चूसे यह अति लाभदायक है ॥

जो नाखून फो छल्लेना हो सो इरताल और अवशीर कटुये बादाम के तेल में पिटाकर मलें, और जो पहिले पर-हम दाखलीयून लगावै तो शीघ्र लाभ करेगा ॥

और न कोई रोगन सिवाय रोगनगुल के उगावें और पालों को छात पीछापन किये हुये करने के लिये महदी शराब की तल छट और रासीनज मिलाकर पानी में पीसे, और फिर करी और हरताल मिला कर मर्ते ।

और घालों के छात करने के लिये मोथा और कुंदरा को औटाकर घोंवें बनूपाश को पीसकर सिरके में गिलाकर लगाना घालों को सफेद करता है ।

### नाखूनों के रोगों का वर्णन ।

नाखून सफेद हो जावें तो मेथी अलसी के बीज कुटकर शहद में मिलाकर लेप करे और जो इससे लाभ न हो तो मवाद निकाले । जो पीले पड़ जावें तो जरमीर के बीज सिरके में पीसकर लगाने और पित्त का मवाद निकाले जो सुनार पीड़ा हो तो आसके पत्ते और सरु के पत्ते कुट के मर्ते जो नाखूनों की जड़े मोटी और कुरूप हो जावें तो बांदी का मवाद निकाले, और मरहम दाखिथुन और मोंमरोमन लगाने ।

जो नाखून फटते हों तो तरी पहुंचाना चाहिये और बांधी का मवाद निकाले और बतख की और मुर्ग की चरबी मेथी के छुआव में मिलाकर मर्ते ॥

जो नाखून कफ के कारण टोले होकर गिरते हों तो पीड़ा न होगी कफ का मवाद निकाले और जो रुधिर की तेजी से हो तो फस्द साफिन खोलें और पिड़ली पर पकने लगाने जो हाथ के नाखूनों में हो तो फस्द पासलोक और जो पैर के नाखूनों में हो तो शरबत बसाव पिलावें ॥

जो नाखूनों में खुजली हो तो नदी के पानी से बोक और इंजीर कुटकर लगाने जो नाखून कुरूप जावें तो आदि

में आस और अनार के पत्ते फूटकर बांधे फिर गेहूँ का आटा  
तेल के तेल में मिलाकर बांधें जो नाखून अन्न की प्रकार  
सफेद और चपकीले और धीरे धीरे होजायें तो माछल चसल  
और गुलाबद और सिफमबीन रोगन बादाम में मिला कर  
दो वर्ष मसाद पक चुके तो इफ्तीमून आटाकर पिटावे और  
बकरी की पीठ का तेल चर्बी और बादाम मिलाकर लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिर नीचे जमजावे तो  
मिष्ठ लगावें, और जरबीर के बीज का सिरके में पीसकर मलें  
और दिन में कई बार मुह में डगली डाल कर चूसे यह अति  
सामदायक है ॥

जो नाखून को छेदना हो तो हरताल और जशरीर  
कड़वे बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और जो पहिले मर-  
हम दाखलीयून लगावे तो शीघ्र लाभ करेगा ॥

### अलग अलग रोगों का वर्णन ।

चूये और लीले और चक चाहे सिर में या कहीं और  
जगह पड़े तो खारी पानी से स्नान करें और जरबी मन्दी  
कपड़े बदला करें, और गोह की बीज और नौशादर  
सिरके में चोलाकर मलें, जो अधिक खाने से पसीना बहुत  
जाये तो सूखा रखें, और कपधोरी से हो तो पुष्ट करें और  
माछ पीसकर मलें और आस के पत्ते जलाकर घूनी में और  
ऐसे भोजन खिलावे जिनसे गाढ़ा रुधिर उत्पन्न हो और  
पसीना रुक जावे, और नगा रहना और हलके कपड़े पहनना,  
और हवा में बैठना, और पसीने का न पोछना लाभकारक है ।  
और यह रोगन पसीना को रोकता है और पिल को शुष्ट  
करता है और मूर्च्छा को लाभकारक है सेब और बिही का

पानी और गुलाब, रोगनगुल में पिताकर आंग पर जलावे कि रोगन रह जायें, फिर इसको लगायें।

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तो उसे बन्द न करें जब तक कि मूर्च्छा और निर्गलता का डर न हो जो पसीने में रुधिर निकले तो फस्द खोने और गुलाब दें और वह औषधें पिलायें जो रुधिर की गरमी को बुझाती है फिर ऐसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को बंद करे, जैसे आनार के छिलके और आस के पत्ते या इनके पानी से स्नान करें॥

अधिक दुबलापन और मुटापा भी एक रोग है, मोटा करने का उपाय यह है कि पहिले उसके कारण को दूर करें फिर वह वे मोहन और औषधें समय के अनुसार दें जो शरीर को ताजा करें, और यह औषधि अति लाभकारक है सौदरी सफेद, सौदरी काल, लशकाश, सफेद चाइम, इला सनीबर, इन्ध सबना, फिन्दक, इन्ध गुल लिजरा, सब क बराबर लेकर कूट छान कर गाय के घी में चिकना करके हलुआ बनायें और सवेरे और सांझ को जितना उचित है लिखायें और भोजन ऐसा दें जो अच्छा और गाढ़ और तर की उत्पन्न करे और दुबला करने का उपाय यह है कि गुलाब दें और मूत्र लाने वाली औषधें पिलायें और भोजन भी पानी थोड़ा दें और सोये और कूट का तेल मलें और इतरी फल और कपूनी लिखायें, और कहीं जगह पर सुलायें, औ यह औषधि शरीर को दुबला करती है थोड़े दूरे खाल है मांशे सिरके में पीस कर नहार मुह लिखायें ॥

सिर और मांशे की खाल लिखने में बनफशा या कद्दू

घाव का तेल, और स्त्री का दूध मले, और भेजे का मषाद निकालें, और जो मन्त्र से हो तो अच्छा नहीं हो सकता जो सिर बड़ा हो जावे तो चमड़े की टोपी बनाकर पहनावे, जो बहुत तंग हो, और पाँव और पिंढलीयाँ मले और मोमन बाँधा दे ॥

जो सर्दी के समय जगलियाँ फूलें और खुजलानें तो सारी पानी या चुन्दर के छोटे टुक पानी से धोवें जा ठुठ्ठो बाण्ड और लात हो जावे तो आदि में घैठने और धिस-छेदने से रोकें और रसोत गिलेअरमनी, अठाकिया और गुल-नार आदि लगावें और घावों पर सफेदे का परतम लगावें जो शरीर से दुर्गंध आती हो तो मषाद निकालें, मुरदासग पिस कर लगावें और नौशदाक बिलाओ ॥ जा ठंड से हाथ पाँव काँचे और बिगड़ जाओ तो सूजन होने से पहिले रोगन और वाँ कोई और गरम रोगन मलें और जब सूजन हो तो आदि में नाखूना और मेयो, अलसी आदि को ओटा के हाथ पाँव बससे रक्खें और जब बससे निकालें तो रागन गुल मलें और पिसी हुई मसूर को ओटाके लगावें, और जब कालक आवाले तो गहरे पछने लगावें और गरम पानी में रक्खें और सिर को बहने दें, कि आप बंद होजावे तो गिलेअरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसकर लगावें, और योही रस पीछे पानी और सिरके से कई बार धोवें ॥

जो आग से जल जाओ और कफोला न पड़ा हो तो कपड़ा रस पर ठपटा करके अच्छी हुई जगह पर रक्खें, और हर घाई में, और गिलेअरमनी पानी और सिरके में मल के और और उसमें पका के खेप करें, और काजल गोंट में घोट कर माना, और अडे की सफेदी लगाना और दही और दूध



पलना लाभकारक है, और जब छाला पड़े तो फस्द खोले और सफेदे और चूने का मरहम लगावें ॥

जखते हुए तेल से जल जाने में घड़ी उपाय करें जो आग से जल जाने का है परन्तु अंडे की सफेदी तेल में घोलकर सफेदा मिलाकर लगाना अति लाभकारक है, खोखले हुए पानी से जल जाने में जौ की राख अंडे की जर्दी मिलाकर लगाने बिजली से जल जाने का उपाय वही है जो आग का है घूप से जलने में काफूर और सिरके का मरहम मलें, भिलावे के चूने लगाने से जलन हो तो पछने लगानें जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो लुआब अस्पगोल आदि से कुन्नी करें और वादाम, और नायफल को तेल मलें और खोपरा चधानें ॥

### घाव का वर्णन ।

मांस के फटने को घाव कहते हैं, जब उसमें पीप पड़े तो उसका नाम कुरहा है उसकी प्रकारें बहुत हैं, उनका वर्णन तिब्ब अकबर आदि बड़ी पुस्तकों में देखें यह जराही से सब रक्तता है, परन्तु थोडासा जान लेना चाहिये दिज्ञ को घाव की सहाय नहीं उससे मनुष्य सुरंत मरजाता है, और भेजा भी नहीं सहाय सकता, बहुत घाव का बुद्धि का निशान जाना है और गुरदे और मसाने और आंत का घाव भी ऐसा ही जानें, और पहचान मसाने के घाव की यह है कि यूर उसी में से निकलेगा और जो आंत में हो तो पैसा निकलेगा, जिगर का घाव भी घुरा है, परन्तु अच्छा हो सकता है, और पट्टे आदि का घाव भी घुरा है, उसमें रंग बदलता है और मूर्छा और विषाद होता है, और रान का घाव आगे की

और हो तो बचने की आस कम है तर पेट का घाव जो भली भाँति लगा हो मरानक है और सबकाई और दिक्की उसमें बराबर रहती है छाती का घाव भी ऐसा ही है उससे हवा निकलती है छाती के पर्दों का घाव घुरा है उसमें दम रुकता है और भेदे का घाव भी घुरा है पेट का खाना उसमें से निकल आता है सिवाय इनके और कहीं घाव हो तो कुछ धरन करे सीधा हो ता राँक लगावै और कोई हड्डी का टुकड़ा हो उसे निकाल बाँधे जराह घुदिमान और दस्तकार चाहिये ॥

जो कोई वस्तु चुभजानी तो पहिले उसे निकाले फिर घुर और कुन्दर घाव पर छिड़के ॥

### कुरह का वर्णन ।

इसकी मकारें भी बहुत हैं यह भी जराही से सर्वथ रखता है जो थोड़ा हो तो आपसे आप अच्छा हो जाता है जो बहुत हो तो वह मरेहम लगावै जो बड़ी पुस्तकों में लिखे गये हैं और नीम के पत्ते कूट के शहद में मिला के बाँधे और परहेज और मवाद निकालना अति लाभदायक है और नासूर को पहिले गुलाब से मिस में अंगूर की लकड़ी की राख पत्री हो भली भाँति घोबे और समुद्र पानी से या साबन पानी से मिसमें थोड़ी इस्त्राक और नोशावर मिला हो उससे घोना अति लाभदायक है और फिर घुरानी कई को गुलाब या माण्डलमरु में भिगोर उसमें ईलक, एलुआ, मुर, दम्युल असबैन कुन्दर अफीम और पीसकर मिलावे और घाव पे रखे जब तक अच्छा न हो और जो इससे लाभ न हो तो जहाँ तक होसके घुरा मांस काट बाँधे फिर उसके मरने का ब्याप करे ॥

मारने और गिर पड़ने से चोट लगने का वर्णन

जो सूजन और तप न हो तो गिल्ले अरमनी और अंडे की सफेदी आदि का लेप करें- और जो सूजन और तप हो तो कस और पछने लगाकर ऐसी ठंडी औषधें लगावे जो मवाद को इस गिरने से रोकें और जो शरीर के किसी बड़े स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करे, और समले की चोट में पहिले पीका को दूर करना चाहिये ॥

कोड़े की चोट का वर्णन ।

जो खाल के नीचे मांस टुकड़े हो गया हो तो उसे दबा कर और घुलकर इकट्ठा करे, और फिर बकरी की खाल जन्दी से गरम २ घंटे कर बांधें, और जब वह सूख जावे तो उसे खोले, इस उपाय से एक रात दिन में अच्छा हो जाता है और खाल के नीचे रुधिर सिमट आया हो तो रोटी का गूदा और मूली मलें ॥

हड्डी के टूटने उखड़ने और खिसलने का वर्णन

इसका उपाय कमानगर जानते हैं, और खिसलने में आंस के पत्ते कुचलकर चाबें और गुगास खैर और अंडे की जर्दी मिलाकर मलें

विषका उपाय ।

गुनगुना पानी या तिली का तेल या मक्खन बहुत सा पिछाकर तुरंत चलाटी करावे और जो इससे चलाटी भली भांति न होतो सोये के धीम और नमक पानी में औराकर और तिछी का तेल बहुतसा मिलावे और चलाटी के लिये जो कुत्त दे बहुत सा दें जब भली भांति चलाटी हो चुके तो गौ का ताला इस जितना पिया जावे पिछावे और जो यह भी चलाटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है और मक्खन और यी पिपका क

रूख की जगह दे सकते हैं, और तिरियाक कबीर लाभ फारक है और बिष खानेवाले को कभी सोने न दें, और जो भूखा हो तो भवित भोजन पेट भर कर खिलावे और जब उस बिष का नाम गालूम हो जायें तो वह औषधें दें जो उसे दूर करती हैं जब बिष खानेवाले को भूखा आजावे और आँखों की पुतलिया फिर जागें या आँखें लाल हों और नाभी बड़ हो जायें और जीभ बाहर निकल आवे और उदा पसीना निकलने लगे तो जानो कि अब न बचेगा ॥

### विषेले जानवरों के काटने या डंक मारने का उपाय

इसका उपाय छः प्रकार से हो सकता है, जैसा उचित समझें वैसा करें, पहिले वह औषधें दें कि असली गरपी को चमारें और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और बिष को दूर करें, जैसा तिरियाक कबीर, लोबत बरबरी और निदबार आदि, दूसरे वह औषध दें जो शरीर से रसी को निकालें, कछुडी या जुल्लाब से परन्तु फस्द न खोलें और सर्प विषकू के डंक मारने में या ऐसे सर्प के काटने में जिनसे कि शरीर में हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है, फस्द खोल सकते हैं।

तीसरे बहर सुहरा और तिरियाक जो वसी बिष के दूर करने को हो दें जैसे घड़ियाल के काटने में वसी का पांस और सर्प के काटने में वसी सर्प का पांस खिला देना अविमदायक है।

चौथे वह औषधें जो उस विषेले जानवर के मिजाज से परीत हो जैसे हींग विष्णू के लिये, और इसी प्रकार से हो, पांच वें वह उपाय करें, जो मषाद को रिला कर बिष खाल, की ओर बहादे, जैसे दबा या दौड़ने से पसीना निकलना परन्तु इसमें

छटे विष को फैलाने न दें इस प्रकार, ये कि जिस जगह कांटा या डंक मारा है जो हो सकै तो उस स्थान को तुरन्त ही काट दालें, और दागदें, या ऊपर को हट के कसकर बांधे कि विष आगे बढ़ने न पावै और ठही व घुन्न करने वाली औपधें लगावें और उस जगह सींगी लगाना और मुंह से चूसना लाभदायक है, परन्तु चूसने वाले का पेट भारा हो और रोगनशुल से उसे कुत्ता करा दें जो उसे हानि न हो ॥

लागिया एक पेट है जिसमें से दूध निकलता है उसका दूध सांप के काटे हुये को लाभकारक है, और तुरन्त के चीन ६ माशे सब जानवरों के विष को लाभ देते हैं और चिनर का ताजा फल भी अति लाभकारक है, न्यूले का मेदा और पेट खूब साफ करके धनिया लगाकर भूनना और मुला कर खिलाना और बकरी की मँगनी जलाकर खिलाना और लेप करना और सातर खाना और लेप करना अति लाभदायक है और पक्का या कच्चा दूध घी के साथ उस स्थान पर लगाना भी अच्छा है ।

भिड़ और चेंटी और शहद की मक्खी के काटने में तीन हतेली भर धनियां फांके ।

घावले कुत्ते के काटे को चात्तीस दिन तक अच्छा न होने दें जो घाव भरने लगे तो ऐसी औपधि लगादे जिससे वा बहे और सौदा का मवाद निकालनेमें बहुत लगे रहें इसका बि धरपों के पीछे जोर करता है और जिस किसी को कुत्ते ने काट हो उसके काटने में वही अशुल होता है जो कुत्ते के काटने में होता है चाहिये कि उससे भी बचे कुत्ते का काटा हुआ पानी से बहुत दूरता है और पानी पीना छोड़ देता है इसी से घर जाता है उसे पानी पिखाने का उपाय यह है कि एक

मरकल बहुत लम्बा लोके एक सिरा समझा मुँह में दालें  
और बहुत दूर से दूसरे सिरे में पानी छोटे कि वह पानी  
को देखने न पावै और कहते हैं कि जब कुचा काटेवसी समय  
कपिर उसका लोके थाका सा पानी में मिलाकर पिलादे या लः  
पहीने तक रोज एक माशे मुरक खिलावे और तीन महीने तक  
माश को बहने दें और मिस कुचा ने काटा होवसी का बचोवा  
भून कर सिलोना अति लाभदायक है ।

## समाप्तोयं ग्रन्थः ।



# नाड़ी परीक्षा

दिल की रग के चलने को नाड़ी कहते हैं ।

वह दिल के खुलने और बन्द होने से चलती है खुलने से हवा खिच के भीतर जाती है जिससे रुक हवा नीची जो दिल में है आराम पाती है और गरम हवा के दूर करने के लिए दिल बंद होता है इन दोनों से मनुष्य के शरीर का और उसके रोग और आराम मालूम होते हैं दश प्रकार से शरीर का हाल जाना जाता है ।

एक तो यह कितनी खुलती है और कितनी बंद होनाती है इसकी नौ सूत्रें हैं क्योंकि नाड़ी में लम्बाई और चौड़ाई और गहराई है और हर एक इन तीन में से या बहुत अधिक है या कम है या मध्यम है जब इन तीन से इन तीन को गुण करोगे तो नौ होंगे वह नौ यह हैं तबील अर्थात् अधिक लम्बी २ कसीर बहुत कम लम्बी ३ मोतदिल अर्थात् न लम्बी न छोटी जितनी लम्बी जितनी कि चाहिये ४ मरीज अधिक चौड़ा ५ जैयक कम चौड़ी ६ मोतदिल जितनी चौड़ा जितनी कि चाहिये ७ पुशरिक अधिक समी हुई ८ मुनखफिज दबी हुई ९ मोतदिल न बहुत समी न दबी ।

तबील में जितना कि चाहिये वह रोग अधिक मालूम होता है कारण इसका गरमी की अधिकता है (२) कसीर में कम मालूम होता है उस से जितना कि चाहिये कारण इसका गरमी की कमी है (३) मोतदिल में रग जितनी मालूम होती है जितनी कि चाहिये इसमें पिनाज की गरमी ठीक २ होती

(४) भरीज में उसका चौड़ा ना जितना कि चाहिये उस से अधिक होता है इस में तरी की अधिकता होगी ।

(५) जैपक में चौड़ा ना कम होता है इस में तरी कम होगी

(६) मोतदिल में जितनी चाहिये उतनी चौड़ाई होगी उसमें

ती ठीक २ होती है (७) मुशरिफ में वह रंग अधिक उभरती

यह भी गरमी का कारण है (८) मुनखफिज में हव से कम

होती है गरमी की कमी होगी ॥

(९) मोतदिल में उसना उभार होगा जितना कि चाहिये

उमें गर्मी भी ठीक २ होगी यह नौ प्रकारें एक २ कुतरकी

सनाई और चौड़ा और गहराई को यहाँ पर कुतर कहते

यह दो या तीन कुतरों को मिलाओ तो दो प्रकारें सचाईस २

निकलेंगी जैसा कि आगे के दो नकशों में दिखा गया है

एक दो कुतरों के लेने की रीति भिसको सनाई कहते हैं यह

कि सनाई की तीन प्रकारों को चौड़ाई की तीन प्रकारों

साथ लें तो नौ होगी फिर सनाई की तीन प्रकारों को

गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नौ होगी, फिर

चौड़ाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ

यह भी नौ होगी, यह सब मिलाकर सचाईस हुई ॥

नकशा सनाई ।

त.	स.	त.	क.	क.	क.	मो.	पा.	मो.
अ.	अ.	मो.	अ.	अ.	मो.	अ.	अ.	मो.
सुश.	मुन.	मो.	सुश.	मुन.	मो.	सुश.	मुन.	मो.
अ.	अ.	अ.	अ.	अ.	अ.	मो.	मो.	मो.
सुश.	मुन.	मो.	सुश.	मुन.	मो.	सुश.	मुन.	मो.



और तीन कुत्तर के लेने की रीति जिसको सुल्हासी कहते हैं। यह है कि दो प्रकारों को एक ही रत्नसे और तीसरी प्रकार बदलती रहे ॥

### नकशा सुल्हासी ।

व.	व.	व.	व.	व.	व.	व.	व.	व.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुस.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
क.	क.	क.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.

प्रकट होकि ऊपर के दोनों नकशों में व. से लबीक और अ. से जरीज और क. से कसीर और मो. से मोतदिल और और ज. से जैवक, मुश. से मुशफिर और मुन. से मुनकफिर जानो ।

दूसरी प्रकार और और कमजोरी जानना है, यह वह जो नाही देखने वाले की बगलियों के पास और से लने पर जो उस को पुष्ट कहते हैं उस में दिल भी पुष्ट होता है और जो होखे से लगे तो वह कमजोर कहावेगी वह पहिचान दिखती कमजोरी की है ॥

और तीसरी मोतदिल है जिससे जोर देवानी का दिखने ठीक होना पाया जाता है ॥

तीसरी प्रकार नाही की बाकका समय देखना है जो जो जल्दी से आवे जाने तो उसे सरी कहते हैं उसमें हवा के जाने की अधिक आवश्यकता होगी और

होगी । चौथी प्रकार नाड़ी के उठने का समय देखना  
जब यह चमकियों पर लगकर सुरम्भ अलग होजाये तो उस  
को हवातिर कहते हैं इस में जोर हैवानी कम होगा और जो  
पर के चर में अलग हो तो उसे सुतफासुव कहते हैं इसमें यह  
को हवा होगा मोतदिल में यह दोनों बातें ठीक २ होंगी ॥

पाँचवी प्रकार नाड़ी की नरमी और फट्ठापन देखना है ॥  
जो अधिक नर्म हो तो खीन कहते हैं इसमें तरी होगी जो बड़ी  
हो तो सख्त कहते हैं इसमें खुरकी होगी मोतदिल में तरी और  
खुरकी मध्यम होगी ॥

छठी प्रकार नरमी और ठट देखना है जो अधिक गरम हो  
तो बार कहते हैं इसमें गर्मी अधिक होती है और जो ठंडा हो  
तो बारिद कहते हैं इसमें गरमी कम होगी उससे जितनी कि  
आग्ने मोतदिल में गरमी और ठट मध्यम होगी ।

सातवी प्रकार उस वस्तु का जामना है जो रस के भीतर  
है यह कविर और रुह है ॥ जो नाड़ी मरी हुई हो तो उसे सुम  
कहते हैं यह चिन्ह है मषाद की अधिकता का, और जो  
जलवी हो तो उसे खाली कहते हैं इस में जितना चाहिये उस  
के कम मषाद होता है और मोतदिल में मषाद ठीक २ होता है ।

आठवी प्रकार नाड़ी का हाक जानना है हाक नाड़ी के  
बारी है जो ऊपर खिसे गये हैं जो हर मवत्रा एकसा पाया  
जाये उन सब हाकों में तो उसको मुस्तवी सुमलक कहते हैं इस  
में शरीर का हाक एकसा होता है और जो सब हाक अलग  
जाये जाये तो उसको सुलवठिक कहते हैं जो कुछ हाक एक  
से हों और कुछ अलग २ हों तो उसको मुस्तवी फिलवान और  
मुलवठिक फिलवान कहते हैं इस में हाक गुप्त होगा जो हर  
मवत्र के टुकड़े सब हाकों में बरसे पाये जायें और जो सब

नबजें अलग २ हों तो उसे मुस्तबी मुस्तलिफ टुकड़ों की रा  
 कहेंगे और जो अलग २ हों तो मुस्तलिफ मुस्तलिफ टुकड़ों  
 राह से कहेंगे यह दोनों घुने हात के चिन्ह हैं मुस्तबी में  
 और मुस्तलिफ में अधिक और जो नबज के हर टुकड़े के  
 टुकड़े में मुस्तबी और मुस्तलिफ देखें अर्थात् जो टुकड़ों न  
 का एक च गली सले हो उसको आदि और अत और मुस  
 लिफ मुस्तलिफ कहेंगे और इसी प्रकार से मुस्तबी फिल  
 और मुस्तलिफ फिलवाज जानें यह भी हात के घुना  
 और कमजोरी की अधिकता और मवाद के भारी होने  
 लक्षण है परन्तु मुस्तबी में घुना और मुस्तलिफ में अधिक

नबी प्रकार मुस्तलिफ नाबी में एक सा होना देखा  
 जो दौरा नबज का एक प्रकार का अंतर रखे तो उसे  
 मुस्तलिफ मुस्तलिफ कहते हैं और जो एकसा न रहे तो मु  
 तलिफ गैर मुस्तलिफ कहते हैं यह बहुत घुने हात का लक्षण

दूसरी प्रकार नाबी की तोला देखा है तोला कहते हैं  
 वस्तु को दूसरी वस्तु से अदाजा करने को इसलिये अच्छे  
 में जो नाबी होती है उसको जैयदुलबजन कहेंगे और जो इस  
 विपरीत हो उसे रदीयला बजन कहेंगे इसकी तीन चर  
 पहिली मुवाइजुलबजन यह है कि एक अवस्था बाते  
 नाबी मिलती हो उसके पास घाली अवस्था की नाबी से  
 कि लड़के की नाबी जवान की सीया जवान की बुढ़े की सी  
 दूसरी मुवाइजुलबजन यह है कि जो नाबी दूरकी अवस्था  
 से मिलती हो जैसे लड़के की नाबी बुढ़े की सी हो तीस  
 खारिजुलबजन यह है कि किसी अवस्था की सी न हो जैसे  
 ती हुई नाबी जो बहुत घुनी है और इससे ऊपर की हो

भी बुरी है परन्तु इससे कम नाड़ी रुक और अकस्मि गमभी को आशय देती है जब गमभी की अधिकता हो और नाड़ी में किसी प्रकार का कटापन हो और जोर भी होतो नाड़ी अजीम होगी अर्थात् तीनों कुतरों पर बड़ी हुई अर जो इससे कुछ भी लाभ हो तो सगी हो जावेगी और इससे गर्मी बढ़े और लाभ न हो तो मृतवातिर हो जावेगी और जो नाड़ी में कटापन हो तो सगीर होगी अर्थात् तीनों कुतरों में घटी हुई और जो नाड़ी नरम हो परन्तु उसमें जोर न हो तो सगी होगी और जो उससे लाभ न हो तो मृतवातिर हो जावेगी और जो कमजोरी बहुत हो तो काम जल्दी न कर सकेगी और सगीर हो जावेगी ।

जब मवाद या भोजन के जोर के शोक के नाड़ी दब जावे और चमर न सके तो कुछ सगीर हो जाती है जैसा कि तप के आदि में पारियों के अन्दर होता है चाहे जोर हो तरी से नाड़ी नरम हो जाती है और खुरकी से कभी परन्तु कुछ शानों में कुछ कभी पाई जाती है ।

मवाद के शोक से या कमजोरी की अधिकता से नाड़ी में भेद पड़ जाता है और जब कमजोरी बहुत बढ़ जाती है तो इन्तिजाम नाड़ी का जाता रहता है उचित चमन भी नहीं होता ।

**नाड़ी की मिली हुई प्रकारें ।**

अजीम उस नाड़ी को कहते हैं जो तीनों कुतरों में बड़ी हुई हो सगीर यह है जो तीनों कुतरों में घटी हुई हो गलीन यह है जो चौड़ाई और गहराई में बड़ी हो और लच्छल है मवाद की अधिकता का, दकीक जो चौड़ाई और गहराई में घटी हुई हो, यह मवाद से खाली होने का लक्षण है ।

## मूत्र परीक्षा ॥

जानना चाहिये कि मूत्र पिया हुआ पानी है यह पहिले मेदे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला कैलूस बनावे, फिर मांसारीका में होता है जिगर में पकता है वहाँ से गुर्दे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधिर से मिला हुआ जिगर में रह जाता है वह रगों की राह से सारे शरीर में पहुंचकर कुछ पसीने में निकल जाता है और कुछ फिर गुर्दे में होता हुआ मसाने में गिरता है इसीलिये मूत्र रगीन हो जाता है जिसको पसीना बहुत आता है उसे पेशाब कम होता है। और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है जब मसाने में इकट्ठा हो जाता है तो पेशाब लगता है इसीलिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है यहाँ से दो बातें मालूम हुई, एक यह कि पेशाब में दो वस्तु हैं, एक पानी दूसरा भारीपन दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भली भाँति जाना जाता है।

### मूत्र के रंग का वर्णन ।

असल रंग पाँच है पीला लाल हरा काला और सफेद और सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथ हैं।

### पीले रंग की पाँच प्रकारें हैं ।

तिथनी उस पानी का सा रंग होता है जिसमें भूसा मिलाया हो अर्थात् पीला होता है सफेदी लिये हुए यह लक्षण है मित्राग की ठण्ड का क्योंकि या तो पानी की अधिकता होगी



## मूत्र परीक्षा ॥

जानना चाहिये कि मूत्र पिया हुआ पानी है यह पहिले मेद्रे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला कैलूस बनावे, फिर मासारीका में होता आ जिगर में पकता है वहां से गुर्दे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुबि से पिछा हुआ जिगर में रह जाता है वह रंगों की राह से सारे शरीर में पहुंचकर कुछ पसीने में निकल जाता है और कुछ फिर गुर्दे में होता हुआ मसाने में मिरता है इसीलिये मूत्र रंगीन हो जाता है जिसको पसीना बहुत आता है उसे पेशाब कम होता है। और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है जब मसाने में इकट्ठा हो जाता है तो पेशाब लगता है इसीलिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है वहां से दो बातें मालूम हुई, एक यह कि पेशाब में दो वस्तु है, एक पानी दूसरा मारीपन दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भली भांति जाना जाता है।

### मूत्र के रंग का वर्णन ।

असक्त रंग प्रांच है पीला लाल हरा काळा और सफेद और सिवाय इनके जो हों वह रंगों के साथ हैं।

### पहिले रंग की पांच प्रकार हैं ।

तिथनी.. उस पानी का सा रंग होता है जिसमें भूसा भिगोया हो अर्थात् पीला होता है सफेदी लिये हुए यह लक्षण है मिनाज की ठंड का क्योंकि या तो पानी की अधिकता होगी

आँखों की कभी यह दोनों ठह से होते हैं परन्तु पिछों के सरसाम में भी मूत्र का रंग ऐसा हो जाता है ।

बतकनी—अर्थात् इलाकापीला रंग जैसे तुरन्त के बिलकेला होता है इसमें पीलापन सिमनी में अधिकता से होता है यह लक्षण है मिनाज के ठोके होने का और भली भाँति पचाव होने का ।

असकर—यह पीला रंग है लाठी लिये हुए मिनाज में गरमी होने का लक्षण है ।

नारी—यह रंग वह है जिसमें पीलेपन में लाठी अधिक होती है और चमक आप की सी होती है इसमें अशक्त से अधिक गरमी होती है ।

अहमरनोसे—इसमें नारी से लाठी अधिक होती है, और गरमी भी अधिक होगी ।

दूसरा रंग लाल है यह चार प्रकार का होता है ।

असह्य, थोड़ी लाली हो और सफेदी भरे पतले रुबिर । बरदा गुलाबी रंग को कहते हैं इसमें लाठी असह्य से अधिक होती है और गाढ़े रुबिर से पीया जाता है ।

कानी—यह बहुत लाल होता है वस रुबिर से जिसमें रमी बड़ी हो ।

अकचम—लाल हो कालापन लिये हुए सौदा के गाढ़े रंग की गरमी से यह चारों रुबिर और गरमी की अधिकता लक्षण है एक दूसरे से अधिक और कभी उँहे रोगों में भी रंग हो जाता है जैसे फाल्गुन और सूतकिनीआ में कि मिगर की निर्मलता से रुबिर पानी से भली भाँति जग नहीं हा सकता और रुबिर पेसाब में मिला जाता है सरा रंग हरा है, यह भी चार प्रकार का है । किस्म की गीद पिसतई रंग बिन्द है क्योंकि पिछों और



बादी के मिलने से होता है परन्तु यह बादी जो ठंड से उत्पन्न हो कुर्शी ने कहा है कि यह रंग पित्तों के जलने का लक्षण क्यों कि इसमें पीलेपन की भलक होती है जो ठंडे सौदा होता तो कालापन होता है।

नीलजनी—जैसे नील पानी में घुला हो इसमें फिस्ते से भी अधिक ठंड होती है यह दोनों रंग जो बच्चों के मूत्र में तो फाल्गुन या शशान्तुज होने का द्योतक है।

३ जनजारी अर्थात् जगार का सा, इसका कारण गर्म की अधिकता और पित्तों का जलना है।

४ कुर्शी सी गन्दने का सा रंग यह भी पित्तों के जलने का लक्षण है परन्तु जनजारी से कम है। चौथा रंग काला इसके कई कारण हैं एक इस प्रकार से जिससे कि पहिले शरीर में गरम पित्त हो और वह मूत्र के मवाद को जलादे जिससे उसका काला हो जावे परन्तु उसमें पीलेपन की भलक हो और पहिले से मूत्र में गंध होगी या खाक आवेगा। (२) काजमना है इसी प्रकार से शरीर में ठंडा मवाद हो जो मूत्र मवाद को जमादे और काला करदे इसमें पहिले से हरा बिना गंध के या खट्टी गंध लिये हुए आवेगा।

तीसरा कारण बादी का मूत्र में निकालना है यह संधी, सप में और सुहरान के दिन आवेगा इससे मवाद के पके लक्षण पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी।

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खाना है जैसे क शराब आदि जो वह वस्तु जैसी की तैसी मूत्र में निकले जान लो कि भिगर का जोर जाता रहा और बराबना है जो अधिक स्वास्तेने से होतो कुछ दूर नहीं पांचवां रंग स

बढ़ दो प्रकार का होता है एक दूध का सा गाढ़ा यह कफ की अधिकता और मिजाज की ठंड या हड्डियों और पेटों के और वर्षों के पिघलने का लक्षण है जैसा कि दिक के अंग्रेजों में होता है कारण इसका अधिक गरमी है इसमें चिकनाई, सफेदी साथ होगी और शरीर दुबला और प्रति दिन पिघलता होगा ।

दूसरे पानी का सा रंग यह लक्षण है भिन्न के पचाव के रहने का उषण की अधिकता से या मूत्र के रस्ते में रुकावट से कि रंगीन वस्तु नहीं निकलती है और निरा पानी जल जाता है ।

**मूत्र का गाढ़ा और पतला होना ।**

प्राकृतिक वह है जो न बहुत गाढ़ा हो न पतला जैसा कि न में होता है और लक्षण है पचाव और यही भाति का । गाढ़ा होना लक्षण है न पकने का क्योंकि बिना उष्ण फोक मूत्र में पिघलाकर उसे गाढ़ा कर देती है और कभी होता है गाढ़े पचाव के पकने का पहिचान उसकी पर है उसे से पहिले मूत्र बहुत गाढ़ा जावेगा और पकने के पीछे ढ़ा जावेगा ।

यही बहुत पानी पीने से मूत्र पतला जाता है और कभी न में रुकावट से भी पतला जाता है पहिचान उसकी के रुके की जगह बेगम और तनाव पाया जावेगा और कभी न पकने से भी पतला हो जाता है, जब कि मवाद देता है कि निरुक्त न सके जैसा कि कफ की तपों में होता है ।

**मूत्र का साफ और गदला होना ।**

क वह है कि

बार बार मूत्र

जो टूटते रहे और चौड़े न हो, तो लास को कुसनी कहेंगे और नहीं तो नखाती ॥

तलछट जो तरी से हो उनमें से जो लाती लिये हुए हो वह चिन्ह है रुधिर के जलन का और कभी कफ के जलने का और जो पीली हो तो पेशों की अधिकता का और काली सौदा के जलन का चिन्ह है ॥

जो मूत्र बिना तलछट के हो उसके कई कारण हैं एक मवाद का पड़ना, दूसरे सुदृढ़ा, तीसरे मवाद की कमी, चार मनुष्यों के मूत्र में तलछट बहुत थोड़ी होती है, और जो होती है वो बिना पचे हुए भोजन के फोह से, दुबले मनुष्य में और मिहनत करने वाले के मूत्र में तलछट बहुत कम होती है और जो रोगी मोटा और आराम चाहने वाला हो उसके मूत्र में बहुत आती है, जिस तलछट का फोह पीप हो उसे मर कहते हैं और जिसका फोह गाढ़ा और कच्चा मवाद हो वा मुलाती है, यह बहुत करके अरकुनिसा और बजै मुफासित के रोगों में आती है इन दोनों की सूरत एक सी होती परन्तु अंतर यह है कि मही में दुरगंध होती है और सूजन या घाव के फटने के पीछे निकलती है, और जल्दी इकट्ठ हो जाती है और मुलाती में यह बाहें नहीं होती ॥

**मूत्र का थोड़ा और घना होना ।**

मूत्र के घने के होने के बहुत कारण हैं एक पानी बहुत पीना अकेला या कोई वस्तु मिलाकर या तरबेरी का स्वाद दूसरे शरीर का विघटन जैसा कि गरम तपों में होता है, तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसा कि दुइरान इदरार होता है ॥

मुहरानी और जूवानी में यह अंतर है कि मुहरानी होता है और मवाद के निकलने के पीछे रोगी को

है और नवानी में कमजोरी होती है उसमें पुष्टगर्मी पाई जाती है और गधितेज होती है और बुहरान के दिन नहीं होता । बुरा मूत्र जैसे काला और गाढ़ा इसमें अच्छा यह है कि बहुत आने और रुक रुक के न आवे इसमें जोर होता है और जो कमजोरी हागी वो रुक के आवेगा, मूत्र के बाढ़ा हाने के कारण भी बहुत है, एक तरी का अधिक पचना दूसरे शरीर में तरीका न रहना गरमी की अधिकता से तीसरे बुरा पटना वन रस्वों में जिनसे कि तरी पसाने में नाशी है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना, इससे जो तरी मूत्र में आती भी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी पचाव के कथ होने पर भी जो मूत्र बहुत थोड़ा आवे वो नकपर हो जाने का डर है ॥ इति

### बुहरान का वर्णन ।

रोग की कड़ाई जो मिनाज के साथ होती है उसे बुहरान कहते हैं ।

आमिनाज जीते और रोग एक बारगी जाता है उसे इरान महमूद या कामिल कहते हैं और जो रोग जीते और भी एक बारगी मर जावे वो बुहरान तबी नाम है यह दोनों रम रोगों में होते हैं ॥

जो रोग अच्छा हाने को हो परन्तु देर में इसे सफलता होते हैं यह पहला पुराने रोगों और ठड़े मबाद में होता है ॥ २ और जो इसी प्रकार से रोग मार डालने को हो वो जूथान र रजबुल कहते हैं थगा हाने के लक्षण या वो एक बारगी मर जावे परन्तु देर में अच्छा हो और मबाद थोड़ा २ थोड़े या पहिले मिनाज का जोर कुछ न मालूम हो परन्तु जो कुछ २ निकाल के एक बारगी जीत आवे वो बु-

मुहरान जैयद की पहिचान यह है कि मवाद अच्छा पका होगा और वह भली भांति निफलैगा और नाही ठीक और पुष्ट होगी मुहरान रदी इसके विपरीत है मुहरान के दिन कोई ऐसी औषध न दें जो मवाद को निकाले इस वास्ते जुल्ताब आदि न देना चाहिये, जो हो सके तो भाजन भी न दें और नहीं तो हल्का भोजन देना चाहिये, और लक्षणों को देखकर मिनाज की मदद करें, जो मवाद नकसीर से निकला चाहता है और मिनाज कमजोरी के कारण उसे न निकाल सकता हो तो मदद दें इस प्रकार से कि सिरको गरम रखें और गरम पानी से तरेखा दें जो बमन आने का है ता बमन करावें और जो मकृति जुल्ताब चाहती हो तो मुलैय्यन दें इसी प्रकार और भी जानें जब मालूम हो कि मुहरान इतकाली है और मवाद किसी जगह गिरकर उसे बिगाड़ेगा तो मवाद को चघर गिरावें जिघर से कुछ हानि न हो जैसे कि जो जगह उसके बराबर हो उसे कसकर चाबें या सीगियां या चारे लुगाने या कोई गरम लेप लुगाने जो मवाद दहने होय में हो तो बाँये हाथ से कोई कड़ा काम न करें या शोभ न उठावें जो मवाद सिर या छाँख में हो तो पहिले पीका को दूर करें और पाँव मलें या गरम पानी में रखें या पिहलियां टखनों तक कसें और जो मेदे में हो और छाती की ओर आवे तो बाहें और रान कसें मूत्र में पसीना निकालें और पसीने में मूत्र और चूल्ही में दस्त और दस्त में चूल्ही जबतक अधिक आवश्यकता न हो मुहरान में मवाद निकालना बंद न करें और उसे शरीर की किसी उत्तम और कमजोर जगह पर न गिरावें राग के आदि से मुहरान बहुत पुरा है बहुत से दक्कीम जो रोग को पहर से पहिले उत्पन्न हुआ हो छत्र दिन को हिसाब में गिनते हैं और

जो होपटर के पीछे हो उसे छोड़ देते हैं गनने के पीछे जो तप हो उसी समय से गिनी जायेगी, राग में कुछ दिन मुहरान व दिन हैं उन्हें बाहरिया कहते हैं और कुछ योग्य अनजार अर्थात् खपर देने वाले और कुछ न मुहरान के हैं न खपर देने वाले परन्तु कभी २ मुहरान उनमें हा जाता है, उन्हें बाकैफिज वस्त कहते हैं जैसा कि आगे के नकशों में लिखा जायेगा मुहरान का जोर और कटापन आठवें दिन तक रहता है फिर घट जाता है।

भिन दिनों में मुहरान बहुत करके होता है और अकड़ा होता है वह ग्याह दिन है उनकी जगह हमने एक का अंक नकशों में लिखा है, और भिन दिनों में मुहरान रही और घुरा होता है वह आठ दिन है उनकी जगह दो का अंक लिखा है और भिन दिनों में मुहरान नहीं होता वह तेरह दिन है उनकी जगह तीन का अंक लिखा है और उनमें जुग्याष भी वे खट होकर दे सकत हैं और छः दिन बाकै फिलवस्त है, उनकी जगह चार का अंक लिखा है ॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	मुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	भिलाफी	१२	०	२२	३	३२	३
३	४	१३	४	२३	३	३३	३
४	१	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	३	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	३
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	१

## हव्वे रावन्द ।

• रावन्द १॥ माशे गारीकून ३॥ माशे तुर्वद ७ माशे मरा  
बन्द दो दांग गूगल १॥ माशे, अनीमून १ दांग, कूट छान के  
गालियाँ बनावे और यह दो बार के खाने को है ।

## हव्वसिक घनिज ।

सिकधीनग, एलुआ, गारीकून, गूगल, - परापर, लोके  
गोलियाँ बनावे और ७ माशे से १०॥ माशे तक खावे ॥

## हव्व खीजरान ।

धुना हुआ सकमूनियाँ, जावशीर, प्रत्येक ४॥ माशे बका  
यन ५॥ माशे नोशादार, ७ माशे गारीकून ८॥ माशे अयारि  
फीकरा १०॥ माशे इजकत १४ माशे तुर्वद, २४॥ माशे कू  
छान, कर गदने पानी में गोलियाँ बनावे और ३॥ माशे खावे

## हव्व बासली ।

बालछद, तम हव्व और कद बिलसान आसारोन, प्रस्त  
गी, दातवीनी केसर प्रत्येक ३॥ माशे नमक ७ माशे धुनी हु  
सकमूनियाँ १४ माशे वस्तखुदूस, बकायन प्रत्येक १७॥ माशे  
तुर्वद २४॥ माशे एलुआ ५६ माशे कूट छान, कर पानी में  
गोलियाँ बनावे और १४ माशे खावे ।

## हव्व सिन्न ।

धुनी हुई सकमूनियाँ ७ रची उसारागाफिस ६ रची गा  
रीकून १८॥ रची सिन्न ३॥ माशे कूट छान कर हरी कासनी के  
पानी में गालियाँ बनावे यह एक बार खावे ।

## हव्व इफ्तिमून ।

वस्तखुदूस ४ दांग कालीकूटकी नमक प्रत्येक १॥ माशे

बिसफायज, गारीकून, मत्येक ३॥ माशे खयारिज फीकरा ३॥  
माशे मोलिर्पा बनाले यह सप दो बार या ३ बार खाने को हैं ॥

### दिवाल मिदक ।

मस्तगी, कषाऊर, तुरज के छिलके, दाखचीनी, लोंग,  
बालखड़, मुक, जायफल कषावा बरी इलायची के दाने मोपा,  
सरकंदे की जड़, जगलीतुलसी, फिरजमुरक नममाप, बालगू  
के बीज, दौतामरुवा, बिनाबिचेंमोती, पुसुद, फहरवाशमई  
कषा रेशम कटा हुआ सफेद और जाल बहमन मत्येक ३५  
माशे मुरक १७॥ माशे हरद के मुरखे के शीरे में गूथ के  
माजून बनाले ।

### दवायतुर्बुद ।

तुर्बुद सफेद छिला हुआ साफ किया हुआ ३५॥ माशे,  
सौंठ मस्तगी, मत्येक १७॥ माशे कन्द इन सब को बराबर कुट  
खान कर फकी बनावे और ४॥ माशे खावे ।

### दवाउलकरकम ।

केसर ५४ माशे आसारोन, दूक, अनीमुन, फितरासाल  
न्यून, रेबन्द मुरमकी मत्येक १४ माशे बालखड़ २१ माशे मीवा  
कुठ तजफकाह सरकंदे की जड़ इन्बखिलसान, मत्येक ७ माशे  
मुलौंजी जोद, मस्तगी, गाफिस मत्येक १०॥ माशे खिलसान का  
तेल १७॥ माशे कुठ खान कर शहद में मिलाकर माजून बना  
ले और माखलअस्त के साथ ३॥ माशे खावे ॥

### दवाउलतुरजवीन ।

तुरजवीन सफेद साफ करके १०५ माशे खेड़ सेर दूध में  
झोटावे जब गाढ़ी होमावे तो १३॥ माशे खावे ।

### जरूर असफर ।

जरूर एलुमा, रसौव मत्येक ७ माशे, केसर, मुर, मत्येक  
३॥ माशे पीस कर खानकर आन्न में लगावे ।  
जी पि बि ३६



## मस्तगी का तेल ।

मस्तगी ३५ माशे रोगन गुल १७५ माशे एक शीशे डाल कर गरम पानी में उसे रखें और उससे नीचे आ जलायें यहाँ तक कि वह मस्तगी तेल में पिघल जाये फिर उसे निकाल लें ।

## कूठका तेल ।

कूठ ३५ माशे कोलीमिरचें, फरफियून, मत्येक १६॥ माशे अकरकरा १४ माशे, जुन्दवेदस्तर ८॥ माशे जैत का तेल १७ माशे कूठ और अकरकरे और मिरचों को ३५० माशे पानी में १ रात दिन भिगोकर औटावें कि आधा जल जावे कि जैत का तेल मिलाकर औटावें कि निरा तेल रह जावे फिर जुन्द वेदस्तर और फरफियून को कूठ छानकर आग पर से उतारे डाल दें ॥

## केसर का तेल ।

सुरमकी १॥ माशे चिरायता १७॥ माशे केशर, कर्दमा मत्येक २१ माशे चिरायते और केसर को अलग और सुरमा को अलग सिरके में भिगोवें पांच दिन तक और छठे दिन कर्दमा को भी सिरके में भिगोवें एक दिन सातवें रोज छान कर-तिन्नी या तेल मिलाकर औटावें कि सिर का जल जा और तेल रह जावे उसे काम में लावें ।

## विच्छू का तेल ।

जराजद मुदहरज गिन्तयाना मोथा करने की नद की छा मत्येक ३ तोले कूठ कर शीशे में भरें, और ४०५ माशे कूठ बादाय या तिन्नी का तेल उसमें डाल दें और मुहबद कर घूप में रख दें, गरमी में सात दिन और जाड़ों में चौदह दि फिर उस दवा को उस तेल में भली भाँति घोलें और दो विच्छू जीते, उसमें छोड़ दें फिर मुद नद करके चौदह दि और घूप में रखें फिर छान लें ॥

### सुहाव का तेल ।

इसे सुहाव का अर्क ६ तोले, तिखी या जैत के तेल में जो  
जीत तोले हो औटावे कि पानी नलजावे ।

### नारदीन का तेल ।

धिरायता, धरकुलंगार, ऊपूरकचरी, ऊदविलसान, खाल,  
वेधपात, आस के पत्ते नारदीन, मरकन्डे डी जड, रासन,  
अरुन करदगाना, दौनामरुवा बराबर लेकर छूचल के १ रात  
दिन घुलाव और पानी में भिगोवे फिर छानकर तिखी का तेल  
मिलाकर औटावे कि निरा तेल रहजावे ॥

### रोगनमोची ।

काले चेंटे जो कबरो में होते हैं १०० पकड़ें और एक  
शीशे में जिसमें चमेली का तेल पटा हो नीचे डालें और सुद  
रसका घद करके गरमी की घूप में सात दिन तक रखें फिर  
साफ करछें ॥

### आसका तेल ।

इन्धुलआस फूदकर तिखी के तेल में औटावे, फिर निचोड़लें ।

### रोगन आमला ।

झिले हुए आमले, आस के पत्ते, सनांवर के जड़की  
खाल बराबर लेकर कूट के पानी में औटावे कि गलजावे फिर  
छान के सतना तेल मिलाकर पानी को नलजावे कि निरा तेल  
रहजावे ॥

### सोये का तेल ।

सोये के बीज आधा में घुलाके तीन तोले लें और तिखी का  
तेल ५७॥।। तोले शीशे में भरके घूप में २० दिन तक रखें  
फिर छानलें ॥

## गोखरू का तेल ।

हरे गोखरू को कूट के पानी उसका तिखी के तेल  
मिलाकर आग पर जलावे कि निरा तेल रह जावे ॥

## गैहूँ का तेल ।

इसके बनाने की दो रीति हैं एक यह कि गैहूँ को आति  
शीशे में भरकर ऊपर से कपडोती करें और उसके मुँह में  
फिसी छाल के या तिनके गरदें कि गैहूँ गिरने न पावे कि  
उसको किसी बर्तन में कि नीचे उसके छेद हो छल्ला रख  
ऊपर इसके अरने चपले चुने और आग लगा दें और तेल  
एक पस्तन रख दें कि तेल उसमें टपका करे ॥

दूसरी रीति यह है कि गैहूँ को किसी साफ पत्थर  
रखकर ऊपर से कोई लोहे की वस्तु गरम करके और  
दधाने से तेल निकल आता है ॥

## सुर्मा रोशनाई ।

जुहासे जला हुआ शादना मत्त्येक १७॥ माशे गोत पि  
दार फिलफिल, केशर, बक्रायन १॥ माशे जंगाल, पल्लु  
जमक, अर्मनी मत्त्येक ३॥ माशे इकलीपिया ७ माशे पीस  
सुर्मा बनालें ।

## माजूनजरओनी ।

फाली मिरचें, दारफिलफिल, सोंठ, तज, दारचीनी व  
एलीजन मत्त्येक सोसे भर दोनों सोदरी और बहमने, धुनी  
चिसानुता अमाफीन, मोठा कूठ, मोथा, बालबंद, मत्त्येक  
सोले दूर आनकर माजून बनालें ॥

## सिरके की सिकंजवीन ।

सिरका और शकर दोनों बराबर खेकर बना से ।

## सिकंजवीन यजुरी गर्म ।

उसारागाफिस, रेबन्दचीनी, मत्त्येक ७ माशे, कफ

वासनी और कुसुम के बीज, सोंफ, अनीसून प्रत्येक, १७॥  
 पाशे किम और सोंफ और कफस के मड़ की छाल २४॥ पाशे  
 सबका कुचला कर १२१५ पाशे पानी में भिगोंवें और पानी  
 से चौयाई सिरका उसमें डालें एक रात दिन उसे भोगा रखें  
 फिर छोटाकर साफ करलें और ६७॥ सोले कंद में वासनी  
 करलें ॥

### सिकंजवीन अनसिली ।

अनसिल ३ छटांक छकड़ी की छुगी बनाकर काटें छोटे २  
 कड़े और पुराना सिरका २०२५ पाशे डालें और छोटावें  
 ६ दिवस कुच गन्नावे और सिरका पांचवां हिस्सा रह जावे,  
 कि उसमें १॥ गुणा कद मिलाकर बीपी भाग में पकावें,  
 कि उसके भाग निकासवे जावें यहाँ तक कि वासनी पर  
 जावे ॥

### सिकंजवीन अफतीमून ।

वखुददूस, सोंफ, शाहतरा प्रत्येक १७॥ पाशे, अफतीमून  
 उफायम, सुनाम, काबिली हरद प्रत्येक ३५ पाशे इन सब  
 १३५ पाशे सिरके में भिगो कर छोटाकर धानलें और  
 भाष सेर कद में वासनी बनावे ॥

### सिकंजवीन सफरजली

कटो बिड़ो वाणी कूटकर पानी १ सेरले और पाब पर  
 का मिला कर छोटावे फिर सेर पर कद डालकर कबाम  
 में वासनी बनालें और जो सिरके के बदले नीयूर अर्क  
 लें तो बालि लाभकारक होगा

### सुफुफचारखुखम

ईसबगोल, तुलसीपत्र, कनीचे और बरतग के बीज बराबर  
 किसी मिट्टी के बरतन में भूने और गरम पानी का

हाल के छत करें और थोड़ा सा रोगन गुल या बादाम हाल  
कर लिखानें ।

### सुफूफ हब्बुलरुम्मा ।

खट्टे अनार के दाने भुने हुए ७० माशे भाऊ करोया  
घनियां प्रत्येक १४ माशे भाऊ खरसूबनिबती प्रत्येक ७ माशे  
गुलनार गर्द सिपाक प्रत्येक १०॥ माशे करोया और घनिये  
को सरके में भिगोकर सुदा के भूने फिर सबको कूट छानकर  
फकी बनाओं और ७ पाशे खानें ।

### सुफूफ मिकलियासा ।

ईसबगोल ७० माशे रेहा धारतग मरु के बीज बबूल का  
गोंद गिल्ले अर्मनी खशखश प्रत्येक २४-माशे बीजों को भुन  
के और बाकी सबको कूट के मिलादे और ठंडे पानी के साथ  
फकानें ।

### सुफूफतीन ।

ईसबगोल मरु और रेहा के बीज निशास्ता भुने हुए चूके  
के बीज गिल्ले अर्मनी वंसलोचन बबूल का गोंद सबको सिपाय  
अस्पगोल के कूटकर मिलाकर १० माशे रोगन गुल या  
बादाम चिकना करके गुलाब के साथ फकाने ।

### सुफूफतरातेजक ।

तरातेजक को एक रात दिन अगूर के सिरके में भिगोने  
और थोड़ा सा नीका आटा उसमें मिला कर गूथे और घीमी  
आग के सचूर में रोटी पकाने कि जल न भावे और सुख  
जावे फिर इस रोटी में से १४० माशे लें और संधालू के बीज  
इस कलूकन्दरीयून किय के बड़ की छाल बजवा प्रत्येक १७॥  
माशे गन्द ने के बीज नीरा किरमानी कि एक रात सिरके में  
भिगोकर भूनलिया हो प्रत्येक २२॥ माशे सबको कूट जानकर  
फकी बनाओं ॥

## मञ्जन दांतों का पुष्ट करने वाला ।

गुलनार फिटकरी जाँवला अक्राकिया बराबर लेकर मजन  
राने ।

दमरा मजन यह है गुल तूतिया फिटकरी गर्द सिमाक  
ताब के फूल खट्टे अनार के छिलके आपलो का सारा माखू  
लनार भोऊ बराबर लेके फूट छान कर मजन बनायें ।

## कूठ के तेल की दूसरी रीति ।

तम २१ माशे मुरमकी मारचोडा मत्येक १४० माशे बहुआ  
जु ३५० माशे सप पों कुचल के गुलाब में एक रात दिन  
भेगोने फिर औटावै और छान कर तिणी या जैत के तेल में  
गो पानी से तिगुना हो मिठाके आँठवे कि निरा सेल रहजावै ।

## सुरती जान ।

सहदे और भीठे अनार के छिलके मत्येक १०४ माशे माखू  
एलनार फिटकरी जला हुआ कागज अकरकरा मत्येक ३५  
माशे सिमाक ५२॥ माशे नमक नीशदार मत्येक १७॥ माशे कूट  
छान कर इच्छुल आस के सिरके में गु व के टिकिया बना कर  
सुला रखें ।

## शर्वत वर्द मुकरर ।

गुलाब के फूल ताजे खुशबूदार जीरा और सबजी निकाल  
के १ सेर भरलें और पांच सेर पानी में औटावें यहाँ तक कि  
रंग और स्वाद और गंध उसकी पानी में आ जावे फिर मल के  
उसका फोक निकाल टालें और उसने ११ नये फूल टाल के  
औटावें और उसका भी फोक निकाल टालें इसी प्रकार से नितनी  
बार चाहें नये फूल बदलते जायें फिर छान के पानी के बराबर  
शकर मिठा कर कनाम करलें और १ या २ तोले पीजें ।

## शर्वत इफसंतीन ।

इफसतीन रूपी १७॥ माशे गुलाब के फूल २८ माशे ३ पहर पानी में भिगो कर औटावे जब चौथाई रह जावे तो मल कर छान कर शकर मिलाके कवाम करे ॥

## शर्वत जूफा ।

सूखा जूफा हठल निकावा के २०३ माशे लें, और उससे दुगने पानी में भिगोके, फिर औटाके १०२ माशे कद और ४०५ माशे शहद डाल कर कवाम करलें ॥

## शर्वत खशखाश ।

पोस्त खशखाश दानों समेत १०० ले उन्हें कुचल के दो सेर पानी में औटावे, फिर १॥ सेर कद कवाम करलें ॥

## शर्वत पोदीना ।

खट्टे अनार का रस एक हिस्सा लें और इरे पोदीने का रस कूटकर आधा हिस्सा लें फिर दोनों को मिलाकर औटावे और उसके बराबर कद डाल कर कवाम करलें ॥

## शर्वत दीनार ।

रेबन्द १८ माशे, कूशूम के बीज १७॥ माशे, गुलाब के फूल ५२॥ माशे, कासनी के बीज ६० माशे, कासनी की जड़ १०५ माशे रेबन्द को कुचल के पोटली में बांधकर और औषधों के साथ मिगादे और हल्की आँध पर औटावे फिर छान कर कद सफेद ४०४ माशे डाल कर कवाम करले और ३५ माशे, से ४५, और ५२॥ माशे तक पीवे ॥

## शर्वत हब्बुलआस ।

हब्बुलआस ४०५ माशे शकर बराबर कुचल कर मिलाकर सेर और हर घंटे पर कद १

अनवार की जड़ और बिलके और दाछा ५ पाण्ड ७  
 ॥ तोले तक ले और कुचलकर एक रात दिन गरम पानी में  
 भिगावे और हलकी आंच में औटावे मलकर छानकर ४०५  
 माशे कन्द मिलाकर कषाम करे और चारों तो १॥ तोले खट्टे  
 अनार के दाने भी मिलावें ।

### शर्वत गावजुवां ।

हरी गावजुवां का रस निकाल कर और कन्द सफेद  
 मत्पेक १ सेर घर लेकर और मिलाकर औटावे और भाग  
 निकाल डालें फिर गुलाब ४० माशे डालकर कषाम करवें ।

### शर्वत बालगू ।

बालगू के हरे पत्ते कूट कर रस निकालें एक हिस्सा लेकर  
 दुगनी कन्द डालकर कषाम करवें ।

### शर्वत नीलोफर ।

नीलोफर के हरे फूल २०३ माशे बौगुने पानी में १ रात  
 दिन भिगोकर औटावें जब तिहाई रहजावें तो मलकर साफ  
 करें और २०३ माशे कन्द मिलाकर कषाम करवें ।

यही रीति शर्वत बनफशा बनाने की है ।

### शर्वत सन्दल ।

सफेद चन्दन का चूर्ण सुशुभ्रार ६० माशे लेकर ४०५  
 माशे गुलाब में दो रात दिन भिगावें फिर गुलाब को अलग  
 निकालें और चन्दन में घोटा पानी डालकर औटावें फिर यह  
 पानी और गुलाब मिलाकर ८१० माशे कन्द में कषाम मवें ।

### शर्वत उम्राव ।

उम्राव एक हिस्से घर हिस्से पानी में भिगोकर औटावें ।  
 श्री ति दि ३०



## शर्वत इफसंतीन ।

इफसंतीन रूपी १७॥ माशे, गुलाब के फूल २८ माशे, पहर पानी में भिगो कर औटावें जब चौथाई रह जावे तो मूत्र कर छान कर शक्कर मित्रा के कषाम करें ।

## शर्वत जूफा ।

सूखा जूफा हठल निकाल के २०३ माशे लें, और उससे दुगने पानी में भिगों, फिर औटाके १०२ माशे कंद और ४०५ माशे शहद डाल कर कषाम करलें ।

## शर्वत खशखाश ।

पोस्त खशखाश दानों, समेत १०० ले उन्हें कुचल के दो सेर पानी में औटावे फिर १॥ सेर कंद कषाम करलें ॥

## शर्वत पोदीना ।

खट्टे अनार का रस एक हिस्सा लें और हरे पोदीने का रस कटकर आधा हिस्सा लें फिर दोनों को मिलाकर औटावे और उसके बराबर कंद डालकर कषाम करलें ॥

## शर्वत दीनार ।

रेवन्द १८ माशे, कशूम के बीज १७॥ माशे, गुलाब के फूल ५२॥ माशे, कासनी के बीज ६० माशे, कासनी की जड़ १०५ माशे रेवन्द को कुचल के पोटली में पांचकर और औषधों के साथ भिगादे और हलकी आंच पर औटावे फिर छान कर कंद सफेद ४०४ माशे डाल कर कषाम करले और ३५ माशे से ४५, और ५२॥ माशे तक पीवे ॥

## शर्वत हव्युलआस ।

हव्युलआस ४०५ माशे कुचल कर और ३५ माजू, उसके बराबर कुचल कर मिलाकर सात दिन तक पानी में भिगोवे, औटा कर बराबर कंद डाल कर कषाम करलें ।

## शियाफदीनार ।

मर्दबोवा, घोयाहुआ शादना, पलुआ, शियाफ, मापीसा  
बराबर लेकर पीसकर बनावें ॥

## शियाफ अहमर ।

धुआ हुआ शादना २१ माशे बभूलका गोंद १७॥ माशे  
का हुआ लांवा, जगार, जला हुआ जाम, मत्येक ७ माशे  
अकोग, पलुआ, मत्येक १॥ माशे केसर, मुरमकी मत्येक १॥  
शुंग पीसकर बनावें ॥

## शियाफ रुधिर का रोकने वाला ।

धुरमा, गुलनार, फिटकरी, तनकारसनाई, मर्दकुन्दर, माजू  
अकाकिया, बराबर लेकर कुट धान पाती में गूषकर बची  
बनावें ।

## जिमाद शोसा ।

बनफसे और बाघूने के फूल, सोये, कर्वा और इसबे के  
बीज, जो का आटा सबको पीसकर थोड़े से पानी में पका कर  
चिल्ली का तेज मिलाकर गुन गुना पीस की जगह लगावें ॥

## फरजजाहाविस्ता ।

कु दुर, इमरुत, दम्बुलअलवेन, मुरमकी, फिटकरी, अनार,  
के छिलक, सरसों के फूल कुट धान कर चारतंग या आरा के  
पानी में घोला कर कपड़ों पर लपेट के रखें ।

## फलदिफित्थून ।

बिना धुआ खूना सोखे भर, पीली और लाल हरताल  
छली, अकाकिया मत्येक ६ माशे, सब को पीसकर अंगूर के  
सिरके में गूष के कुरस बनावें ॥

## माजूनफलाफली ।

काली और सफेद मिरबे, दार फिफिल मत्येक ६ ताज

जब चौथाई जल जावे तो दुगनी शकर ढालकर कषाम करके शर्वत केवड़े की भी यही रीति है उसकी घालको औटाना चाहिये  
**शर्वत फिंजनोश ।**

कच्चे अगूर का रस ४३० माशे सिमाकमाजू, गुलनार, गुलाब के फूल, कुन्दरशासरा, मोथ मत्येक ३५ माशे केसर फिटकरी मत्येक ३॥ माशे लोहे का पैल १३५ माशे दवाओं को कुट कर अगूर के रस में औटावे जब-तिहाई रहजावे तो साफ करके रखदोहे ।

### शियाफ कुन्दर ।

कुन्दर २५ माशे चशुक इज्जत मत्येक १७॥ माशे केसर ७ माशे मेथी के लुम्भाष में शियाफ बनावे । और जब आवश्यक हो तब उसे टपकानों और ना घाव और फुंसियों के पकाना हो तो पट्टी भी बांधें ।

### शियाफ अवियजकुन्दुरी ।

कतीरा बबूल का गोद मत्येक १०॥ माशे निशास्ता ३ माशे कुन्दर ८ जी पीस छानकर इसबगोल के लुम्भाष में बनावे ।

### शियाफ अहमरलीन ।

बला हुमा शार्दना ३५ माशे जलाहूमा तीथा २८ माशे बबूल का गोद कतीरा गुरमकी मत्येक ७ माशे मुमुद कहकश मोती तेजपात मत्येक १४ माशे दम्मुल अखनैन कसर मत्येक ३॥ माशे इसी प्रकार से बनाएँ ।

### शियाफ जंगार ।

जंगार बबूल का गोद सफेदा मत्येक ७ माशे पीसकर बनाएँ ।

### शियाफ गर्व ।

एलुषा कुन्दर इज्जत दम्मुल अखनैन गुलनार सुरा मत्येक १ तोला जंगार ३ माशे पीसकर बनाएँ ।

मे पुराने सिरके में घालकर और औपशों को कूटवान कर  
बिलादे और ४॥ माशे सिकनधीन के साथ खावे ॥

### कुर्सककैव ।

पालकह, जुन्दवैदस्तर, तम, तीनुलपदीरा, बैरुन के  
दिलके मुरमकी, मत्येक १४ माशे अफीम, केसर, पीठा कूट,  
मत्ता हुआ अबरक, मत्येक १७॥ माशे, सफेद मशलाश  
दुकु अनीमून, सीसालियून, खुरासानी अमवायन, सुत्तापीमा  
करफस के बीज मत्येक २१ माशे, गोंदों के पानी में घोलकर  
और सव औपशों को पीस जानकर शहद में घुंघ कर कुर्स  
बनाकर खाया में सुलावे ॥

### कुर्स सुम्बुल ।

पालकह, फिकाह, सरकहे की मट, तम, जराबन्द, तबील  
दारपीनी, शिरायता मत्येक १०॥ माशे, केशर, अनीमून,  
मुरमकी, कटुवाकैट, काली मिरवे, मत्येक ३॥ माशे गुगल,  
मस्तगी मत्येक ७ माशे, पशक १॥॥ माशे, पहिले गुगल को  
खुलावे में घालें फिर और औपशों को कूट जानकर, बिलातें  
और सात माशे खावे ॥

### कुर्स गुलाऊस ।

करफस के बीज, अनीमून मत्येक, ५२॥ माशे, इफसतीन  
७ माशे, तम ७ माशे, मुरमकी, काली मिरवे जुन्द, अफीम  
मत्येक ८॥॥ माशे सपको कूट जानकर पानी में कुर्स बनावे  
और ८ माशे खावे ।

### कुर्स कुहल ।

मुरमा, पोया हुआ शहना, दम्बुल  
माशे धुलनार, माजू मत्येक ७ माशे,

कदविज्ञान ३ तोले, बालकद, इम्पामा प्रत्येक १४ मा  
सोंठ कर्फस के बीज, सीसालियूसरूपी, तज, आसारो  
रासन प्रत्येक ३॥ माशे सबको कूट छान कर तिगुने शहद  
माजून बनाले और ३॥ माशे गरम पानी के साथ खावे ।

### फिलोनिया ।

शकरकरा, फरफियून, बालकद प्रत्येक ३॥ माशे के  
१७॥ माशे, अफीम ३५ माशे, सफेद मिरचे, सफेद बज  
वजन प्रत्येक ७० माशे, कूट छान के शहद में माजून बन  
जधान को जायफल की बराबर, और बड़े को बाकल की ब  
बर, और लहकों को चने की बराबर दें ॥

### कुर्स अम्बरवारीस ।

जरिशक, छाल धुली हुई रेबन्दचीनी, गुलाब के  
बसारा तरबुशिशुक, कासनी और कुशुम के बीज, तुरम  
इन सब को बराबर लेकर के छान कर कुर्स बनाले ॥

### कुर्स माजरीयून ।

माजरीयून मुदब्बर, पीली हरद के छिलके, जो का  
बराबर लेकर शकर मिलाकर कुर्स बनाले और ४॥  
शर्बत गुल के साथ खावे ॥

### कुर्स अनीसून ।

इफसतीन रूपी, आसारोन, फरफस के बीज  
अनीसून कूट छान कर पानी में गुंध कर बनाले और  
जघीन के साथ दें ॥

### कुर्स किन्न ।

जराबद तबील ७ माशे, किन्न के जड़की छाल, पशक  
१४ माशे, संपालू के बीज, गोख मिरचे प्रत्ये २१ माशे

माक दूध का गोंद प्रत्येक ७ माशे वपूर १॥ माशे कूट  
नहर कुलफे और काहू के पानी में बनाये ॥

### कुर्स वौलुहम ।

ककड़ी के बीज १४ माशे निशास्ता, कतीरा, गुलनार,  
क, दम्मुल अखबैन, वपूर का गोंद प्रत्येक ३॥ माशे कूटछान  
र कुलफे या चारतंग के बीज में बनाये ॥

### कुर्स नफसुहम ।

गिजे अर्पनी, कहरवा, वपूर का गोंद दम्मुल अखबैन,  
सिलोचन निशास्ता, कतीरा, अकारिका गुलनार बरगद की  
माशे बराबर लेकर चारतंग और कुलफे के पानी में गूँधकर  
बनाये ॥

### कुर्स तवाहीर मुल्य्यन ।

निशास्ता वपूर का गोंद, सफेद तवाहीर कतीरा प्रत्येक  
३॥ माशे खीरे ककड़ी कदरू के बीज प्रत्येक ६ माशे सुरजबीन,  
१॥ माशे सफेद बसलाचन, १४ माशे कूट छानकर ईसबगाल  
के छुआब में बनाने और ४॥ माशे खाने ॥

### कुर्स तवीशीरकाविज ।

बसलोचन १४ माशे कुलफे के बीज छुने हुए ७ माशे  
गुलाब के कूट २४॥ माशे सफेद चदन, वपूर का गोंद कतीरा  
निशास्ता, शाहयुद्ध, चूके के बीज सब छुने हुये गुलहरी का  
सब जरिशक प्रत्येक ७ माशे गुलनार अकारिका ३॥ माशे कूट  
छान कर सेब या जरिशक के पानी में बनाये और ४॥ माशे खाने ॥

### कुर्स काफूर ।

काफूर २ माशे, गुलाब के कूट सुरजबीन, प्रत्येक ३५ माशे  
खीरे ककड़ी के बीज बसलोचन, गुलहरी प्रत्येक १७ माशे  
के बीज, २४ माशे, कुलफे के बीज २१ माशे, कासनी के

हुआ अकाकिया मत्येक ३॥ माशे, छादन, केसर, मत्येक  
१॥ माशे हसरान ५॥ माशे, कूट छानकर हरे बारतग के पानी  
में गूँघ कर बनाओ और ३॥ माशे, बारतग और कुलफे व  
पानी के साथ खाओ ।

### कुरस गुल ।

बसलोचन, इफसंतोन, बालछक, मत्येक ७- माशे तुरज  
वीन, १०॥ माशे, गुलाब के फूल, मुलैटी, मत्येक १० माशे  
कूट छान कर गुलाब में बनाओ, और ३ माशे या तससे अघि  
खाओ ।

### कुरस कहरुवा ।

कइआ, बुसुद, माती जली हुई कौसी पहाड़ी बकरी के  
सींग जला हुआ, घोषा हुआ शादना, मत्येक १० माशे  
गुलाब के फूल कुलफे के बीज, धनियाँ, सिपाक मुना हुआ  
निशास्ता और बबूत का गोंद, गुलनार मत्येक १७॥ माशे  
बसलोचन, अकाकिया, बरगद की दाढ़ी का बसारा मत्येक  
७ माशे कूट छानकर बारतग के पानी में गूँघ कर गोलियाँ  
बनाओ । और ७ माशे अफीम ३॥ माशे कूट छानकर बनाओ  
और खाओ ॥

### कुरस काकनज ।

ककदी के बीज ३५ माशे, काकनाज १०॥ माशे, कफर  
के बीज, मंग गिले अर्पनी, बबूत का गोंद दममुल अलबैन,  
बस कल बतन मत्येक ७ माशे खाओ ॥

### कुरस जियावीतुस ।

बसलोचन, मुलाहरी का सत, मत्येक १७॥ माशे, कुलफे  
और काहूके बीज, गुलाब के फूल, गिले अर्पनी मत्येक ५२॥  
माशे धनियाँ, चूके के बीज १॥ माशे, सफेद जन्दन, गुलनार,





७ माशे कद्दू के बीज १४ माशे मुलहटी का सत ११ माशे  
कूटछान के इसगोल के लुमाव में बनाये और ७ माशे तक  
खाने ॥

### कमूनी ।

जीरा, मुद्गर, मुद्ग, सोंठ, काली मिरचें, नमक अमनी  
को शहद में मिला के माजून बनाये ॥

### कोहलुल जवाहिर ।

इसकी दो रीति है एक यह कि तालफिरोजी मारक  
शीशा, सफेदा, निशास्ता, मत्येक ७ माशे घोया हुआ शादन  
रसोद शियाफ मामीसा केकड़ जले हुए इकलीमियां, मत्येक ३  
माशे तूतिया बसलोचन दहना करण, मत्येक ४॥ माशे इज  
रूद १४ माशे, सुरमा ७० माशे, कपूर, सोंठ मत्येक १६ क  
१७॥ माशे कच्चे अगर के रसमें घोटे ॥

दूसरी रीति यह है, सुरमा २४॥ माशे, मार्क शीशी १७  
माशे, इकलीमिया नहवी घुली हुई, बुशुद मोती मत्येक १०  
माशे, शादना ७ माशे, केसर १॥ माशे सुरमा बनाये ।

### कुहलअजीजी ।

जला हुआ सुरमा १७॥ माशे सोने और चांदी की इ  
लीमियां, शादना, तूतिया, जला हुआ तांबा मत्येक ७ मा  
पीली हरद के छिलके, तेजपात, काली मिरचें दारफिळफि  
नीशादर, एलुमा, रसोत केशर केकड़ी मत्येक ३॥ माशे स  
१॥ माशे, कपूर, ८ जो मुरक, तीन जो, लोग बचीस जो प  
कर सुरमा बनाये ॥

### कलकलानजगरम ।

रेवन्द, समारागाफिस, अनीमून, बालछक, मत्येक सात माशे

पर लेकर शहद में माजून बनाने और १०॥ माशे ताजे  
के साथ खाने ।

### विच्छू की माजून ।

घसा हुआ पिच्छू १२॥ माशे, भिन्तयान ५॥ माशे सौंठ  
॥ माशे, दारफिलफिल, काली विग्घ प्रत्येक ७ माशे काक  
न १६॥ माशे, जुम्बवेदस्तर १४ माशे, कूटद्यान १२ शहद में  
लाकर बनाने और १६ जो खाने और छहकोंछो ८ बोर्दे ॥

### विच्छू के जलाने की रीति ।

मोटा शीशा कपडौनी परके, पिच्छू को उसमें छोड़ें, वद  
रके गरम तनूर में पररात बसेगखें, और सवेरे निकालें ।

### साजून हजरुलयहूद ।

कहदू खीरे कहदी और खरगूने के बीजों की मिंती प्रत्येक  
७॥ माशे हजरुल यहूद असील १७५ माशे कूट खानकर  
पद में मिलावें और ७ माशे से १०॥ माशे वैकू गानें ॥

### साजून कमीला ।

कमीला कावली हरद-महेदा, व्यामला सुरगुद, मोंठ वरा  
पर लेकर कूट खानकर मिश्रने शहद में या कद के कपाव में  
मिलाकर माजून बनाने और साथ माशे खाने ।

### मतबूख मुलख्यन ।

घन्नाव सहसोडे नीलीफर खैरु के बीज वनफशा बापूने  
के कूट आमलतास का शीरा सुरगधीन रोगन बादाम पानी में  
मोटाकर मल के खान के पिछने ।

### सुफरह संगीर ।

गावजुरा मूंगे की मट घतिपा मोती सफेद बरमन सुरंग  
रेशम सफेद गला हुआ कुलफ के बीज १

छिले हुए आमले प्रत्येक ३५ माशे तुम्बुद, सफेद, विलफाय  
इफ्तीमून वस्तुखुद्दस प्रत्येक १७॥ माशे कूट छानकर दुगने,  
के कवाम में माजून बनायें ।

### लोहे के मैल का माजून ।

काली हरद, आमला, काली मिरघे, सोंठ, दारफिलफिल,  
मोथा शेंतरज घालछह प्रत्येक ३५ माशे गदने और सोये के  
बीज प्रत्येक १४ माशे जाड़े का मैल धुला हुआ ३५० माशे  
कूट छानकर गोगन बादाम मिलाकर शहद में मिलावे फिर  
घुश्क ७ माशे मिलाकर चीनी के बर्तन में रखें ।

### लोहे के मैल की धोने की रीति ।

मैल को १४ दिन अंगूर के सिरके में भिगोवें और मिट्टी  
वसमें न गिरने दें फिर उसे सुखाकर काम में लावें ।

### माजून लबूब ।

बादाम अखरोट हव्वकतु म हब्बुलवतम हव्वसुनोवर हव्व  
जलम फिन्दक पिस्ता नारियल ताजा हव्वफिलफिल इन सब  
की मिंगी लशकराज सफेद दोनों तोदरी और बहमन छिले हुए  
तिल खरबूजे भिरजीर पियाज शलगम रतवा हिलयून इन सब  
के बीज और सोंठ दारफिलफिल कबावा तज दारचीनी शका  
कुल कुलीजन सबको बराबर लेकर कूट छानकर तिगुने शहद  
में माजून बनावें ।

### माजून बुजूर ।

माजर शलगम पियाज मूली हिलयून रतवा भिरजीर इन  
सब के बीज हव्व सुनोवर हव्वफिलफिल ताजतोदरी हव्व  
जलम भीलीतोदरी के बीज लिसानुल असाफीर शकाकुल  
बहमन बुभीदान पीठाकूट सोंठ दारफिलफिल होंग हिरफ, सब

( २६६ )

बराबर लेकर शहद में माजून बनाने और १०॥ माशे साजे  
ए के साथ खाने ।

**विच्छू की माजून ।**

जला हुआ विच्छू १२॥ माशे, भिन्तयान २॥ माशे सोंठ  
३॥ माशे, दारफिलफिल, काली विन्च प्रत्येक ७ माशे काक-  
नज १६॥ पाने, जुन्ददे-स्त १४ माशे, कुन्धानर शहद में  
मिठाकर बनाने और १६ चौ खाने और लटकों को ८ जो दें ॥

**विच्छू के जलाने की रीति ।**

मोटा शीशा कपड़ीनी करके, विच्छू ओ उसमें छोड़ें, पद  
करके गरम तनूर में एक रात बसे रहें, और मवेरे निकालें ।  
**माजून हजरुलयहूद ।**

फतद् खीरे कट्टी और खरपूने के बीसों की विंगी प्रत्येक  
१७॥ माशे हजरुला यहूद समीक १७७ माशे छूट खानकर  
शहद में मिठावें और ७ मासे से १०० माशे तक खाने ॥

**माजून कमीला ।**

कमीला कावली हरद-बरेदा, जामला हरपुद, सोंठ बरा-  
बर लेकर छूट खानकर भिगुने शहद में या कर् के कवाब में  
मिठाकर माजून बनाने और साप माशे खाने ।

**मतनुख मुलख्यन ।**

सन्नाय बडसोडे नीलीफर खैर के बीस बनफरा पायूने  
के फूल खमलवास का शीरा मुरंजबीम रोगन बांशप पानी में  
भीठाकर मल के खान के पिछने ।

**मुफरह सगीर ।**

गायजुबां पुने की मद घनियां मोती बरेद बरमन ह  
क हिश के करवरा रेशम सफे ला हुआ इसके के बी

तोले कपूर ६ माशे कूट छानकर हरद के मुरखे के शीरे में  
माजून बनावे और ५ माशे खाने ।

### मुर्फरह दिलकुशा ।

मूंगे की जड़ कहकवा नरकचूर दरोनज प्रत्येक ३॥ माशे  
७॥ माशे कच्चाकद काबली हरद और पिस्ते और तुलसी के  
दिलके कच्चा रेशम कटों हुआ पोती प्रत्येक ७ माशे धनिया  
बसलोचन प्रत्येक १०॥ माशे दोनों बहमने प्रत्येक १७॥ माशे  
माशे गावजुर्बा शाहतरा बालगू सबको कूटछान के अनार चूरा  
और जरिशक का पानी प्रत्येक ३५ माशे लेकर सफेद कन्द  
शर्वत बनफशा प्रत्येक ४०५ माशे पिछाकर कवाय बनावे फिर  
औषधें डालकर माजून बनावे ।

### मुलख्यन सुवारिक ।

अमलतास इपली कासनी के पानी वा लोके पानी  
घोलकर पिछावे और थोड़ा सा जो रोगन पादाप या रोग  
गुल पिछावे तो अति लाभदायक होगा ।

### मरहम बासलकून ।

रातीनज जिफत चर्बी बराबर लेकर देवक काकस मिला  
कर मरहम बनावे ।

### मरहमसुल ।

जावशीर जंगार गन्दबिरोजा मुरमकी मुरसक प्रत्येक  
माशे कुन्दुर जराबदतबलि प्रत्येक १०॥ माशे मुर्दासंग १५॥  
माशे चरक २४॥ माशे गुग्गुल सफेद मोम रातीनज प्रत्येक १  
माशे गुग्गुल को सिरके में घोलकर और बाकी औषधों को जै  
के तेलमें ६०८ माशेहों पिघलाकर सबको मिलाकर मरहम  
बनाने का मरहम ।

चूने की पानी में घोले फिर निवार कर दूसरा और पा

हालकर इसी प्रकार ७ बार करें फिर सुखा कर रोगनगुल पा  
विन्नी के तेल में मिलाकर गुलतानी मिट्टी हालकर मरहम बनावें

**मरहम काफूर ।**

सफेदे के मरहम में कपूर मिला देने से बन जाता है ।

**सिरके का मरहम ।**

सुरदासग १॥ तोले पीस के ३ तोले शर्कर के सिरके और  
ते तोले जैत के पुराने तेल में हालके हलकी आंग पर पकावें  
और घोटते रहें कि सुरदासग जपने न पावें जब वह जलके  
हाला हो जावे और यह मरहम ठीक हो तो उसे निकाले ।

**मरहम सफेदा ।**

रोगनगुल १॥ तोले मोम एक तोले पिघलाके थोड़ा सा सफेदा  
मिलावें इसना कि रोगन और मोम को चलाके फिर अडे की  
सफेदी मिलावें और कभी थोड़ा सा कपूर भी मिला लेते हैं ।

दूसरी रीति इसकी यह है कि सफेदा और सफेद मोम  
रोगनगुल मिलाके मरहम बनालें ।

**मसूर का मरहम ।**

मसूर बाधूने के फूल नाखुना खेरू सब को पानी में  
ओटावें जब गाढ़ा हो जावे तो अडे की भरवी और मुर्गी की  
चर्बी मिलाके मरहम बनालें ।

**सुरदासग का मरहम ।**

सुरदासग सफेदा केसर फिटकरी पीसकर रोगन बादाम  
में मोम पिघलाकर वह औषधें मिलावे ।

**काला मरहम ।**

जैत तेल १२१५ माशे लें उसमें सुरदासग ३ तोले पीस  
कर मिलावें और ओटावें कि काला हो जावे फिर कदर

दम्भुल अखचैन, इंगरूत, प्रत्येक ७ माशे पीसकर मिलावें ।

### सरहम जंगार ।

इंगरूत वशाक प्रत्येक ६ माशे जंगार तोलाभर सिरके में पीस कर शहद गिलावें ।

### नौशदारू ।

गुलाब के फूल २१ माशे लौदकफी १७॥ माशे लॉग मस्तगी तगर बाबलखड़ प्रत्येक १०॥ माशे भरम्ब घसराया छौंर और बड़ी इलायची के दाने, जायफल, तम, केसर, प्रत्येक ७ माशे कूट छानकर अलग रखें और ताजे आंवले दूध में तीन रात दिन भिगों और हर रोज दूध बदल डाला करे फिर पानी से धोकर ताजे पानी में छीटावें जब भली भांति गला जावै तब कपड़े में बांध कर मारा पानी निचोड़ डालें और भली भांति पीसकर घनघे से एक सेरभर लें फिर दो मेरशहर या कन्द के कषाम में मिलाकर पकावें फिर वह औषधें पिसी छनी हुई घसमें मिलाकर चीनी या चांदी के घरघन में रखें और ४० दिन तक रख छोड़े फिर ३॥ माशे से १०॥ माशे तक खाने जोर इसका दो वर्ष तक रहता है । जब तक नहीं बिगड़ता है ।

### नाकूहामिज ।

बनफशे के फूल १७॥ माशे इमली खिल्ली हुई ३५ माशे नीलोकर के फूल तीन आलू बड़े सात पीले आलू और घनाब प्रत्येक १५ माशे पानी में भिगोकर छानकर पिलावें ।

वनी हुई औषधें समाप्त ।

## औपधियों की कैफियत ।

अब हम तुम्हें कैफियत उन औपधियों की बताते हैं जो हम पुस्तक में बहुत काम आई हैं परन्तु तुम्हें इतना समझ लेना चाहिये कि औपधियों कैफियत वही औपध की गरमी ठह और तभी और खुरकी है इसीमें ने इन चारों के चार दर्जे उद्गाये हैं ।

जो पीछे पीने से कुछ न मालूम हो परन्तु चार २ अधिक खाने से गरमी ठह आदि मालूम हो तो यह पहिला दर्जा है इसकी जगह हमने १ का अंक लिखा है । और जो असर मालूम हो परन्तु मनुष्य के किसी काम में हानि न करें वह दूसरा दर्जा है इसकी जगह २ का अंक लिखा है और जो मनुष्य के कामों में हानि हो परन्तु मार न दावे वह तीसरा दर्जा इसकी जगह ३ का अंक लिखा है । जो कामों में हानि हो मार दावे तो चौथा दर्जा है इसकी जगह ४ का अंक लिखा है ।

और हर दर्जे में तीन २ कृतबे हैं आदि मध्यम अन्तर्गत हर औपध में इन कृतबों को जानना कठिन है और जो उन्हें बाहर लगाई जाती हैं उनमें तो आपत्त ही कठिन है ।

हर औपधों की गरमी पहिले दर्जे से नहीं बढ़ती क्योंकि गरमी अधिक हो जानीगी तो तभी जाती रहेगी और यह पान रखना चाहिये कि दर्जे और कृतबों को ऊपर लिखे हैं उनमें इसीमें लोग आपस में कुछ अन्तर भी रखते हैं । हिन्दी बोलों ने औपधों के दोही दर्जे उद्गाये हैं पहिला जिसमें पहिला और दूसरा दर्जा आगया और दूसरा जिसमें तीसरा और चौथा दर्जा आ जाता है ।

हमने आगे गरम की जगह [ग] और ठंडे की [न]



और तर की जगह ( त ) और खुशक की जगह ( ख )  
लिखा है ।

### पहिले दरजे की गरम औषधें ।

चना लादन राख फीकी जंगली शाहूरा एलुआ इफसतीन  
बावूना, तेंदुआ, कर्ता के बीज आदि ॥

### दूसरे दरजे की गरम औषधें ।

करफस, कुंदर, मस्तगी, गर्व की जड़, सफेद और काली  
भाजरीयून की जड़ बादरूज जरानंद तबील और बुदहरज  
शहद बिगयता केसर अनसली सोया बिरभासफ नमक फरा-  
मियून गश्क सज्जारस शहद के छुरे का मैत इसका कस  
बिलसान चटगन के बीज मेथी कुसाचल हिमार् का बंसारा  
धुन के पेठ की छाल आदि ।

### तीसरे दरजे की गरम औषधें ।

कमाजरीयूस दीनामरुषा नाना जली हुई फिटकरी  
पुरानी शराब गारइस्वन्द मूली हम्पामा अनीसून इफतीमून जाब  
शोर हाशा तज शहिअरमनी पहाड़ी करफस अजबायन बब,  
खरनूरनिवती संधालू के पत्ते और बीज तगर पहाड़ी पोदीना  
सुहाब सिकंजबीन दूध जले हुए घाल फोहनजन न डरी करोया  
फाशिम अन्नगोट आदि ।

### चौथे दरजे की गरम औषधें ।

लहसन पियाज जुषदुल्लबहर जंगली सुहाब गदना दूध घाले  
पेहो के फीड़े फरफियून कूठ कूतगन आदि ।

### पहिले दरजे की ठंडी औषधें ।

ताजे छुआरे बिसफायन बाजरा कगनी खशखशा बनफरी  
परो बिना घुला अकाकिया पुल्ल नैके बरो नीलपनीर

काँच, सरसक, अमरुद, नाशपाती, निशास्ता, हिन्दवा,  
माभीसा, ताँबे का घुरादा शिंगरफ का सेल, आदि ॥

दूसरे दर्जे की ठंडी औषधें ।

तरघून, ईसबगोल, ककड़ा जैतून, इरामाख, कन्दू, बारतग,  
मूंग, ककड़ी, हिलगून के पत्ते, शफवाखू रांगा, सिमरक, घत  
रुज के छिलके आदि ॥

तीसरे दर्जे की ठंडी औषधें ।

कुलफा, खोनियाँ, चूका, चतरुन, बड़ी और छोटी सदा  
बहार, काली खशभाश, खालसाग, फेंछतर, मलनार, आदि ॥

चौथे दर्जे की ठंडी औषधें ।

अफीम, शुक्रान, पदूरा, काली मानरीयून, और सब  
औषधें जो घुन करने वाली हैं ॥

पाहिले दर्जे की खुश्क औषधें ।

मुलहटी, पीठा बादाम, इसराग बिसफायम, खरबूजे के  
बीजों के छिलके, कसर, मोपां, कुन्दर, अमरुद, नाशपाती,  
गाखरू नीलकी जड़ पाबूना, बटंगम के बीज, हनुलगाए, छोटी  
और बड़ी सदाबहार, अकरोट का सेल, सोफ, सावर जोके  
सबू आदि ।

दूसरे दर्जे की खुश्क औषधें ।

मूली, जुन्दवेदस्तर, घुन, बालछड़ शाहबरा, मस्तगी शरद,  
सुरमकी, बंगली बैंगन, चाय, नीलोफर की जड़ बिलसोन,  
मरायद, जित्त शीतप शाहदानज, पिरायता, करसना करंद  
मकड़ी का माला, जाबशीर का दूध आदि ॥

तीसरे दर्जे की खुश्क औषधें ।

लहसन, अनीघुन, र  
मी  
तगर, मलनार, रिंग, २

जूफा, तन, मरू, दीनापरुषा, भासन, जायफल, सातर, मुलुत  
अकाकिपा, इफसतीन, अभल, पाणरीयून की नद, बिलसाम,  
नमक हाशा, चूका, सतरुन, दारशीशआन, नतरुनवरी मूली  
का तेल, जला हुआ कैकषा, सुरमा, वागी सुदाष, जली हुई  
फिटकरी, कलौंजी, जले हुए धात, एलुमा, सिमाक, फादा-  
निया कैसर, करोया, बच, मुरक तरामशी, अजवायन, आदि ।

**चौथे दर्जे की खुश्क औषधें ।**

राई सुदाषवरी, गन्दना, अफरीषियून कुतरान अफीम,  
धतूरे के फल आदि ।

**पाहिले दर्जे की तर औषधें ।**

रोगन गुल्ल, कोहू पालकगावनवा, खुसपतुस्सालिष शफ-  
वालू बनफरो के पत्ते, चिरोंजी इजीर, आदम, बोदरी, सौसन  
का चसारा ॥

**दूसरे दर्जे की तर औषधें ।**

कुळफा, लोनिया, तरपूज, कदद, मिशमिश, अस्पगोख,  
पलवल ॥

**अ, ई, उ,**

अस्पगोख—ठ, ३ व २, पिचो को ठीक करता है ॥

अनीशून—ग, २ ख ३ कफ को ठीक करता है ॥

मुलहदी—ग, २ ख १ कफ को ठीक करता है ॥

इजीर—ग, १ त, २ सौदा को ठीक करता है ॥

इस्पंज—ग, १ ख, २

इजरुद—ग २ घत, ख, २ आदि में ॥

अकाकिपा—ठ २ क २ याठ १ ख ३ रुबिर के दस्तों  
को खाम करता है ।

बस्तसुददस—ग १, ख १, सौदा का खुराक है ॥

इक्षसवीन—ग १, क ३, पिचों का जुल्लाव है ॥

इज्जात—ठ १, स, २ पिचों का जुल्लाव है ॥

इक्षीमून—ग ३ ख ३ सौदा का जुल्लाव है ॥

आयला—ठ २, ख ३, आदि में सौदा का जुल्लाव है ॥

इस्फानाख—अर्थात् पाक ठ १, स, १, आदि में पकटी में पिचों को निकालता है ।

अयहल—ग २, ख २,

अनार पीठा—ठ, त १, दिखको पुष्ट और खुश करता है

अबरेशम—अर्थात् कषारेशम ग १, ख १, दिखको पुष्ट और मसग्न करता है ॥

बशना अर्थात् खरीला—ग, ठ मिगर को पुष्ट करता है ॥

अन्नकावचीष—ग २ ख २, मिगर को पुष्ट करता है ॥

बशनान—ग २, ख २ या ग २ ख ३

इस्कुलूकन्दरीयून—ग १, ख २,

वरज अर्थात् चाबल—इसको कुछ लोग पहिले दर्जे का गरम बतलाते हैं और कुछ लोग ठंडा करते हैं कुछ मोतदिल जानते हैं और दूसरे दर्जे का खुरक है, और कुछ लोग यह कहते हैं कि इसका असर मिला हुआ है और यही बात ठीक मालूम होती है ।

अम्बर—ग २, ख १,

कद अर्थात् अगर—ग २ अंत में ख २,

चन्नाब—गरमी और सर्दी में मोतदिल है और तरों में

इसमें पाई जाती है ॥

इनधुस्सालिष अर्थात् मकोह—इसके पानी में गरमी है

इसको लोग गरम और ठंडी पताते हैं ॥

अस्ल अर्थात् शहद—ग २, ख १,

इन्कुलवतम—गोंद है मतपके पेड़का, ग २, ख २

बीदाना—ठ २, त २, पिछों को ठीक करता है ॥

बादिपान—अर्थात् सौंफ ग ३ आदि ख ३ अतमें कफ को ठीक करता है ॥

बिरजास्फ—ग ३ ख ३ आदि में कफ को ठीक करता है ॥

बाधुना—ग ख

वेद के पशे—ठ, त.

वेद के फूल—ठ, २ त १

भग—ग ३ ख ३

बादरज बोया—अर्थात् पिछी लोदन और कारसी में इसको वालगू कहते हैं ग २ ख २ मध्यम में ।

बूगअर्पनी—अर्थात् खारी नीन ग ३ ख ३

बिहार बिही—अर्थात् बिही के ताजे फूल मीठा ठंडा और तर होता है और मोतदिल भी कहते हैं दिला और भेजे और भेदे को पुष्ट करता है और भेजे में गरमी नहीं चढ़ने देता और गरम अफकान को दूर करता है ।

बिहारसेव—इसका गुणकन्द दिला और भेजे की कमजोरी को लाभदायक है ॥

बिहार अपरुद्ध—दिल को पुष्ट और मसज करता है ।

बिलादुर—अर्थात् बिलावा ग ४ ख ४ भेजे को पुष्ट करता है ।

बुदुक—ग १ ख १ भेजे को पुष्ट करता है ।

बुसुद—ठ १ ख १ दिला को पुष्ट और मसज करता है ।

बहमन—सफ़ेद—ग २ ख २

बहमनलाल—ग ३ दिला को पुष्ट और मसज करता है ।

बादकज—ग २ ख १ दिला को पुष्ट और मसज करता है ।

बापबिहग—ग. २ ख २ अन्त में

बादकज—अर्थात् गोह की बीठ ग, २ ख २

प,

परसियावशा—अर्थात् इसगाम, मोचदिल ग, ख,

त,

पयकशुस—ग, १ ख २ सटे हुए कफ को रगोंसे निकालता है मुख्य धीन को कहते हैं, इसकी मगद तु लिखा है।

खरबूजा—ग, १ त, २ सौदा को ठीक करता है।

मरु—ग, २ त २, सौदा को ठीक करता है।

साया—ग ३ अन्त ख २ आदि छलवी में कफ को निकालता है

गात्रा—ग, २ त, २

भूकी—ग ३ ख, २ छलवी में कफ को निकालता है ॥

द—ग, ३ आदि ख, ३ अंत में कफ का उद्घाट है।

रहिन्वी—अर्थात् इसकी, ठ १ ख २ पिछों का उद्घाट है।

गधीन—ग, १ त, १

गेल—अर्थात् पान ग, २ ख ३

म—ठ १ आदि ग २ अंत

ज, ख

वेदस्तर—अर्थात् दरवाई कुचे का फोटा ग, ३ अन्त ख, २ त १ ख २ आदि।

गर—अर्थात् गुलनाग, ठ २, ख २ आदि में।

गर—अर्थात् मिरबिसी, ग २ ख ३ आदि में दिख को पुष्ट और मसज करती है।

ख—ग २ अंत; ख ३, भिगर को पुष्ट करता है।

गिन—अर्थात् केशर, ग १, ख-१।

इला—ग २, ख २ अंत में।

ख—अर्थात् सोंठ, ग ३ ख ३।

जरम्पाद—अर्थात् नरकपुर ग २ स २ अतः दिकको पुष्ट  
प्रसन्न करता है ।

जाक—ग ३ स ३ ।

क्षिप्त—ग, स

जरीनज—अर्थात् हरताल पीली ग ३, स ३, और लाल ग ४ स ४

बिनार—उ, व

ह

हुजम—अर्थात् रसीत, गरमी और ठंड में पीतदिक है स २ ।

हिलतीत—अर्थात् हींग म ४ आदि स २ अतः ।

हन्बुल मुलूक—दूध बसका ग ३ स ३ और पत्ते और दाने  
उसके म ३, स ३, अतः में ।

हन्बुलनील—अर्थात् काकादाना ग ३ स ३ कफ का जुल्माव है ।

हुरमुक—अर्थात् हस्फन्द म ३ स ३ कफ का जुल्माव है ।

हमरलानबर्द—ग १ स २ सौदा का जुल्माव है ।

हजर अरमनी—ग २ स २ सौदा का जुल्माव है ।

हम्पामा—ग ३ स ३ भिगर को पुष्ट करता है ।

हन्बिलसान—ग २, स २ अतः में भिगर को पुष्ट करता है ।

हमकसयहूद—ग १ स २

हलैलानर्द—उ १ अतः, स २, पित्तों का जुल्माव है ।

हलैला काबिली—पीतदिक ठंड में स १ सौदा का जुल्माव है ।

हलैला काली—उ १ पक्ष्म, स १ सौदा का जुल्माव है हलैला  
हरद को कहते हैं ।

ख

खुरफा—अर्थात् कुलफा, उ ३, व २ पित्तों को ठीक करता है ।

खुरारैन—अर्थात् खीरे, ककड़ी के बीज, उ २ व २ पित्तों को  
ठीक करता है ।

करक—अर्थात् कुटकी, ग, ३, ख ३

किरत—अर्थात् ईट, ग २, ख ४

कपारशम्बर—अर्थात्-अमलतास, ग १ त १ ।

लिसकदाना—अर्थात् कठ, ग, २ ख १ अथर्वे कफका बुझाये

सक त, ठ

लिसक—अर्थात् गोमरु, ग, ख, या, ठ, ख, या मौतदिख ।

लुरकला—ग, त,

द

रम्भुल अलघैम—ठ ३, ख ३,

रमागजानघरी का ठ, त, भेजे को पुष्ट करता है ॥

रराभ—अर्थात् सीतर ग, ख, १, भेजे को पुष्ट करता है ।

रतोनज—ग ३, ख ३, बिलको पुष्ट और मसज करती है ।

र

रता—[ तुलसी या नामधो ] ग १, ख १,

रत—ख ३,

रामन केसर—ग २, ख १, भेजे को पुष्ट करता है ।

रिवास—ठ, २, ख २, दिख को पुष्ट और मसज करती है ।

रामनजर्द—[घी] ग १, त १, अथर्वे पुराने में खुरकी आजायी

स

रम्भुलकीक [बालछट] ग २, ख २, अथर्वकफको ठीक करती है

रिपिस्ता—[मिहसौदा] मौतदिख गरपी और ठंड में, त १, खीदा

को ठीक करता है ।

रम्भुस—(मुसी) ग १, ख १,

रिरका ठ २ ख २,

रिरजान—ग ३, ख २ ।



सोद—( योया ) ग २, ख २, ।

सकमूनिया—ग ३ ख २, अंत पिछों का जुल्लाव है ।

सनायमकी—ग २ अ त ख १. सौदा का जुल्लाव है ।

सुझाव—ग ३, ख ३, ।

सलीखा—(तज) ग २, ख २, अन्त. मिगर को पुष्ट करती

साजिज—(तेजपात) ग ३ ख २ ये ३ को पुष्ट करता है ।

सफाक—ख, ४ ग १ ।

सरेश—ग २, ख २ ।

सरता—( केंकड़ा ) ठ २, ख २ ।

संगयशम—ठ २, ख २ ।

सरो—ग १, ख ।

सलख हैया—[ केंचली ] ग २, ख २ ।

सन्दल सफेद और पीली ठ ३, ख २. और लाकठ २ ख  
पिछों की ठीक करता है ।

सिधू [ पलुआ ] ग ख ।

सातर—ग २, ख, २ अ त ।

समग—[ बबूल का गोंद ] ग, ख २ ।

सावन—ग ३ ख ३ ।

बंसलोचन—ठ २, ख ३, दिल को पुष्ट और मसज करता  
है ।

शूनीज—[ कलौजी ] ग ३, ख ३ ।

शिव—[ फिटकरी ] ग २, ख ३ ।

शाहतरा—ग, ख २ ।

शुक्राई—ग २, ख २ ।

शीरस्त्रिस्त—ग १ अ त और मोतदिल त. ख ।

शहमबकायन—ग ४, ख २ कफ का जुल्लाव है ।

शकर-ग१, त१ अ तमें और पुरानी, ख  
 शीर भेद-ग, त भेजे को पुष्ट करता है  
 शकाकुल-ग, १ त२ दिल को पुष्ट और मसम करता है  
 शादना-उ, १ अ त ख२

ग

गारीकूल-ग१, ख२ कफ का जुल्लाव है  
 गालिया-ग, ख भेजे को पुष्ट करता है  
 गाफिस-ग१, ख२ भिगर को पुष्ट करता है  
 गाबनबां ग१, ख सौदा को ठीक करती है  
 गुलबनफसा-उ१, त१

गुलाब-उ, या, ग

गुलाब के फूल-उ१, ख, २ भेज को पुष्ट करते हैं

गजमानज-( भाज ) ठ१ ख, २

गावरस-( बाजरा ) ठ१ ख२

गुलनीलोफर-ठ१, त२

गिल्लेमखतुप-उ, २, ख, २ दिल को पुष्ट और मसम करती है

गिल्लेमखतानी-ग ख

फ

फिरंजपुरक-( रामतुलसी ) ग२, ख२ दिल को पुष्ट और मसम  
 करती है

फादानियां-गरम दिल को पुष्ट और मसम करता है

फरफियून-ग ३ ख३

फिमन फिरत-( सभांलू ) ग२ ख२

क

काफला-[ इलायची ] ग२, ख२ खोरी ग२, ख२ कफ  
 को ठीक करती है ॥

मी.

करनफल- [ लोंग ] ग३, ख३

कुरत- [ फूट ] ग३, ख३

कलकतार- ग३, ख३

कन्तूरीपून- बड़ी, गर अत ख३ छोटी ग३ ख३ कफ

जुल्लाब है ॥

कशर चतरन- [ खिलाके बीजारेके ] ग१ ख२ दिखको पुष्ट

मसज करता है

कुसावलहिमार-

जुल्लाब की औपध है

कमीला- गर ख२

कासनी- ठ२ ख२ पिछों को ठीक करती है ॥

किशनीज- ( धनियां ) ठ२ ख२ पिछों को ठीक करती है

काहू- ठ३ ख३ अत पिछों को ठीक करती है ॥

कमून- ( जीरा ) ग२ ख३ कफ को ठीक करता है ॥

कुन्दर- ग१ ख१

कुन्दुश- ग३, ख३ अत

कद्दू- ठ२ ख२

काफनज- ठ२ ख२

कवावा- ग२ ख२

कहूवा- मोतदिल गरमी और ठंड में ख दिखको पद  
मसज करता है ॥

करम्ब- ग१ ख२

करोया- ग२ ख२ मेदे को पुष्ट करता है ।

लु

लाप- ठ२, ख३ पिछों का जुल्लाब है

लाल- ग१ अत त२

गरी और ठंड में ।

बाह—ग २, ख ३, या ग १, ख २,  
 छागिया—ग ४, ख ४,  
 छोवतवरवरी—ग २, ख २,  
 म

मापीरा—ग ३, ख ३, या त

मुनका—ग २, ख ३,

मुस्क—ग ३, ख ३,

मुस—ग ३ अन्त, ख २ अन्त

गरजनजोश—[ दोनापकवा ] ग २ अन्त ख १  
 माहीनहरण—ग ३, ख ३, कफ का जुल्गाव है, इस में से ब्याल  
 बाँपर जाती है।

मस्तगी—ग २, ख २ अन्त

मिवाह निफती—[ नमक दुर्गपवाला ] ग ३ ख ३ कफ और  
 सोदा को निकालता है ॥

मोप—ग २ आदि में

मोती—ठ २ ख अन्त दिला और भोजे को पुष्ट करते हैं ॥

मुर्ग—ग १ अत मोतदिल तरी में भोजे को पुष्ट करता है

मिशकतरापशी—अर्थात् पहाड़ी पौदीना ग ३ अन्त मेदे को  
 पुष्ट करता है ॥

मुर्वासग ग ३ ख, ३ बिप है ऊपर लगाने से अच्छा पाँस बरपस  
 होजाता है ॥

न

नमफ—ग, २ ख ३

नानकुलाग—[ खुन्वाजी ] ठ १ त १

नानकवाह—[ अमवापन ] ग ३ ख ३ आदि में

नारन—पीले धिलके और फूल वस के ग २ ख २

नारंग की सड़ाई—ठ २ अंत ख १

नारंग के छिलके और बीज—ठ २ ख भोजन को पुष्ट करता है।

नारदीन—ग २ ख भिगर को पुष्ट करता है।

नौशादर—ग ३ ख ३ भोजन को पचाता है, मेदे और आंतों से मवाद निकालता है।

व.

बरक चांदी के—ठ १, का १, दिल को पुष्ट और प्रसन्न करते हैं।  
बरक सोने के—पोतदिल और गरमी रखते हैं दिल को पुष्ट और प्रसन्न करते हैं।

य.

याकूत—पोतदिल गरमी और ठंड में खार दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है।

इतिसम्पूर्णम्

दवा देने का वर्णन

रोगी के हाल-अवस्था और शरीर के स्थान के अनुसार औषधें देनी चाहिये, और जो वस्तु भोजन में खाने के योग्य हो उन्हें भोजन में खाना चाहिये, और जो दवा की तरह पर खाने पीने और लगाने के लिये हों उन्हें वही प्रकार से काम में लाना चाहिये अर्थात् जो औषध खाने की हो, उसके लगाने से कुछ लाभ न होगा।

वह औषध जो रुधिर के बिगाड़ को ठीक करें

चाहे वह बिगाड़ केवल रुधिर में हो या किसी और मवाद के निकालने से हो।

ने को रोकने वाली औषधें ।

मासगा आर काहू के बीज अनिया गुलाब के फूल नीबू  
का रस सिकनबीन सन्नाप चन्दन और कपड़े का शरबत ॥

गाढ़े रुधिर को पतला करने वाली औषधें ।

आलूबुखारे का पानी सोंफ का अर्क शहरे का अर्क  
सिकनबीन पावला अस्त ॥

पतले रुधिर को गाढ़ा करने वाली औषधें ।

बिन्ती छोटन रेहां के बीज इसराम काबिली हरद और  
बाकी औषधें रुधिर को ठीक करने वाली यह हैं ब्रह्मदही  
आमनूस और शीशम की लकड़ी नीम के फूल और पसे नीलो-  
तर और बनफसे के फूल गाजर का शर्बत गुन्दी कव-  
गल नीलकंठी ।

पित्तों की ठीक करने वाली औषधें ।

ईसबगोल बीदाना कुकफा व कासनी खीरे ककड़ी के बीज  
निया सफेद चन्दन कपूर काहू के बीज बनफसे आलू नीलो-  
तर और चन्दन का शर्बत कुर्त कापूर कुर्तवाशीर मुलप्यन  
सर्ववाशीर काबिज ॥

कफ की ठीक करने वाली औषधें ।

सोंफ अनीसून खिली हुई मुलहरी जीरा दासचीनी मुनके  
लकड़ खैर सुन्नाबी इलायची बिरभास्क माजून सीर माजून  
मासफा सोंठ की माजून नवारिश जालीनूस ।

सौदा की ठीक करने वाली औषधें ।

मिंसौदा गावनवां लरभूमे के बीज मुलहरी नीर मुनके  
लीमून कनीचे के बीज सिकनबीन इफतीमून माजून मुक-  
वाकूवीबुखली नीशवारु मुकर्रर दिलाकशा शर्बत  
विगवनवां ॥

**गाढ़े मवाद को पतला करने वाली औषधें**

अवहल, इसकील, चूका, सिरका, वस्त्रखुदूस, हासलान, चकहवान, इजीर, जुन्दवेदस्तर, राई, करतम, लसरकदे की जड़, संभालू, बाघूना, दारचीनी, मोथा, जादा सूखा जूफा, कूट, सातर, पोदीना, जगवन्द, अजघायन, शोरा, अकरकरा, सिफंधीनज, सुहाव नम्भाम, ईरसा, हुफ, मशकत रामशी, बिस्ती लोटन, करदमाना, कमाज

**मुज्जिशें ।**

यह औषधें हैं जो बिगाड़े हुये मवाद को पकाकर निकालने के योग्य कर दें, अर्थात् पतले को गाढ़ा करें जैसे लशा काहू के बीज या गाढ़े को पतला करें जैसे सूखे जूफा हाशा का जुशादा, या कड़े और जमे हुये को नरम करें, अलसी और मेथी के लेप से कफ और सौदा की सृजन होजाती है ।

**पित्तों की मुज्जिशें ।**

वन्नाय गुलाब के फूल बनफरो और नीलोफर के शाहतरा कासनी के बीज और जड़ मकोह सिकनधीन तुरंत साक्षशकर शर्वत भालू गुलफद आफताबी ।

मुनक्के, खैरू के बीज सोंफ अनीसून मुन्दही इसा शुकाई पीता इजीर गुलाब के फूल गुलकन्द सिकनधीन ।

**सौदा की मुज्जिशें ।**

निहसौदे वन्नाय गावजया बिस्ती लोटन बिस्ती हुई इ इतराज वस्त्रखुदूस शाहतरा शुकाई पादावर्द सोंफ गुधीन गुलकन्द ।

**जुल्लारों की औषधें ।**

यह औषध पुरे मवाद को दस्त से निकास देती हैं ।

### पित्तों के जुल्लाव ।

इमली, आलुबुखारे, तुरंगबीन, शीरखिस्त सनाय के पत्रों पीछी हरद पत्रफले और गुलाब के फूल कशूय के बीज अमलतास, हफसवीन सकुमूनिया शाहवरा पल्लवा लखलाय शिपरप मानरीयून ।

### कफ का जुल्लाव ।

वकायन फन्तूरीयून माहीनहरन गारीकून फाला दाना सुधुद हगुल खिसकदाना बिसफायन कलोजी हुकाई मीठी सुरजान रेवन्दखोनी सौठ गूगल वेदंजीर के बीजों की गिरी और तेत अमलतास हग्न अयारिज हग्नपुपवा तीन फरफियून माहदाना कुसावख रिपार ।

### सौदा के जुल्लाव ।

इप्तीमून वस्तखुदइसबिन्ना छोटन आमला लाजवर्द हजर अर्पनी काबिली हरद सनाय मकी कशूस बिस १५न गारीकून फालादाना अयारिज फीकरा रेवन्दखताई ।

### मूत्र लाने वाली औषधें ।

यह औषधें पचले और बुरे मवाद को मूत्र में निकालती हैं ।

### ठंडी ।

खीरे ककड़ी और कुल्ले के बीज खैर के फूल खारखिसक कदु ककड़ी और तरपूज का पानी खरबूजे और चिरचिरे के बीज अलसी के बीज आश बी कासनी का पानी धोम और लड़ का कगन नीबू का अर्क मिला हुआ सोरा सिकंदगीन गरम ।

करफस के बीज सोंफ अनीखून विरेमास्क सुलागूफ कवावा राजबायन घुराव बीज हसरान



अमलवास पीठी कूट केसर तम तगर ऊबबिलसान अब इल  
ककके के बीगों को मींगी कलौजी पोदीना खुबानी चनों का  
पानी ।

### मौतदिल ।

हसरान खरभूने के बीज गरम और ठंडी औषधों को  
मिलाकर पीना ।

### हैज बहाने वाली औषधें ।

तम कलौजी अबइल हुरमुत जुन्दवेदस्तर बायबिलंग बिर  
जास्फ कर्दमाना बाधूना पीठा कूट कवावचीनी हसरान फर  
सीयून उद फादानिया जिन्तयाना अमवायन जावशीर जाद  
मुदाब केसर तगर नम्पाय सूखा नूफा करफस दाना मरुबा  
कमानरीयूस चुन मरकतरामशी चनों का पानी अमलवास के  
छिलके मोथा तुम्स ।

### वीर्य निकालने वाली औषधें ।

करफस इकसतीन सोंफ तुम्स दरमनातुर की मुदाब ॥

### उलटी लाने वाली औषधें ।

जो मेदे और उसके आस पास सेबाह को बलुडी में निका-  
लती है

मुली सोये कड़वे बादाम का प्रानी और बीज खरभूने की  
अब बिना छिली मुलहदी शहद सिकनपीन छाक शकर  
गरम पानी भरभीर के बीज कुन्दुश मबीजज मादक अस्त भेड़  
का दूध माजगीयून के बीज लाक लोबिया अरतगर ॥

### उलटी लाने वाली पुष्ट औषधें ।

कूटकी राई मौजुलकै ककरजद जिविलहक ॥

भेजे की पुष्ट करने वाली औषधें ठंडी और तर  
मीठी आपला बिही सेब और अमरुद के ताजे फूल  
र और गुलाब के फूल नारंग ॥

## गरम ।

बलादुर, फिन्दक, पिछोछोठन, सोंठ, मोया, बालघट  
 मुरक ऊद, अम्बर, गालिया, लोम, कुन्दर, रोगन, अवहर,  
 मानवरों के भेजे, मुर्ग, तीतर, भेद का दूध ।

और बाकी यह हैं, हरद का गरम्बा, सेब, बिही, अमरुद  
 नाशपाती, फिरनमुरक, जायफल, केसर, चस्तखुददस, चमेली  
 कद्दू और काहू के बीज सफेद चदन बादाम, शर्बत नारंग ।  
 दिल की पुष्ट और प्रसन्न करनेवाली ठंडी औषधें ।

अमरुद, नाशपाती, अनार, आपला, हमली, सेब, चदन,  
 घसलोचन, गिलेपानवूम, रैबास, मुसुद, कारुवा, कपूर,  
 गाबनवा, घनियाँ, गुलाब के फूल, मोदी, नीलोफर, नारंग,  
 हरद, याकृत, चांदी के बर्त ।

## गरम ।

सोने के बर्त, चतरुज के छिलके, चस्तखुददस, रेशम,  
 पहमनें विसफायन, पिछीछोठन, बादरुजमदवार, दारचीनी,  
 नकरचूर, दूरुनम, केसर, मुम्बुल, मोया, तन, शकाकुल, उदगर  
 की अम्बर, फिरनमुरक, फादानिपो, हलायची, लालपर्व नाना ।

बाकी यह हैं, छटीला, इमफाकसीव, आलू, पनियाँ, मू गा,  
 मू गे की जट, नीलोफर, बजरुलहुम्मास, पान, हरद, सोसन,  
 ऊद, अम्बर, याकृत फिरनमुरक, मुरक ।

जिगर की पुष्ट करने वाली औषधें ।

ठंडी फासनी गरिहक, अनार, पानी लुभाय  
 ईसबगोल, शर्बत सन्धल, सिकजवीव  
 गरम-छटीला, इमफाकसीव,  
 पिछसान, पानी, गाफिस,

हम्मासा, मुसुद  
 कुसुम

मस्तगी, नारदीन, सौंफ कर्फस के बीज, गुलाफन्द आमली  
आसानासिया दवा चलकरकम ।

और बाकी यह हैं इफसन्तीन, नरकचूर, पोथा,  
तगर, इलायची, बराबद, बिछीलोदन, मुनक्के, गुलाब  
निशास्वा, मेहका पानी ऊद हिन्दी ।

**मेदे की पुष्ट करने वाली औषधें ।**

ठही आमला अनारदाना, सिमाक बहेडा, हरद का सुर-  
वा हरद बिही, बसलोचन, गुलाब के फूल ॥

गरम-सकहे की जड़ नुरंज के, द्रिक्के, बिछीलोदन  
जयाफल, दारचीनी, नरकचूर, पोथा, तम, तेजपात लोंग, इला-  
यची, कुन्दुर, करोंया, रूपीपस्तगी, मशकूरामशो नाना  
ऊदगुर की ।

बाकी यह हैं कच्चे आलू, जापन, तगर, गोख मिरच,  
ऊदनी का दूध, छडीला, कचनार, पादीना, ऊदहिन्दी, सगदान,  
मुर्ग, दही, इम्मामा ॥

**जिगर की हानि कारक औषधें ।**

ठहा पानी, नारंगी, छुआरा, इन्जीरतर, इन्जीर अधिक,  
सूखा हुआ सिरका निसखाना, जाटों का शरद, कासी, हरद  
बसवास, इन्जुलबान, दारशशि आन ॥

**मेदे को हानिकारक औषधें ।**

सिली, मसूर, मावशईर, हाकम के बीज, पीठे आलू,  
सन्नाब, अलसी के बीज, मुअसफर के फूल अदरक घोरक,  
इन्जीर साफ सिया जादा इसरम, इम्मामा, पुराना पनीर, गरम  
पानी, गो रा बी, मिठाई ॥

मेदे की ढीला करने वाली औषधें ।

हृद्युलघान, हज्र अर्धनी, पेठे के बीज, सज्जी, कोषिया का साग, नारियल का दूध ॥

जे की हानिकारक पीड़ा उत्पन्न करनेवाली औषधें

इमफारुषीव की घुनी, वज्रकलधनज, कुन्दर, गदना, साया । इसन, पियाज, खैरू क फूल, सू घना मसूर पेयी, अलसी के । ज, वैंगन, मूली, खुरकला उतरन, तुन, इसवीन पालक, पालू, सरफट की जड़, तदर, बुलून, भादा, गुलनार, जाप-ल, लुवान, पैबन्दमरिफम हींग खशलाश इजास, अशगर मिलीहरद, तम्बाकू, सरफा ॥

पेटकी नरम करने वाली औषधें ।

मूली, पालक, करम्भ, विनोला, खुन्दर, गन्ने का रस, दू कफ समेत शफतालू सिरका अमिली, हज्जुसमना कुलफे र ययुये का साग पेड़ का दूध चकरी का दूध मक्खन बहुत ना तरा, सोंफ, हरद, सना, इमली, गुलाब, सुरजवीन, क की जड़ और अर्क गुलकद ॥

पेट बढ करने वाली औषधें ।

चकरी, और पेड़ का कलेशा, गुना हुआ पाकला, अम की जड़, लौका ससूत, कल्लेपाये भुने हुए कचनार, जीरा । क रेई के बीज, ईसबगोल कनीचा पारतंग, पेलगिरी लम्बास इलायची, सोंफ अनीमून, निशास्ता मिले अर्धनी सुरा ।

सुदा और बात दूर करने वाली औषधें ।

सरफट की जड़, शाहतरा, गारीकून, सोंफ, अफीम, इफ-न, सावर ससबासा, समालू भावशीर, कर्फस वस्तसुद-तीमून । । । किरमानी, ईसा, -

हालों, गानर, के बीज, सोठ, धारफिलफिल, कवाचचीनी, सुहाय, दारचीनी, केशर, दोनामरुषा, भरावंद, कवाचचीनी, कुसुम, इस्पन्द, अनीसून, ऊद, तुरमुस, हाश, सालारस, कन्तूरीयून, करसना ।

**कब्ज करने वाली औषधें ।**

तुरण के दितके, सगदानमृग की जाल, खुलू के फल, पिस्ते के बाहर के दितके जरिरक, इन्तुतास, पांकला, बसलाचन, दम्बुल, अलवैन, गुलनार बुसुद अखरोट, सिमरक, मसूर, धारतग सरफहे की जड़, सरी के फल, जामन और आम की गुठली की मिंगी मस्तगी, घना, चाँवल, माई माजू, कुन्दर, तीनम खतूस ईसपगोल घुना घुथा, सोने के धर्क, अमरुद कइरुवा रैदा के बीज, निशास्ता, जाकर, गाधरस, नारदीन, कुनार की गुठली की मिंगी ॥

**नींदलाने वाली औषधें ।**

सशलाश और पोस्त का सरेटा खशलाश फूल सू घना सोया सिग्दाने रहना केशर मुघसफर के फूल बनफरो के फूल इरा घनिया आश नौ बादाम का शीरा और रागन, गुल रोगन, नीलोफर हांय पाँच मलना पानी की आवाज गाना हवा से सरी के हिलने की आवाज काह का साग किय की मिट्टी सोते हुए आदमी के मुँह पर बिड़कना अफीम टुकाइ हुम्माया बाधुना ॥

**नींद खोने वाला औषधें ।**

पोदीना सिरका राई लोंग सिर और माँथे और कनपटी पर लगाना गोल भिरवें मुरक नमक सिरका कपूर और गुलाब के फूल सू घना अयारिज फोकरा से कुल्ली कराना कासता या चिमगादड़ की बीट सिरपर बांधना चाय और बुन प्रीना सट्टा पानार नीबू कन्द का शरब गुलाब ॥

सोते में बुरे बुरे स्वप्न दिखलाने वाली औषधें ।

गन्धना, चोबिया, पाकला पच्चा, प्याम, शर्वतवाजा, चित  
सोना, शाखू, पैंगन, सौदा, पत्थर करने वाली पस्तु, बिम्बवी  
बुरे स्वप्न घन्द करनेवाली औषधें ।

पिछोर और जैत की लकड़ी, गले में लटकाना, फिट-  
फिटरी, सिरके नीचे रखकर सोना, दरोनम, कुलफा का साग,  
अकरकरा सोना, पर्वशीशा, इजकममाम ॥

पचाव करने वाली और भूख लगानेवाली औषधें ।

नीबू—और तुरन्त के बिलके, गोल मिरचें सिकनधीन  
सफरजली सविरक सिरका पस्तगी कुलीजन नमक इलायची  
ऊटनी का दूध ठंडा पानी फिरंग मुरक मेदे की पुष्ट करने  
वाली पस्तु सिपाप केशर के ॥

दातों और मसूड़ों की पुष्ट करने वाली औषधें ।

गुलनार, फिटफिटरी, कुन्दुर, गुर्जन, पारसींगा के सींग  
जले हुए विस्सा हरक के बिलके आखियाँ अकरकरा सिपाक  
गुलाब का बीरा, मोया, पाजू, गार्ई पस्तगी, इलायची काली  
मिरच जली हुई, कसीस, बसलोचन, भिलाषा जला हुआ  
पीली हरक की गुठली जली हुई छोड़े का बुरावा गुलाब की  
फलीनास जला हुआ तुमाक मुन्दरूस इजरुत सगबिराहत  
कवावालम्या पीली कौड़ी पीठा कूट मोती धौलासरी की आल  
मिरच के पीज भरम्ब मुरक रामक पौरद के पत्ते समन्दरफोन  
दिल्ली हुई पसर इमली के बीज मुरमली नै और मू मे को मट ॥

दातों और मसूड़ों की हानिकारक औषधें ।

दूध, ऊटनी का दूध मूली, पर्फ और शोरेका पानी

गरम गरम वस्तु पर ठंडा पानी पीना ठंडी वस्तु पारा घराना  
दृष्टि की पुष्टि करने वाली औषधें ।

आंवला, पीली हरद, बादाम, सौंफ, मुन्ही पका हुआ  
प्याज शहद जली सीपी और रेशम सुरमा सोने और चांदी का  
मैल गोला पिरघ लगाना मुरक और केशर और मोती पीस के  
सोने की सलाई से लगाना चन्द्रपा की ओर देखना सिरका ॥  
वह औषधें जो मवाद को आंख पर न गिरने दें ।

तरबूत के छिलके, कुन्दुर, करजुत, इबतदकीर, आब-  
नूस, चक्रवर्तवनज केशर स्त्री के दूध में पिळी हुई बनफसा  
लवणाव छातियां तिरियाक फारूक इ शरूत मकोय बिही मधुर  
बादरुत सफेद चन्दन, बकायन फिस्तक जारबर्द अकाकिया  
जौसिमाक अमरुद पुषुद तुतिपा रसोत कुतरान ॥

दृष्टि को हानिकारक औषधें ।

खारी भोजन, गरम पानी, सिर पर डालना, सुरम का  
देखना बैरी अर्थात् शत्रु को देखा करना मधुर कुतफा चूका  
करम्भ काहू, चिरविरा गन्दना विषय की अधिकता घूप में  
आग के पास बैठना चमकीली वस्तु देखना ॥

स्त्री संग के चाहना को पुष्ट करने वाली औषधें ।

एक वर्ष का बकरी का बच्चा, मुर्ग, तीतर, मछली, अंडे  
चिड़िया शलजम गाजर मूली प्याज, और उनके बीज गाय  
और भेड़ गाय का घी खोर छुआरे बादाम फिन्दक हज्जूरस-  
मना पिस्ता चिलगोजा सालब शकाकुल कुलीजन चुनीदान  
गोखरू बहमन सोदरी तिल्ली हात्ता चिरचिरेजे के बीज के बाँध  
के बीजों की मिर्गी, सुसला सैमल भूसकी अकरकरा मरतगी,  
गन्दने के बीज दालचीनी, दार फिलफिल लशस्राश सफेद

घोंठ, श्यामा, तगर, नरकचूर, चाकला, इन्द्रजी, लाहे का मैल  
रेगमाही, माहीगोबिया, माही सकूनकूर, मुरक, माती, चिड़िया  
और बसके छड़े, धंगूर, करफस, बसबासा, कवीरा, अल  
भोट, पनीर, पायाशुतर, जिरली, इन्धुज्जतम, हींग, सुरमान,  
फिरनक तम फूट बने, भेड़ के बच्चे का भेजा, हिलयून क  
घोज, लोबिया नारियल की गिरी, इ नीर

विषय की चाहना को खोने वाली

और हानिकारक औषधें ।

किरण मुरक, वासनी, काहू चलाव, ईरसा कूटहिन्नी,  
डोडफली, चनियाँ, मगोइ, कच्चा लहसन, नीलोफर की गड़  
जकी खशखश, कपूर, पानी अधिक पीना, विषय के पीछे  
जानी पीना. अगई, इसकी आलू बुम्बारा नीबू बादी तोड़ने  
जकी बस्तु. चूका बकलाय मानियाँ ॥

वीर्य उत्पन्न करने वाली औषधें ।

गन्दने के बीज शफाकुल पीठा, सुरमान, कटके बीजों की  
जोगी पियाम, गो का दूध ऊटनी का दूध पूरा मिला हुआ  
वल्ल, मुर्ग, इन्धुलम, घूजी, गइपन. बादाम १५स्ता. शकलम  
जलों चना, इन्द्रजी, सुगम, नारियल. तोदरी. अलसी के  
।ज, छडीला तुरंजपी, सोंठ. मुरक केसर ॥

विषय करने में अधिक ठहराने वाली औषधें ।

अफीम जायफट बीर बहुट्टी, सुगल, पतूरे के बीज,  
गैर पचने खुरासानी अजवायन, लोंग वाली मिरच बसबासा,  
सर मस्तगी, दारचीनी, सोंठ कपूर, मुरक अकरफरा. बयल  
फूल, गोमा के बीज, गिलोय सत ॥



विषय करने में मजा देने वाली औषधें ।

लौंग, दारचीनी, कषाव, अकरकरा, मषीजज कुचल कर और सोंठ शहद में भिगा कर थूक के साथ लिंग पर पल्ल कर विषय करना । सिर के घात पीस कर, पीरबहुट्टी, पारा केसर कपूर, कपूतर की बीज ॥

लिंग के बढ़ाने वाली औषधें ।

कैजूर, अकरकरा सफेद कनेर की जड़ की छाल घोड़े के घुप, लौंग जायफल, दारचीनी, केसर, रोगन जैतून मलना कफस के पानी से कई बार घोना, बकरी के घी से चिकनाना, कैजूर और जोक सूखे हुए सोसन के तेल में पीसकर मलना ।

भग को तंग करने वाली औषधें ।

बकायन और अनार की छाल, मौलसिरी की छाल को पीस कर कपड़े में लगा कर रखना, माजूफल और कपूर और शहद मिला कर भग में लगाना, पयूत, हसपेज, काली सिली गोखरू, इमली के बीज पीरबहुट्टी ॥

नीचे लिखी हुई औषधों से बच्चा जल्दी

जना जाता है ।

गूगल, वंज, गुलनार, बकायन की छाल, नीलोफर । जट मोया, बारतंग और मकोय का बसरा, काली खशख़ा लगाना, चुम्बक पत्थर का बड़ा टुकड़ा सफेदे हाथ में पकड़ कर घुसद सीधा जाँघ पर धाँपना, दारचीनी, खाना सिली व सैल अलसी के लुआँघ में मिलाके भग में लगाना ॥

मरे हुए बच्चे को निकालने वाली औषधें ।

जशबन्द, अमरुत अलसी तम्र. गोख पिरघ, घृभीदा सराज काली कुटकी । कालानीरा माजू पीस के पीना कलाम

हरी महदी की छात, घाँस के पत्ते औटा के पीना, पीपलामूल और काली कुटही पीस के बिराजा पिला के टूही पर लेप करना और पिसा हुआ कूदश शहद में पिला कर टूही या पेड़ पर लेप करे ।

### मशीमा को निकालने वाली औषधें ।

हसरान, करम्ब के बीज, कबूतर की बीट, तम, कलौजी, बिरजास्क, जुन्दवेदस्तर, ईश्या पिसा हुआ, अमरुत रहम में टपकाना, और पीना, बायूना, हम्बुफली ॥

### मसाने और गुरदे की पथरी की तोड़ने वाली औषधें

सगर, बिरजास्क, समग, आलू खरगूजे के बीज, गोखरू, हंसराज, सोंफ, फाले घने, इमरुत यहूद, संगसरपाही, हम्बुल किस्त, कदुआ बादाय माया, सिकधीनज, बिच्छू की राख ॥

### सूजन को पटकाने वाली औषधें ।

कमाजरोयूम, भाँक, हाशा, जराबन्द, नाखूना, वम, खरजहरा, हजार जिशान, नादा, नाबशीर, चकहसरान, जगलो पियाज, बायूना, बिरजास्क, सरकडे की जड़, बाकला, सगर, चकहवान, खेरू, जिपत, बतम का गोंद, लादन नम्माप मुतहटो, मुगुस कुसाबलहिमार, दोना मरुवा गाफिस किशा, फोदना, खरू जुन्दवेदस्तर, राई, दारइन्द खैरी, दारचीनी, केंकड़ा, सोया पलुआ ॥

### सूजन को नरम करने वाली औषधें ।

गोंद, जैतून बजरुतबनज, गुगल मोया, वेद इमीर और बिनीला और खरू का तेल, बतक की चर्बी, नलीका गूदा, ईसबगोल खैरू और कनौष जिपत इलाकुलबतम, ईरसा, सलारस, नाखूना करम्ब, अम्बर मोंप मुरतारन मुक अलसी, मईदी ॥

## सूजन की पकाने वाली औषधें ।

नाखुना, ईरसा, करम्ब, बतम का गोद अम्बर, लादन, मांग, खैरु के बीज, मुर, मुरु ॥

## सूजन को फोड़ने वाली औषधें ।

जगली पिपात्र, गंधक, हरीजात्र, हर्फ, पेदों का दूध, कयूतर की बीट, चना, कूट, फरफियून, सावन, कलकतार, शानजार जरारीह ॥

## बुरे मांस को गला देने वाली औषधें ।

इजरुत, उशनान, नमक मुरदासंग, तांबे का मुरदास, सफेदा सैन्दूर, जली हुई सीपी जगार, तुतिया, चूना ॥

## साफ करने वाली औषधें ।

अमृहल, जिफत, शोरा, नमक, मिसरी, आवकासा, ईरसा, शहद, गंधक, हव्वपिलसान, इजरुत ॥

## कीड़े मारने वाली औषधें ।

वायबिहग, इफसन्तीन जादा, सूखा नूफा, करोया हर्फ, पोदीना, कमीळा, शीह, कलौंती, शफतालु के पत्ते ठरमुस ॥

## घाव की भरने वाली औषधें ।

सुरमा, समगआलु, इजरुत इस्फज, बर्फपुलूत, दम्मुल, अजबैन, जिफत, जराबन्द, घातंग, कालोजीरा, ईरसा, एलुमा, गिल्लेमखतूम, संगजिराहत, शक, कतीरा, सुलनार, सफेद कन्नेर, सफेद पोप, गौ का दूध, पोपा, हुमा, लिसानुल हमल का पानी ।

## घाव की सुखाने वाली औषधें ।

जली हुई सीपी और छुआरा और छोटे गप्पे का सुप, मखन, खीळा, मुरदासंग एलुमा धोया, हुमा चूना, सुन्दरुत ।

नाक मुंह और दस्तोंके रुंधिरको रोकनेवाली औषधें।

दम्युल अखवेन, मस्तगी कन्तूगीयून, सरोके फल  
 घनियां, जरिरक घुसुद रसोष भीरा कपूर अमवार की जड़  
 पोदीना गेरु पादरुज सुरया युलून पारतग, कहरुवा निशा-  
 स्ता वमरुलघनज, शादना, गुलनार कुन्दर याम् गिल्लेमर्मनी  
 बरगद् की दाही परयर, रेवन्दचीमी, भाऊ का फल, पेटे के  
 बीज जुदवेदस्तर, साफसिया, मवाद को खेंचने वाली है।  
 नूरा गपक सफेद, रात्रका पानी वाक उड़ाने वाली है ॥ योय,  
 निशास्ता, कहरुवा, कतीरा, जमाने वाली है ॥ इनकत,  
 खड़ीला घुलाचूना तूकिश पलुमा अली हुई सीपी साफ  
 करने वाली है। मफोह ईसबगोल गुलनार बालियां घनियां  
 मवाद को रोग की जगह नहीं गिरने देती। अफीम अफीमी  
 घीयून, बचनाग, निफत, पारहातने वाली है ॥ शई, फौदनन,  
 इमीर, तानानोमानी, सात करने वाली है ॥ अफीम, इस्पन्द,  
 कुचला, जर्बकी जड़, शाहतरा की जड़, सम्बाकू के पत्ते और  
 बीज, कुन्दर, यूरान लोंग, घूरा का फल, वजरुलवनन,  
 काकनज, लखरुलसनम सुन करने वाली है ॥ अफीम, बतल  
 की चर्बी, यवरुलसनम की जड़, खंदे की सफेदी, निशास्ता  
 कतीरा, बबून का गोंद पीका के रोकने वाले हैं ॥ सफहुवात,  
 इसतकर, इम्पाम केसर सोवा शक़ायक काह खफाश शाह-  
 सफरम सुलाने वाले और सुन करने वाले हैं ॥ तगर, इव्युज  
 किस्त, हाशा शाहतरा पादावर्द, बनफशे की जड़, इनकत  
 गाफातीस, फेंफटे को हानि देती है। सम्बाकू, नकदिकनी, खीर  
 खाने वाली है। घपूला का गोंद, निशास्ता, कतीरा, पोयाचूना,  
 चिपकने वाला और सुखा उत्पन्न करने वाली है। अनीसून,  
 अफीमीयून, वसबासा, भावर के बीज, सभाख जाबशीर,

## सूजन की पकाने वाली औषधें ।

नाखुना, ईरसा, करम्भ, बतम का गोंद, अम्बर, छादन, मोम, खैरु के बीज, मुर, पुक ॥

## सूजन को फोड़ने वाली औषधें ।

जगती पिपाज गषक, हरीजाज, हर्फ, पेड़ों का दूध, कथुतर की बीट, चना, कूड़, फरफियून, सावन, कलकतर, शानजार जरारीह ॥

## बुरे मांस को गला देने वाली औषधें ।

इजरुत, पशुनाज, नमक, मुरदासंग, ताँबे का घुरादा, सफ़ेदा सैन्दूर, जली हुई सीपी, जगार, तूतिया, चूना ॥

## साफ करने वाली औषधें ।

अबईल, जिफत, शोरा नमक, मिसरी, आवकासा, ईरसा शहद, गषक, हव्वयितसान इजरुत, ॥

## कीड़े मारने वाली औषधें ।

वायबिदग, इफसन्तीन जादा, सूला जफा, करोया हर्फ, पोदीना कपीला, शीह, कलौंती, शफतालू के पत्ते तुरमुस ॥

## घाव की भरने वाली औषधें ।

सुरमा, समगआलू, इजरुत, इस्फज धक़ुलूत, दम्मुत आवबैन, जिफत, जराबन्द, पातंग, कालाजीरा, ईरसा, एलुमा, गिलेयसतूम, सगजिराहत, राता कतीरा गुलनार, सफ़ेद कन्नेर सफ़ेद मोम, गौ का दूध घोया, हुमा लिसातुल, हमल का पानी ।

## घाव की सुखाने वाली औषधें ।

जली हुई सीपी और कुधारा और घोड़े गधे का घुम इजरुत बरीला, मुरदासंग एलुमा घोया, हुमा चूना, मुन्दरुस ।

नाक. मुंह और दस्तोंके रुधिरको रोकनेवाली औषध ।

दम्भुल अखवैन. पस्तगी कन्तूरीयून सरोके फल  
 धनियां, जरिरक घुसुद रसोत जीरा कपूर अंमवार की जड़  
 पोदीना गेरू. पादरुज सुरमा, धुलून धारतंग, कहरुवा निशा-  
 स्ता बभरुलघनज शोदना गुलनार कुन्दर मामू. गिलेभर्मती,  
 बरगद की छाड़ी परथर, रेबन्दचीनी, स्नाक का फल, पेटे के  
 बीज जुन्दवेदस्तर, साफसिया, मवाद को, छेवने वाली है ।  
 नूरा, गवक सफेद, राजका पानी बाह्य चढ़ाने वाली है ॥ मोम,  
 निशास्ता, कहरुवा, कतीरा, जमाने वाली है ॥ इतूरुन,  
 छड़ीला घुलायूना तूविया पलुमा जली हुई सीपी साफ  
 करने वाली है । मकाह ईसवगोल गुलनार खोलियां धनियां  
 मवाद को रोग की जगह नहीं गिरने देती । अफीम, अफीमी  
 वीयूत, बचनाग, निफ्त, मारवाकने वाली है ॥ शीर्, फौदरन,  
 हनीर, खालानोमानी, छाल करने वाली है ॥ अफीम, इस्पन्द,  
 कुचला, नर्वकी जड़, शाहतरा की जड़, तम्बाकू के पत्ते और  
 बीज, कुन्दर, यूरान लोंग, धूरा का फल, बजरुलघनज,  
 काकनज, लवङ्गजुस्सनम सुन करने वाली है ॥ अफीम, बतज  
 की चर्बी, बबरुजुरसनम की जड़, बंदे की सफेदी, निशास्ता,  
 कतीरा, बयून का गोंद पीका के राकने वाले हैं ॥ सकहुवात,  
 इसतकर इम्माम केसर सोमा, शकयक काह काफा, शाह-  
 सफरम सुलाने वाले और सुन करने वाले हैं ॥ तगर, हब्बुल  
 किन्त, हाशा, शाहतरा बादावर्द, बनफशे की जड़, इब्रक  
 गाफातीस, फेंफड़े को हानि देती है । तम्बाकू, नकदिकनो, श्री  
 खाने वाली है । बपूख का गोंद, निशास्ता, कतीरा, पोयायूना,  
 विपकने वाला और मुदा उत्पण करने वाली  
 रफतीमून, बसबासा, नाजर के बीज, सभाख

दागकिलकिल का लीपिरच, जीरा, फर्दमाना, सोंठ,  
 नरकचूर जराबन्द, सुहाव पोथा, सातर, कुन्दर, करफस, अज-  
 वायन पेट फूलने और वायु को क्षापदायक है। गधक, जान,  
 इसकील, लहसन, पियाज, हुर्फ कबूतर की पीठ, चूना, कूट,  
 पोदीना, सावन, सुहाव, रासन करफयून, पेड़ों का दूध, घाव  
 ढालने वाले हैं। केसर, कच्चा रेशम, लोंग, कपूर, सफेद चन्दन,  
 मुरक, इनफारुचीव, तज, घाह छड़, अमरुद, छतरुज, अनार,  
 आमला, कली और छिल्ल का नीधु का, मृगा, मृगे की जड़,  
 विसफायज, पान, जहमगुहरा खतार, लाजवर्द, गुलाब के फूल  
 इमली, बसलोचन, ऊद, पोती नीलोफर के फूल, पोदीना,  
 नम्माय, पाकृत, संग, पुस्त, अम्बर सौने चांदी, के बरक,  
 पिस्ता बहमने, बुसुद सेव, पिही इजीर जदवार, बादरुज बिल्ली  
 लौटन, दारचीनी, नरकचूर, बालछड़ पोथा, शकाकुल, तीनम-  
 खतूम, फिरनमुरक, फादानिया, इलायची, कहरुवा, गावजवा,  
 घनियां सौसन, नोनज हरद छटीला, आलू, चांदनी के फूल,  
 कुन्दर, कतीरा अरकलना, केवडा, इत्र, बन्तखुदस, मसल करने  
 दिलकी पुष्ट करने वाली हैं ॥

केसर, कटुआ बादाम, मंग, जावित्री, शराब में छटीला  
 ढालना, केसर, छटीला शराब पीकर सुचना, कटुआ बादाम,  
 या पांच दाने काकनज के पीने के पीछे खाना, शराब नशे को  
 शीघ्र उत्पन्न करता है ॥

शराब पीकर अमरुद, पिही या मीठा बादाम या नारि-  
 यल की गिरी या घनियां खाना नशे को देर में बहने देता है ॥

# इति संपूर्णम् ।

## बूटी प्रचार ।

यह वैद्यक का छोटा सा ग्रन्थ अपने हग का एक ही है इस को सर्वासी महात्मा महत सुम्भरामदास जी ने जीवन भर अपने अनुभव किये हुए चुटकुलों से भरा है बड़े और छोटे से छोटे रोगों के बहुत ही सुगम उपाय लिखे हैं यह पुस्तक नरत्येक घृहस्थों को सदैव अपने घर में रखना अवित है इसके रास होने से साधारण रोगों में वैद्य और हकीमों के पास गौहने की आवश्यकता नहीं रहेगी, इस पुस्तक को बिदेश में भी प्राय रखने में मनुष्य अपना और अपने सपियों का रोग दूर कर सकता है इन सब बातों के सिवाय चातुर्षों के कारण प्राण की विधि मगल की जड़ी बूटी दाना बहुत ही सहज ज्ञात्री हैं तथा औषधि मस्तुन करने की मणाली भी विधि पूर्वक लिखी है । जिन जिन जड़ी बूटियों का काम स पुस्तक में पडा है उन सब के ऐसे सुन्दर चित्र दिये हैं जनों अवस हो खींच दिया है ये चित्र प्राय २०० से अधिक पुस्तक के अन्त में नागेश्वर यम मृगागर्यम आदि के कितने ही आद्वयन और उपयोगी चित्र दिये हैं । इस तरह सब मिला कर यह पुस्तक प्राय. ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है मूल्य बिला-ती कपडे की जिन्द का १) ५० डाक म० ८)

## केश कल्पद्रुम ।

अर्थात् स्त्रियस्य शतक ॥

इस पुस्तक में बालों पर स्त्रियाव करने के वसमोचय १०० जुगले बडे २ हकीमों तथा वैद्यों के आजमाये हुए सग्रह करके लिखे गये हैं एकर नुसला बुद्धों को जवान बनाने और रोगमारों को घन कमाने के लिये काफी है, मूल १) आना



दारकिलकिल का लीमिरध, जीरा, कर्दमाना, सोंठ,  
 नरकचूर जराबन्द, सुहार मोया, सातर, कुन्दर, करफस, अज-  
 वायन पेट फूलने और वायु को लाभदायक है। गधक, जीरा,  
 इसकील, लहसन, पियाज, दुर्ग फसूतर की पीठ, घूना, कूट,  
 पोदीना, सावन, सुहाव, रासन करफयून, पेड़ों का दूध, घाव  
 ढालने वाले हैं। केसर, कच्चा रेशम, लोंग, कपूर, सफेद चन्दन,  
 मुरक, इजफ, रुखीध, तज, धातु छद, अमरुद, सतरुज, अनार,  
 आमला, कली और छिलका का नीबू का, मृगा, मूंगे की जक,  
 विसफायज, पान, जहरमुहरा खताई, लाजवर्द, गुलाब, के फूल  
 इमली, वसलोचन, छद, पोती नीलोफर के फूल, पोदीना,  
 नम्माप, याकृत, संग, पुरत, अम्बर सोने चांदी, के धरक,  
 पिस्ता बहमने, पुसुद सेव, विही इजीर जदवार, बादरुज बिछी  
 लौटन, दारचीनी, नरकचूर, घालछद मोया, शंकाकुल, तीनम-  
 खतुम, फिरजमुरक, फादोनिया, इलायची, कहरुवा, गावमवा,  
 धनियां सौसन, नानज हरद छदीला, आलू चांदनी के फूल,  
 कुन्दर, कतीरा अरकलना, केवडा, इत्र, सस्तखुदस, मससे करने  
 दिलकी पुष्ट करने वाली हैं ॥

केसर, कटुआ बादाम, भग, भावित्री, शराब में छदीला  
 ढालना, केसर, छदीला शराब पीकर सु घना, कटुआ बादाम,  
 या पांच दाने काकनज के पीने के पीछे खाना, शराब नशे को  
 शीघ्र संपन्न करता है ॥

शराब पीकर अमरुद, विही या मोठा बादाम या नारि-  
 यल की गिरी या धनियां खाना नशे को देर में चढ़ने देता है ॥

**इति संपूर्णम् ।**

# केश कल्पद्रुम ।

यह वैदिक का काल है अन्य कालों से यह एक ही है  
 इसको संतानों का नाम है जो कि बहुत ही बड़े होते हैं  
 अपने अनुभव किने हुए पुत्रपुत्रों से बना है जो भी होते हैं  
 होते होते हैं बहुत ही बड़े बड़े होते हैं यह पुत्र  
 प्रत्येक कालों को सदैव बनने का प्रयत्न करते हैं इसके  
 पास जाने से सारा लोको में फैल और इसके को पास  
 होने की आवश्यकता नहीं रहेगी, इस पुत्रपुत्र को विदेशों की  
 साथ अपने में प्रमुख अपना और अपने सधियों का योग  
 है यह सारा है इन सब बातों के सिवाय पात्रों के साथ  
 साथ ही विधि बगल की जड़ी बूटी द्वारा बहुत ही मात्र  
 किनी है तथा औषधि प्रत्युत करने की प्रणाली भी विधि  
 है । प्रिन जिन जड़ी बूटियों का नाम  
 पुत्रपुत्र के पड़ा है उन सब के ऐसे सुन्दर विधि दिए हैं  
 जो कि बहुत ही बड़े दिये हैं ये विधि प्रायः २०० से अधिक  
 हैं और नागेश्वर यम भूगागर्भ आदि क कितने  
 विधि दिए हैं । इस तरह सब विधि  
 प्रायः ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है प्रमुख विधि  
 का (१) ५० टाक ५० ५०

केश कल्पद्रुम ।

केश कल्पद्रुम ।

केश कल्पद्रुम ।

केश कल्पद्रुम ।



